प्रथम अध्याय

राजस्थान का मैड़-विराट अँचल : एक पचियात्मक अध्ययन

(।) भौगोलिक स्थिति

महाभारतकालीन 'मत्स्य' देश का राजधानी अँचल मैड-विराटनगर अपने पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व के इतिहास को तथा अपनी प्राकृतिक मनोरमता एवं अनेक संस्कृतियों की सामंजस्यमयी भग्न कृतियों को अपने अन्तराल में छुपाये राजस्थान के जयपुर मण्डल में दिल्ली-अजमेर राजमार्ग पर (अलवर-जयपुर के मध्य) अर्बुद महापर्वतमाला की गोद में आज भी विद्यमान है।

महाभारत के अनुसार यह क्षेत्र 'इन्द्रप्रस्थ' से पश्चिम में, मरूभूमि और 'पुष्कर राज्य' से पूर्व में, शूरसेन राज्य, मथुरा से उत्तर-पश्चिम में एवं कुरुजांगल 'कौरव' राज्य से दक्षिण दिशा में था। यह वर्णन वर्तमान मैड़-बैराठ पर खरा उतरता है। विराटनगर के पास से उत्त्र और दक्षिण भारत को जोड़ने वाला परम्परागत राजमार्ग है, जो आगे चलकर 'बाणगंगा ' तक जा पहंचता है।

वर्तमान राजस्थान के ऐतिहासिक नगर मैड़-विराटनगर राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में 27० 4 28० 4 दक्षिणी अक्षांश एवं 76० 7 एवं 77० 7 पूर्वी अक्षांश के मध्य में स्थित है। यह अँचल प्राचीन मत्स्य जनपद का निकटवर्ती क्षेत्र है। इस क्षेत्र में इमारती पत्थर, रोड़ी, चूना पत्थर, स्लेट, ताँबा एवं मार्बल पाया जाता है।

(।।) ऐतिहासिक विवेचन [1]

इस अँचल के बैराठ (विराटनगर) में प्राचीनकालीन 36 सिक्के मिले हैं तथा बौद्धकालीन आठ विहार मठों के अवशेष हैं। ग्राम मैड़ में भी मठ का मन्दिर एवं उसके आस पास बसी मठों की ढाणी इस ऐतिहाकि तथ्य का प्रमाण हैं। विराटनगर में 250 बी.सी. एवं 50 ए.डी. के मध्य के मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं। मैड़-विराट अँचल सम्राट अशोक के राज्य के अन्तर्गत रहा है। इस अँचल में प्राप्त सिक्के यह दर्शाते हैं कि इस क्षेत्र में ग्रीक एवं यवनों का शासन भी रहा है। छठी शताब्दी ए.डी. से 12 वीं शताब्दी ए.डी. तक यह गूर्जर प्रतिहारों का राज्य रहा। सातवीं शताब्दी ए.डी. में चीनी यात्री ह्वेनसांग Huientsang ने नारायणपुर तथा मैड़-विराटनगर होते हुए मथुरा तक की यात्रा पूरी की। इसके पश्चात् 1008 ए.डी. में मोहम्मद गजनवी ने भी नारायणपुर, तालवृक्ष मैड़-विराटनगर, मुण्डावर एवं राजगढ़ की यात्रा की। इस अँचल में प्राचीन काल से ही कला एवं पेन्टिग, आभूषण निर्माण, रंगाई आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 48-57

मैड़ गाँव

महाभारतकालीन दुराचारी कीचक, कैकय का सबसे बड़ा पुत्र, राजा विराट का साला एवं रानी सुदेष्णा का भाई था जिसे मेहर नाम से जाना जाता था। उसका निवास स्थान विराटनगर के पास ही में स्थित मैड़ गाँव बताया जाता है। ऐसा माना जाता है कि मेहर का यही नाम कालान्तर में मैड़ हो गया।

यह प्रदेश पवित्र है। यहां पर बड़े-बड़े ऋषि-तपस्वियों का पदार्पण हुआ है। पाण्डवों ने इसी धरा पर अपने अज्ञातवास का समय व्यतीत किया था और उन्होंने अज्ञातवास में जाने से पूर्व जिस शमी वृक्ष पर अपने हथियार टांगे थे जिस पर भगवान इन्द्र ने सोने की वर्षा की थी। वह वृक्ष यहीं बाणगंगा नदी के तट पर स्थित था।

मैड़ में श्री सियावरजी का मन्दिर, पाण्डवों का मन्दिर, लक्ष्मी नाथ जी, बड़े महादेव जी गोपीनाथ जी, मठों एवं झूमका का मन्दिर, छोटी-बड़ी सेढ़ माता के चबूतरे श्योलाल का तिबारा, बीलवाड़ी की म्हांम्हांहियों का मन्दिर, सईद का गट्टा, विराटनगर में भीमजी का मन्दिर, गणेश जी का मन्दिर, बिलाळी में शीतला माता का मन्दिर, कूकडेला में तेजाजी का थान आदि अनेक आराधना एवं आस्था-स्थल हैं।

मैड़ अति प्राचीन गाँव है तथा यह माना जाता है कि वर्तमान अलवर की स्थापना ग्राम मैड़ के ही निवासी एक कछवाहा राजपूत श्री अलदूराय ने अलूर नाम से की थी जो कालान्तर में अलवर के नाम से स्थापित हो गया। मैड़ गाँव में मन्दिर बहुत हैं जिनमें श्री सियावरजी का मन्दिर, श्री झूमका, श्री गोपीनाथ जी, श्री गुसाईं जी, श्री जानकी वल्लभ जी, श्री नृसिंह जी, राधाकान्जी आदि के मन्दिर प्रमुख हैं। गाँव के एक कोने में राजपूतकालीन एक विशाल किला है जिसके चारों ओर खाई बनी हुई थी जिसमें सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से पानी भरा होता था। कभी यह किला राजा का निवास स्थान रहा होगा परन्तु आज इस खाई को पाटकर किले में सरकारी स्कूल चलाया जा रहा है। भामोद के राष्ट्रीय शिक्षक श्री कन्हैया लाल शर्मा द्वारा स्थापित संस्कृत विद्यालय सर्वप्रथम राधाकान्जी के मन्दिर में स्थापित किया गया जिसे कुछ समय बाद श्री झूमका मन्दिर में स्थानान्तरित कर संचालित किया गया और अब यह विद्यालय राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय के नाम से बड़ी सेढ माता के पास चल रहा है। इस गाँव के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल एवं इमारतों में कीचक का स्तम्भ, गुसांईं जी का मठ, मठों की ढाणी, श्योलाल का चबूतरा, बाणगंगा तट पर स्वामी श्री गोपाल दास की छतरी,पहाड़ी पर साधू बाबा की गुफा, महात्मा श्री

रामचन्द्र वीर के पूर्वजों की काली कोटड़ी, छोटी-
बड़ी सेढ़ माता, पथवारी माता, गधाखोळ, श्री सियावरजी के मन्दिर स्थित महात्माओं की धूणी, ठण्डे पानी की प्याऊ आदि प्रमुख हैं।

इस गाँव में स्वामी श्री गोपालदास एवं उनके छोटे भाई माधवदास जी, महन्त श्री गणेश दास, गिरूडी वाले श्री माधव दास जी जैसे सन्तों ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के हित में अर्पित कर दिया। श्री झूमका मन्दिर के महन्त श्री सीताराम दास महान् विभूति थे परन्तु अपने जीवन की आधी यात्रा में ही वे यहां की परिवर्तित व्यवस्थाओं से व्यथित होकर सीकर जिले के अमरसर नामक गाँव में चले गये और उन्होंने वहां पर ही देह त्याग की।

मैड़ गाँव के बाज़ारों में भीजणी बाजार(तल्ला बाज़ार), चौहट्टा बाज़ार, छतरी का बाज़ार आदि प्रमुख हैं। यह गाँव स्वामी श्री रामचन्द्र वीर, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री रामदास जी अग्रवाल आदि के पूर्वजों की भूमि है।

समर्थ रामदास जी का मैड़ गाँव में आगमन

छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रेरक एवं पथप्रदर्शक, हिन्दूपदपादशाही अथवा अखण्ड हिन्दूसाम्राज्य के स्वप्नदृष्टा, राष्ट्रगुरु समर्थ रामदास जी महाराज अपनी उत्तर भारत की यात्रा के दौरान पार्श्ववर्ती पुण्य सलिला बाणगंगा नदी में स्नान करने हेतु जब ग्राम मैड़ पधारे तो इस गाँव के पुण्यात्मा सन्त स्वामी श्री गोपाल दास के यहां रुके। श्री स्वामी समर्थ रामदास ने उनका आतिथ्य स्वीकार कर स्वामी श्री गोपालदास के समक्ष बाणगंगा नदी में स्नान करने की इच्छा प्रकट की। गोपालदास जी ने उनका चरणोदक लिया और भक्ति भावना से उनके चरणों में नूतन पादुकाएं समर्पित की। श्री स्वामी समर्थ ने उनका मान रखने के लिये पादुकाएं ग्रहण की, बाणगंगा नदी में स्नान किया और वे पादुकाएं प्रसादस्वरूप गोपालदास जी को ही प्रदान कर दी। स्वामी श्री गोपालदास ने स्वामी समर्थ जी को मैड़ गाँव एवं आस-पास के क्षेत्र में घुमाया तथा उसके पश्चात् उन्हें विराटनगर क्षेत्र भी दिखाने ले गये। समर्थ श्री रामदास जी महाराज का हृदय औरंगजेब द्वारा ध्वस्त देवालयों को देखकर आहत हो गया।

मैड़ के स्वामी कुल के पास श्री स्वामी समर्थ रामदास की पादुकाएं कुछ समय तक बहुमूल्य धरोहर के रूप में रहीं, फिर वे स्वामी कुल के गुरुद्वारे, जयपुर के बालानन्द मठ में आ गयीं और

अनेक पीढ़ियों तक वहीं ससम्मान सुरक्षित रहीं। लगभग एक सौ वर्ष पश्चात् एक दिन महात्मा राचन्द्र जी वीर जब बालानन्द मठ, जयपुर पधारे तो वहां के महन्तश्री ने जीर्ण भगवा वस्त्र में लिपटी हाथी दाँत की नक्काशी से सुसज्जित, चंदन चर्चित श्री स्वामी समर्थ रामदास की चरण पादुकाएं लाकर वीर जी के हाथों में रख दी। भगवां वस्त्र के कोने पर लिखा था– 'समर्थ रामदास जी की पावड़ी। मैड़ के स्वामी जी की अमानत' ।

पादुकाओं को पाकर महात्मा वीर प्रसन्नता से रो पड़े। इस प्रकार महात्मा श्री गोपालदास को प्राप्त समर्थ गुरुदेव की पवित्र पादुकाएं लगभग सौ वर्ष पश्चात् वापस अपने अधिकारी के पास आ पहुंची।

महात्मा श्री गोपालदास के वंश में अनेक गृहस्थ संत हुए। स्वामी हरिभक्त अथवा सहजराम ने मैड़ को छोड़ कर विराटनगर में देवालय स्थापित किया। महात्मा गोपालदास जी की 11 वीं पीढ़ी में अश्विन शुक्ला प्रतिपदा संवत् 1966 वि. के दिन विश्वविश्रुत संत श्रीमन्महात्मा रामचन्द्र वीर महाराज का प्रादुर्भाव हुआ।

स्वामी गोपालदास जी का बलिदान

जयपुर राज्य के पूर्वोत्तर में पवित्र बाणगंगा नदी के तट पर मैड़ नामक छोटे से गाँव में लश्करी सम्प्रदाय के एक पुण्यात्मा सन्त हुए जिनका नाम था गोपालदास जी। पूरे क्षेत्र में स्वामी श्री गोपालदास को लोग 'स्वामी जी महाराज' या 'बाबाजी' के नाम से पुकारते थे।

मुगल–साम्राज्य के प्रारम्भिक काल में सुल्तानों के द्वारा जब जनता पर जाजिया कर लगाया गया तो ब्राह्मणों को उससे मुक्त रखा गया था। आगे चलकर अकबर द्वारा जाजिया कर हटा दिया गया परन्तु औरंगजेब ने जनता पर यह कर पुनः लगा दिया जिसमें ब्राह्मणों को भी घेरे में ले लिया गया। इस कर की अपमानजनक वसूली और विधर्मी सैनिकों के अत्याचारों से क्षुब्ध स्वामी श्री गोपालदास धर्म के लिए प्राणोत्सर्ग के संकल्प से प्रेरित होकर दिल्ली जा पहुंचे। उन तेजस्वी संत ने किसी प्रकार युक्ति से मुगल बादशाह के दरबार में प्रवेश पा लिया और आततायी औरंगजेब को हिन्दुओं पर अत्याचार न करने की चेतावनी देते हुए, म्लेच्छों द्वारा शरीर का स्पर्श करके बन्दी बनाये जाने के पूर्व ही, कृपाण से अपना पेट चीरकर देखते–देखते दरबार में ही अपने प्राण विसर्जित कर दिये।

श्री स्वामी गोपालदास के छोटे भाई श्री माधवदास ने अपने भाई के पार्थिव शरीर को ग्राम मैड़ में लाकर उनकी चिता बनाई और स्वामी गोपालदास जी की देह के साथ ही उन्होंने भी प्राणोत्सर्ग कर दिया। इस प्रकार हिन्दुत्व एवं धर्म के लिये दोनों ही भाइयों ने अपने बलिदान के द्वारा मैड़ गाँव का नाम ऊंचा किया जिसकी स्मृति में उनके वंशजों के द्वारा मैड़ की बाणगंगा नदी के तट पर स्वामी श्री गोपालदास की छतरी एवं दिल्ली में माधवदास जी की बगीची का निर्माण कराया गया।

नायला पर मैड़ के शेखावतों का राज

संभवत: मिर्जा राजा सवाई जयसिंह के शासनकाल में जयपुर–आगरा रोड पर स्थित नायला गाँव, मैड़ के शेखावतों के आधिपत्य में था। एक दिन महाराजा सवाई जयसिंह जी के ऊंटों का एक टोला नायला गाँव में घुस आया। वहाँ के शासकों ने उस टोले की एक सुन्दर सी टोल्डी को अपने अधिकार में लेकर शेष ऊंटों को भगा दिया। जब जयपुर महाराजा साहब को यह बात पता लगी तो उन्होंने टोल्डी वापस लाने हेतु अपने नुमाइन्दे भेजे परन्तु मैड़ गाँव के शासकों ने टोल्डी देने से मना कर दिया। इस बात पर मैड़ के शेखावतों एवं जयपुर महाराजा के बीच भीषण युद्ध हुआ जिसमें मैड़ के शेखावतों की पराजय हुई और जयपुर राज्य द्वारा शेखावतों से नायला छीन लिया गया।

विराटनगर– एक परिचय

मैड़ गाँव से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में विराटनगर नाम का पुराना कस्बा है जिसका प्राचीन नाम बैराठ है। यह नगर प्राचीन मत्स्यराज की राजधानी रहा है जो जयपुर से लगभग नब्बे एवं शाहपुरा से सत्ताईस किलोमीटर की दूरी पर जयपुर–अलवर सड़क मार्ग पर स्थित है।

विराटनगर नाम से प्राय: लोगों को भ्रम हो जाता है। विराटनगर नामक एक टाउन नेपाल की सीमा में भी है। बिहार के जोगबनी से विराटनगर नेपाल जाया जाता है, किन्तु नेपाल का विराटनगर महाभारतकालीन विराटनगर नहीं है।

जयपुर जिले का मैड़ गाँव के पास में स्थित यह विराटनगर कस्बा वही विराटनगर है जहाँ पर पाण्डवों ने अपने अज्ञातवाश का समय व्यतीत किया। यह स्थान पौराणिक, प्राग्ऐतिहासिक, महाभारतकालीन, गुप्तकालीन तथा मुगलकालीन महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने अन्तर में समेटे हुए है।

चारों ओर से सुरम्य पर्वत श्रेणियों से घिरे इस कस्बे में पुरातात्विक अवशेषों की सम्पदा बिखरी पड़ी है, या भूगर्भ में समायी हुई है। विराटनगर में पौराणिक शक्तिपीठ, गुहाचित्रों के अवशेष, बौद्ध मठों के भग्नावशेष, अशोक का शिलालेख एवं मुगलकालीन भवन विद्यमान हैं। अनेक जलाशय एवं कुण्ड इस क्षेत्र की शोभा बढाते हैं।

विराटनगर के निकट सरिस्का राष्ट्रीय व्याघ्र अभयारण्य, भर्तृहरी का तपोवन, पाण्डुपोल, नलदेश्वर और सिलीसेढ़ जैसे रमणीय तथा दर्शनीय स्थल लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। विराटनगर में प्राचीन श्वेताम्बर जैन मन्दिर, केशवराय मन्दिर, पावनधाम श्री पंचखण्डपीठ, मुगल द्वार का छत्री भवन, जैन निशि मन्दिर उद्यान, मनसा मन्दिर, बीजक पर्वत और सुरम्य गणेश गिरि की प्राकृतिक गणेश प्रतिमा के दर्शन हृदय पर अमिट छाप छोड़ते हैं। उत्तर दिशा में फैली छींतोली की विशाल मानवनिर्मित झील और छोटे कुरुक्षेत्र की सर्पिल जलवाहिकाएं हर किसी के मन को मोह लेती हैं।

विराटनगर के उत्तर में बीजक की पहाड़ी है जिसके ऊपर दो समतल मैदान हैं जिसके मध्य में एक गोलाकार परिक्रमायुक्त ईंटों का आयताकार एवं चारदीवारी से घिरा हुआ मन्दिर था। इस मन्दिर के गोलाकार भीतरी द्वारा पर लकड़ी के सत्ताईस खम्भे लगे हुए थे। यह बौद्ध मन्दिर गोलाकार ईंटों की दीवार से बना हुआ था जिसके चारों ओर सात फीट चौड़ी गैलरी है। इस गोलाकार मन्दिर का प्रवेश द्वारा पूर्व की ओर खुलता हुआ 6 फीट चौड़ा है। बाहर की दीवार एक फीट चौड़ी एवं ईंटों से बनी हुई है। इसी प्लेटफार्म पर बौद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणियों के चिंतन-मनन करने हेतु श्रावकगृह बने हुए थे। यहां बनी 12 कोठरियों के अलावा अन्य कई कोठरियों के अवशेष भी विद्यमान हैं। इस प्लेटफार्म के बीच में पश्चिम की ओर शिलाखण्डों को काटकर गुहा-गृह बनाया गया था जो दो तरफ से खुलता था। इसमें भी भिक्षु-भिक्षुणियों के निवास का प्रबन्ध किया गया था।

विराटनगर की बुद्ध-धाम बीजक पहाड़ी पर स्थित इस मन्दिर के प्रवेश द्वारा पर एक चट्टान है जिस पर भब्रू (भाभरू) शिलालेख उत्कीर्ण है। यह शिलालेख पालि एवं ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ है जिसे सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया ताकि जनसाधारण उसे पढ़कर तद्नुसार आचरण कर सके।

(।।।) सांगीतिक पृष्ठभूमि [1]

पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास के एक वर्ष का समय राजा विराट के यहां नौकर-चाकर बनकर व्यतीत किया था। उस दौरान महान् धनुर्धारी अर्जुन ने वृहन्नला के वेश में राजा विराट की पुत्री उत्तरा को

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 48-57

संगीत एवं नृत्य की शिक्षा प्रदान की एवं महाबली भीम पखावज बजाते थे। संभवत: यही कारण है कि वर्तमान मैड़-विराटनगर अँचल में आज भी संगीत अपने पल्लवित स्वरूप में सुनने-देखने को मिलता है।

पाण्डवों का रहस्य खुलने पर राजा विराट की पुत्री उत्तरा ने अर्जुन के व्यक्तित्व एवं उसकी कला से प्रभावित होकर जब उसके समक्ष विवाह-प्रस्ताव रखा तो अर्जुन ने यह कहकर उसे अपनी पुत्रवधू बनाना स्वीकार किया कि उसने उसे संगीत एवं नृत्य की शिक्षा दी है अत: गुरू होने के नाते वह उसके पिता के समान है। अर्जुन द्वारा उत्तरा को दिया गया यह नीतिगत उपदेश आज भी मैड़-विराट अँचल की धरोहर है ।

इस क्षेत्र में कई ऋषियों ने तपस्या की है। आँगिरस ऋषि एवं महाराजा भर्तृहरी की तपोभूमि भी यहीं है जहां साधु संतों ने धर्म का प्रचार किया और महान् धनुर्धारी अर्जुन ने वृहन्नला के भेष में उत्तरा को संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान की थी। शायद यही कारण है कि संगीत यहां के जनजीवन में इतना रच-बस गया है कि इस अँचल के मंदिरों में आज भी प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को सत्संग होते हैं जिनमें गाँव के प्रत्येक वर्ग एवं समुदाय का व्यक्ति सहभागिता करते हैं। इन गाँवों की कुछ स्वैच्छिक मण्डलियां सी गठित हो गई हैं जिनके सदस्य स्वत: ही ऐसे सत्संगों में पहुंच जाया करते हैं।

'....यों तो मैड़-विराटनगर अँचल के लगभग हर गाँव में ही देवी-देवताओं के समक्ष भजन-कीर्तन होते रहे हैं तथा मेलों एवं पर्वों एवं वार-त्यौंहारों पर भी संगीत, नृत्य एवं लोकनाट्यों के आयोजन होते थे परन्तु श्री सियावरजी का मन्दिर ऐसे आयोजनों का प्रमुख केन्द्र रहा है जहाँ पर वहां के महन्त श्री गणेश दास जी महाराज द्वारा हर शनिवार एवं मंगलवार को हनुमान जी के मन्दिर में भजन-कीर्तन के आयोजन किये जाते थे तथा रामनवमी को आयोजित मेले में संगीत, नृत्य , ख्याल एवं कुश्ती की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी कराया जाता था।

मैड़ गाँव में श्री सियावरजी का प्राचीन मंदिर है जहाँ महन्त गणेश दास महाराज द्वारा संझारती के बाद सत्संग प्रारम्भ कराया जाता जिसके बाद गाँव के ठाकुर साहब (बाबोसा) महन्त श्री सुवा लाल , सोना राम नायक, सद्दी लाल -किशना राम धाणका, भूरजी वैद्य जी , कीरों के सूरदास, बिहाजर का घींसा गूजर, प्रभाती लाल दहिया, आदि की टोली हारमोनियम, ढोलक, मंजीरे आदि के साथ गायन, वादन एवं नृत्य की ऐसी-ऐसी प्रस्तुति देते कि भोर होने तक किसी का मन भरता ही नहीं था। '[1]

****

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : विरह का इन्द्रधनुष (2008), पृ. 26

द्वितीय अध्याय

मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूंढाड़ी लोकगीत

(।) लोकगीत का अर्थ एवं परिभाषा[1]

'लोकगीत' दो शब्दों के मेल से बना है जिसमें प्रथम शब्द 'लोक' और दूसरा शब्द 'गीत' है। 'लोक' के अनेक अर्थ हैं जिनमें देखना, जनसामान्य,संसार, पृथ्वी, स्वर्ग, पाताल तथा उर्ध्वलोक (भूलोक, स्वलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक) और सात अधोलोक (अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल। संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ), मानवगण, समूह, समुदाय, प्रेश, प्राश्त, प्राणी, समाज, साधारण चलन या प्रथा, लौकिक व्यवहार, दृष्टि, चितवन, यश 7 या 14 की संख्या प्रमुख हैं। इसी तरह से 'गीत' शब्द का निर्माण 'गै' धातु से 'रक्त' प्रत्यय लगाकर होता है जिसका अर्थ है 'गाया हुआ'। इन दोनों शब्दों को मिलाकर लोकगीत बना है जिसका अर्थ है लोक द्वारा गाया हुआ। यहां हम लोक का अर्थ जनमानस, समुदाय, मानव समूह, समाज एवं सामान्यत: दृष्टिगोचर होने वाले व्यवहार से ले सकते हैं। अत: हम इसे जनसामान्य द्वारा गाया हुआ जो सामान्यत: गाता हुआ देखा जाता हो, इस अर्थ में ग्रहण कर सकते हैं। हम इन्हें सामान्यत: अभिजात वर्ग से दूर रहने वाले आदिवासियों में, कृषकों में, महिलाओं और ग्रामीण जनता के विशेष रूप से देख-सुन सकते हैं। संभवत: इसीलिए कतिपय विद्वानों ने इन्हें ग्रागीत के नाम से भी सम्बोधित किया है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार-

'ग्रामगीत आर्येतर सभ्यता के वेद हैं।'

श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु के अनुसार- 'ग्रामगीत संभवत: वह जातीय आशु कवित्व है, जो कर्म या क्रिया के आधार पर रचा गया है। गीत का उपयोग जीवन के महत्वपूर्ण समाधान के अतिरिक्त
मनोरंजन में भी होता है।'

बाबू गुलाबराय के मतानुसार-'लोकगीत के निर्माता प्राय: अपना नाम अव्यक्त रखते हैं और कुछ में वह व्यक्त भी रखता है, वे लोक-भावना में अपना भाव मिला लेते हैं। लोकगीतों में होता तो निजीपन है, किन्तु उनमें साधारणीकरण एवं सामान्यता कुछ अधिक रहती है।'

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के अनुसार- 'लोकगीत का कोई एक सर्जक नहीं होता वरन् व्यवहार में इन्हें विभिन्न सामाजिक अवसरों पर गाया जाता है।'

1 डॉ. योजना शर्मा : राजस्थानी लोकगीतों की संरचना (2008) पृ. 18-19

(।।) मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूंढाड़ी लोकगीत :-

(क) संतों के गीत[1]

महन्त श्री गणेश दास महाराज द्वारा रचित गीत

महन्त श्री का अनुमानित जन्म - वर्ष 1913

जन्म स्थान - विराटनगर

महन्त श्री गणेश दास महाराज ने अपने जीवनकाल में कई ढूंढाड़ी गीत एवं भजनों की रचना की थी तथा इस पुस्तक के लेखक को श्री सियावरजी के मन्दिर में आयोजित सत्संगों में महन्त महाराज के श्रीमुख से सुने गये उपरोक्त गीतों का स्मरण हो आया तथा मैड़ गाँव के श्री बाबू लाल शर्मा के सहयोग एवं अपनी कल्पना से उन्होंने 15 जुलाई 2011 को महाराष्ट्र के धूलिया शहर में महन्त श्री के उपरोक्त गीतों को पूर्ण रूप प्रदान किया।

गीत संख्या 1

पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

राम, लक्ष्मण एवं सीता का वनगमन। जैसे ही राम जी ने सीता को कुटिया में नहीं पाया तो बेचैन हो गये और उनकी हर जगह तलाश करने लगे। दिन भर सीता माता का पता नहीं चला अत: वे अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं कि सीता कहां गई दीपक जलाकर मन्दिर में फिर से देख लो। लक्ष्मण मन्दिर एवं आश्रम के बगीचे का चप्पा-चप्पा छान मारता है परन्तु सीता माता नहीं मिली और दोनों भाई विलाप करते हुए उन्हें ढूंढने निकल पड़ते हैं।

मूल गीत

स्थाई- लछमण सिया कौण हडी रै

अन्तरा दीपक जोर मन्दर मैं देखो, कै कोई कूँट खड़ी रै

लछमण सिया कौण हडी रै

अन्तरा सारो मन्दर छाण मार्‌या, सिया कोनै मिली रै

---

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011), पृ. 48-57

लछमण सिया कौण हडी रै

अन्तरा बाग टटोळ्यो च्यारूं कूणां, सिया कैडे छुपी रै

लछमण सिया कौण हडी रै

अन्तरा पत्तो-पत्तो छाण मार्‌या, सिया कैडे गई रै

लछमण सिया कौण हडी रै.....

(दोनों भाईयों का विलाप करते हुए आगे प्रस्थान)

गीत संख्या 2

पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

यह सत्य है कि प्राणी मात्र में अभिमान होता है और मनुष्य तो अभिमान का पुतला होता है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों तक में अभिमान का अंश देखा गया है। रावण के अभिमान ने तो उसका सर्वनाश ही कर दिया। इस गीत में अहंकार के दुष्परिणाम को बताते हुए मनुष्य को यह सन्देश दिया है कि तुम अपने उपलब्ध साधनों का जनहित में प्रयोग करो न कि उनकी उपलब्धि पर अभिमान करो क्योंकि प्राणी मात्र का जीवन नश्वर होता है इसलिए उस पर अभिमान करना उचित नहीं। और इसी नीति से एक सामान्य सा व्यक्ति भी अपने जीवन में उँचाइयों को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार इस गीत में गूदडी के लाल होने के सत्य को उजागर किया गया है।

मूल गीत

स्थाई क्या भूलिया दिवाना दुनियाँ में सार नाहीं,

दिन च्यार का तमाशा आख़िर शुमार नाहीं

अन्तरा सूरज हैं चाँद तारे, सागर हैं फ्हाड भारे

खेवेंगे नाव सारे, जिनका शुमार नाहीं

स्थाई क्या भूलिया दिवाना दुनियाँ में सार नाहीं,

दिन च्यार का तमाशा आख़िर शुमार नाहीं

अन्तरा राजा वज़ीर रानी, पण्डित सुमीर ज्ञानी

होवेंगे सब पानी, जिनका शुमार नाहीं

स्थाई क्या भूलिया दिवाना दुनियाँ में सार नाहीं,

दिन च्यार का तमाशा आख़िर शुमार नाहीं

अन्तरा शेर चीता व हाथी, बाज़ होंगे धराशायी

नोंचेंगे गिद्ध उनको, जिनका शुमार नाहीं

स्थाई क्या भूलिया दिवाना दुनियाँ में सार नाहीं,

दिन च्यार का तमाशा आख़िर शुमार नाहीं

अन्तरा कोयले के हैं बनें, हीरे बनें हीरे

गूदडी के लाल यहाँ, जिनका शुमार नाहीं

जिनका शुमार नाहीं जिनका शुमार नाहीं

गीत संख्या 3

पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

मनुष्य के जीवन के सौ वर्ष माने गये हैं, परन्तु वास्तव में उसका जीवन काल कोई निश्चित नहीं है। अत: उसे अपने जीवनकाल में मोह-माया एवं दुर्व्यसनों से मुक्त रहकर सदैव ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। इससे न केवल उसे इस जन्म में ही मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलेगी अपितु उसका आगे का जीवन भी सुधर जायेगा। इस गीत के माध्यम से मनुष्य को अच्छे कार्य करते हुए भगवान का स्मरण करने का सन्देश दिया गया है।

मूल गीत

स्थाई ओम् हरिनाम सुमर सुखधाम जगत् में जीणां दोय दिन का

जीणां दोय दिन का जगत् में रहणा दोय दिन का

अन्तरा कौडी-कौडी माया जोड़ी, गरभ किया धन का

स्थाई ओम् हरिनाम सुमर सुखधाम जगत् में जीणां दोय दिन का
जीणां दोय दिन का जगत् में रहणा दोय दिन का
अन्तरा सभी छोड़कर चल्या मुसाफ़िर, बास हुया बन का
स्थाई ओम् हरिनाम सुमर सुखधाम जगत् में जीणां दोय दिन का
जीणां दोय दिन का जगत् में रहणा दोय दिन का
अन्तरा यौवन नारी लगे पियारी, मौज़ करे तन का
स्थाई ओम् हरिनाम सुमर सुखधाम जगत् में जीणां दोय दिन का
जीणां दोय दिन का जगत् में रहणा दोय दिन का
अन्तरा काल बलि का लगे तमाचा भूल जाय ठन का
ओम् हरिनाम सुमर सुखधाम जगत् में जीणां दोय दिन का
जीणां दोय दिन का जगत् में रहणा दोय दिन का.....

श्री सुवा लाल महन्त उर्फ विश्वनाथ शर्मा द्वारा रचित गीत

भजन [1]

कहो धन्य गणपति दास नै.. हनुमत नै.. ध्यावै.. छै.. ,
हनुमत नै.. ध्याव.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर ॥
ध्यान देके सुनो जरा, दास का सुनाऊं हाल,
भक्ति में भरपूर कहिए , धर्म को सके ना टाल,
कहां कैसा काम किया, सबको बताऊं हाल।
जयपुर जिला बीच एक, मैड़ नामक ग्राम कहिए ,
मैड़ से पश्चिम की ओर, बाणगंगा धाम कहिए ,
बाणगंगा ऊपर वन में, सियावर स्थान कहिए ,
सियावर के पास मित्रों, हनुमत का दरबार कहिए।
हो गये प्रेम में लीन, बन गये भक्ति के शौकीन,
करी जब उन्नत की तरकीब,

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : कर्मयोगी (2008) , पृ. 32

प्रेम से हनुमत ल्यावै छै....।

कहो धन्य गणपति दास नै.. हनुमत नै.. ध्यावै.. छै.. ,

हनुमत नै.. ध्याव.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर॥

वर्तमान बड़ के नीचे, पहले भी स्थान था,

सादा से पत्थर के रूप, छोटा सा हनुमान था,

छोटी सी गुमटी थी यहां, और ना मकान था,

जा के देखी मूरती, फिट पाँच का अंदाज था,

कीमत पूरी पाँच सौ, और पाँच का विकास था,

इससे ज्यादा गाड़ी भाड़ा, बैल खर्चा और था,

किवाड़ों की जोड़ी, चूना, पट्टी- भाटा और था।

कर दिया खर्च कुछ और,

जिमाकर विप्रों को उस ठौर,

हो गये राजी नन्द किशोर,

हो गये राजी नन्द किशोर,

रकम शुभ काम लगावै छै..।

कहो धन्य गणपति दास नै.. हनुमत नै.. ध्यावै.. छै.. ,

हनुमत नै.. ध्याव.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर॥

ध्यान देके सुनो जरा, पूजा का बताऊं नेम,

जायफल का भोग लागे, पूजा होवे तीनूं टेम,

बिना तोल घी का देख्या, करता देख्या हमने होम,

धूप की महकार देखी, और देख्या भारी प्रेम,

छोटे-छोटे बाल बच्चे, रोग में हुए थे जाम,

उनके खाली झाड़ा देवें, औषधि का ले ना नाम,

झाड़ा से ही ब्हाल होवे, ऐसा देख्या हनुमान।

सुनो तुम, नाम गणेश ही दास,

करत है हनुमत की अरदास,

करेंगे हनुमत बेड़ा पार,

करेंगे हनुमत बेड़ा पार,

भजन विश्वनाथ बणावै छै..।

कहो धन्य गणपति दास नै.. हनुमत नै.. ध्यावै.. छै.. ,

हनुमत नै.. ध्याव.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर॥

महन्त श्री गणेश दास महाराज की दिनचर्या, सेवा-पूजा एवं उनके द्वारा असाध्य रोग से पीड़ित रोगियों के रोग का निदान करने सम्बन्धी क्रिया कलापों का वर्णन ग्राम मैड़ के विद्वान श्री विश्वनाथ शर्मा उर्फ श्री सुवा लाल महन्त ने उपरोक्त भजन के रूप में लिपिबद्ध किया है। यह भजन ग्राम मैड़ के आस पास के गाँवों में आयोजित सत्संग एवं जागरणों में आज से लगभग पच्चीस-छब्बीस वर्ष पूर्व तक बड़ी श्रद्धापूर्वक गाया जाता था।

इस भजन के रचयिता श्री विश्वनाथ शर्मा दीर्घावधि तक महन्त श्री गणेश दास महाराज के निकट सम्पर्क में रहें थे।

अन्य संतों के लोकगीत

1. स्थाई मैं तो उन संतों का हूं दास

जिन्होंने मन मार लिया

अन्तरा

आपा मार जगत् में बैठे नहीं किसी से काम

उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं

संत कहो चाहे राम + स्थाई

मन मार्‌या तन बस किया जी

भई भरमना दूर

बाहर तो कुछ दीखत नाहीं

अन्दर झलकत नूर + स्थाई

प्याला पी लिया हरि नाम का

छोड़ जगत् से मोह
म्हांनै सतगुरू ऐस्या मिल गया
सहज मुक्ति गई होय + स्थाई
नरसिंह जी के सतगुरू स्वामी
दिया अमीरस प्याय
एक बूंद सागर में मिल गई
कहा तो करैगो यमराज + स्थाई

2. स्थाई मिनख जुआरो बंदा ऐलो मत खोवै
सुबरत कर लै जुवारा नै,
पापी कै मुख सैं राम नहीं निकळै
केसर घुळ री गारा मैं

अन्तरा

भैंस पदमणी नै गैणो पैरायो
कांईं जाणै भापड़ी पहरबा नै
पहणबो ना जाणै वा तो ओढबो ना जाणै
ऊमर खोदी गोबर गारा मैं + स्थाई
गधी बिचारी नै घाघरो पहनायो
कांईं जाणै भापडी पहरबा नै
पहरबो नै जाणै वा तो निरखबो नै जाणै
जा लोटी गळयारा मैं + स्थाई
अमृत पियां अमर व्हिया जोगी
पी गयो कच्चा पारा नै
भूरे नाथ भरोसा रब का
ढूंढ लियो अपणा मायरा मैं + स्थाई

(ख) जोगियो द्वारा गाये जाने वाले भर्तृहरी आदि के गीत

गीत संख्या 1

स्थाई मैड़ की सड़कां कै माळै रिपटण व्हैरी छै
कैंयां आऊं रै भरतरी बाबा बिरखा जोर देरी छै।

अन्तरा

भरतरी महाराज थारै दो बर आऊंगी
भूरी भैंस का बदला मैं भूरी भैंस ल्याऊंगी + स्थाई
भभूळ्या को कांईं ऊठै आँधी रेला मैं
म्हारा भीजणा की डाँडी बोल चाल मेळा मैं + स्थाई
जीजो साळी जायं बोलता दोनी गैला मैं
आगै जीजो पाछै साळी ले परसाद मेळा मैं + स्थाई
भर भर मूठी राख रमावै कंचन काया मैं
जोगी बण्यो भरतरी बाबो बड की बैठ छाया मैं + स्थाई

गीत संख्या 2

स्थाई मैं तो आऊंगी भरतरी थारै मेळा मैं
साथ की लुगायां मिल गई गैला मैं

अन्तरा

मैं दुखियारी थारै दौड़ी–दौड़ी आई
गुमट्यां कै ओलै बाबा दरसण पाई
अर ल्यायी फूल पताशा धर थैला मैं + साथ की लुगायां ....
पान सेर की करूं कढ़ाही
पुवा पापड्यां को भेग लगाई
ल्यायी ल्यायी रै भेंट थारा मेळा मैं + साथ की लुगायां ....
झालर शंख नगारा बाजीं

भादवा मैं मेळो भरतरी को लागै

जावीं लोग लुगाई दोन्यूं जोडा सैं + साथ की लुगायां ....

गीत संख्या 3

स्थाई भारी कूदी मेळा मैं सुणैगो जद मारैगो

अन्तरा

सजर घरां सैं आई कर सोळा सिणगार

बणी बेशरम हो गई हुई बावनाबार

जारै बाळ्या जीजा वा म्हांनै क्यांटै मारैगो + भारी कूदी मेळा मैं...

मुश्किल सैं नम्बर आवै या मिनखां की काया को

सणिया लूगडी कै नीचै कबजो धूप छाया को

खा लै पी लै मौज उडा लै वा भी बात बिचारैगो + भारी कूदी मेळा मैं...

जीजो च्युप्प हो गयो

ना बोल्यो शरम को मार्‌यो

गलती व्है गइयी खैबा मैं + भारी कूदी मेळा मैं...

गीत संख्या 4

स्थाई आँगी ओढणी नींका धर ली घाल थैला मैं

मेरी माई मोडै खिंदाई

अँधेरी व्हैगी रात गैला मैं

अन्तरा

खैर्‌या छा मान्यो कोनै तू घरकां की बात

मान्यो कोनै बण्यो हटीलो उलठी कर दी रात

छोरो गयो छै सासरै या मोडै पहला मैं + मेरी माई....

अतरा ही मैं पोंछकर छोरो दी आवाज

माँ भी राजी व्है गई सुणी भरतरी महाराज
नींकां माँ पिछाणगी छोरा का हेला नै + मेरी माई....
खोल किंवाड बार नै आई ब्यौरा पूछ्या फेर
अतरा दिन तक रुक गयो आज भी कर दी देर
मैं सोची तू चल्यो गयो होगो मेळा मैं + मेरी माई....

(।।।) मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों की विशेषताएं

1. कथानक की पूर्णता

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक गीत में एक कथानक पूरा होता है जिससे जहाँ एक ओर जनसामान्य को इनके पठन, श्रवण एवं इन पर आधारित नृत्य-नाट्य प्रस्तुतियों को देखकर आनन्द की प्राप्ति होती है वहीं दूसरी ओर इन गीतों को लिखने की सार्थकता भी सिद्ध होती है। वरिष्ठ कत्थक नृत्य गुरु आशा जोगलेकर के अनुसार-

'..... एक विशेष ख़ूबी जो इन गीतों में देखने को मिलती है वह यह कि हर गीत एक पूरी की पूरी कथा को बताता है इसलिए शर्मा जी के अधिकांश गीतों पर नृत्य नाटिकाएं तैयार कर प्रस्तुत की जा सकती हैं। हालांकि अभी तक कैलाश जी ने अपने कई गीतों पर आधारित ढूंढाड़ी नृत्यों को अपने नाटक 'तुक्के का बादशाह', 'आधुनिक यमलोक', 'कार्यवाहक हलवाई', 'लड़ी मैड़ की', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', 'मेरी लाडो पढेगी', 'मोती मैड़ के' आदि में शामिल कर देश के विभिन्न भागों में इनके अनेक सफल प्रस्तुतीकरण किये हैं परन्तु नाट्य जगत् में इन गीतों पर नृत्य नाटिकाएं तैयार कर प्रस्तुत किये जाने की पर्याप्त सम्भावनाएं हैं और इसके लिये नृत्य गुरुओं को पहल करनी चाहिये।'[1]

2. रस, छंद एवं अलंकार

इन गीतों में रस, छंद एवं आलंकारिक समायोजन के साथ कथानक का विस्तार होता है जिससे श्रोता, दर्शक एवं पाठक आत्मविभोर होकर न केवल आनन्दित ही होता है अपितु उनके मन पर इन गीतों का अमिट प्रभाव अंकित हो जाता है।

1 सम्पादिका- रेणुका इसरानी : कर्मपथ (2011) , पृ.251-52

3. नाटकीय तत्वों की विद्यमानता

इन गीतों में कथानक की पूर्णता होने के कारण नाटकीय तत्व अपने पूर्ण स्वरूप में उपस्थित हैं, अत: नाट्य या नृत्य नाटिकाओं के अनुसार ये गीत सार्थक प्रतीत होते हैं। वरिष्ठ कत्थक नृत्य गुरु आशा जोगलेकर के अनुसार–

'.....अभी तक कैलाश जी ने अपने कई गीतों पर आधारित ढूंढाड़ी नृत्यों को अपने नाटक 'तुक्के का बादशाह', 'आधुनिक यमलोक', 'कार्यवाहक हलवाई', 'लड़ी मैड़ की', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' आदि में शामिल कर देश के विभिन्न भागों में इनके अनेक सफल प्रस्तुतीकरण किये हैं परन्तु नाट्य जगत् में इन गीतों पर नृत्य नाटिकाएं तैयार कर प्रस्तुत किये जाने की पर्याप्त सम्भावनाएं हैं और इसके लिये नृत्य गुरुओं को पहल करनी चाहिये।' [1]

4. ग्रामीण जीवन का चित्रण

इन गीतों में ग्रामीण एवं लोक संगीत के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक सामाजिक परिवर्तन, वहाँ के खान–पान, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, चार–त्यौंहार, सामाजिक मान्यताओं आदि का चित्रण कर ग्राम्य जीवन के लगभग हर पहलू को समाहित किया गया है। डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा ने अपने नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों के माध्यम से ग्राम्य जीवन की जीती जागती तस्वीर उभारकर प्रस्तुत कर दी है जो उनका सर्वथा मौलिक प्रयास है। इन गीतों में आज से लगभग सत्तर–अस्सी वर्ष पूर्व तक प्रयोग में लाये जाने वाले उन शब्दों का मौलिक रूप में प्रयोग कर उन्हें उभारने का प्रयास किया गया है जो ग्रामवासियों द्वारा बहुलता से अपनी बोलचाल में प्रयुक्त किये जाते थे, परन्तु आज के विकास के अहंकार एवं चकाचौंध में जो लुप्त होते जा रहे हैं।

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 68–70

तृतीय अध्याय

मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत

(।) नवसृजन का अर्थ एवं परिभाषा [1]

नवसृजन का अर्थ

सृजन का शाब्दिक अर्थ है सृजन करना, और इस प्रकार नवसृजन का तात्पर्य किसी नव निर्माण से लिया जा सकता है। साहित्य की किसी विधा के माध्यम से किसी नवीनतम विचार, घटना अथवा परिस्थिति का उद्‌घाटन ही नवसृजन कहलाता है।

नवसृजन में साहित्य के परम्परागत रूप विधान को नई अन्तर्वस्तु के माध्यम से नवोन्मेष स्वरूप मिलता है जो समाज के लिये उपयोगी होता है। प्रयोग नवोन्मेष एवं नवसृजन के प्रतीक हैं जिनका विरोध किया जाना विकास के मार्ग में अपरोध पैदा करना है।

नवसृजन के विरोध में जहां एक ओर विकास की गति अवरुद्ध हो जाती है वहीं दूसरी ओर परम्परा के विरुद्ध खडे होना अतीत की विराट यात्रा के श्रेष्ठ से वंचित होना है। यह जीवन एक अत्यन्त लम्बी एवं क्रमिक यात्रा का वर्तमान है जो अतीत से प्राप्त हुआ है और भविष्य की ओर उन्मुख है। अतीत के श्रेष्ठ को सहेजते हुए नया कुछ सृजित करके ही उन्नत भविष्य की ओर आगे बढ़ना संभव है।

मानव के चित्त में उसके जीवनानुभवों, विवेक-अन्तर्दृष्टि-कल्पनाशीलता और चिन्तनशीलता के व्यवहार से जो अन्तर्वस्तु प्राप्त हुई है और जिसे अभिव्यक्त करने के लिये उसका चित्त छटपटाता रहता है उसका प्रकटीकरण ही नवसृजन है।

विधाओं और रूप विधानों का वैमनस्यतापूर्ण विरोध खडा करना नवसृजन के लिये घातक है। जड़ता से प्रेम नवसृजन के विरूद्ध है। परम्परागत विधान में परिवर्तन होता ही रहा है। आज जो गीत लिखे जा रहे हैं वे वैसे ही नहीं लिखे जा रहे हैं जैसे छायावादी काल में लिखे जा रहे थे। आज जो गज़लें लिखी जा रही हैं वैसी ही नहीं लिखी जा रही, जैसे गालिब और मीर लिखते थे। और गालिब और मीर ने वैसी ही गज़लें नहीं लिखी जैसी फारसी और अरबी की मूल गज़लें हुआ करती थीं। सब कुछ नहीं बदला, परन्तु बहुत कुछ बदला है और यह बदलाव ही नवसृजन कहलाता है।

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 68

नवसृजन की परिभाषा

जब हम समकालीन सृजन के सम्बन्ध में नवसृजन के समग्र आकलन की बात करते हैं तो हमारा मानना यह भी है कि नवसृजन मूल्यों की संस्थापना है जिसका सम्बन्ध हासिए पर डाल दिये गये वर्गों की अस्मिता की लड़ाई से है।

काव्य के सन्दर्भ में हम यह कह सकते हैं कि इसमें रचनाकार के जीवन के अनुभवों को उसके द्वारा संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिसमें सर्जक की यथार्थपरक कल्पना तथा कल्पनापरक यथार्थ का समावेश होता है। कविता जीवन का भावपक्ष है जिसे कवि अपने अनुभवों की आँच में तपाकर कलाकृति के तौर पर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। यही नवसृजन है।

(।।) नवसृजन की आवश्यकता एवं महत्व [1]

सृजन, पुनः सृजन, सिंचन और संहार प्रकृति का शाश्वत नियम है। नित नूतनता आनंद का स्रोत है। पतझड में वृक्ष एवं लताओं पत्ते झड़ जाया करते हैं और वसंत में नवीन कोमल किसलयों से, फूलों से भरकर नव रूप धारण कर झूम उठते हैं। उनकी इठलाहट देखकर हर किसी का मन आनंदित हो उठता है। मानो वे हर किसी को यह संदेश दे रहे हों कि तुम भी जीवन का कूड़ा-कचरा नष्ट कर नवसृजन कर जीवन को आनन्द से भर लो। ऐसा यह नवसृजित जीवन तुम्हारे अतिरिक्त औरों को भी आनंद से पूरित कर देगा।

विष में रासायनिक परिवर्तन कर उसे जीवनदायिनी औषधि का रूप देने से लोगों की जान बचायी जाती है जो नवसृजन के ही कारण संभव हो पाता है।

मनुष्य के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं तथा उसे कठिन परिस्थितियों के बीच से भी गुजरना पडता है। नवसृजन ही वह शक्ति है जो उसे विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में समभाव से ठहरने एवं उसकी उदासीनता दूर करने में सहायक होती है और जीवन में आनन्द का संचार होता है।

नवसृजन के अभाव में मनुष्य के जीवन में अशान्ति बढ़ती है और वह अपने कार्यों का तनावग्रस्त स्थिति में निपटान करने को जूझता रहता है।

नवसृजन व्यक्ति विशेष के मौलिक विचारों का पुंज होता है और ईश्वर सदैव नये और मौलिक

---

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 68

विचारों के साथ होता है। यदि व्यक्ति सच्चे मन से अपनी कल्पना को आकार देता है तो इसी का परिणाम नवसृजन होता है जो हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायक होता है।

प्रत्येक व्यक्ति प्रतिभा का धनी होता है तथा उसमें दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने के गुण भी होते हैं परन्तु सफल वही हो पाता है जो अपने जीवन के हर पल को नवसृजन का रूप प्रदान करता है। माइकिल एंजिलो की चित्रकारी, ग़ालिब की गज़लें, रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता, मीरा की भक्ति आदि इसके जीते-जागते उदाहरण हैं।

(।।।) डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत

(क) डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व [1]

साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। अगर समाज है तो साहित्य है। यदि समाज ही अपने अस्तित्व में नहीं है तो साहित्य के होने न होने का कोई औचित्य भी नहीं है। इसके विपरीत साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। कोई भी राष्ट्र तब तक उन्नति नही कर सकता जब तक उस राष्ट्र का साहित्य उच्चाकोटि का न हो।

साहित्य और साहित्यकारों का अटूट सम्बन्ध है। साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। साहित्य का जन्म वहां होता है जहां आत्माभिव्यक्ति की तीव्र कामना होती है। इसलिए बिना किसी विवाद के कहा जा सकता है कि साहित्यकार की रचनाओं में मुख्य रूप से उसकी आत्मसत्ता व व्यक्तित्व का प्रभाव परिलक्षित रहता है। वैसे भी साहित्यकार अत्यधिक भावुक और संवेदनशील होता है। वह अपने परिवेश में होने वाली घटनाओं और क्रिया-कलापों से आम जनमानस की अपेक्षा अत्यधिक प्रभावित रहता है। एक समर्पित साहित्यकार वही होता है जो जनहित से जुड़कर कार्य करता है, आदमी की पीड़ा को अंतर्चेतना के धरातल पर स्पर्श करता है। उसके दर्द की अभिव्यक्ति तथा भावना को उभारने के लिए सीधा व सपाट रास्ता मुहैया करवाता है। इस दृष्टि से कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने प्रशंसनीय कार्य किया है, जो उन्हें विशिष्ट बना देता है। इनका समग्र साहित्य बड़ा ही प्रभावकारी एवं मार्मिक है। इन्होंने जिस यथार्थ को भोगा है, उसी सच्चाई को अपनी लेखनी के माध्यम से अपने साहित्य में उकेरा है।

---

1 कहानीकार कैलाश चन्द्र शर्मा- एम.फिल. शोध प्रबन्ध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय वर्ष 2008 से साभार

जीवन परिचय—

जन्म—साहित्य के उत्कृष्ट साधक व कर्मयोगी साहित्यकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी का जन्म 19 जुलाई सन् 1957 को राजस्थान प्रान्त के मैड़ ग्राम में हुआ। कैलाशचन्द्र शर्मा जी को अपने जन्म के समय के सम्बन्ध में मतभेद है। आपको अपनी माता जी से केवल इतना ही पता चल पाया है कि जिस दिन आपका जन्म हुआ उस दिन बाणगंगा का मेला था और तिथि के हिसाब से यह मेला प्रतिवर्ष उतरते वैशाख की पूर्णिमा के दिन लगता है। जब आपने विद्यालय में प्रवेश लिया तो गुरुजी ने अपने हिसाब से कल्पना कर आपकी जन्म तिथि 19 जुलाई सन् 1957 लिख दी और तब से समस्त सरकारी प्रमाण पत्रों में यही तिथि आपकी जन्मतिथि मानी जाने लगी।

माता-पिता—कैलाशचन्द्र शर्मा जी के पिता श्री गणेश दास जी ग्राम मैड़ में स्थित श्री सियावरजी के मन्दिर में महन्त थे। वे जीवन-यापन के लिए कृषि कार्य भी किया करते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन भगवत्-भक्ति एवं जनसेवा में व्यतीत किया। उन्हें अपने जीवनकाल में अपने पुत्रों की ओर से कोई सुख न मिला। ऐसे समाजसेवी एवं परोपकारी व्यक्ति का 29 मार्च 1980 को निधन हो गया। कैलाशचन्द्र शर्मा जी की माता श्रीमती नारायणी देवी गृहकार्य में दक्ष एक विदुषी महिला थी। परन्तु वे आप मातृ स्नेह से वंचित ही रहे क्योंकि आपकी माँ अधिकतर अपने पीहर टोडा (जयपुर) में ही रहा करती थी।

शिक्षा—कैलाशचन्द्र शर्मा जी की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम मैड़ में स्थित राजकीय श्रीराम प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय में हुई। आप प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे और अपनी कक्षा में अव्वल आते रहे। आठवीं की परीक्षा पास करने के उपरान्त आपने शाहपुरा (जयपुर) के राजकीय श्री कल्याण सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में जीव-विज्ञान विषय लेकर प्रथम श्रेणी से नौवीं कक्षा पास की। इसके उपरान्त आपने जयपुर के पोद्दार उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश लिया परन्तु दसवीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर नौकरी हेतु कलकत्ता चले गया। वहां पर आपका मन न लगा और नौकरी छोड़कर वापस जयपुर आ गए और स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में ऐच्छिक विषय हिन्दी लेकर द्वितीय श्रेणी से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आपने दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुर से प्रथम श्रेणी में हायर सेकैण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की और अपने पिता की प्रेरणा से वाणिज्य महाविद्यालय जयपुर

से बी. कॉम. एवं तत्पश्चात राजस्थान विश्वविद्यालय से एम. कॉम. की पीरक्षा पास की।

सन् 1982 में आपने पंजाब नैशलन बैंक में कार्य ग्रहण किया एवं नौकरी करते हुए एलएल. बी., सी. ए. आई. आई. बी., डिप्लोमा इन लेबर ला एण्ड पर्सनल मैनेजमेंट, सर्टिफिकेट इन रूरल बैंकिंग, सर्टीफिकेट इन कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, एम. ए. (हिन्दी), पीएच. डी. तथा डी. लिट्. की उपाधियां प्राप्त की। आपने भातखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई तथा वृहद् गुजरात संगीत समिति अहमदाबाद की संगीत एवं नृत्य विशारद परीक्षाएं भी पास की।

विवाह और सन्तति—कैलाशचन्द्र शर्मा जी का विवाह 8 जून सन् 1982 को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के प्रो. डॉ. ईश्वर सिंह जी शर्मा की जयेष्ठ पुत्री रेनूरानी के साथ सम्पन्न हुआ। आपके एक पुत्री काजल और एक पुत्र अभिषेक है। दोनों ने कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग की परीक्षा पास की है तथा दोनों ही संगीत, नृत्य एवं नाटक के प्रतिभाशाली कलाकार हैं। आपकी पत्नी श्रीमति रेनू जी त्रिवेणी कला संगम जयपुर की संस्थापक सदस्य एवं वर्तमान में अध्यक्ष हैं जबकि काजल और अभिषेक इस संस्था के प्रथम विद्यार्थी रहे हैं।

संघर्षमय जीवन—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अपने छात्र जीवन को पूरा करने में जिस यातनामय संघर्ष को झेला, उसका स्वाद बहुत कड़वा है, फिर भी आपने किसी से याचना नहीं की। जब तक आपके पिता जी जीवित रहे तब तक उन्होंने आपकी शिक्षा के खर्चो की पूर्ति का पूरा-पूरा बन्दोबस्त किया। आपको यह भी पता था कि आपके पिता जी आपकी पढ़ाई के लिए आर्थिक साधन किन कठिनाईयों से जुटाते थे। इस तपस्या को आपने आपने पिता की जीवनी 'कर्मयोगी' लिखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अध्ययन के समय काफी बाधाएं झेली फिर भी इन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में आपने किसी से याचना नहीं की । आपके पिता जी ने अपने जीवनकाल में आपके अध्ययन में आने वाली हर बाधा को दूर करते हुए आपको सहारा दिया।

आजीविका—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अपनी एम. कॉम की शिक्षा पूरी करने के पश्चात जयपुर के एक प्राईवेट स्कूल में अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् आपने कुछ

समय आडवाणी एण्ड सन्स जयपुर (एक्सपोर्ट कम्पनी) में लिपिक का कार्य किया तथा वर्ष 1980 में राजस्थान वित्त निगम जयपुर में अस्थाई लिपिक के रूप में लगभग एक वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् दी गंगानगर केन्द्रीय सरकारी बैंक के प्रधान कार्यालय में एक वर्ष तक लिपिक के रूप में अपनी सेवाएं देने के उपरान्त 14 अगस्त 1982 में पंजाब नैशनल बैंक में लिपिक के रूप में कार्यग्रहण किया और वर्तमान में आप इस बैंक में वरिष्ठ अंकेक्षक के रूप में कार्यरत हैं। आपको कृषि कार्य करने का भी शौक है। ग्राम मैड़ में स्थित अपनी 24 बीघा पक्की कृषि भूमि पर आप दो स्थाई नौकरों की सहायता से कृषि कार्य करवाते हैं।

साहित्य सृजन (रचना संसार)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अल्पायु में ही साहित्य सृजन करना प्रारम्भ कर दिया था। जब आप आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तो विरोधी गुट के साथियों को चिढ़ाने के लिए तुकबन्दी किया करते थे, जो आपके वर्तमान लेखन का आधार बनी । आपने अपनी इस धरोहर को अपने काव्य-संग्रह 'तरुणाई' में यत्र-तत्र प्रस्तुत किया है। आपकी सर्वप्रथम कहानी 'चेहरे असली नकली' एवं कविता 'वस्तु-पात्र सम्बन्ध' वाणिज्य महाविद्यालय जयपुर की पत्रिका 'व्यावसायिका' में प्रकाशित हुई जिससे आपको प्रोत्साहन मिला और आप निरन्तर लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ते ही चले गये।

संगीत, नृत्य एवं नाटक—लेखन के साथ-साथ आपका व्यक्तित्व नाट्य एवं नृत्य विधा से भी जुड़ा रहा आपने जयपुर घराने के वरिष्ठ नृत्यगुरु स्व. श्री मांगीलाल जी पँवार से कत्थक नृत्य की प्रारम्भिक शिक्षा लेने के बाद श्री राजेन्द्र गंगानी, स्व. श्री तीरथ राम आजाद आदि गुरुओं से समय-समय पर कत्थक नृत्य की बारीकियां सीखकर न केवल अपने अनेक शिष्य शिष्याओं को कत्थक नृत्य की शिक्षा प्रदान की अपितु जयपुर, जोधपुर, भरतपुर गाजियाबाद आदि अनेक स्थानों पर अपनी शिष्य-शिष्याओं के साथ विभिन्न मंचों पर प्रस्तुतीकरण भी दिया। उल्लेखनीय है कि आपकी शिष्या श्रीमती रीना शर्मा ने इन्दिरा कला संगीत विशविद्यालय, खैरागढ़ की वर्ष 2003 कीं विश्वविद्यालय की बी.डान्स की योग्यता सूची में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। नृत्य के क्षेत्र में आपके इस योगदान को कथक नृत्य गुरु श्रीमती आशा जोगलेकर एवं श्री राजेन्द्र गंगानी ने 'कर्मपथ' (डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा का बहुआयामी सृजन) पुस्तक हेतु

प्रस्तुत अपने आलेखों में उजागर किया है।

आपने अब तक लगभग डेढ़ दर्जन नाटकों की रचना की, उनके मंचन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी तथा नाट्य निर्देशन जैसे महान् दायित्व का भी निर्वहन अत्यन्त कुशलता से किया। अपने इन सुरूचीपूर्ण कार्यों को गति प्रदान करने हेतु आपने अपनी पत्नी श्रीमती रेनूरानी के सहयोग से सन् 1995 में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की स्थापना की जहां पर अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं के केन्द्र व्यवस्थापक के रूप में संचालन करना एवं वर्ष 2001 में त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय, जयपुर की स्थापना कर उसमें इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की विद् डिप्लोमा एवं बी.डान्स तक की परीक्षाओं हेतु कत्थक नृत्य विषय का शिक्षण प्रदान कर परीक्षाओं का संचालन करना आपकी सांगीतिक अभिरूची का परिचायक है। 4 नवम्बर 1998 को आपके कुशल संयोजन में न्यू गेट से रवीन्द्र मंच, जयपुर तक एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विशाल संगीत रैली का आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश से लगभग सात सौ संगीत-विद्यार्थियों एवं संगीत प्रेमियों ने पद्मश्री विश्वमोहन भट्ट एवं संगीतज्ञ स्व. श्री नारयणराव पटवर्धन के नेतृत्व में सहभागिता की। आप अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई की गायन की विशारद एवं कत्थक नृत्य की अलंकार तक की परीक्षाओं के प्रायोगिक परीक्षक के रूप में भी संगीत एवं नृत्य जगत् को अपनी सेवाएं देते रहे हैं। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग में समय-समय पर एम.ए. कक्षाओं के विद्यार्थियों को अवैतनिक अतिथि संकाय के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी हैं।

मान-सम्मान (सम्मान एवं पुरस्कार)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी बिना किसी प्रतिफल प्राप्त करने की आकांक्षा के निरंतर साहित्य, संगीत, नाट्य एवं नृत्यकर्म में सलंग्न रहे हैं। अपने सुरूचिपूर्ण कार्यों को मूर्त्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से आपने अपनी पत्नी श्रीमति रेनू रानी शर्मा के सहयोग से वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम की स्थापना की और उसकी छाया तले रंगमंच से जुड़कर अनेक नाटकों का प्रस्तुतीकरण किया, जिसके परिणामस्वरूप आपको राजस्थान कला केन्द्र भरतपुर द्वारा 'कलाश्री', अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा 'नाट्य कला सम्मान' तथा इण्डियन फार्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा ढूँढाड़ी बोली में किये गये शोधपरक कार्य एवं नाट्य क्षेत्र में किए

गए उल्लेखनीय कार्यों हेतु सम्मानित किया गया।

कार्यक्षेत्र (अभिरूचि)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है अर्थात् आपका लेखन एक विधा तक सीमित नहीं रहा। आप कहानीकार होने के साथ-साथ नाटककार, उपन्यासकार और कवि भी हैं। लेखन के साथ-साथ रंगमंच और संगीत में भी आपकी रूचि रही है। आप सक्रिय रूप से रंगकर्म में संलग्न रहे हैं तथा कई नाटकों का निर्देशन एवं उनमें अभिनय किया है। संगीत के क्षेत्र में आपने वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम जयपुर एवं वर्ष 2001 में त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय जयपुर की स्थापना की। आप अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल मुम्बई की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं के केन्द्र व्यवस्थापक एवं मण्डल के 67 वें दीक्षांत समारोह के संयोजक रहे हैं। आप मंडल की संगीत विशारद तक की परीक्षाओं के क्रियात्मक परीक्षक एवं मंडल के आजीवन सदस्य हैं। आपने विभिन्न प्रांतो में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं बैठको में सहभागिता की है।

व्यक्तित्व—व्यक्तित्व से तात्पर्य है व्यक्ति का अपना वैशिष्ट्य या निजीपना। वस्तुत: व्यक्तित्व का निर्माण व्यक्ति विशेष के अनुभवों और परिवेशीय प्रभावों से होता है। दशरथ ओझा ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है-''व्यक्तित्व का अर्थ है मानसिक प्रक्रिया में अनुरूपता अथवा एकरूपता का निर्माण।''

''मनुष्य की सबसे बड़ी पहेली उसका अपना व्यक्तित्व है।''

रामबाबू गुप्त के अनुसार-''व्यक्तित्व पूर्णतया एक आदर्श है। यह आत्मज्ञान है।''

आइनैक के अनुसार-''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, वृद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा बहुत स्थाई और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निधारित करता है।''

व्यक्तित्व शब्द को अंग्रेजी में 'पर्सनेलिटी' कहा जाता है। पर्सनेलिटी शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'परसोना' से हुई है जिसका अर्थ है मुखौटा।

किसी भी व्यक्ति की तरह साहित्यकार का व्यक्तित्व भी द्विपक्षीय होता है-बाह्य और आन्तरिक पक्ष। बाह्य पक्ष में पहनावा, रंग-रूप, खान-पान आदि आते है, जबकि आन्तरिक पक्ष

में स्वभाव, व्यवहार और साहित्यिक रचनाओं में प्रदत्त भावना और शैली को लिया जा सकता है। जीवित साहित्यकार के व्यक्तित्व का चित्र प्रस्तुत करना अत्यन्त जटिल कार्य होता है, क्योंकि परिस्थिति के अनुसार वह अपने अन्दर नये भाव और प्रभाव ग्रहण करता है। वह परिस्थितियों और भावों के अनुकूल ही रचना कार्य करता है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य का व्यक्तित्व गतिशील होता है। कैलाशचन्द्र शर्मा जी जैसे व्यक्तित्व पर मेरे जैसी शोधार्थी द्वारा लिखना तो सूरज को दीपक दिखाने के समान है। कलम की शक्ति, विचारों और सिद्धांतों को अपना ध्येय मानकर सृजन एवं सेवा में कार्यरत कैलाशचन्द्र शर्मा जी एक ऐसे आलोक स्तम्भ हैं जो दूर-दूर तक लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

आकृति एवं वेशभूषा—कैलाशचन्द्र शर्मा जी साधारण-सी कद-काठी वाले व्यक्ति हैं। यद्यपि आपका जन्म एक साधारण कृषक परिवार में हुआ है अत: आपकी आकृति से आपके ग्रामीण होने का अनुमान सहज रूप से लगाया जा सकता है। आपकी वेशभूषा सामान्य है। नौकरी पर जाते हुए आप पैन्ट-शर्ट पहनते हैं। पहनावे में किसी भी प्रकार का दिखावा आपको पसन्द नही है। जब आप अपने गाँव जाते है तो सफेद धोती-कमीज, सिर पर लाल पगड़ी एवं पैरों में बाड़ीजोड़ी की जूतियाँ पहनना आपको रूचिकर लगता है। संगीत एवं नाटक के कार्यक्र मों में सहभागिता के अवसर पर आप कुर्ता-पाजामा पहनते हैं। आप सक्रिय रंगकर्मी एवं कत्थक नृत्य के प्रदर्शनकारी कलाकार हैं, अत: कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के समय आप पात्रानुसार वेशभूषा धारण करते हैं।

खान-पान—कैलाशचन्द्र शर्मा जी विशुद्ध रूप से शाकाहारी हैं। माँसाहार, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि से आपको सख्त घृणा है। सामान्यतया आप चाय नहीं पीया करते, परन्तु छाछ-राबड़ी, बाजरे की खिचड़ी, लहसुन की चटनी एवं दाल बाटी चूरमा आदि आपको बेहद पसंद हैं।

स्वभाव—कैलाशचन्द्र शर्मा जी स्वभाव से विनम्र शिष्ट और मृदुभाषी हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। प्रत्येक कार्य को आप बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। आपका जीवन अनुशासन के साँचे में ढ़ला है।

शालीनता—कैलाशचन्द्र शर्मा जी सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का दिखावा आपको पसन्द नहीं है तथा औपचारिकताओं से वे कोसें दूर हैं। आप अपनी बैंक की सेवा में भी एक सहज व्यक्ति के रूप में रहते हैं। आपको कभी भी पद का अभिमान नहीं रहा। यही कारण है कि जब आप प्रबन्धक के पद पर कार्यरत थे तो कई लोगों ने आपको अधिकारी की पदोन्नति के लिए आवेदन करने की सलाह दी।

स्वाभिमानी व्यक्तित्व—कैलाशचन्द्र शर्मा जी अपने पिता महन्त श्री गणेशदास जी महाराज की ही भांति स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आपने न तो अपने सिद्धांतों के विरुद्ध कोई कार्य किया और न ही अपनी परिस्थितियों को किसी के सामने उजागर किया। शायद इसी गुण ने आपको समान्य लोगों की पंक्ति से परे शीर्ष पर ले जाकर खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई। जब किसी कठिन परिस्थिति से निपटने में आप स्वयं को असहाय महसूस करते तो सब कुछ भगवान के भरोसे छोड़ दिया करते और तब निश्चय ही उस कठिनाई से आप आसानी से निजात पा लिया करते।

पुरुषार्थ एवं आशावाद—कैलाशचन्द्र शर्मा जी की सबसे बड़ी विशेषता उनका आशावादी होना है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आप आशा, विश्वास और पुरुषार्थ से परिपूर्ण रहते हैं तभी तो आपका लेखनकार्य निरन्तर जारी है। हमने हालातों और परिस्थितियों की मार से टूट कर अनेक लेखकों को राह छोड़ते हुए देखा है या फिर गहरी निराशा और अवसाद के दौर से गुजरते हुए। परन्तु कैलाशचन्द्र शर्मा जी आशावादी हैं और आप में परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता है।

दृढ़ इच्छा शक्ति—कैलाशचन्द्र शर्मा जी दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न एक कर्मठ इन्सान हैं। जब आपके मन में किसी कार्य को करने की इच्छा उत्पन्न होती है तो आप तब तक चैन की साँस नही लेते जब तक कि उस कार्य की सिद्धि न हो जाए। इस मार्ग में आने वाली किसी भी प्रकार की कठिनाई से आप तनिक भी विचलित नहीं होते। आपका मत है कि डूबता हुआ व्यक्ति यदि डरकर जीने की उम्मीद खो बैठता है तो वह जरूर डूबेगा पर ऐसे समय में किसी के जीने की इच्छा बलवती हो तो शायद वह बच सकता है। इस सम्बन्ध में आपके तरुणाई

काव्य संग्रह की कविता 'पथ के राही' खरी उतरती प्रतीत होती है-

'जाग उठ इन्सान पल-पल बीतता जाता, राह है सुनसान इस पर क्यों नहीं आता।
कर इसे आबाद क्यों तू सो रहा पगले, धैर्य मन से धार राही राह पर चल दे। .....'

प्रकृति प्रेमी—कैलाशचन्द्र शर्मा जी का जन्म एक ऐसे गाँव में हुआ जो प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित है। आपका निवास स्थान सियावरजी का मन्दिर बाणगंगा नदी के तट पर स्थित है, जहां पर खजूर, आम, जामुन आदि के हजारों पेड़ सैकड़ों वर्षों से स्थिर रूप से खड़े हैं। मोर, पपीहे, कोयल,चिड़ियाओं की चहचाहट एवं गाय, भैंस, बछड़ों के रम्भाने का स्वर निरन्तर रूप से आपको आनन्दित करता है, जो आपके ढूंढाड़ी गीतों, कविताओं, कहानियों, नाटकों एवं उपन्यासों में देखा जा सकता है।

सृजन की प्रेरणा—डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा जी को साहित्य सृजन की प्रेरणा अपने जन्म स्थान के इस प्राकृतिक वातावरण एवं स्कूल के सहपाठियों से मिली जिसके परिणामस्वरूप आपने अपनी प्रारम्भिक कविताएं एवं कहानियाँ लिखी। जीवन में पग-पग पर आपको कठिनाईयों का सामना करना पड़ा जो आपके लेखन के आधार बने। इस बात को आपने अपने काव्य संग्रह 'तरुणाई' में अभिव्यक्त भी किया है।

वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम जयपुर द्वारा आयोजित बालनाट्य प्रशिक्षण शिविरों हेतु अच्छे नाटकों की कमी ने आपको नाटक लिखने हेतु प्रेरित किया तथा वर्ष 2005 में भरतपुर की कत्थक नृत्य की उनकी शिष्या श्रीमती रीना शर्मा ने आपको ढूंढाड़ी गीत लिखने हेतु प्रेरित किया जिनका आगे चलकर आपने अपने नाटकों के मंचीय प्रस्तुतीकरण में समायोजन किया। आपने रीना शर्मा के घर पर अपना प्रथम गीत 'टर्रै' लिखा तथा आगे चलकर उनकी शिष्य ज्योति कटारा के सहयोग एवं प्रेरणा से ढूँढाड़ी गीतों का सृजन एवं ध्वनि संयोजन किया जिसके परिणामस्वरूप फरवरी 2006 में आपके ध्वनि संयोजन में 'त्रिवेणी कैसेट-सी. डी.' जारी हुई।

कृतित्व

हिन्दी साहित्य के प्रबुद्ध साहित्यकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी की साहित्य यात्रा विभिन्न कृतियों जैसे कहानी, नाटक, उपन्यास, काव्य,जीवनी जैसी विधाओं से होकर गुजरती है। इनकी

सफलता और प्रसिद्धि लेखक के लेखन कर्म की सार्थकता को सिद्ध करती है तथा श्रेष्ठता को भी स्थापित करती है।

नाटक

कार्यवाहक हलवाई , नामकरण , अफसर का कुत्ता, मन चंगा तो कठौती में गंगा, लड़ी मैड़ की, तुक्के का बादशाह, पेड़ हमारे मित्र, छोटा बेगारी, जेसे को तैसा, जंगल मित्र, कंस , आधुनिक यमलोक, वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान, देख जात के ठाठ, मानवता की पुकार, मेरी लाडो पढ़ेगी, अग्निभूत।

उपन्यास

अभिव्यक्ति, विरह का इन्द्रधनुष

कहानियाँ

'अबला की मंजिल' कहानी-संग्रह—अबला की मंज़िल, माधवी, साक्षात्कार, मौन समर्पण, चेहरे असली-नकली, नवजीवन, कर्ज़, दीपक की रोशनी, पैमाना, भटकती आत्मा, ताबीज़

'ओवरकोट' कहानी-संग्रह—ओवरकोट, रींछ भगवान, बोरे की लाश, खान दोस्त, भिखारिन माँ, बछड़े की अरदास , उपकार का बदला , सवारी का मोह, स्वाभिमान

जीवनी

कर्मयोगी

शोध प्रबन्ध

नरेश मेहता का गद्य साहित्य (पीएच. डी.)

हिन्दी मराठी नाटकों का रंग वैशिष्ट्य : समकालीन भारतीय सन्दर्भ (डी. लिट्.)

समीक्षा

मोहब्बत का सफरनामा (कवि श्री जगदीशचन्द्र पण्ड्या की गजलों की पुस्तक)

हादसों के संस्करण (मराठी रंगकर्मी एवं अभिनेता श्री विजय कदम की पुस्तक 'हलकं फुलकं')

सम्पादन

स्मारिका—त्रिवेणी कला संगम जयपुर, वर्ष 1995 एवं 1998

पी.एन.बी. सन्देश (पंजाब नैशनल बैंक, जयपुर अँचल की गृह पत्रिका)

बैंक ज्योति (बैंक ऑफ बडौदा के संयोजन में जयपुर बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की गृह पत्रिका)

अन्य ग्रन्थ

आधुनिक परिदृश्य में मानव संसाधन विकास एवं प्रबन्धन (पुरस्कृत)

भारतीय रंगमंच शास्त्र एवं आधुनिक रंगमंच

खण्डकाव्य

सन्तोषी माता

लेख

देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं समाचार-पत्रों में साहित्य, संगीत, नाटक एवं लोक कला सम्बन्धी विषयों पर लेखों का प्रकाशन।

कविताएँ

काव्य संग्रह 'तरुणाई' एवं अन्य कविताओं सहित लगभग 60 कविताओं का सृजन।

गीत

126 ढूंढाड़ी गीतों का सृजन एवं ध्वनि संयोजन। 50 ढूंढाड़ी गीतों की विषयवस्तु एवं भावार्थ का अंग्रेजी अनुवाद।

कत्थक एवं लोकनृत्य प्रस्तुतीकरण

रवीन्द्र मंच जयपुर, यूथ हॉस्टल जोधपुर, वी.एन. भारतखण्डे संगीत महाविद्यालय गाजियाबाद आदि स्थानों पर एकल एवं युगल प्रस्तुतीकरण।

डायरी

वर्ष 1980 में बम्बई प्रवास के दौरान लिखित।

प्रदर्शनात्मक व्याख्यान

भारतीय संगीत, नाटक एवं लोककला विषय पर आई. सी. सी. आर. नई दिल्ली हेतु प्रदर्शनात्मक व्याख्यान की वीडियो सी. डी. का निर्माण।

रंगमंच प्रस्तुतीकरण एवं निर्देशन

सक्रिय रूप से रंगकर्म में संलग्न। कई दर्जन नाटकों में अभिनय एवं उनका निर्देशन। सदैव नई टीम को लेकर सफल रहने वाले निर्देशक के रूप में जयपुर रंगमंच के ख्यात कलाकार।

दूरदर्शन प्रसारण

13 जनवरी 1997 को जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनियां' कार्यक्रम में आपके नाटक 'पेड़ हमारे मित्र' का प्रसारण।

श्री संजय दत्त माथुर के निर्देशन में 27 जुलाई 2008 को जयपुर दूरदर्शन के 'कल्याणी' धारावाहिक की आपकी जन्मभूमि गाँव मैड़ में की गयी रिकॉर्डिंग में आपका सराहनीय अभिनय जिसके प्रसारण को काफी सराहना मिली।

18 नवम्बर 2009 को श्री शैलेन्द्र उपाध्याय के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'मरूधरा' कार्यक्रम में आपके नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों में ग्राम्य जीवन एवं दर्शन सम्बन्धी आपसे हुई प्रभावशाली वार्ता के 16 दिसम्बर 2009 को हुए प्रसारण को काफी सराहा गया।

डॉ. वासुदेव शर्मा के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में 'नाट्यकला का व्यक्तित्व निर्माण में योगदान' विषय प्रसारित किये गये साक्षात्कार का 20 फरवरी 2010 को प्रसारण।

5 फरवरी 2011 को डॉ. वासुदेव शर्मा एवं श्री राजकिशोर के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में 'मेरी लाड़ो पढ़ेगी' नाटक का प्रसारण।

ऑडियो कैसेट- सी. डी.

11 फरवरी 2007 को कैलाशचन्द्र शर्मा जी के निर्देशन-स्वर संयोजन में उनके द्वारा लिखित ढूँढाड़ी गीतों की 'त्रिवेणी कैसेट- सी. डी.' श्रृंखला का लोकार्पण 'जयपुर तमाशा' के मूर्धन्य कलाकार स्व. श्री गोपीकृष्ण भट्ट द्वारा किया गया।

शोधकार्य

कुरुक्षेत्र विश्वद्यालय में आपके साहित्य पर एम.फिल. हेतु निम्नानुसार शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं :-

1. नाटककार कैलाशचन्द्र शर्मा

   शोधकर्ता : जोगेन्द्र, निर्देशक : डॉ. बाबूराम, वर्ष 2008

2. अभिव्यक्ति उपन्यास में स्त्री मनोविज्ञान

   शोधकर्त्री : कविता, निर्देशिका : डॉ. आशा अहलावत, वर्ष 2009

3. कहानीकार कैलाशचन्द्र शर्मा

   शोधकर्त्री : सुखविन्द्र, निर्देशिका : डॉ.(श्रीमती) नरेश जोशी, वर्ष 2009

इसके अतिरिक्त राँची विश्वद्यालय में आपके काव्य एवं गद्य साहित्य पर निम्नानुसार पीएच.डी. हेतु शोधकार्य प्रगति में हैं-

1. डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के काव्य में कला, संस्कृति एवं ग्राम्य जीवन

   शोधकर्ता : हरद्वारी लाल शर्मा, निर्देशिका : डॉ. यशोधरा राठौर

2. डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के गद्य साहित्य का विवेचन

   शोधकर्ता : कुलदीप, निर्देशक : डॉ. रतन प्रकाश

निष्कर्ष

कैलाशचन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। कहानी, नाटक, उपन्यास, कविताएँ, जीवनी आदि लिखकर अपनी विशिष्टता का परिचय दिया है। कैलाशचन्द्र शर्मा जी का समस्त जीवन संघर्षो में व्यतीत हुआ है, फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी और जीवन पथ पर आगे बढ़ते गये। इन्होंने देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में साहित्य,संगीत, नाटक व लोक कला सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखे तथा साथ ही दूरदर्शन से भी जुड़े रहे हैं। इनके द्वारा लिखित कई नाटकों का जयपुर दूरदर्शन से प्रसारण हुआ। लेखन के साथ-साथ रंगमंच प्रस्तुतीकरण, निर्देशन एवं संगीत में भी इनकी रूचि रही है। ये सक्रिय रूप से रंगकर्म में संलग्न रहे हैं। इन्होंने कई नाटकों का निर्देशन एवं उनमें अभिनय भी किया है। इन्होंने त्रिवेणी कला संगम एवं त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय, जयपुर की स्थापना की। विभिन्न प्रान्तों में आयोजित संगीत सम्मेलनों व बैठकों में इनकी सहभागिता रही है। वर्ष 2003 में हिन्दुस्तानी एकेडमी एवं नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया द्वारा इलाहाबाद में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'श्री नरेश मेहता का कथा साहित्यय' विषय पर किया गया आपका पत्रवाचन सराहनीय रहा।

इस प्रकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्होंने लेखन, मंचन, संगीत आदि सभी क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाया है। एक व्यक्ति में इतना सब कुछ मिलना कठिन ही नहीं, अंसभव है।

****

(ख) डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा द्वारा नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का विषयवार समग्र वर्गीकरण

1. किसान एवं मजदूर वर्ग के गीत

रूखाळी

स्थाई पुरुष : खेत मैं ढाँचो घाल्या अर पीपो लिया बाँध

स्त्री : पक्यो बाजरो, खाबै आवीं चिड़ी चुंणगला बोलां म्हे तो
हुर्‌यो हुर्‌यो हुर्‌योऽऽऽ

पुरुष : रेंखळी पोटास भर्‌योडी काँधा माळै छै

स्त्री : हाँ रै काँधा माळै छै

पुरुष : रोंझडां नै देख चलावां फोट्ट करै छै
भाग्या रोंझडा डरकर सारा , ऊपर नीचै व्है
कइयां खाबाद्‌यां म्हें रोंझ

स्त्री : हाँ रै कोनै खाबाद्‌यां

पुरुष : कइयां खाबाद्‌यां म्हें रोंझ म्हारो खेत पकर्‌यो छै
+ स्थाई स्त्री

स्त्री : कूलडां नै काळा कर अर पूतळा गाड्या

पुरुष : हाँ रै पूतळा गाड्या

स्त्री : हाथ वां का फैलर्‌या अर कपडा मरदाना
सोचीं ज्यानबर या आदमी छै ऊभो खेत मैं

पुरुष : देखो ज्यानबर सोचीं रै

स्त्री : सोचीं ज्यानबर या आदमी छै ऊभो खेत मैं
खैडे घाल देगो फाँस गळा मैं भागल्यो थे रै
+ स्थाई पुरुष

पुरुष : सगळा घर का काटर्‌या अब बाजरा को खेत

स्त्री : हाँ रै बाजरा को खेत

पुरुष : सगळा घर का काटर्‌या अब बाजरा को खेत
बांट हळाई सरपट काटां हुक्को पीतां देख
सासूजी तो हुक्को पीवै बीनण्यां बीड्यां
घूंघटा मैं छानै- छानै घूंघटा मैं छानै- छानै

स्त्री : हां रै छानै- छानै

पुरुष : घूंघटा मैं छानै- छानै पीवीं होळ्यां होळ्यां + स्थाई स्त्री

स्त्री : तावडो माथै आयो अब करल्यो थे विश्राम,

पुरुष : हां रै करल्यो थे विश्राम

स्त्री : म्हारी नणद ल्याई कलेवो रोको भाई काम

पुरुष : काम रोको रै

स्त्री : म्हारी नणद ल्याई कलेवो रोको भाई काम
छाछ- राबडी काँदा रोटी खाल्यां धोल्यो हाथ
ऊं कै पैली खेत काटां

पुरुष : हां रै खेत काटां

स्त्री : ऊं कै पैली खेत काटां सगळो हाथ्यूं हाथ + स्थाई पुरुष

गीत की पृष्ठभूमि एवं भावार्थ

हमारे देश का कृषक अपनी सामान्य स्थिति में भी कर्मशील बना रहकर कठिन परिश्रम करता रहता है। भले ही उसे अपनी फसल से अधिक आमदनी न हो परन्तु वह अपनी सामान्य दिनचर्या में प्रसन्न मन से लगा रहकर ईमानदारी से अपने कार्यों का निष्पादन करता है।

इस विषय पर बहुत ही कम लोग सोचते हैं कि किसान को अपनी इस फसल की प्राप्ति हेतु कितने प्रयत्न करने पड़ते हैं, कितना कष्ट उठाना पड़ता है। निश्चय ही अपनी फसल को घर के आँगन तक पहुँचाने में बीज बोने से लेकर सिंचाई करने, उसकी रखवाली करने,

कटाई करने और फसल निकालने तक की प्रक्रियाओं में किसान के पूरे परिवार को कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

खेतों की रखवाली करने के लिये भी किसान को अनेक प्रयत्न करने पड़ते हैं। रखवाली का एक सशक्त पक्ष पशु-पक्षियों से जुड़ा होता है और अपनी फसल को इनसे बचाने हेतु किसान अनेक प्रयत्न करता है। कभी तो वह खेतों के बीचों-बीच एक ऊँचा मचान बनाता है जिसे डोंचो (Doncha) कहा जाता है। कभी वह हण्डिया को उल्टी करके एवं उसे काला करके लकड़ी पर टाँगकर उसे इस प्रकार से आदमी का रूप दे देता है जिसे देखकर जानवरों को उस खेत में आदमी के खड़े होने का भ्रम हो जाता है और वे उससे डरकर भाग जाते हैं। किसान द्वारा निर्मित इस प्रकार की आकृति को पूतला कहा जाता है। कभी किसान गन्धक-पोटाश भरी हुई रेंखली (तमंचे जैसा हथियार) चलाकर जानवरों को भगाता है, तो कभी आवारा पशुओं को काँजी हाउस (पंचायतघर की ओर से बनाया गया आवारा पशुओं को रखा जाने का स्थान) में ले जाकर बन्द कराता है।

अपनी फसल की रक्षा के लिये कृषक परिवार के कुछ सदस्य रात्रि को भी खेत पर ही रहते हैं। उनके खाने हेतु घर से देशी घी भरी हुई रोटियाँ, दूध आदि खेत पर ही पहुँचाया जाता है

इस गीत में किसान की इसी कार्य-प्रणाली को ही प्रस्तुत किया गया है।

2. प्रकृति के गीत

गादडा-गादडी को ब्याव

स्थाई तावडा मैं मेह बरसै रोताश्या काँई बात
गादडा अर गादडी को ब्याव व्हैर्‌यो आज
च्यारूं मेरां हरियाली ही हरियाली छा री
मोर्‌या बोल र्‌ह्या छीं बन मैं सुस्या सर-सर भागीं
चालो गादडा अर गादडी का ब्याव मैं चालो

चिलको पडर्‌यो देखो धूप सैं इन्द्रधनुष बणर्‌यो
गादडा बिरादरी का गादड आर्‌या
ल्याया साथ मैं सौगात कोई गादडी आटै
कोई फूलां की माळा ल्यायो अर साथ मैं मेवा
कोई सुस्या को शिकार लियां देखो आयो रै

.....

सात का फेरा खावांगा चौद्‌हा म्हे तो
अइयां गादडो अर गादडी खैबै लाग्या
कोई आदमी पूछ्‌यो वांसै या कांईं बात रै
म्हांसै आदमी की सूझ आधी अइयां खिया वै
बोल्यो आदमी भाई थे बरसता म्हे मैं
क्यूं खावो छो फेरा या बताओ म्हांनै
बोल्यो गादडो इन्सान जा दुबक्यो घरां मैं
म्हांका बराती खावींगा नींका ऊंका खेत नै

.....

गादडी नै लेर जद बरात चाली
हुक्की-हुक्की करीं गादडा किसान देख्यो
आगो आगो भागो अइयां सै बराती बोल्या
आयो घींस्यो बाबो खेत देख माथो पकडै रै
थारी बडद्‌याऊं रै गादडो भारी करी रै
भारी करी रै
अबकै आज्यो रै
तावडा मैं म्हे बरसै तो भी अण्डे र्‌हूं रै
भारी करी रै भारी करी रै भारी करी रै

गीत की पृष्ठभूमि एवं भावार्थ

प्रकृति के चक्र का पहिया घूमते हुए किन्हीं मान्यताओं को भी उजागर करता है। ग्रामीण अँचल में ऐसी मान्यता है कि यदि बारिश के समय धूप निकली रहे तो वह गादड़ा और गादड़ी (सियार और सियारनी) के ब्याह की घटना का परिचायक है। इस गीत में गीतकार ने ऐसे अनोखे प्राकृतिक संयोग को इन्द्रधनुष में बाँधते हुए इस ग्रामीण मान्यता को सहज रूप में उजागर किया है।

3. त्यौंहार एवं सामाजिक अवसरों के गीत

जान-जनैती

स्थाई दबडक-दबडक चाल्यो ऊंट
टिकटिक-टिकटिक घोडो रै
पालणा मैं टाबर-टोळी घोडा पर असवार रै

पणदो का डूंगर माळै व्है धोळै जाय बरात गी
पंदारा सोळा ऊँट जा रि्हया च्यार पाँच जी घोड़ी
रंग बिरंगा साफा वांका साथ मैं नौटंकी जी + स्थाई
आगै-आगै तोपची गज देर्यो बँदूक
फस्सै मैं दारू नै लेर नाळी मैं गेरै
बत्ती लगतां ही देखो खुडको व्हैर्यो रै + स्थाई
ढ़ाणी-ढ़पाण्यां का सै लोग पळसै आया
कोई-कोई जान मैं देखो शामिल व्हैर्या
ल्हैड्डो जोड ल्याऊं मैं सगळा चालांगा + स्थाई

.....

जीमबाटै पंगत बैठी करां परूसगारी
रामझारा सैं हाथ धुपादै पत्तळ माळै पाणी
दो-दो लाडू पत्तळ म्हेल पाणी को सकोरो रै + स्थाई

.....

छोरा घालीं लाडू जद बीनणी नटै
घूंघटा कै मायनां सूं टच-टच करै
घूंघटो हटार बोल भाभी म्हे तो देवर ऐ + स्थाई
भाभी निजर्यां नै फेरी जिण्डे बडा बैठ्या
दब्योडी जबान मैं बोली सरम करो
जीम्यां पाछै कान खींच घूंघटो हटाऊं रै + स्थाई

.....

रात हुई ढ़ोलकी को थपेड़ो सुण्यो
मनोहर-गिर्राज की मंडळी देखांगा
नाच बाळी तनतनातन नाचै-गावै रै + स्थाई

गीत की पृष्ठभूमि

मनुष्य के जीवन में विवाह का अवसर अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। हमारे देश में विवाह के अवसर पर हर्ष औा उल्लास के साथ अनेक प्रकार की रस्में पूरी की जाती हैं। गाँवों में होने वाले विवाह तथा उस अवसर पर निभाये जाने वाले रीति-रिवाज अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। और राजस्थान के किसी गाँव में होने वाले विवाह का आयोजन। कहना ही क्या। वहाँ की छटा हर किसी के मन को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। ऐसे अवसर पर पूरा गाँव एक हो जाता है। गाँव की हर जाति, धर्म और किसी भी सम्प्रदाय के व्यक्ति ऐसे अवसर पर अपना-अपना योगदान देते हैं। ऐसे अवसरों पर निभाई जाने वाली रस्में समस्त ग्रामवासियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती हैं।

विवाह के पश्चात् समस्त गाँव वाले नवागन्तुक वधू को अपार स्नेह प्रदान करते हैं ताकि वह उस परिवार एवं गाँव में अपने आपको अकेला महसूस न करे और न ही अपने पीहर वालों से विछोह की पीड़ा को अपने अन्तर में संजोये दुखी हो ।

यही कारण है कि जब एक नववधू अपने पीहर वालों को छोड़कर अन्जानी जगह ससुराल में आती है तो उसे वह पराया नहीं लगता। कुछ ही दिनों में वह इस नये परिवार की अभिन्न सदस्या बनकर

अपने कर्तव्य एवं आचरण से घर को स्वर्ग बना देती है।

इस गीत में राजस्थान के ग्राम्य जीवन में विवाहोत्सव की रस्मों उसमें समस्त ग्रामीणों के सहयोग तथा हमारी प्राचीन परम्पराओं को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

जयपुर के पास महाभारतकालीन स्थान मैड़ गाँव है जहाँ से एक बारात पास ही के गाँव हेतु प्रस्थान कर रही है। आज से तीस-चालीस वर्ष पूर्व सामान्यत: बरात ऊँटों पर जाया करती थी जिसमें कुछ ल्हड्डु (ऊँटगाडी) भी सम्मिलित रहते थे। ऊँटों पर पालणे पड़े रहते थे जिनके दोनों ओर बच्चे और बडी उम्र के लोग वजन को बराबर-बराबर बनाये रखने के लिये बैठ जाया करते थे। ऐसा ही एक दृश्य है। इस बारात में लगभग पन्द्रह-सोलह ऊँट हैं जिन पर सजे सजाये बाराती बैठे हैं। चार-पाँच सजी सजायी घोडियां एवं घोड़े हैं जिन पर वर पक्ष के महत्वपूर्ण सदस्य एवं दूल्हे सहित उसकी मित्र मण्डली बैठी है। सभी पुरुष रंग बिरंगे साफे पहने हुए हैं। बारात के साथ नौटंकी भी चली जा रही है। आगे-आगे तोपची अपने एक हाथ में बारूद लेकर एवं उसे बँदूक की नाली में डालकर लोहे की गज से उसे ठोक रहा है। जब वह बत्ती को आग दिखाता है तो बँदूक की आवाज से आस-पास के लोगों को यह सन्देश मिलता है कि कोई बारात आ रही है। आस-पास की ढाणियों के लोग अपने-अपने घरों से निकलकर बारात को देखने के लिये आ रहे हैं। उन ढाणियों में से कोई-कोई व्यक्ति इस काफिले में बाराती के रूप में शामिल हो रहा है। कुछ लोग अपनी गाड़ी में ऊँट जोड़कर उसमें लोगों को बैठाकर बारात में शामिल हो गये। दूल्हा घोड़ी पर अपने पीछे बिंदायक को बिठाये चला जा रहा है। एक ऊँटगाड़ी में बैठे बैण्ड वाले ढोल पीटते चले जा रहे हैं। बारात के साथ में ही मनोहर-गिर्राज की नाटक मण्डली भी चली जा रही है।

वधू पक्ष के यहाँ बारात पहुँच गई। घर के मुख्य द्वार के ऊपर टंगी चिडकली पर दूल्हे ने चठिये से तोरण मारा। उसके पश्चात् दूल्हे-दुल्हन ने एक दूसरे को फूलों की माला पहनाई। अब बाराती जीमने के लिये बैठ गये। बच्चे और युवा परोसगारी कर रहे हैं। सबसे पहले छोटे-छोटे बच्चे रामझारे से पत्तल पर ही हाथ धुला रहे हैं। हाथ धोकर बारातियों ने पत्तल का पानी एक ओर फेंक दिया । अब जिमाने वालों ने एक-एक पत्तल पर दो-दो लड्डू तथा पानी के लिये मिट्टी का सकोरा रख दिया। एक अन्य व्यक्ति ने कोले (कद्दू) का साग पत्तल पर रख दिया और अन्य किसी ने मुट्ठी भर भरकर भुजिया रखना प्रारम्भ किया।

एक बच्चे ने दोने में रायता उंडेला और अन्य किसी बच्चे ने पूडियां रखी। उस पंगत में एक ओर घूँघट काढ़े वधू के पीहर पक्ष की औरतें भी जीम रही हैं। कुछ मनचले युवक जीम रही नववधुओं को लड्डू देना चाह रहे हैं। वे महिलाएं घूँघट में से ही टच-टच की आवाज़ करके लड्डू न लेने का संकेत कर रही हैं। उनमें से एक शैतान लड़के ने एक महिला से कहा कि भाभी हम तो तुम्हारे देवर हैं अत: घूँघट हटाकर ही मना कर दो। उस महिला ने उधर नज़रें घुमाई जिस ओर बडे बुजुर्ग लोग बैठे जीम रहे थे। और तब उस मनचले युवक से दबी ज़बान में कहा कि कुछ तो शर्म करो। और रही बात घूँघट हटाने की, तो वह जीमने के बाद तुम्हारे कान खींचकर बताऊंगी।

पंगत के अधिकांश लोगों ने भोजन कर लिया परन्तु कुछ लोग अभी भोजन कर रहे हैं अत: जीम चुके लोग उनके भोजन-समाप्ति की प्रतीक्षा में अपने स्थान पर ही बैठे हुए हैं। जब उन्होंने भी भोजन कर लिया तो वहीं पर चळू भरकर (कुल्ला करके) सभी के सभी एक साथ उठ गये।

रात हो गई। पास में ही ढोलकी के थपेडे सुनायी पडे। बारातियों में खुसर-फुसर होने लगी कि मनोहर-गिर्राज की मण्डली आई है चलकर उनका तमाशा देखते हैं। सब लोग वहाँ पर जाकर बैठ गये। नाचने वाली लड़की ने तन तनातन नाचना शुरू किया। सभी बाराती मण्डली का तमाशा देखकर प्रसन्न हो गये। उन्होने रात्रि को वहीं विश्राम किया।

अगले दिन प्रात:काल बारात अपने गाँव की ओर रवाना हुई। जब बारात वापस अपने गाँव पहुँच गई तो गाँव में हल्ला मच गया और औरतें तथा बच्चे बहू की अगवानी करने के लिए आ गए। औरतें गीत गाने लगी, लड़कियां नाचने लगी और गाँव का नाई वर पक्ष की ओर से गाँव में जीमने का न्यौता देने चला गया।

4. रीति-रिवाज, सामाजिक मान्यता एवं मर्यादाओं के गीत

सुपातर भू

स्थाई टूट्या चाटू सैं मारी सासूजी कुण नै खूं मैं रै
परण्यो थर-थर काँपै माँ सूं अब मैं काँईं करूं बारै
उडजा कागला खैदै या सब मेरी माँ नै जाय रै
मेरी सासू छै छिंदाळ मूंनै रोजीना मारै +स्थाई
अब या तेरो घर छै बाई तेरी सासू ही तेरी माँ रै

मैं तो स्योण सैं उड़ूं छूं तू कुस्योण की खै रै +स्थाई
तेरी सासू खै ज्यो मान ऊंमैं तेरो भलो छै रै
बेटी बाप की अब कोनै तेरो सासरो घर रै +स्थाई

.....

आयो भाई सामै तेरो बाई राजी व्हैजा
ऊंनै खीज्यो सारी बात मन तेरो हळको व्हैज्या
भाई आर मिल्यो बाथ्यां भर बाई राजी व्हैगी रै
ब्याण गाबै लागी गाळ्यां म्हारै पावणो आयो
बीनणी छोड़ सारो काम तू भाई सैं बतळा लै
सासू कइयां चोखी बोलै या सोचै छै बाई
कइयां नणद करै सारो काम कागला काँईं व्हैर्‌यो रै
म्हारी भैण करै काँईं काम ब्याण जी नींकां घर को
भाई पूछै ऊंकी सासू नै बाई धडको खावै जी

.....

म्हारी सासू चोखी रै
सासू चोखी रै
म्हारी सासू चोखी रै

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

कौआ एक चालाक पक्षी के रूप में कुख्यात है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों एवं साहित्य में कौव्वे को न केवल एक चालाक पक्षी ही बताया गया है अपितु इसे चारों वेदों का ज्ञाता भी माना गया है जो हमें यह सन्देश देता है कि मनुष्य कितना ही पढ़–लिख जाय परन्तु यदि उस का आचरण सही न हो तो वह उसे विद्वता के स्थान से धराशायी कर निम्नकोटि में ले जा खड़ा कर देता है। हमारे देश के ग्रामीण जनजीवन में कौवे के इन दोनों ही रूपों को सहजता से स्वीकारा गया है। इस गीत में किसी अवसर विशेष

पर कौवे के पाण्डित्य की विवेचना की है।

एक अनुशासनप्रिय सास घर ग्रहस्थी का दायित्व ठीक से निभाने हेतु अपनी पुत्रवधू के साथ कड़ा रुख अपनाती है जिससे दुखी होकर बहू कौवे का आह्वान करके उससे कहती है कि हे कौवे तू उड़कर जा और मेरी माँ से मेरी सास के इस निर्मम व्यवहार की शिकायत कर दे।

जनश्रुतियों के अनुसार कौवे को चारों वेदों का ज्ञाता माना गया है। वह बहू को सलाह देता है कि मैं तो उड़ता भी हूं तो शुभकार्य के लिये ही, और जो तुम मुझे ग़लत काम के लिये जाने को कह रही हो इससे तो तुम्हारा अहित ही होगा जो अपशकुन का द्योतक है। अत: हे बहू, तुम अपनी सास का कहना मानो क्योंकि इसी में तुम्हारा हित है। जब किसी का विवाह हो जाता है तो उस स्त्री का पीहर नहीं अपितु ससुराल ही घर माना जाता है। इस बात पर बहू कौव्वे से कहती है कि हे कौव्वे, यह भी तो देख कि मैं तो ससुराल को ही अपना घर मानकर दिन-रात कोल्हू के बैल की भाँति काम में जुटी रहती हूं। परन्तु फिर भी मेरी सास मुझे गालियां देती है। अत: अब तो मेरी बात मान ले और मेरे पीहर जाकर सारी बातें ज्यों की त्यों बता दे। इतने में ही सामने से बहू के भाई को आता हुआ देखकर कौव्वा उससे कहता है कि हे भद्रे, तुम्हारा भाई आ रहा है और ये बातें तुम उसी से कहना जिससे तुम्हारा मन हल्का हो जायेगा। बहू के भाई को आया देखकर सास उसके भाई की खूब आवभगत करती है तथा अपनी बहू को आदेश देती है कि वह घर के सारे कामकाज छोड़कर अपने भाई से बातचीत करे तथा अपने पीहर की कुशलक्षेम पूछे।

जब बहू का भाई सास से अपनी बहन के कार्य-व्यवहार एवं आचरण की जानकारी चाहता है तो सास अपनी बहू की खूब प्रशंसा करते हुए कहती है कि मेरी बहू तो सुपातर (सुपात्र) है और घर की लक्ष्मी है। बहू अपनी सास के इस व्यवहार से विह्वल होकर मन ही मन अपनी भूल पर पश्चाताप करती है। अब कौव्वा पुन: बहू से पूछता है कि हे भद्रे, यदि तुम कहो तो मैं अब उड़कर तुम्हारे पीहर चला जाऊं और तुम्हारी माँ से तुम्हारी सास की शिकायत कर दूं। तब बहू कौव्वे को कहती है कि नहीं भाई। मेरी सास तो बहुत अच्छी है और इस बात के लिये मैं तुम्हारा धन्यवाद ज्ञापित करती हूं कि तुमने मेरी आँखें खोल दी। यह इसलिए संभव हो सका क्योंकि तुम चारों वेदों के ज्ञाता हो। अत: हे कौव्वे, मैं तुम्हारे ज्ञान के प्रति नतमस्तक हूं।

इस गीत के माध्यम से न केवल एक पक्षी से मानव के सम्बन्ध को दर्शाया है अपितु एक छोटे से काल्पनिक घटनाक्रम के माध्यम से मानव को आदर्श का जो पाठ पढ़ाया है वह अपने आप में अद्वितीय

है।

5. ग्रामीण खान-पान को दर्शाने वाले गीत

रेवड की बैठक

स्थाई **पुरुष** पोखर तेरा रेवड नै तू खेतां बैठा दै
दो बोरी तूनै नाज देद्यां बात मान लै

पुरुष तीन बोरी नाज द्यो तो बैठा द्यूंगो जी
बिणज्यारी का कपडा लत्ता और द्योगा जी
ब्याळू म्हे सब थारै घरां ही आऽर करांगा जी

.....

स्त्री घाघरो अर लूगडी लियां बिन कोनै मांनूं
घी बूरा भी साथ दीज्यो रोटी मैं बणाऊं
बिणज्यारी बोली बाबा सूं भेड् ल्याऊं रै

पुरुष सात आठ सौ भेड दो खच्चर अर दो कूकरा
बळदां माळै टाबर बैठ्या बाजीं वांका घूघरा
भेड्यां की गळघण्ट्यां बाजैं टन टनाटन टन्न रै

.....

पुरुष तीन भाटा चूला आटै पोखर बाबो ल्यायो
कूण्डा मैं चून नै घाऽल बिणज्यारी ओऽसण्यो
टाबर वांका सूखी सूखी लकड्यां लार्‌या रै

स्त्री माटी का तऽवा सूंताऽर चूलै सेकी रोटी
मोटी मोटी फूलगी लागैं कतरी चोखी
कोरी ही दे दै म्हांनै माँ लागै चोखी रै

गीत की पृष्ठभूमि

भारत देश में परम्परागत रूप से कार्य करने का अपने आपमें एक अनूठा तरीका रहा है। फिर चाहे यह प्रणाली सामाजिकों द्वारा अपनाई गई हो या खानाबदोश श्रमजीवियों द्वारा परन्तु यह न केवल कार्य की दक्षता का ही नमूना रहा है वरन् आत्मीयता, मानवीय संवेदनाओं एवं आपसी सम्बन्धों की मिसाल भी रहा है। गडरिये, बंजारे आदि ऐसी ही श्रमजीवी जातियाँ रही हैं। जिनमें से भी बंजारे तो अपना परिवार पशुधन आदि को साथ ही लेकर चलते थे और जगह-जगह डेरा बनाकर अल्पकाल के लिए रहते, अपने पशुधन का पोषण करते और फिर आगे चल देते। वर्ष भर उनका यही क्रम चलता रहता। परन्तु इस क्रमिक शृंखला में वे प्राय: वर्ष-दो वर्ष में जब पुन: उसी पुराने वृत्त की परिधि के सहारे-सहारे डेरे डालते चलते तो पुराने परिचितों से मिलना-भेंटना स्वाभाविक ही था। अत: विभिन्न स्थानों के निवासी भी इन बंजारों के पुनर्मिलन में आत्मिक लगाव ही महसूस किया करते मानो कोई पुराना बिछुड़ा साथी मिल गया हो। बंजारे भी उन लोगों से मिलकर अपने घर में प्रवेशने जैसी अनुभूति करते।

इस गीत में इन्हीं संवेदनाओं एवं अनुभूतियों को महसूस किया जा सकता है।

गीत का भावार्थ

पोखर नाम का बंजारा अपनी भेड़ों को लेकर मैड़ गाँव की सीमा पर पहुँच गया। वह अपने रेवड़ को बाणगंगा नदी की पुलिया के पास श्री सियावरजी के मन्दिर के जंगल में रोककर पास ही में लग रहे महन्त श्री गणेशदास जी महाराज के दरबार में पहुँच गया। उसे देखकर महन्त श्री ने उसकी एवं उसके परिवार की कुशलक्षेम पूछने के पश्चात् उससे अनुरोध किया कि वह अपने रेवड़ को सामने खेत में बैठा दे जिसके बदले वे उसे दो बोरी अनाज दे देंगे। पोखर ने महन्त जी से कहा कि रेवड़ को खेत में बैठाने का तीन बोरी अनाज लूंगा। बँजारिन (उसकी पत्नी) के पहनने के कपड़े भी देने पड़ेंगे और आज रात को उसके परिवार को खाना भी खिलाना पड़ेगा। महन्त जी के दरबार में बैठे कीरों के रामला बाबा ने कहा कि ऐसा कर अढ़ाई बोरी अनाज ले लेना और आज रात्रि का खाना बनाने के लिए महन्त जी पाँच सेर आटा भी दे देंगे। जा रेवड़ को ले आ। बाबा की इस बात पर पोखर बाबा की पत्नी कहती है कि रेवड़ तो हम ला रहे हैं परन्तु मैं घाघरा-लूगड़ी लिए बिना

नहीं मानूँगी और रोटियाँ तो मैं सेक लूंगी परन्तु घी-बूरा आपको देना पड़ेगा। उसकी इस अपनत्व भरी बात पर वहाँ उपस्थित सभी लोग हँस पड़े और इस प्रकार महात्मा जी की मौन स्वीकृति मिलते ही बंजारे की बाळद सामने वाले खेत की ओर चल पड़ी जिसमें लगभग सात आठ सौ भेड़ें, दो खच्चर, दो कुत्ते आगे-आगे चले जा रहे थे और बैलों पर बैठे बच्चे उनके पैरों में बजते हुए घुंघरुओं से आनन्दित हो रहे थे। भेड़ों के गले में बँधी घण्टियाँ उस जंगल के वातावरण में संगीत प्रवाहित करने लगी और देखते ही देखते बंजारे का डेरा खेत के बीचों बीच लग गया। बंजारन ने बैलों पर से अपने बच्चों को उतारा और पोखर बाबा ने खच्चरों पर से अपना सामान। अब भेड़ें भी स्वच्छन्द वातावरण में खेत से चारे के जंजूड़ खींचती हुई नाकों से फुर्र फुर्र की ध्वनि निकालने लगी।

पोखर बाबा खेत के कोने में पड़े तीन पत्थर उठा लाया और उसका चूल्हा-सा बना दिया। बंजारिन ने कूण्डे में आटा गूंधा, बच्चे खेत में से जलाने के लिए छोटी-छोटी लकड़ियाँ बीन लाये। बंजारिन ने मिट्टी के तवे पर हाथ से थापी मोटी रोटी डाली और फिर चूल्हे की आँच में सेकने लगी। देखते ही देखते रोटी फूलकर मोटी हो गई और बच्चे अपनी माँ से कहने लगे कि हमें कोरी रोटी ही दे दो साग (सब्जी) की आवश्यकता नहीं है। खाना खाकर सब सो गए। काली गहरी रात्रि में जैसे ही कहीं आवाज होती तो कुत्ते भौंकने लगते और पोखर बाबा उठकर लाठी टेके अपनी भेड़ों को देखने लगता। प्रात:काल महन्त जी ने उन्हें राबड़ी छाछ का कलेवा कराया। पोखर बाबा ने जब महन्त जी से जाने की आज्ञा माँगी तो उन्होंने कहा कि दुबारा फिर आना। बँजारों ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों से भी राम राम की और आगे चल पड़े।

इस प्रकार यह गीत ग्रामीण कार्यकलापों की प्राचीन व्यवस्था एवं आत्मीयता को दर्शाता है।

6. मानवीय संवेदनाओं के गीत

माँ की याद

स्थायी : माँ ए कइयां मैं तूं बिन र्‌हूं अब पीर भाभियां सब गाळी काढै,
जद सूं छोड़ गई तू सुरग मांय काकोजी म्हारा छानै रोवै।
काकोजी नै कोनै पूछै रोट्यां आटै भी,
तीन्यूं ठठ्ठा मारीं सागै बैठी रोजीना भाभी,

पण मैं दोन्यूं टेमां रोटी सेकूं ए म्हारा काकोजी आटै +स्थायी

.....

ताप छड्यो काँपूं थर-थर पण मांज्या बरतन सारा
मन की पीड़ा कुण नै खूं मैं भाई हुया पराया
म्हारा काकोजी कै आँसूं ढ़ळतां देख मन करै रोबा नै +स्थायी

आज पराई कर दी मूंनै काकोजी सब सोच,
जातां जातां साथ पीव कै मन मैं कोनै ए सन्तोष
कांईं काकोजी को व्हैगो अब हाल मेरै बिना ईं घर मैं
मा ए कइयां मैं जाऊं ससुराल काकोजी म्हारा छानै रोवै
म्हारा छानै रोवै म्हारा छानै रोवै ।

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

यह गीत एक ऐसी पुत्री के मन की पीड़ा को अभिव्यक्त करता है, जिसकी माँ का निधन हो गया है। परिवार में उसके पिताजी हैं जिनसे वह अपार स्नेह करती है । लड़की के तीन भाई एवं भाभियाँ हैं जो अपने ससुर को न तो रोटी बना कर देती हैं और न ही अपनी ननद से स्नेह रखती हैं। ऐसी स्थिति में पुत्री अपने पिताजी का ध्यान रखती है एवं उन्हें समय पर भोजन बनाकर खिलाती है । उसकी भाभियाँ घर के काम का कम ध्यान रखती हैं और हँसी- ठट्ठों में ज्यादा समय व्यतीत करती हैं । समय-समय पर वे अपने ससुर से बाजार की चीजें भी मंगवाती हैं तथा अपनी ननद को प्रताड़ित करती रहती हैं । यह लड़की अपनी स्वर्गवासी माँ को याद करके रोती रहती है तथा बीमार अवस्था में भी घर का सारा काम निपटाती है। उसके भाई भी अपनी-अपनी पत्नियों के वश में हैं अत: वह लड़की अपने भाईयों से भी किसी प्रकार की मदद की अपेक्षा नहीं रखती है । अपनी पुत्री की इस स्थिति को देखकर उसके पिता चुपके-चुपके रोते हैं और उसके भविष्य का ध्यान रखते हुए उसका विवाह कर देते हैं । जब यह लड़की अपने ससुराल जा रही होती है तो उसे इस बात से कोई खुशी नहीं होती अपितु अपने पिता की चिंता रहती है कि मेरे जाने के बाद मेरे पिताजी की क्या दशा होगी ।

7. परम्परागत कार्यों के गीत

कादर्‌या को बांक्यो

स्थाई पु.पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं कादर्‌या फकीर को बांक्यो बाज्यो रै–8

चालो रै चालो चालो रै चालो , चोरी व्हैगी दीखै खैडे रै – 8

पु. कादर्‌या को बांक्यो बाज्यो चोरी व्हैगी छै
चालो चालो बड कै नीचै पंचायत बैठै
डंड लींगा पंच ऊं सैं ज्यो नै पोंछ्यो रै...+ स्थाई

स्त्री जद भी चोरी व्है जद याऽ बांक्यो बाजै छै
डूंगर माळै चढ्यो कादर्‌यो फूंक मारै छै
बांक्या को मूंडो ऊपर कर जोर लगावै रै .....+ स्थाई

.....

स्त्री घींस्यो बागडी खोज देख्यो चोरां का गैला मैं
एक जगां जा रुकगो भाया, चोर छीं ईं घर मैं
बोल्यो या तो खोज चलाओ या चोरी कऽबूलो रै

पु. भीड़ जुटी ऊं गाँव मैं सुण बोल्या सारी बात,
चौकीदार बुलावो मीणो ज्यो छै पहरादार
मान्यो चौकीदार मैं चोरी कर ल्यायो रै..... + स्थाई

पु. माफी मांग्या गांव हाळा डंड लियो ऊं मीणा सूं
दियो कलेवो आया ज्यांनै बोल्यो ढांढ़ा वापिस द्‌यूं
थारा संगठन मैं शक्ति छै, या बोल्यो वा बात रै

गीत की पृष्ठभूमि

हमारे देश के गाँवों में सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार की रही है कि किसी भी संकट के समय में सब लोग एक सूत्र में बँधकर उस परिस्थिति से छुटकारा पा लिया करते थे। प्राचीन समय में किन्हीं जाति विशेष के लोग चोरी करने का कार्य किया करते थे। चाहे वह चोरी वस्तु को हो या पशुओं की, परन्तु ये पुश्तैनी चोर अपने इस कार्य में जगमाहिर हुआ करते थे। गाँवों में प्राय: इस प्रकार की चोरी रोकने के लिए प्रत्येक गाँव में मीणा जाति के एक व्यक्ति को चौकीदार नियुक्त किया जाता था और वह अपने इस कार्य के लिए हर घर से वार्षिक आधार पर अनाज लिया करता था। परन्तु वास्तविकता यह भी रही है कि ऐसा कोई-कोई चौकीदार किसी अन्य गाँव के अपने स्वजातीय बन्धु से साठ-गांठ कर अपने ही गाँव में चोरी करवा दिया करता था। ऐसी स्थिति में गाँव वाले किसी एक निर्दिष्ट स्थान पर एकत्रित होकर चोर को ढूँढने के लिए निकल पड़ते थे। इस गीत में ग्रामीण संगठन की इसी शक्ति को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व ग्राम मैड़ में क़ादर फकीर नाम का एक व्यक्ति था जो शादी-ब्याहों में बाजा बजाया करता था। जब कभी गाँव में चोरी हो जाया करती तो वह अपना बाजा लेकर गाँव की पहाड़ी पर चढ़ जाया करता और उसको जोर-जोर से बजाने लगता जो इस बात का संकेत होता था कि किसी के घर चोरी हो गई है। तब सभी ग्रामवासियों को बड़े महादेव जी के मन्दिर के सामने स्थित बरगद के पेड़ के नीचे एकत्र होना होता था। क़ादर का बांक्या बजते ही गाँव वाले पेड़ के नीचे एकत्र होना शुरू हो गए। प्रत्येक घर से एक-एक आदमी जा रहा है। घर की स्त्रियाँ अपने घर के पुरुष सदस्यों को एक कपड़े में प्याज और रोटी बाँध देती हैं तथा ओढ़ने के लिए एक कपड़ा भी दे देती हैं क्योंकि आज पंचायत लगनी है जिसमें यह निर्णय होगा कि सारे गाँव वाले एकत्र होकर चोर को ढूँढ़ने किस दिशा में जाएँगे। इस कार्य में एक-दो दिन से ज्यादा भी लग सकते हैं। बड़े महादेव जी के मन्दिर के सामने बरगद का बहुत विशाल वृक्ष़ है जिसके चबूतरे पर पंच-पटेल आकर बैठ गए तथा सामने जन समुदाय एकत्र हो गया। गाँव का पटेल बींजा बाबा बीमार था परन्तु उसको खाट में बैठाकर पंचायत स्थल पर लाया गया। बाबा ने चोरी का समस्त वृत्तान्त

सुना और यह निर्णय दिया कि चोरी का पता लगाने के लिए सामने के ''सताणा'' गाँव की ओर प्रस्थान किया जाए तथा उससे पहले 'गालास की ढाणी' से दाना मीणा को भी साथ लिया जाए। सारे ग्रामवासी चोरी का पता लगाने के लिए निकल पड़े। 'घींसा बागड़ी' रास्ते में चोरों के पदचिह्न देखकर एक स्थान पर रुक गया और यह घोषणा की कि चोर इसी घर में छिपे हुए हैं। सारे गाँव वालों ने उसे कहा कि या तो तुम चोरों के इन पदचिह्नों को आगे चलाओ या हमारे गाँव से चोरी कर लाना कबूल करो। भीड़ जुट गई तथा गाँव के चौकीदार मीणे को बुलाया गया। उस चौकीदार ने चोरी कर लाना स्वीकार किया। उसकी इस हरकत पर उस गाँव के निवासियों ने चोरी ढूँढ़ने के लिए आए ग्राम मैड़ के निवासियों से माफी माँगी तथा अपने गाँव के चौकीदार मीणे से इस चोरी का दण्ड वसूल किया। उसे यह भी सजा दी गई कि मैड़ के जितने भी व्यक्ति यहाँ आये हैं उनको खाना खिलाकर वापस भेजेगा। उस गाँव के सब लोगों ने ग्राम मैड़ के निवासियों की संगठन शक्ति की प्रशंसा की। जब गाँव मैड़ के लोग चोरी की मवेशियां लेकर वापस बड़े महादेव जी के मन्दिर पर पहुँचे तो वहाँ भगवान शंकर की जय-जयकार होने लगी। इस प्रकार इस गीत में संगठन की शक्ति की महत्ता को दर्शाया गया है।

8. सामाजिक रिश्तों एवं प्रणय के गीत

बाट

स्थायी पाणत करतां सुध खो बैठी, कुहू कुहू क्यूं बोलै. रै कोयलिया,
सुध बुध खो मतवाळी मैं हुई क्यूं, बार-बार थे छेडो रै सहेलियां।

अन्तरा 1

गयो दिसावर पिव ज्यो कमा.बै, गयो दिसावर पिव ज्यो कमा.बै,
मेरी सुध कैंया को.नै लीहनी,
दोन्यूं छाप अँगूठा म्हे तो मन की बात कैंयां खैहती..,
कुलबुलकुल मेरो हिवडो रै डो. लै..

.....

अन्तरा 4

ब्याळू करबा सारा बैठ्या, ब्याळू करबा रै सारा बैठ्या,
एक कूणो पण खाली रहगो,
अटक गयो मेंरै. गास्यो गळा मैं,
अटक गयो रै मेंरै. गास्यो गळा मैं पिवजी मेरो
कांईं भूखो रहगो,
रेवड चरबो छोड दियो रै., रेवड चरबो छोड दियो रै.
ढाळ ढाळ आँसूं रोवीं छीं बकरियां
बकरियां ....., बकरियां.....

अन्तरा 5

पास खेत मैं. उडै छै भभूळ्यो, पास खेत मैं. उड छै भभूळ्यो,
मैं जाणूं मेरो पिव आर्‌यो
बाट निहारूं गैला मांयां, बाट निहारूं रै गैला मांयां
रह रह पिवजी याद आर्‌यो
कांईं करूं थे बोलो रै रूंखडा, कांईं करूं थे बोलो रै रूंखडा
तू क्यूं हरखै. रांड चमेलिया।

.....

अन्तरा 6

ऊंटवाळ कोई आर्‌यो देखो, ऊंटवाळ कोई आर्‌यो रै देखो,
दबडक दबडक आ. री आवाज़ां,
हो ना हो मेरो पिवजी आर्‌यो, हो ना हो मेरो पिवजी रै आर्‌यो,
रूंख जिनावर खुशी मनांवां,
गळै. लगी रोउं सौ सौ आँसूं, गळै. लगी रोऊं सौ सौ रै आँसूं
खुशी खुशी तू कूक कोयलिया

खुशी खुशी तू कूक कोयलिया, खुशी खुशी तू कूक कोयलिया।

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

एक गरीब मजदूर जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है तथा इस बार फसल भी अच्छी नहीं है, मजदूरी करने के लिये शहर चला जाता है। उसकी पत्नी उसकी अनुपस्थिति में न केवल अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को ही पूरा करती है अपितु सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए खेत-खलिहान का भी कार्य करती है । अपने कार्य निष्पादन के हर सोपान में वह रह-रह कर अपने पति को याद करती है, जिसकी मार्मिक प्रस्तुति इस गीत में की गई है । उसके मन में कई ऐसी भावनाएं हैं जिनको वह किसी अन्य को नहीं बता सकती । पति-पत्नी दोनों ही अनपढ़ हैं अत: अपने मन की भावना की अभिव्यक्ति वे लिख कर भी नहीं कर सकते ।

संध्या के समय जब वह खेत से बकरियों का रेवड़ लेकर अपने घर आती है तो उसे ऐसा महसूस होता है कि उसका पति हमेशा की तरह सामने खटिया पर बैठा हुक्का पी रहा है। जब वह खेत में पानी दे रही होती है एवं पास ही पेड़ों के झुरमुट में जब कोयल कूकती है तो वह विरहणी सी संतप्त होकर कोयल से कहती है कि हे कोयल, तू अपनी कूक से मुझे क्यों पीड़ित कर रही है। जब वह शाम को खेत से चारे का भरोटा (गट्ठर) लाती है तो घर के जानवर उसको खाने के लिये लपकते हैं । उसके मन में फिर संचारी भाव उत्पन्न होते हैं और उसे स्मरण हो आता है कि जब मेरा पति घर में उपस्थित होता था तो ऐसी स्थिति में मुझे बोझ से दबा हुआ देख भागकर मेरे सिर के बोझे को उतारता था । उसे मैं किस प्रकार भूल सकती हूँ । रात्रि के समय जब पूरा परिवार खाना खाने बैठता है तो घर का एक कोना खाली रह जाता है तब उसको अपने पतिदेव की याद आती है तो रोटी का कौर गले में अटक जाता है । वह अपने मन में सोचती है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि परदेश गया हुआ मेरा पति आज भूखा रह गया हो। ऐसा सोचकर उसकी आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ती है । अपनी मालकिन की इस दशा को देखकर भेड़-बकरियों का रेवड़ भी चरना छोड़ देता है और बकरियों की आँखों से भी टप-टप करके आँसू टपकने लगते हैं । जब वह दूसरे दिन खेत में काम करने जाती है तो पास में ही उठते हुए भभूळे को देखकर मन में विचार करती है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरा पति आ रहा हो और उसके ऊँट के भागे आने से यह धूल उड़ रही हो। वह अपने पति की काफी समय से बाट देख रही है परन्तु उसका पति अभी तक नहीं आया अत: वह वृक्षों

से कहती है कि हे पेड़-पौधो, इस दशा में मैं क्या करूं ? वह पास ही में फल-फूल रही जूही की लता से कहती है कि जब मेरी यह दशा हो रही है तो हे राँड तू क्यों हँस रही है ।

पास में ही आते हुए किसी ऊँट के सवार के आने की उसे आवाज सुनाई देती है। वह मन में विचार करती है कि हो न हो यह मेरा पति ही आ रहा है, और अपने निश्चय को प्रकट करते हुए वह आस-पास के पेड़-पौधों एवं जानवरों को खुशी मनाने का आमंत्रण देती है । वास्तव में वह ऊँट का सवार उसका पति ही होता है और जब इस प्रकार दोनों का मिलन होता है तो पत्नी की आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ती है और वह पास में ही कूक रही कोयल को कहती है कि हे कोयल ये आँसू खुशी के हैं इसलिये अब तू जितना चाहे कूक, उससे मुझे प्रसन्नता होगी।

इस प्रकार इस गीत में पति-पत्नी के प्रेम की सटीक अभिव्यक्ति की गई है।

9. मेलों एवं पर्वों के गीत

गणगोर्यां को मेळो

स्थाई गणगोर्यां को मेळो तडकै ऊंटां की व्है दौड़
न्हायी धोयी टोल्डी तू ईंकी कर सँवार

.....

कूंची कसी टोल्डी कै लटकाया फूंदा
बागो जाट ऊंटणी नै लेर चाल्यो
कानां मैं मुरकी पैर्यां छै फैंटो चोखो लागै रै
ग्यारा ऊँट दौड़ आटै ऊभा छीं तैयार
बागो जाट टोल्ड़ी की पकड्यां छै नकेल
एक दो तीन करतां ऊँट भाग्या रै
टाबर टोळी लोग लुगाई सैंकड़ां ऊभा
साँस रोक्यां देखीं देखां कुण आगै निकळै
ल्हैर ल्हैर ल्हरातो बागो सबसूं पैल्यां आयो रै
वाह रै बागा टोल्डी तेरी कांईं खैणो
दौड़ मैं या जीती जींसै अबकै नांव हुयो

लै सिणगार टोल्डी को पँचायत का देर्‌या रै

गीत की पृष्ठभूमि

त्यौंहारों की शृंखला में राजस्थान प्रान्त का एक विशिष्ट स्थान माना जाता है। राजस्थान प्रान्त के ढूँढाड़ क्षेत्र में तीज एवं गणगौर का त्यौंहार विशेष उत्साह एवं परम्परा के साथ मनाया जाता है। गणगौर त्यौंहार के दिन से एक माह पूर्व से ही कुँआरी लडकियों द्वारा ईशर-गणगौर के गीत गाया जाना प्रारम्भ कर दिया जाता है तथा त्यौहार के प्रमुख दिन गणगौर की विशेष पूजा की जाती है। इस दिन गाँवों में मेलों के आयोजन होते हैं जिनमें ऊँटों की दौड़ हुआ करती है। ऐसे आयोजन सामाजिक एकता एवं आपसी भाईचारे के प्रतीक हैं तथा सामाजिकों को अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

गीत की विषयवस्तु

कल मैड़ गाँव के उत्तर में स्थित पण्डाली के मैदान में ऊँटों की दौड़ होने वाली है इसलिए एक व्यक्ति अपनी टोल्डी को लेकर गाँव के बूचाराम नायक के पास जाकर उससे कहता है कि तुम मेरी इस न्हायी-धोयी टोल्डी की सँवार कर दो। बूचाराम ने सबसे पहले तो उसकी टोल्डी को ज़मीन पर बैठा दिया फिर उसके मुडे हुए पैरों को रस्सी से बाँधकर बड़ी कैंची से उसके बाल इस प्रकार से कतर दिये कि उसके सारे शरीर पर फूल-पत्तियों एवं पूँछ पर बेल के निशान उभर आये। फिर उसने ऊँटनी के पैर खोल दिये। वह उठी और इधर उधर गर्दन घुमाकर सबसे पहले आकड खोली, उसके पश्चात् जोर से पूँछ को फटकारा। उसके मालिक बागा जाट ने उसके रंग बिरंगे फूँदे लटकाये और फिर उस पर बैठकर दौड में शामिल होने पण्डाली के मैदान में पहुँच गया।

बागा ने कानों में मुरकी पहन रखी हैं तथा सिर पर मोठडी का साफा बाँधे हुए है। वह सजी सजायी टोल्डी पर बैठा हुआ सबके मन को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। दौड़ के लिये ग्यारह ऊँट एक साथ तैयार खड़े हैं। बागा भी अपनी टोल्डी की नकेल पकड़े दौड़ हेतु संकेत की प्रतीक्षा कर रहा है। एक दो तीन की आवाज़ के साथ ही सभी प्रतियोगियों के ऊँट दौड़ने लगे। वहाँ पर एकत्र सभी लोग साँस रोके इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि देखें दौड़ में सबसे पहले कौन आगे निकलता है। यह क्या ? लहर लहर लहराता हुआ बागा सबसे आगे निकल आया। सभी लोगों ने करतलध्वनि से उसका सम्मान किया तथा गाँव के पँच-पटेल कहने लगे कि वाह भाई बागा क्या खूब। तुम्हारी इस टोल्डी ने तो दौउ में जीतकर तुम्हारी ढ़ाणी का नाम रोशन किया है और ये लो पँचायत की ओर से ईनाम। ईनाम लेकर बागा जाट अपने

घर धोल्यां की ढाणी में पहुँच गया जहां पर उसका खूब आदर सत्कार किया गया। जब उसकी टोल्डी बैठ गई तो गाँव के सभी लोग और बच्चे उस टोल्डी पर स्नेहपूर्वक हाथ फिराते हुए कहने लगे कि वह भाई टोल्डी वाह। आज तुमने हमारी ढाणी का नाम ऊँचा किया है इसलिए तुम्हारी जय हो।

इस प्रकार यह गीत राजस्थान के त्यौंहारों की रंगबिरंगी छटा को उकेरते हुए व्यक्ति को उत्कृष्ट कार्य करने को प्रेरित करता है।

10. कला एवं संस्कृति के गीत

गोकल्यो भाण्ड

स्थाई गूजरी को भेष बणांयां हाथ लियां अर मटकी
गोकुल भाण्ड हेलो पाडै दही लेल्यो दही
करमेल्यो सोळा सिणगार गोरो-गोरो मूण्डो
अइयां लागै ब्यायोडी कोई बीनणी आई
बूढ़ा-बूढ़ा डोकरां को भी देखो मन उछळै रै + स्थाई
दही लेल्यो हेलो सुण टाबर-टोळी आया
ल्याये काकी म्हांनै दे दै राछ आगै करीं
गूजरी बोली घरां ही थांकी माँ नै द्यूंगी मैं + स्थाई
भोळा टाबर काँईं जाणी गूजरी या कसी
म्हांकी माँ तो भेजी म्हांनै दही ल्याबाटै
क्यूं नै दे या फेर म्हांनै माँ नै ही क्यूं दे. + स्थाई
एक छोरो छाकटो खै दे दै भाभी दूध
गूजरी बोली सुण देवर पाछी आऊंगी
कतरो पीबा की ताकत छै आर देखूंगी + स्थाई

.....

आगलै दिन आयो एक थाणादार रै
सेठ नै बोल्यो रै बाण्या नकली घी बेचै
लगा हथकडी बोल्यो ऊंनै चाल थाणै रै + स्थाई

.....

कई दिनां तक ख्याल दिखांवीं बस्ती मैं यै भाण्ड
आज कला की कदर करै कुण या छै हिन्दुस्तान
बार देश का आज भी पण यां की इज़्जत कर्‌या रै + स्थाई
कला मिटी अर भूखां मरता कलाकार कुळ्ळावीं
ज्यो सरकार करै यां तांईं छेद हुया ऊंमैं भोळा
हुवै नहीं ऊंमैं पेट भराई कला मिटी यूं जारी रै
कला मिटी यूं जारी रै
कला मिटी यूं जारी

गीत की पृष्ठभूमि

लोक कलाओं एवं लोक संगीत के क्षेत्र में राजस्थान की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। यहाँ के गाँवों के लोक कलाकारों की कला के दूर-दूर तक चर्चे रहे हैं। राजस्थान में बहुरूपिये को भाँड कहा जाता है और उसकी कला को भाँड कला। इसी के आधार पर इन कलाकारों की जाति का नाम भी भाँड ही पड़ गया। भाँड जाति के ये कलाकार भेष बदलकर अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं। कभी वे देवी देवताओं के रूप धारण कर, तो कभी थानेदार या सरकारी अफ़सर बनकर गाँव वालों को हैरत में डाल दिया करते। कभी बेचारा कोई बनिया जब आयकर अधिकारी के तो कभी कोई पटेल थानेदार के साथ थाने जाने लगता तो इन अधिकारियों का स्वरूपधारी भाँड कलाकार विशेष रीति से अपने गाल बजाया करता। तब साथ जा रहे बनिये या पटेल जी को असली बात समझ में आती और वे प्रसन्न होकर उस कलाकार को ईनाम दिया करते। यह कला ही उनकी रोजी रोटी का साधन थी। परन्तु देश की आज़ादी के बाद ऐसी कला या कलाकार की क्या स्थिति हो गई है, यह इस गीत में बताया गया है।

गीत की विषयवस्तु

मैड़ गाँव का गोकुल भाँड अपनी कला के लिये दूर दूर तक जाना जाता था। आज उसने गूजरी का

वेश बनाया है। वह सिर पर दही की मटकी ले, 'दही ले लो दही' की आवाज़ लगाते हुए गाँव में चला जा रहा है। सोलह शृंगार करे हुए यह गूजरी किसी नई नवेली दुल्हन की भाँति बूढ़े-बूढ़े लोगों के मन को भी आन्दोलित कर रही है। उसकी आवाज़ सुनकर बच्चे खाली बर्तन लिये भागे-भागे उसके पास आकर कहते हैं कि भाभी हमें दही दे दो। वह गूजरी उनसे कहती है कि तुम चलो मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हारी माँ को ही दही दूंगी। भोले भाले बच्चों को यह बात समझ में नहीं आयी कि यह हमारे घर आकर माँ को ही दही देने की क्यों कह रही है।

एक शैतान लड़के ने पूछा कि भाभी दूध भी दे दोगी क्या ? उसकी बात पर गूजरी ने चुटकी लेते हुए कहा कि देवर जी अभी तो आगे जा रही हूँ, परन्तु वापिस आने पर देखूंगी कि तुम्हारी ताकत मेरा कितना दूध पी सकने की है। इस बात पर उस लड़के का मुँह फीका पड़ गया। तब उसके साथियों ने चुटकी लेते हुए कहा कि जा भैया, तब तक घर जाकर मालिश कर आ।

अगले दिन गाँव में एक थानेदार दिखाई दिया। नगरसेठ की दुकान पर जाकर उसने रौब से कहा कि क्यों बे बनिये, नकली घी बेचता है ? वह उसके हथकड़ी लगाकर थाने की ओर चल दिया। सेठ ने डरकर उस थानेदार से कहा कि सरकार इस बार माफ कर दो। उसने अपने नौकर को आवाज़ दी और नोटों की गड्डी थानेदार के हाथों में थमा दी। थानेदार ने अपने गाल बजाते हुए सेठजी से कहा कि हुजूर, माफ करना मैं तो गोकुल भाँड हूँ। उसने नोट वापिस करते हुए विनती की कि इसे आप ही रख लें मुझे तो केवल ईनाम चाहिए।

ये कलाकार गाँव गाँव, बस्ती बस्ती जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं परन्तु देश की आज़ादी के पश्चात् कला और कलाकार की स्थिति बिगड़ गई है। आज ऐसे कलाकार भूखों मर रहे हैं। सरकार ने तो इनकी कला के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण हेतु बहुत सी सुविधाएं दी हैं, परन्तु उनमें असंख्य छिद्रों के कारण रिसाव हो रहा है और सरकारी सुविधाएं पूर्णरूप से इन कलाकारों तक नहीं पहुँच पा रही हैं। इस कारण से हमारे देश की विभिन्न कलाएं आज मिटती जा रही हैं जो एक सोचनीय स्थिति है।

इस प्रकार इस गीत में भारतीय कलाओं की उत्कृष्टता को व्यक्त करते हुए आधुनिक सरकारी तंत्र पर

करारा व्यंग्य किया गया है।

11. श्रद्धा एवं भक्ति के गीत

जडूला

स्थाई-पु. चालो रै चालो सियावरजी का मेळा मैं

स्त्री टाबरां नै भी तो ले ल्यूं, वै भी ढोक लगावींगा

पु. देर करै क्यूं चाल पटैलण सियावर कै मेळै,
चक्करघन्नी क्यूं व्हैरी, कांईं छानै छानै हेरै
मूंनै बतादै बात ज्यो मैं भी हिरवाद्यूं ए.....+ स्थाई

स्त्री गई साल पोशाक बोली, ठाकुरजी कै तांयं
गोटो और सितारा जड़ सीं, म्हेली पेई मांयं
कोनै मिल री चक्करघन्नी खाती हेरूं जी.....+ स्थाई

पु. काढ़ लिई मैं वा पेई सूं भोग पताशां साथ
चाँदी को छत्तर भी लिय्यो सियाबर कै तांयं
हडुमान को लाल चोगो ले ल्यो साथ ए .....+ स्थाई

स्त्री पाँचूं कपड़ा म्हंतजी का साथ लेल्यो थे
नान्यो म्हांकै जन्म लिय्यो वांको ही वरदान छै
रोट छडांवां चाल मेळै हडुमान कै जी.....+ स्थाई

पु. ब्रह्मभोज म्हे जार करांगा मुक्ता भी जीमींगा,
पेट भरैगो तो नान्या नै आशीर्वाद दींगा
हडुमान की धजा हाथ मैंऽऽ लेल्यो चालो रै .....+ स्थाई

स्त्री कुश्ती को दंगळ व्हैर्‌यो अर बैरंग रूप्या बंधर्‌या,
तेल की मालिश कर आया, फैलवान लडर्‌या
दोन्यां मैं सै एक जीतैगो मेरो बेटो काळ्‌यो रै..... + स्थाई

पु. बैरंग जीत काळ्‌यो बोल्यो जै जै जै हडुमान

सौ दौ सौ ऊंकै साथ लठैत्या कर्‌या जै जैकार
बजरंग तेरी भक्ति नै मानै संसार रै....+ स्थाई

स्त्री डोलर हींदो चर चर करतो चालै होळ्यां होल्ळ्यां
और जोर सैं झोटो दैऽऽ अइयां खैरी छोर्‌यां
देख खिजूरयां को माथो ल्यां, अस्यो झुला दै रै.....+

पु. पीपाडी तांयं टाबर रोवै मांयां वांनै घींसै,
चिपक गया म्हाडा धरती सूंऽऽ, पी पी वांनै दीखै
भर्‌यो कटोरो नाज लेऽऽर पीपाडी दे दै रै.....+ स्थाई

स्त्री ख्याल दिखातो कीरां को भगल्यो सीसा नै देखै
गाल बजावै भाण्ड देखो थाणादार बणकै
बिना टिकिट का खेल सारा आओ देखां रै.....+ स्थाई

पु. मुदगर उठा रिह्या छीं छोरा डंड पेळता सामै
होडां होड मची रै देखो, जोश रंगीलो वांमै
कोई-कोई लाठी को साऽरो लेऽर्‌या छींऽऽरै.....+ स्थाई

स्त्री नाई केश कतर नान्या का मांग रि्हयो छै नेग
भक्त सभी हडुमान जी कै माथो र्‌ह्या छीं टेक
मंथ गणेशदासजी चरणामत छिडकीं रै.....+ स्थाई

पु. ब्रह्मभोज मैं बैठ्या बामण चळू कर्‌या एक साथ
मंगता और भिखारी जीम्या देर्‌या आशीर्वाद
नान्या कै सिर हाथ म्हेलर्‌या सातूं जात रै.....+ स्थाई
धन्य व्हियो ज्यो माथो टेक्यो सियावर हडुमान कै
रामनोमी कै दिन लागै भाई मेळो या हर साल छै
कष्ट मिटींगा सबका साराऽऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
कष्ट मिटींगा सबका सारा चालांगा हर साल रै.....
चालांगा हर साल रै चालांगा हर साल रै

गीत की पृष्ठभूमि

भारतवासियों द्वारा देवी-देवताओं में पूर्णरूपेण विश्वास रखते हुए उनकी भक्ति, पूजा एवं आराधना की जाती है। गाँवों में पुत्र प्राप्ति हेतु पूर्ण निष्ठाभाव से देवी-देवताओं की आराधना की जाती है और ऐसे भक्तों को अवश्य ही पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। इस गीत में इसी विषय का वर्णन किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

महाभारतकालीन स्थान विराटनगर के पास में ही अरावली पर्वत शृंखलाओं से घिरा ग्राम मैड़ नामक स्थान है जो विराट के साले कीचक का निवास स्थान माना जाता है। ऐसी किवदंतियां हैं कि इस स्थान के पास के जंगल में महान् धनुर्धारी अर्जुन के बाण से बाणगंगा नदी का उद्गम हुआ था। बाणगंगा नदी के इस उद्गम स्थल से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर बाणगंगा नदी के किनारे पर ही वह स्थल है जहाँ पर शमी नामक वृक्ष था और अज्ञातवश में जाने से पूर्व पाण्डवों ने जिस पर अपने हथियार टांगे थे। इस स्थान से लगभग एक चौथाई किलोमीटर की दूरी पर श्री सियावरजी का मन्दिर है जिसमें राम लक्ष्मण एवं सीता की मूर्तियां विराजमान हैं। इस मन्दिर में एक पुण्यात्मा हुए हैं महन्त श्री गणेशदास जी महाराज जिन्होंने वहाँ पर अपने आराध्य देव श्री हनुमान जी महाराज की स्थापना की। उन्होंने इस स्थान पर प्रतिवर्ष रामनवमी के दिन एक मेला भी प्रारम्भ किया जिसमें दूर-दूर से भक्तगण आते थे तथा महन्त श्री अपनी दैविक शक्तियों से आने वाले बीमार यात्रियों का नि:शुल्क इलाज़ किया करते थे।

इस अवसर पर महन्त श्री द्वारा विशेष पूजा-अनुष्ठान किया जाता और हनुमान जी के मन्दिर के बरामदे में छोटे-छोटे बच्चों का जडूला (बच्चे का मुण्डन संस्कार) उतारा जाता था।

रामनवमी को लगने वाले हनुमानजी के इस मेले में तरह-तरह की दुकानें लगती और भिसायती (छोटी-छोटी एवं सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएँ बेचने वाले दुकानदार) आते। विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन किया जाता तथा जादूगर भी अपना तमाशा दिखाया करते। इस मेले में प्याऊ भी लगवायी जाती तथा खेलकूद के आयोजन भी होते। महन्त श्री गणेशदास जी महाराज इन दुकानदारों एवं

कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें आर्थिक अनुदान भी दिया करते थे।

इन दंगलों, कुश्तियों एवं खेलकूद में जीतने वाले प्रत्याशी को बैरंग (लाल कपड़े का झण्डा) के साथ ही साथ इक्कीस या इक्यावन रुपए का नकद पुरस्कार भी दिया जाता जिसमें नकद राशि का अधिक महत्व न होता अपितु विजय मिलना प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता था।

इस प्रकार यह गीत ईश–आराधना, कला–संस्कृति एवं आपसी मेल मिलाप का एक सजीव परिदृश्य उपस्थित करता है।

12. नीति एवं शिक्षा के गीत

पींजरा

स्थाई धुणक धुण धुणरै पींजरा, रूई पिंजारा धुण 2

अन्तरा 1

स्त्री मिनखां देह तू पायो करम सूं, हिम्मत मत ना हार 2
सात्यूं सुर छीं एकताल मैं, समझ समझणहार,
तुणक तुण तुण, धुणक धुण धुण – स्थाई

अन्तरा 2

.....

स्त्री मिन्दर मैं तू माळा फेरै, फडै जोर सूं गीता 2
देख रामजी कर्‌या परिश्रम , कैंया समर मैं जीत्या,
तुणक तुण तुण, धुणक धुण धुण – स्थाई

.....

स्त्री फांक चणां अर बींज्यो चाल्यो, हळ बळदां कै साथ, 2
खेत जोत कैंया सोगो बैरी, नींद आवै फर्रांट,
तुणक तुण तुण, धुणक धुण धुण – स्थाई

अन्तरा 6

पु. असी सोड भर देख पिंजारा , बींज्या आटै आज 2

सुफळ हुवै तेरो कर्म, कर्म को देतां देतां साथ पींजरा,
बींज्यो सोवै देख पींजरा, सोड ओढ़कर
तेरी पींजरा, फर्राटा की सोड़ पींजरा,
वाह रै पींजरा , वाह रै पींजरा , वाह रै पींजरा वाह

विषयवस्तु- मानव-जीवन में कर्म को सर्वोपरि माना गया है। हमारे पवित्र ग्रंथ गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने मनुष्य को कर्म करने का संदेश दिया है। परन्तु मनुष्य के जीवन में ऐसा भी होता आया है कि उसको अपने कार्य का कभी-कभी उचित-प्रतिफल नहीं मिलता है। इस गीत में एक ऐसे कर्मठ व्यक्ति की परिकल्पना की गई है जो रूई धुनकर रजाई (सोड़) भरने का कार्य करता है। ढूंढाड़ (जयपुर एवं आसपास का क्षेत्र) में यह कार्य कण्डेरा जाति के लोग किया करते हैं। कण्डेरा जाति में भी दो प्रकार होते हैं :- (1) हिन्दू कण्डेरा (2) मुस्लिम कण्डेरा। सामान्यत: मुस्लिम कण्डेरा जाति के लोग ही रूई धुनने एवं रजाई भरने का काम करते हैं। जिन्हें पिंदारा कहा जाता है।

इस गीत में यह बताया गया है कि रूई धुनने वाला पिंदारा अपनी इस कला में सिद्धहस्त होता है तथा अच्छे स्तर की रजाई (सोड़) बनाने में भी निपुण होता है, परन्तु उसे अपने परिश्रम का यथोचित पारिश्रमिक नहीं मिलता। उसे रजाई में रूई भरने के लिए प्रति किलो के हिसाब से सामान्य सी मजदूरी ही मिलती है जबकि उसके द्वारा बनाई गई इस रजाई को बेचकर दुकानदार अपेक्षाकृत अधिक लाभ कमाता है। भले ही इस गरीब पिंजारा (पिंदारा) ने, जो स्वयं अस्थिपंजरयुक्त पींजरा सा दीखता है, कितनी ही उत्तम श्रेणी की रजाई बनाई हो परन्तु उसके नसीब में इसका उपयोग करना कहां ? हमारे देश की वर्तमान स्थितियों में कलाकार को उसकी कला का समुचित पारिश्रमिक नहीं मिलता अत: इस पिंदारा द्वारा इस रजाई को वही व्यक्ति खरीदेगा जो दुकानदार को इसका ऊंचा मूल्य अदा करेगा।

इस गीत में रजाई का उपयोग करने वाले कई व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो प्राचीन काल में भारतीय समाज में प्रचलित वर्ण-व्यवस्था का भी एक चित्र उपस्थित करता है तथा धर्म के आवरण में छिपे ढोंग, औपचारिकताओं, शोषित तथा शोषक वर्ग की स्थिति को भी प्रकट करता है।

गीत का भावार्थ

इस गीत में मनुष्य को यह संदेश दिया गया है कि हे प्राणी! तूने अपने पूर्वजन्मों में किये गये सत्कर्मों से यह मनुष्यरूपी देह धारण की है। जिस प्रकार सात सुरों के संयोजन से सरगम एवं उसके

(सरगम के) ताल से सामंजस्य होने पर राग की उत्पत्ति होती है उसी से प्रेरणा लेकर तू इस जन्म में भी ऐसा कर्म कर जिससे तेरा अगला जीवन भी सुधर सके। हे मनुष्य, तेरा घर-परिवार सम्पन्न है, परन्तु उसमें भी अलग-अलग विचारों के सदस्य हो सकते हैं। अत: अपने इस ग्रहस्थ जीवन को तू इस प्रकार संयोजित कर जिससे तेरा पूरा परिवार एक सूत्र में बँधा रहे और उद्यानरूपी तेरा यह परिवार पुष्परूपी सदस्यों के सद्व्यवहार, आपसी सहयोग एवं आचरण से महकता रहे।

धार्मिक आवरण में लिपटे ढ़ोंगी साधू-सन्तों एवं पोंगे पण्डितों पर कटाक्ष करते हुए तथा कर्म की महिमा का बखान करते हुए इस गीत में बताया गया है कि हे मनुष्य, तू बेमन से, केवल दिखावे मात्र के लिए मन्दिर में जाकर भगवान के समक्ष माला फेरता है और ऊंची आवाज में जोर-जोर से गीता के पाठ करता है। परन्तु इससे क्या तेरे जीवन का उद्धार हो पायेगा? अरे मूर्ख यदि इस प्रकार के आचरण से ही जीवन सफल होता तो फिर भगवान रामचन्द्र जी मनुष्य के रूप में जन्म क्यों लेते? हे प्राणी! भगवान रामचन्द्र जी ने मनुष्य-रूप में जन्म-लेकर कठिन परिश्रम किया तभी तो रावण जैसे पराक्रमी राजा को भी वे युद्ध में परास्त कर सके। अत: हे प्राणी, तू भी कर्म की महिमा को समझ, अत: ये ढोंग-आडम्बर आदि छोड़ दे।

ठग विद्या करके केवल लाभ की लालसा रखने वाले वणिक वर्ग के द्वारा शारीरिक श्रम न करने एवं इसके दुष्परिणामों की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि बनिया अपनी गद्दी पर बैठा-बैठा बड़े-बड़े व्यापारिक सौदों के निपटान द्वारा काफी लाभ अर्जित करता है, परन्तु शारीरिक श्रम न कर पाने के कारण उसे कई प्रकार की बीमारियां लग जाती हैं, इसलिए हे मनुष्य! तू भी शारीरिक परिश्रम कर जिससे तुझे सदैव स्वास्थ्य-लाभ मिलता रहे।

कर्म से दूर रहने वाले उपरोक्त प्रकार के समुदाय के विपरीत इस गीत में ऐसे पुरुषार्थी एवं परिश्रमी किसान की परिकल्पना की गई है जिसे भरपेट भोजन भी नसीब नहीं है, परन्तु कर्म को प्रधान मानते हुए वह केवल चने फाँककर अपने हल-बैल लेकर खेत-जुताई करने को चल देता है । वह बहुत जल्दी अपना कार्य पूरा करके एक पेड़ की छाया में बिना रजाई-गद्दे के ही सो जाता है। इस पुरुषार्थी निर्धन कृषक को ऐसी दशा में भी गहरी नींद में सोने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यहां पर कर्म की महत्ता को सर्वोपरि बताते हुए इस रूई धुनने वाले पिंदारा को यह सलाह दी गई है कि हे पिंदारा! तूने अपने कठिन परिश्रम एवं मनोयोग से जो इस रजाई (सोड़) का निर्माण किया है उसे न तो तू ढोंगी साधू-सन्तों या ऐसे

तथाकथित महापुरुषों को देना और न ही लाभ कमाने मैं अंधे उस लालची बनिये को, जिसके पास इसे खरीदने के पर्याप्त साधन उपलब्ध है। तू अपने कठिन परिश्रम से निर्मित यह रजाई उस ग़रीब श्रमिक को देना जो बिना रजाई के ही पेड़ के नीचे सो रहा है।

हे प्राणी! यदि तूने अपनी यह रजाई इस कर्मठ व्यक्ति को दी तभी तेरा कर्म (इस रजाई का निर्माण) सार्थक माना जायेगा क्योंकि वह श्रमिक भी तेरी ही तरह पुरुषार्थी एवं कर्मठ है और तुझ जैसा व्यक्ति ही उसकी व्यथा-कथा समझ सकता है।

13. ऐतिहासिक धरोहर के गीत

बावन कूणा

स्थाई बावन कूणा ळाग रिह्या छीं सियावर की भौम कै
कई हजारां रूंख छारिया छांगी बण भगवान कै
छांगी बण भगवान कै रै..... छांगी बण भगवान कै

.....

राजा भरतरी-ऋषि आंगीरस जद भी गुजर्‌या मैड़ सैं
बाणगंगा की भौम खींचरी वां का मन नै प्रेम सैं
पाणी पीयो गंगाजी कोऽऽऽऽ
पाणी पीयो गंगाजी को बैठ्या जिण्ड़े सियावर
ऋषि-राज दोन्यूं कर्‌या पवित्तर भौम लगाई माथा पर
हर्‌या रूंखड़ा जीव जिनावर सभी करीं गुणगान रै + स्थाई
स्वामी समर्थ रामदास जी जद आया छा मैड़ मैं
स्वामी जी गोपाल दास जी सज्जन छा ऊं गाँव मैं
वांकी कुटिया पोंछ गया वै रात बिताई चैन सूं
बाणगंगा मैं स्नान करांगा बात कही गोपाल नै
ऊठ संवारै स्नान कराया दिई खडाऊ श्रद्धा सूं
रामदास जी पैर खडाऊ राजी व्हैगा देखो रै + स्थाई
पैर खडाऊ देख कूण्डळो रामदास जी राजी वहै

स्वामीजी गोपाल दास नै भेंट कर्‌या वै खडाऊ रै
श्रद्धा कै जी वशीभूत हो गद्‌गद् व्है गोपाल जी
मन मैं सोच्या और दिखाद्‌यूं आस-पास का गाँव जी
पंचखण्ड बैराठ देख वै बिदा लिया गोपाल सूं
जैपर का मिन्दर मैं धर दी वांकी वै खडाऊ रै + स्थाई

.....

कई सन्त और आया म्हात्मा सियावर की भौम पै
म्हंत गणेशदासजी भी वां सारां मैं एक रै
मूर्ति ल्याया हडुमान कीऽऽऽऽ
मूर्ति ल्याया हडुमान की केस लड्यो जिगसाळा सूं
नौ बरसां तक लियो मोरचो निकळ गयो जंजाळ सूं
ठाडेसर बण करी तपस्या, हडुमान को भक्त रै + स्थाई
दीन दुख्यां का रोग मिटाया भक्ति का परताप सूं
भूत- भूतणी ड़रकर भाग्या, सियाबर स्थान सूं
गोद भरी ज्यो कर्‌यो जापतोऽऽऽऽ
गोद भरी ज्यो कर्‌यो जापतो, बरसां सूं ज्यो बाँझडी
सौ- सौ आँसू रोवै छी ज्यो सुणतां- सुणतां बाँझडी
ढोक लगांवां पगल्यां कै थारै, म्हे छां थारा भक्त रै
चाल्या आया दूर-दूर सूं बोलां जय जयकार रै 3
बोलो महात्मा गणेशदासजी महाराज कीऽऽऽऽ
सब जय हो ।

पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु - महाभारतकालीन स्थान ग्राम मैड़ कीचक का निवास माना जाता है। पाण्डव अपने अज्ञातवाश के एक वर्ष के दौरान राजा विराट के नौकर चाकर बनकर रहे थे और जब राजा विराट के साले कीचक ने पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी पर कुदृष्टि डाली तो भीमसैन ने द्रौपदी का वेश धारण किया

और ग्राम मैड़ में जाकर उसका वध किया।

ग्राम मैड़ के पश्चिम में श्री सियावरजी का मन्दिर है, जिसके अन्तर्गत सैंकड़ों बीघा कृषि भूमि थी। परन्तु कालान्तर में मन्दिर के पुजारियों द्वारा या तो मन्दिर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इस भूमि को किसानों को बेचान कर दिया (बेच दिया) या फिर कुछ भूमि पर किसानों द्वारा कृषक के रूप में अपना अधिकार कर लिया गया। आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व इस मन्दिर के पास 96 बीघा पक्की कृषि भूमि थी जिसमें खजूरों का घना जंगल था । यहाँ पर सामान्यत: दिन में भी शेर और बघेरे डोलते रहते थे। इस भूमि के चारों ओर अन्य किसानों की भूमि का स्पर्श था और यह सम्पूर्ण कृषि भूमि चौकोर न होकर विभिन्न कोणाकार थी। इस प्रकार 50 वर्ष पूर्व इसके अन्य किसानों की भूमि के 52 कोने स्पर्श करते थे। आश्रम की इस भूमि में श्री सियावरजी के मंदिर के ठीक सामने लगभग एक हजार गज दूर खेत का एक टुकडा है जो संभवत: आश्रम की इस भूमि का सबसे घना जंगल रहा होगा । यहां पर शेर-बघेरे बहुतायत में थे अत: इसका नाम नारबनी (शेरों का जंगल) पड़ा जो आज भी इसी नाम से जाना जाता है।

ग्राम मैड़ एवं श्री सियावरजी का मंदिर संभवत: महाभारतकाल में अस्तित्व में नहीं आया था परन्तु वर्तमान में इस आश्रम की जो भूमि है उसकी पवित्रता का उल्लेख करते हुए ऐसी परिकल्पना की गई है कि अज्ञातवाश के दौरान राजा विराट की गायें चराते हुए नकुल और सहदेव ने भी आश्रम की इस भूमि पर विचरण किया है। कीचक को मारने द्रौपदी के साथ भीम इस भूमि पर होकर ही गया था। ग्राम मैड़ के पास में ही ऋषि आँगीरस की तपोस्थली है तथा और थोडा आगे महाराज भर्तृहरी का आश्रम है। अत: ऐसे-ऐसे महापुरुषों ने भी आते-जाते इस भूमि का स्पर्श किया है।

इस भूमि पर कई सन्त-महात्मा हुए हैं जिनमें महन्त श्री गणेशदासजी भी
एक थे। उन्होंने अपनी भक्ति एवं परमारथ के कार्यों से हजारों लोगों को लाभान्वित किया और अनेक लोगों को ऊपरी बीमारियों से छुटकारा दिलवाया।

इस गीत में इस ऐतिहासिक तथ्य को भी उजागर किया गया है कि जयपुर के यज्ञशाला की बावड़ी स्थित मन्दिर के महन्त जी ने श्री सियावरजी के मन्दिर पर अपना अधिकार- आधिपत्य जमाने का प्रयास किया था क्योंकि संभवत: इन दोनों ही मंदिरों के गुरू की गद्दी प्रसिद्ध तीर्थस्थान गलताजी, जयपुर रही है। गणेशदासजी महाराज को गांव मैड़ के राजपूतों ने उनकी तेरह साल की उम्र में विराटनगर से मैड़ लाकर श्री सियावरजी के मन्दिर के महन्त श्री रामदासजी का शिष्य बनाया था। ग्राम मैड़ के कुछ स्वार्थी

राजपूतों ने यज्ञशाला की बावड़ी जयपुर के महन्त जी से मिलकर गणेशदास जी के शिष्यत्व को अवैध ठहराना चाहा परन्तु अपनी भक्ति के बल पर नौ वर्ष तक चले एक मुकदमे में महन्त श्री गणेशदास जी विजयी रहे।

इस प्रकार इस गीत के माध्यम से ग्राम मैड़ अंचल के वाशिन्दों के समक्ष इस भूमि की महत्ता को उजागर करते हुए कहा गया है कि इस भूमि पर कौरव-पाण्डवों, महाराजा भर्तृहरी एवं आँगीरस ऋषि जैसी विभूतियों के पैर पड़े हैं। उन्होंने इस भूमि की मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाया है एवं यहां का पानी पीया है अत: तुम भी अपना अस्तित्व पहचानो और अच्छे कर्म करो।

14. स्कूली जीवन के गीत

सितोलिया

स्थाई सितोलियो सितोलियो बणगो म्हारो रै
सितोलियो सितोलियो बणगो म्हारो रै

पुरुष औषधालै कन्नै छै पटवार-घर ऊंकै नीचै
संसकिरत इसकूल का छोरा गैला मैं खेलै
भांड़ां का मकान आगै खेलीं सितोल्या रै + स्थाई

पुरुष पंडाळी पर पाणी भरबा जारी छीं पणिहारी
खुसफुस-खुसफुस बातां करती धीरै-धीरै जारी
काकी, माई, बाई-भाभी देखो जारी रै + स्थाई

पुरुष सात टिकडियां भाटा की देखो गोळ-गोळ छीं ऊभी
बोद्यो ऊंकै पाछै ऊभो कर्र्यो छै रूखाळी
लाल्यो फैंक्यो गैंद नै बोद्यो ऊंनै पकडै रै + स्थाई

स्त्री उल्ठो फैंक्यो बोद्यो जिण्ड़े लाल्यो ऊभो हँसर्यो
गयो निसाणो चूक ऊंको काकी कै जा लाग्यो
काकी ऊंकै कन्नै आर कान मरोडै रै + स्थाई

पुरुष लाल्यो खैर्यो काकी मार छोरो या बदमाश

मैं तो खैय्यो छो रुकजा पण कोनै मानी बात
लाल्या काणी देख बोद्यो दाँत भींचै रै + स्थाई

.....

पुरुष लाल्यो बोद्या कै भर्यो बटको पकड्यां बाळ
लाल्या बस अब मान जा छोरा खीं या बात
बोद्यो खैर्यो बाप नै जार ल्याऊं रै + स्थाई

.....

पुरुष लाल्या की धोती खुलगी जींकी सार लांग वा बोल्यो
कांईं करल्योगा मेरो थे एक सारा होल्यो
सामानै सूं बोद्यो ऊंका बाप नै ले आर्यो रै + स्थाई

पुरुष बाबो बोल्यो सुण रै लाल्या उल्ठो द्यूं लटका
सूळां की कामडी सैं तैरै सोटा द्यांगा
लाल्यो बोल्यो नहीं करूंगो अब बदमाशी रै
अब बदमाशी रै
अब बदमाशी रै
अब बदमाशी रै

गीत की पृष्ठभूमि

हमारे देश में खेलों की अपनी एक प्राचीन परम्परा एवं विशिष्ट स्थान रहा है। प्राचीन समय में गाँव में खेले जाने वाले खेल सामान्य प्रकार के हुआ करते थे परन्तु वे मनुष्य के शारीरिक विकास में भरपूर सहयोगी होते थे। छोटे-छोटे से खेलों में भी बड़ी-बड़ी बातें देखने को मिल जाया करती थी । सही मायने में खेलों का उद्देश्य हमारे इन प्राचीन खेलों में समग्र रूप से देखने को मिलता था और ये खेल समस्त ग्रामीण जन-जीवन को एक सूत्र में पिरोने का महति कार्य किया करते थे। छोटे-छोटे बच्चों द्वारा खेला जाने वाला सितोलिये का खेल भी इसी प्रकार का एक खेल हुआ करता था। परन्तु आज के इस युग में यह खेल लगभग विलुप्त प्राय: सा है। इस गीत में इसी खेल को

दर्शाने का प्रयास किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

ग्राम मैड़ के सरकारी औषधालय के पास पटवारघर है जिसके पास में भांडों का मकान है। उस मकान के आगे पास में ही संस्कृत स्कूल के बच्चे सितोलिये का खेल खेल रहे हैं। पत्थर की छोटी-छोटी सात टिकड़ियों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर बच्चे यह खेल खेल रहे हैं। एक बच्चा सितोलिये पर गेंद फेंक रहा है और अन्य बच्चे उसके पीछे खड़े हुए उनकी रखवाली कर रहे हैं। पास में ही 'पंडाली' नामक कुए पर गाँव की पनिहारिनें आपस में बातें करती हुई धीरे-धीरे पानी भरने जा रही हैं। जब एक बच्चे ने सितोलियों पर अपनी गेंद फेंकी तो उसका निशाना चूक गया और उसकी गेंद पनिहारिनों में जा रही काकी की मटकी पर जा लगी जिससे उसकी मटकी फूट गई। गेंद फेंकने वाला बच्चा तो डर गया परन्तु बोदू नाम का एक बच्चा उसकी इस करतूत से खुश होकर हँसने लगा। जब काकी उस बच्चे को पीटने पास में आई तो बोदू काकी से शिकायत करता है कि मैंने तो इसको कहा था कि रुक जा परन्तु इसने मेरी बात नहीं मानी और जान-बूझकर आपकी मटकी को गेंद दे मारी। जब काकी उस बच्चे का कान मरोड़ रही थी तो वह बच्चा बोदू की तरफ देखकर दाँत भींच रहा । जब पनिहारिनें चली गई तो लालू नाम के उस लड़के ने बोदू के बाल पकड़ लिए और कहा कि क्यों बे! तुमने काकी को उलटा-सीधा क्यों कहा? बोदू ने भी लालू को बटका भर लिया। इतने में ही एक बच्चा घर जाकर बोदू के पिता को बुलाकर ले आया जिसने सभी बच्चों को डांटा और कहा कि तुम्हें प्रेम से हिलमिलकर खेलना चाहिए। यदि आगे इस प्रकार की बदमाशी करोगे तो पेड़ से उलटा लटकाकर काँटों की लकड़ी से जोर-जोर से पीटूँगा। इस प्रकार यह गीत खेल की भावना एवं अनुशासन को दर्शाता है।

15. ग्रामीण संस्कृति एवं अतिथि सत्कार

गूजरां कै माई

स्थाई चोकरदा फिरगा माई कै छोरा-छोरी
ल्याए दे दै म्हांनै झुँझुणो और पीपाडी
माई आई माई आई टाबर भागीं

चालो ल्यायी छै खाबा की चीज भागो भागो रै
लाली भाया नै गोदी मैं लेर होळ्यां होळ्यां
आ जा अतरै म्हे जार माई कै चोकरदा फिरर्‌या

.....

आई भाळ की ढाणी अर ऊंका पोता–पोती
फिरगा चोकरदा तू दे दै म्हांनै पीपाडी
बहू खैरी म्हांने पोडर–काजळ ल्यावो देद्‌यो
माई गाँठडी सै काढ सै नै बाँटै देखो रै
आई कीरां की ढाणी सैं बहुवां मिलबा तांईं
देखो दाबरी माई का पग सहळा सहळा
माई दे री छै आशीष बहुओं फूलो फळो रै
वांनैं बिन्दी का पत्ता दिया सब राजी व्हैगी रै
माई चोखी रै
सासू चोखी रै
बहुवां चोखी रै
ढाणी का सारा टाबर चोकरदा फिरर्‌या रै
चोकरदा फिरर्‌या रै
चोकरदा फिरर्‌या

गीत की पृष्ठभूमि

मनुष्य के जीवन में प्रेम के विविध रूपों को देखा जा सकता है। प्रेम एवं स्नेह का आपस में अनन्य सम्बन्ध है जिसे परिभाषित करना बड़ा ही कठिन है। इसकी तो केवल अनुभूति ही की जा सकती है। जहाँ एक ओर मनुष्य का अपने से कम व्यक्तियों से किये जाने वाला प्रेम स्नेह की श्रेणी में वर्गीकृत किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर मूक एवं निरीह प्राणियों के प्रति मानव की दयालुता एवं प्रेम भी स्नेह का ही एक रूप है।

इस गीत में मानव की इन्हीं भावनाओं को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

मैड़ गाँव के पास स्थित गूजरों की ढ़ाणी की माई अभी5अभी मोटरगाड़ी से उतरी है। वह पास ही के शहर जाकर आयी है। उसे देखते ही बच्चा-टोली यह कहते हुए उसकी ओर भागने लगी कि माई हमारे लिये खाने की चीज़ें अवश्य लायी होगी । उन सबमें बड़ी लड़की लाली है जिसने अपने नन्हे से भाई को गोद में ले रखा है। उसके साथी उससे यह कहते हुए माई की ओर भागे चले जा रहे हैं कि तुम नन्हे को लेकर धीरे-धीरे आ जाओ तब तक हम बूढ़ी माई को जाकर घेर लेते हैं।

माई मैड़ जाने वाली बस में से लिछमण हीर की ढ़ाणी के बस-स्थानक पर उतरकर बाळ की ढ़ाणी (माई का निवास स्थान) जाना चाहती है, परन्तु यह क्या ? उसे तो इसी ढ़ाणी के बच्चों ने घेर लिया और उसकी ओढ़नी को खींचते हुए ज़िद करने लगे कि हमें खाने की चीज़ें दे दो। माई बाणगंगा नदी की पुलिया से आगे बायें हाथ की ओर बने खुर्रे (पत्थरों से बना ढलवां रास्ता) पर बैठ गई और अपनी गठरी खोलकर उसमें से कुछ बच्चों को झुनझुने दिये तो बाकी बच्चों को नारंगी की फाँक जैसी मिठाई दी जिन्हें लेकर बच्चे राजी हो गये। नन्हा बच्चा मिठाई खाकर माई की गोद में उछलने लगा।

अब माई अपने घर की ओर चल दी परन्तु जैसे ही वह नरसिंहहाळी नामक खेत में पहुँची तो एक कुत्ता चूँ-चूँ करता आया और माई के पैरों में लोट लगाने लगा। माई ने उसे स्नेह से पुचकारा और अपनी गठरी से निकालकर उसे पूवे-पूड़ियां देकर अपने घर की ओर चल दी।

वह अपने घर पहुँच गई। ढ़ाणी के उसके पोते-पाती और बहुओं ने उसे चारों ओर से घेर लिया। बच्चे पीपड़ी तथा बहुएं पाउडर, काजल एवं बिछिया-बिन्दी की मांग करने लगे। माई ने अपनी गठरी में से सामान निकालकर उन्हें दे दिया। पास ही कीरों की ढ़ाणी की बहुएं माई से मिलने आयी और उसके पैरों को सहला सहलाकर श्रद्धापूर्वक दबाने लगी। माई ने उन्हें बिन्दी के पत्ते तथा फलने-फूलने का आशीर्वाद दिया। बच्चे मारे खुशी के उछलने लगे और कहने लगे कि माई बहुत अच्छी है। बहुएं भी राजी होकर कहने लगी कि हमारी सास बहुत अच्छी है।

16. प्रेम की शक्ति एवं अभिव्यक्ति को दर्शाने वाले गीत

तैराक

स्थाई स्त्री. काकाजी बेगा आओजी भाई जी बेगा आओजी
म्हांनै नेजू द्यो मंगवाय, पणघट बाट देखूं जी।
मैं पाणी भरबा नै पौंछी , काल पणघट माळै जी,
हंसी-ठिठोली छोर्यां कर री, नेज चरी कै माळै जी,
अस्यो मरोडो लाग्यो मैंरै, नेज पड़ी जा कोठी मैं
कुण काढै ऊं नै कूद कूवा मैं, पाणी क्यांसै काढूं जी
स्थाई-काकाजी...

स्थाई पु. क्यांकी मन मैं चिन्ता तैंरै, क्यूं ऊभी पणघट पर जी,
मनै बतावै मन की तेरी, तो भी जाणूं बात जी,
मैं ऐस्यो तैराक गोरड़ी गूंठी काढूं पाणी सूं,
बात पड़ी जद आय प्रेम की, लागी ज्यो फिर हिवडा सूं,
कतरो भी पाताल तोड़ पाणी, नेज निकाळूं कूवा सूं
कूदपड्यो लै खोल गाबल्या, नेज बिना नै आऊं रै
स्थाई- क्यांकी मन मैं...

स्त्री हे भगवान करो जी रक्षा.....
हे भगवान करो जी रक्षा कूद पड्यो ज्यो कूआ मैं
कूवो छै पाताळतोड़ कई, ज्यान लियो पैल्यां भी छै
कैंया हिवडै पंछी जिवैज्यो नहीं मिलै तैराक रै
नहीं नेज मूनै चाय बाबल्या, आजा तू चरवाह रै-3

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

प्रेम ही वह शक्ति है जो मनुष्य को उसके कर्म-पथ पर चलने हेतु प्रेरित करता है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि प्रेम-पाश के वशीभूत होकर मनुष्य ऐसे-ऐसे कठिन कार्यों को करने में भी सफल रहा है जिनकी सफलता आज भी अविश्वसनीय सी लगती है। गाँव के पनघट पर एक ऐसा ही दृश्य बन

पडा है।

पनिहारिनें कुए से पानी लेने हेतु जा रही हैं। उनमें से एक सुन्दर सी युवती की नेज (रस्सी जिससे कुए से पानी निकाला जाता है) कुए में जा गिरी। इससे व्यथित होकर वह अपने पिता व भाई को पुकारते हुए कहती है कि मेरी नेज चरी (पानी भरने के प्रयोग में लिया जाने वाला पीतल से बना मटकानुमा पात्र) के ऊपर रखी हुई थी परन्तु जैसे ही मेरी सहेलियों ने हँसी-ठिठोली की वह कुए में जा गिरी और अब मैं कुए से पानी कैसे निकालूं?

कुए के पास में ही उस युवती का प्रेमी उसको इस दशा में देखकर कहता है कि तुम चिन्ता क्यों करती हो । मैं ऐसा तैराक हूं जो कुए में पडी अँगूठी तक को निकालकर ला सकता हूं। और जब बात प्रेम की आन पडी है तो तुम्हारी इस चिन्ता से मेरा हृदय भी पीड़ित हो उठा है । भले ही यह कुआ पाताल-तोड़ (बहुत गहरा व खतरनाक) हो परन्तु मैं इसमें से तुम्हारी नेज निकालकर ही लाऊंगा। इतना कहकर वह अपने कपड़े खोलकर नेज लाने हेतु कुए में कूद पड़ा।

युवती अपने प्रेमी के उस खतरनाक कुए में कूद जाने से चिन्तित होकर भगवान से प्रार्थना करने लगी कि हे भगवान, यह तो पाताल-तोड़ कुआ है जिसमें पहले भी कई लोग अपनी जान गँवा चुके हैं। मुझे अपनी नेज नहीं चाहिये । बस मेरे उस प्रेमी के प्राणों की रक्षा करो जो कुए में कूद गया है। फिर वह कुए के अन्दर झाँककर विलाप करते हुए अपने प्रेमी से कहती है कि यदि तुम जिन्दा वापस न आये तो मैं भी अपनी जीवन-लीला समाप्त कर लूंगी।

इतने ही में वह युवक नेज लिये पानी से बाहर आते हुए कहता है कि सुनयना, तुम अब भी रो क्यों रही हो? तुम्हारे ये आँसू ही तो वह ताकत हैं जिनसे मैं अपनी मंज़िल तक पहुंच सका हूं। अब मैं तुम्हारी जेगड़ (पानी से भरे एवं एक दूसरे के ऊपर रखी हुई दो-तीन मटकियां) पानी से पूरी की पूरी भर देता हूं अत: खुश हो जाओ। फिर वह चुटकी लेते हुए उससे कहता है कि मैं कुए से प्यासा ही बाहर आया हूं अत: अब तो मुझे पानी पिला दो। उसकी इस बात पर प्रेमिका प्रसन्न होकर कहती है कि हे गुवाळ, (चरवाहा) यह सारी की सारी जेगड़ ही तुम्हारी है अत: जितना चाहो पानी पी लो और जीवन भर पीते ही जाओ।

17. सामाजिक उत्सवों के गीत

ब्याव की तैयारी

स्थाई लक्कड़ फाड र्‌हयो छै खाती भट्टी खुदरी बाड़ा मैं
नाई जाय बुलावो देआ सगळा गाँव हाळां नै
सगला गाँव हाळां नै रै सगळा गाँव हाळां नैऽऽ
बंदडा गांवीं जी लुगायां पीठी लगारी ऊं कै
देखो भाभ्यां हळदी रगडीं ऊं को मूंडो चमकै
यै दिन फेर कदे नहीं आवीं बंदडा ल्हर ले लै रै.....+ स्थाई
आयो बाण्यो कांई सौदो सूत चाय बताद्‌योजी
गाडी भरकर मैं पोंछाद्‌यूं थानै कैडे टेम जी
ज्यो भी बेस- गाबल्या चावीं वै सब साथ बताद्‌यो रै...+ स्थाई
खुमारी पूछ रही कांई बर्तन कतरी जेगड आवींगी
बणवा माटी खेडा की सैं हव्वै पकवाऊंगी
म्हारा देवर को छै ब्याव मन सैं नेग ल्यूंगी रै....+ स्थाई
कीर पाणी भरबै आया म्हानै लाव चिडस दे द्‌यो
कतरी छाबडी अर चोल्या चावीं या भी सब खैद्‌यो
गाय चूंखबाटै नेग की म्हेतो लेकर र्‌हांगा रै...+ स्थाई

.....

टूंट्‌या को म्हे खेल करांगी आ जावो थे छोर्‌यां
बींद बीनणी आओ बणल्यो खेल पुराणो खेलां
बूढी बडोडी शरमारी सब छोर्‌यां कर री खेल रै....+ स्थाई
पुळिया माळै बाजा बाजीं, आ गई बारात जी
अगवाणी ल्यो करां बहू की फेर उतारां आरती
छोड़ बीनणी आई घरानै म्हारै कन्नै आज रै...+ स्थाई
रह-रहकर आशीष दे रही बूढी- बूढी डोकरी

टाबर- टोळी छोरा- छापरा भाग-भागकर देखीं जी

सारो गाँव कबीलो तेरो देख बीनणी आज रै

नींका र्‌हैगी सासरै.....4.....

गीत की पृष्ठभूमि

प्राचीन समय में शादी विवाह एक उत्सव के रूप में मनाये जाते थे और ऐसे समय में गाँव के सभी लोग अपना-अपना योगदान दिया करते थे। कई महिनों पहले से ही शादी की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती थी जिसमें गाँव का हर व्यक्ति अपना-अपना सहयोग देता था। हमारे गाँवों में शादी की बहुत सारी रस्में हुआ करती थी जिनमें हर व्यक्ति का सहयोग लिया जाता था। इस प्रकार ऐसे शादी-विवाह न केवल ग्रामवासियों के मन में उत्साह पैदा करते थे अपितु सभी जातियों के व्यक्तियों को आपस में जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

गीत की विषयवस्तु

गाँव के किसी घर में विवाह की तैयारियाँ की जा रही हैं। खाती लकड़ियाँ फाड़ रहा है, बाड़े में भट्‌टी खोदी जा रही है और नाई सारे गाँव में बुलावा देने जा रहा है। घर के अन्दर स्त्रियाँ बंदड़े गा रही हैं तथा दूल्हे की भाभियाँ उसको हल्दी और पीठी लगा रही हैं जिससे कि उसका रंग साफ हो जाए। गाँव का बनिया आकर कहता है कि शादी में जिस-जिस चीज की ज़रूरत हो अभी बता दो ताकि मैं गाड़ी भरकर तुरन्त ले आऊँ क्योंकि उसके बाद वक्त नहीं मिलेगा। कुम्हारिन पूछ रही है कि विवाह में कितनी जेगड़ और बर्तन चाहेंगे मुझे बता दो ताकि मैं खेड़ा की ढ़ाणी से अच्छी मिट्‌टी मँगवाकर बर्तन बनवा दूँगी। मेरे देवर का ब्याह है इसलिए मनमाना नेग लूँगी। पास ही की ढ़ाणी के कीर कह रहे हैं कि हमें लाव-चड्‌स दे दो जिससे हम पानी भर दें। साथ ही यह भी बता दो कि ब्याह में कितनी टोकरियाँ चाहिएं ताकि हम समय से पहले ही बनाकर दे दें। परन्तु विवाह के नेग के रूप में गाय लेंगे जिससे हमारे बच्चे उसका दूध पीते रहें। दूल्हा घोड़ी के ऊपर बैठ गया और सभी निकासी के लिए सियावरजी के मन्दिर की ओर चल पड़े। औरतें गीत गाती जा रही हैं

और बड़ी लड़कियाँ अपने नन्हे भाई बहिनों को गोद में लिए हुए चली जा रही हैं। बारात जाने का समय हो गया और बाज़ार के बीच मोटर आकर खड़ी हो गई। सभी बाराती बस में जाकर बैठ गए परन्तु दूल्हे के ताऊजी दूल्हे के पिता से नाराज़ हैं इसलिए बस में नहीं आए। गाँव वालों के समझाने पर दूल्हे के पिता अपने बड़े भाई को मनाने के लिए पहुँचे और अपनी पगड़ी उसके पाँवों में रखकर माफी माँगी, तब कहीं जाकर वे आये और बारात रवाना हुई। बस के ऊपर बैण्ड वाले बैठे हैं जिनके पीछे अम्बेसेडर कार में दूल्हा अपने साथियों के साथ जा रहा है। उनके जाने के पश्चात् रात्रि के समय दूल्हे के घर में गाँव की लड़कियाँ और नवविवाहिताएँ टूँटिये का खेल कर रही हैं जिनके अभिनय को देख-देखकर बूढ़ी-बूढ़ी औरतें भी शरमा रही हैं। अगले दिन बारात वापस आ गई। गाँव की पुलिया पर बैण्ड बाजे बजने लगे और दुल्हन की अगवानी करने के लिए गाँव की बड़ी-बूढ़ी औरतें आ गईं। गाँव के सभी बच्चे भाग-भाग कर दुल्हन को देखने जा रहे हैं और बड़ी बूढ़ी औरतें वर-वधू को आशीर्वाद दे रही हैं। इस प्रकार यह गीत हमारे देश की परम्परा एवं अपनत्वपन को दर्शाता है।

19. आदर्श एवं नीति के गीत

चोर हुआ चोरी

स्थाई - ढम ढम ढम ढम , ढम ढम ढम ढम 2 - 8
सुणो सुणो सुणोऽऽ सुणो सुणो सुणो ऽऽ 2-8 - 16
कृष्ण कन्हैया छोटा सा अर सियावर को छत्र रै
पूजाटै पट खोल्या तो वै कोनै उंडे दीख्यो रै
कांई करूं या सोच्यो पुज्यारीऽऽऽऽ
कांई करूं या सोच्यो पुज्यारी कुण नै खूं या बाऽत
अब तक कीनी भक्ति सारी व्हैज्या वा बरबाद रै + स्थाई

.....

कांई करूं भगवान खूं तो, बेटो जावै जेळ रै
नै खूंतो मन घुटतो र्‌हैगो, कस्यो अजूबो खेल रै

सोच्यो जार खैद्यूं जिन्डे ऊभा पेड़ रुं खड़ा
एकलो वांनै जाऽर खिय्यो, चोरी की या बात रै + स्थाई

.....

कालचक्र को फहियो घूम्योऽऽऽऽ
काळचक्र को फहियो घूम्यो सियावर का हाथ सूं
बडो चोर वा चोर बण्यो अर निकळ्यो वा ऊं गाँव सूं
देश छोड परदेश चलेगो बणग्यो जार बादश्या,
भक्ति पण वा करै पुज्यारी देखो जी दिन रात रै + स्थाई

.....

बार देश हटवाडो लाग्यो चोरी की मुरत्यां को
जित्ती भी चोरी की मुरती वां को लाग्यो मेळो
संसारचन्द्र वांको नेताछो सब छोटा चोर आया
सियावर मूरती को चोर, वा भी उंडे आयो रै + स्थाई
छापा मैं वै फँसगा सारा बंद सिडीं अब जेळ मैं
जैसी करणी करी मिल्यो वांनै , डंड सुणो ईं जन्म मैं
सब मुरत्यांटै मिन्दर बणगो बार देश मैं जोर को
सियावर का कृष्ण कन्हैया ओढ्यौं छत्र बिराजै रै + स्थाई
बाणगंगा का करीं रूंखडा, ऊंचा व्है-व्है बात जी
म्हंत गणेशदासजी की भक्ति छी भाई जोर की
जीवन अपणो होम कर्यो वै भक्ति की यज्ञ वेद मैं
गावां वांका गीत खड़ा सब, सुणल्यो तीन्यूं लोक रै
चाल ढिंढोरो पीट ढोलची ऽऽऽऽ ....
चाल ढिंढोरो पीट ढोलची चोरां को काळो मूंडो
दुखी करीं ज्यो भक्तां नै वै व्है जावीं बर्बाद रै
व्है जावीं बर्बाद रै व्है जावीं बर्बाद रै

गीत की पृष्ठभूमि

वेद, शास्त्र, रामायण, महाभारत एवं अनेक ऐसे ही धार्मिक ग्रंथों में नीति-अनीति, धर्म, कर्तव्य आदि के सम्बन्ध में अनेक अन्तर्कथाओं एवं दृष्टान्तों के माध्यम से ऐसे-ऐसे दिशा-निर्देश दिये गये हैं जो सर्वकालिक हैं और युग-युग में, मनुष्य के जीवनें में घटित होते हुए देखे गये हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति, साहित्य, वेद-शास्त्र, ज्योतिष आदि की विश्वपटल पर अपनी एक विशिष्ट छाप रही है।

हमारे धार्मिक ग्रंथों एवं मान्यताओं के अनुसार यह माना जाता है कि मनुष्य जैसे कर्म करता है उसका उसे वैसा ही फल मिलता है, चाहे वह इस जन्म में मिले या अगले जन्म में। संभवत: इसी आधार पर पाप एवं पुण्य होने की बात की मान्यता के परिप्रेक्ष्य में ऐसा माना जाता है कि यदि कोई मनुष्य इस जन्म में पुण्य करता है तो उसे इस जन्म में सुख एवं अगले जन्म में स्वर्ग मिलता है। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति इस जन्म में अनैतिक कार्य या पाप करता है तो उसका जीवन कष्टदायक रहता है और अगले जन्म में भी उसे नर्क की यातनाएं सहन करनी पड़ती हैं।

इस प्रकार हमारे देश का जीवन-दर्शन और सभी धार्मिक ग्रंथ विश्व के समक्ष ऐसा आदर्श प्रस्तुत करते हैं जो मनुष्य की क्रियाओं को नियंत्रित करते हुए उसे सत्कर्म करने हेतु प्रेरित करते हैं।

हमारे देश में ऐसे-ऐसे व्यक्ति, ऋषि-मुनि एवं तपस्वी हुए हैं जिन्होंने अपने आचरण एवं सत्कर्मों से समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया है। राजस्थान के जयपुर जिले में महाभारतकालीन स्थान ग्राम मैड़ है जहां पर कभी विराट के साले कीचक का निवास था। वह अपने अनैतिक कार्यों के कारण आज भी समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। इसी गाँव में एक ग्रहस्थ महात्मा हुए हैं महन्त श्री गणेशदास जी महाराज, जिन्होंने अपनी भगवद्भक्ति एवं सत्कर्मों से समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया । वे अपने पुत्रों के दुष्कर्मों एवं प्रताड़नाओं से आजन्म आहत रहे, परन्तु अपनी भक्ति के मार्ग से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

प्रस्तुत गीत में महन्त श्री की भक्ति-पूजा का उल्लेख करते हुए उनके पुत्र द्वारा भगवान का चाँदी का छत्र चोरी करने तथा उसकी तथाकथित प्रगति एवं आगामी कष्टकारी जीवन की परिकल्पना की गई है। साथ ही यह भी कल्पना की गई है कि पुजारी (महन्त श्री गणेशदासजी) को भगवान उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर स्वर्ग में स्थान देते हैं परन्तु उस व्यक्ति को दण्ड अवश्य देते हैं जिसने उनको जीवन में कष्ट

पहुंचाया।

अन्त में यही सन्देश दिया गया है कि मनुष्य को अपने जीवन में हमेशा अच्छे कार्य करने चाहिएं और जाने-अनजाने में कभी किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए।

19. बाल-सुलभ क्रीड़ाओं को दर्शाने वाले गीत

दैडा की मौज

स्थाई काफूल्या की कैक फाड ?
बारा रै इक्कीस फाड
कुण बन्दो ल्यावैगो ?
मैं बन्दो ल्याऊंगो

.....

खिजूर्यां सैं पंदरा-बीस टाबर निकळ्या
लेर सूवो वांनै साथ आगै चाल्यो
बाणै कै ढावै पोंछ्या अब दैडो आगो रै
खोल गाबल्या सारा छोरा दैडा मैं कूद्या
भैंस ईं मैं न्हारी छीं मौज ल्यांगा
न्हातां न्हातां पूँछ पकड़ अर चक्कर काटीं रै
ल्हैडक्यां नै काढ अर कोथळी सूं
दैडा का पाणी मैं जोर सूं फैंकी
च्यारूं ओर तिरबा लागी छोरा वांनै खांवीं रै
कोई कोई छोरा भैंस कै माळै
खाता खाता ल्हैडकी नाड नै हलावीं
उल्टी सीधी भैंस व्है तो पाणी मैं कूदीं रै

एक छोरो अइयां बोल्यो गूंठी नै गेरूं
ज्यो भी ईंनै काढ़ ल्यावै ऊंनै जाणूं
हाथ नै ऊपर उठार देखो गावै रै + स्थाई
पाणी मैं डुबकी लगाया छोरा सारा
आँख्यां नै पाणी मैं खोल्यां पींदा मैं पोंछ्या
रूड्या नै गूँठी दीखी लेर ऊपर आयो रै
सारा छोरा गााबै लाग्या देखो अइयां रै –
काफूल्या की कैक फाड ?
बारा रै इक्कीस फाड
कुण बन्दो ल्यायो रै ?
रूड्यो रै रूड्यो
रूड्यो ईंनै ल्यायो रै
रूड्यो ईंनै ल्यायो रै
रूड्यो ईंनै ल्यायो

गीत की पृष्ठभूमि

मनुष्य का बाल्यकाल, छात्र जीवन एवं इस दौरान की गई क्रीडाएं उसे जीवन भर याद रहती हैं। इस आयु में बालकों के मन में न तो वर्ग, जाति, धर्म आदि का कोई तत्व ही रहता है और न ही जातिगत आधार पर इस प्रकार के अलगाव की कोई भावना। सारे गाँव के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, साथ खेलते हैं और साथ मिलकर ही बाल–सुलभ क्रीड़ाओं का आनन्द लेते हैं।

इस गीत में एक ऐसी ही स्थिति का वर्णन किया गया है जिसमें बच्चा–टोली के सभी सदस्य पहले तो बाणगंगा नदी के गहरे पानी में नहाते हैं और उसके उपरान्त गर्म–गर्म रेत में लोट लगाते हैं। उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदेशा नहीं कि यह उनके लिए हानिकारक है या लाभकर। बस वे तो हिलमिलकर बाल सुलभ क्रीड़ाओं का आनन्द लेने में निमग्न रहते हैं और यही उनके भावी जीवन के विकास का आधार है।

गीत की विषयवस्तु

गर्मी के दिन प्रारम्भ हो गये हैं। प्रात:काल का समय है और बच्चों ने छाछ राबड़ी का कलेवा कर लिया है। एक बच्चे ने ज्योंही राबड़ी पीकर थाली को ज़मीन पर रखा त्योंही पास के खजूरों के झुण्ड़ में से सीटी बजने की आवाज़ आई। इस आवाज़ को सुनकर बच्चे ने अपने पिता से कहा कि मैं तो जंगल से कोर (सूखा गोबर) बीनने जा रहा हूं। सूवा नाम का यह बच्चा जैसे ही अपने घर से बाहर निकला तो खजूरों के झुण्ड़ में से पन्द्रह-बीस बच्चे निकलकर उसके साथ हो लिए। अब सभी बच्चे बाणगंगा नदी के गहरे पानी में नहाने लगे। उस पानी में चार-पाँच भैंसें पहले से ही नहा रही थी। बच्चों ने उनकी पूँछ पकड़ ली और स्वत: ही भैस के पीछे-पीछे बहने पर आनन्दित हो उठे। उनमें से एक बच्चा पानी से बाहर आया और कपड़े की थैली में रखी गई ल्हैड़कियों (खजूर के फल) को पानी में फेंक दिया। ल्हैडकियां पानी में तैरने लगी। वह बच्चा पुन: पानी में कूद गया और बच्चा टोली चुन चुनकर उन ल्हैड़कियों को खाने लगी।

जब भैंस पानी में गुलाटी खाती तो उन पर बैठे बच्चे पानी में कूद जाते। उनमें से एक लड़के ने अपनी उंगली की अँगूठी निकालकर उसे सबको दिखाते हुए कहा कि मैं इसे पानी में डाल रहा हूं और यदि कोई इसे निकाल लाये तो उसकी बहादुरी को जानूंगा। अँगूठी के पानी में गिरते ही सब बच्चे एक साथ पानी में कूद गये। कोई-कोई बच्चा तो पानी की तह में ज़मीन तक पहुँच गया और आँखें खोलकर अँगूठी तलाशने लगा। परन्तु वह अँगूठी रूड्या नाम के एक लड़के को मिली और वह उसे हाथ में लिये हुए एकाएक पानी की सतह पर प्रकट हुआ। उसकी इस बहादुरी से सभी बच्चे प्रभावित होकर गाने लगे-

काफूल्या की कैक फाड, बारा रै इक्कीस फाड
कौण बन्दो ल्यावैगो ? रूड्यो रै रूड्यो रूड्यो रूड्यो।

इस प्रकार इस गीत में बच्चों की साहसिक क्रियाओं का सजीव चित्रण किया गया है।

20. वर्तमान पीढ़ी को सीख देने वाले गीत

बाई

स्थाई कानाबाती कुर्र कानाबाती कुर्र
पँख लगार उड जा बाई फुर्र फुर्र फुर्र
निजर्या हाथां मैं पैर्यां अर गळा मैं कठलो
रगबग-रगबग बाई चालै मारै किलकारी

छमछम चाँदी की बाजीं ऊंकै पगां मैं कड्यां रै +स्थाई
जा लागै सपील तो ओज्यूं म्होड ले

.....

खूब पढ़-लिख बाई बार निकळी
ऊंका मार बाप ऊंनै हौसलो दिया
बाई खै मैं थां..सूं नींकां सोचूं रै +स्थाई
माँ अर बाप बोल्या बाई उण्डी कै मत उड
काळी-पीळी आँधी आई सल्डाटो व्हैर्‌यो
बाई बोली थां सूं नींकां मैं जाणूं सै रै +स्थाई
भूल बाई टाबरपणो करै चबोडाँईं
कोनै मानी माँ-बापां की आँधी मैं फँसी
माँ अर बाप पोंछ्या कन्नै आँधी सैं बचाया रै +स्थाई
बाई बोली कतरी ही फड जांवां म्हे
माँ-बापां सूं ज्यादा ज्ञान कोनै म्हांनै व्है
वै तो म्हांको भलो पूरी ज़िन्दगी चाँवीं रै
पूरी ज़िन्दगी चाँवीं रै
पूरी ज़िन्दगी चाँवीं.

गीत की पृष्ठभूमि

बाल्यावस्था मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण कालखण्ड़ होता है। इस अवस्था में बालकों के द्वारा किये गये क्रियाकलाप, आस-पड़ौस के बालकों का आपस में मिलकर खेलना , माता-पिता द्वारा अपने बच्चों का पालन-पोषण करना, नन्हे-नन्हे बालकों की मनमोहक क्रीड़ाएं, अड़ौसियों-पड़ौसियों द्वारा एक-दूसरे के बालकों को दिया गया स्नेह, माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को दिये गये सुसंस्कार, उन्हें दिया गया ज्ञान, सीख और उनकी समुचित शिक्षा हेतु किये गये प्रयास, ये सब अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि इस अवस्था से निकलने के उपरान्त जब ये बच्चे आधुनिक वातावरण में कदम रखते हैं और विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलते हैं तो कई बार अपने माता-

पिता द्वारा दी गई सीख, उनके उपदेश आदि से भिन्न आचरण करने लग जाते हैं। वे ऐसा सोचने लगते हैं कि आज हमारा ज्ञान, हमारी सोच, हमारे माता-पिता, हमारे पालको या ग्रामीण लोगों की तुलना में अधिक ऊँचे हैं और उनकी तुलना में हम हर कार्य अच्छी प्रकार से कर सकते हैं। एक प्रकार से यह उनका भ्रम है। इसीलिए ऐसे युवक-युवतियां कभी-कभी किसी सँकट में भी फँस जाते हैं। परन्तु जब उन्हें वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है तो वे अपनी ग़लती स्वीकार करते हैं और अपने बाल्यकाल में मिली शिक्षा, वातावरण, परिवेश आदि के महत्व को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार यह गीत व्यक्ति के जीवन के व्यावहारिक जीवन की सही तस्वीर प्रस्तुत करता है।

गीत की विषयवस्तु

किसी परिवार की एक नन्हीं बालिका अपनी नाना प्रकार की क्रीड़ाओं से सबको आनन्दित कर रही है। उसने हाथों में छोटे-छोटे काले सफेद मोतियों के निजर्ये, गले में कठला एवं पैरों में चाँदी की पायजेब पहन रखी हैं। जब वह किलकारी मारते हुए रग्गग बग्गग चलती है तो सबके मन को मोह लेती है। वह अक्सर अपनी माँ की गोद में चिपकी रहती है और जब कोई उससे बात करता है तो वह उसकी नकल उतारने लगती है। जब उसे भूख लगती है तो रोते-रोते एक साँस हो जाती है और उसकी माँ उसे टाँगों में भींचकर जबरदस्ती दूध पिलाती है। जब वह चलती है तो उसके पैरों में बँधी पायजेब छम-छम करके बजने लगती है। वह सामने दाना चुग रहे कबूतरों को भाग भाग कहते हुए दौड़ने लगती है। कभी वह बरामदे में रखी हुई लकड़ी की गाड़ी को पी पी करते हुए चलाती है। पास के घर की ताई जी जब उसकी माँ से मिलने आती है तो वह अपनी माँ को छोड़कर उनसे लिपट जाती है। वह नन्हीं बालिका पढ़ लिखकर उच्च शिक्षा हासिल करती है और अपने माता-पिता की सीख को भूलकर मनचाही दिशा में उडना चाहती है और एक दिन वह किसी सँकट में फँस जाती है। जब उसके माता-पिता को इस बात का पता लगता है तो वे अपनी पुत्री को उस सँकट से उबार लाते हैं। अब बेटी को अहसास होता है कि माता-पिता अपनी सन्तान को उसके बाल्यकाल में जो शिक्षा प्रदान करते हैं वह जीवन की अमूल्य धरोहर होती है और सन्तान को उसके अनुसार ही व्यावहारिक जीवन में चलना चाहिए।

21. नारी के रूप-सौन्दर्य एवं पुरुष के भावों को दर्शाने वाले गीत

चिरमी

स्थाई लाल लहँगो चोखो तेरो कबजो काळो
ऊंमैं चमकीं हीरा-मोती रह रह मारीं पळको
छम-छम करती आरी बीनणी धण कै पाछै
लावो बकरी को बच्यो छै म्हेल्यां कांधा माळै
छम-छम व्हैरी देखो धण की ऊंका बिछुवा बाजैं
अइयां लागै अँधेरा मैं चाँद-सितारा आर्‌या रै +स्थाई
रह-रह चालै भाळ जद ऊंको घूंघटो फर्रावै
गैलै जाता हाळा सोचीं देखो बिजळी चमकी
लीला नाक का मोती की चम्मक चोखी लागी
ऊंका सतरंगी मूंडा की आभा सूं धक् धक् व्हैरी रै +स्थाई
आतां-आतां ऊन का कदे गट्ठा कै बळ दे
चकरी की नियां घुमावै दैणा हाथ सूं
ऊंकी भरगी छै अटेरण देखो कात्या सूत सूं
म्हारो मन घूम्यो गट्ठा मैं जा लिपट्यो अटेरण रै +स्थाई
छण-छण बाजीं चूड्यां जद वा अटेरण घुमावै ..
या कदे बकरी का बच्या नै आगै सरकावै
ऊंकी चूँदडी सरकी चोळी भी ऊंची व्हैगी
चूंधो खागी म्हारी आँख्यां छां पोंछ्या आकाश रै +स्थाई

.....

लाल लहँगा माळै चमकै छै धोळी कणकती
ऊंकी तागडी कै बँधरी कूँची और नकचूटी
भोळा जाण बूझ सूळ घोंपर्‌या देखो पगां मैं
फेर खैर्‌या सुण ए जाबाळी तेरी नकचूटी सैं पाड दै +स्थाई

गीत की पृष्ठभूमि

नारी–सौंदर्य का विभिन्न कवियों ने अपनी–अपनी दृष्टि से चित्रण किया है। नारी का प्राकृतिक सौन्दर्य बरबस ही हर किसी के मन को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। सौंदर्य प्रसाधन नारी को अस्थायी प्रभाव ही प्रदान कर सकते हैं। हमारे ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं अपने कठोर परिश्रम एवं नियमित रूप से अपने दैनिक कार्यों के निपटान में अपने आपको संलग्न रखते हुए उस अनुपम सौंदर्य की स्वामिनी बन जाती हैं जो बनावटी सौंदर्य से दीप्त नारी की तुलना में अतुलनीय सौंदर्य का प्रतीक होता है। ग्रामीण महिलाएं अपने दैनिक कार्यों का निपटान करते हुए एवं सामान्य जीवन जीते हुए भी संतुष्ट रहकर अपने आचरण एवं व्यवहार के कारण भी लुभावनी प्रतीत होती हैं।

इस गीत में ग्रामीण महिलाओं के इसी स्वरूप का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

एक ग्रामीण नववधू घूँघट काढ़े लाल रंग का लहँगा और चक्करदार चाँद–सितारे लगा काले रंग का ब्लाउज पहने अपने पशुओं के पीछे चली आ रही है। उसने अपने कँधों पर बकरी का एक नवजात शिशु लाद रखा है। जब वह बकरियों को मोड़ने के लिए इधर उधर होती है तो उसके पैरों के घुँघरुओं की छम छम से हर किसी का ध्यान उस ओर आकर्षित हो जाता है। उस ओर देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो अँधेरे में चाँद–सितारे चले आ रहे हैं।

जब तेज़ हवाओं से उसका घूँघट लहराता है तो कभी–कभी उसका मुखड़ा भी दिख जाता है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो आसमान में बिजली चमकी हो। उस चमक में उसके नाक के काँटे के मोती की दमक मन को भा रही है और इस सतरंगी वातावरण से दिल धक् धक् करने लगता है। वह रेवड़ के पीछे चलते हुए ऊन कात रही है और जब ऊन के बल देने के लिये गट्ठे को दाहिने हाथ से घुमाती है तो देखने वाले का मन भी गट्ठे के साथ–साथ घूमता हुआ उसकी अटेरण में जा लिपटता है। जब वह अटेरण घुमाती है या अपने कँधे पर लदे बकरी के बच्चे को आगे–पीछे सरकाती है तो

उसकी चूडियाँ खनक उठती हैं। ऐसे ही समय में उसकी चुनरी खिसक गई और चोली भी ऊँची हो गई। इस दृश्य को देख रही निगाहें अन्दर प्रविष्ट होकर आकाश में पहुँच चुँधिया गई। जब उसने बकरी के बच्चे को खिसकाकर हाथ नीचे किये तो अन्दर प्रविष्ट हुई निगाहें अन्दर ही रह गई। वहाँ पर आसमान के बीच चाँद-सितारों को जगमगाता देख स्वर्ग का सा आभास हुआ और दृष्टि वहीं पर रह जाने के लिये मचल पड़ी।

उस स्त्री के लाल लहँगे पर चाँदी की सफेद कणकती के चाबी और नकचूटी बँधी हैं। राह चलते कई युवक जान बूझकर अपने पैरों में काँटे चुभोकर उससे कह रहे हैं कि हे जाने वाली, तुम्हारी नकचूटी से हमारे पैर का काँटा तो निकालती जाओ। जब उसने काँटा निकालने के लिए ऐसे एक युवक का पैर अपने गोड़े पर रखा तो उस युवक को उस स्त्री के परिधान में जड़े चाँद-सितारों की चौंध से ठण्ड़क पहुँची और उसने उस स्त्री से कहा कि बिना नकचूटी से काँटा निकाले ही मेरा दर्द मिट गया है परन्तु तुम इसी स्थिति में यहाँ बैठी रहो। अब चारों ओर उजाला ही उजाला हो गया। आसमान नीचे आ गया और चमकते हुए चाँद-सितारे हर किसी के मन को

22. ग्रामीण खान-पान को दर्शाने वाले गीत

भोभळ्यो

स्थाई **पुरुष** धक् धक् धक् धक् चलै धोंकणी भोभळ्या कै डेरै

स्त्री लोखी सिल्ली नै कोलां मैं लाल भोभळ्यो करैऽ

.....

पुरुष भोभळ्यो बऽणायो ऊंसैं दाँऽतळी दो खुरपा
लै लील्या तू धार लगादै यां कै होळ्यां होळ्यां
जाऽर बसंती रोटी सेक भूख लागी रै

स्त्री पोथी छोली लऽसण कीऽ सिल्ला माळै पीसै
म्हैक ऊंकी अस्सी फैली दाँतां सीळ चालै

टोपिया मैं तेल घाल चिटणी छोंकी रै

पुरुष हाथांऽ सूंऽ मोटी मोटी रोटीऽ थाऽपीऽ
माटी का तऽवाऽ माळैऽ ऊंनै गेऽरीऽ
चूऽलाऽकै मांयनै दे ऊंनै सेकै रै

पुरुष लूण्यो घी खोडांऽ भर्‌योऽ मोटा मोटा रोट
साग की दरकार कोनै चऽटणी ही ब्होत
दूध को कऽचोळो बाई और भरदै रै

पुरुष ब्याळू कऽर ऊठगोऽ देर मूंछ्यां ताव
म्हाराणा परताप कीऽ करी प्रतीज्ञा याद
गाडी मैं ही र्‌हांऽगाऽ घर सारो संसार रै
घर सारो संसार रै
घर सारो संसार रै

गीत की पृष्ठभूमि

राजस्थान का नाम सुनते ही हर किसी के मन में आन-बान-शान की तस्वीर उभर आती है। महाराणा प्रताप का नाम कौन नहीं जानता। ये राजस्थान के ऐसे वीर योद्धा रहे हैं जिन्होंने अपने जीवन में किसी की पराधीनता स्वीकार नहीं की और अपने परिवार के साथ जंगलों में भटकते रहे तथा वहाँ पर आदिवासी लोगों को संगठित कर जीते जी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ते रहे। इन्हीं के वंशज गाडिया लुहार हैं जो आज भी दर-दर को भटक रहे हैं परन्तु अपने पूर्वजों के द्वारा महाराणा प्रताप को दिए गए अपने प्रण की पालना आज भी ये लोग कर रहे हैं। ये गाडिया लुहार लोहे के अस्त्र-शस्त्र बनाने में सिद्धहस्त होते हैं तथा कठिन परिश्रम को ये अपनी आराधना समझते हैं। इस गीत में इन्हीं गाडिया लुहारों की कार्य प्रणाली एवं दिनचर्या को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

गाँव के एक हिस्से में सड़क के किनारे गाडि१या लुहारों की एक गाड़ी खड़ी है जिसके पास में ही हथियार बनाने के लिए एक बच्चा धोंकनी को दोनों हाथों से चला रहा है। एक पुरुष लोहे की लम्बी सी छड़ को चिमटे से पकड़कर उसे धोंकनी के मुहाने पर लाल-लाल अंगारों पर रखकर गर्म कर रहा है। अब उसकी लड़की बसन्ती ने उसे चिमटे से पकड़ लिया और लोहे की एक मोटी सी सिल्ली पर रख दिया। उसका पिता खड़े होकर लोहे के हथौड़े (जिसे घन कहा जाता है) को लेकर उस लाल हुई सिल्ली को जोर-जोर से कूटने लगा। सिल्ली फैलने लगी। लड़की के पिता ने कहा कि यह ठण्डी हो गई इसको वापस लाल अंगारों पर रखो। उसकी लड़की ने उसे अंगारों पर रख दिया तथा छोटा बच्चा धोंकनी को चलाने लगा। इतने ही में उसकी बेटी ने अपने पिता के लिए सुलपी में तम्बाकू भर दी और उस पर अँगारा रखकर उसे दे दिया। उसके पिता ने घूंट खींचकर अपनी बेटी को दे दिया। उसने भी एक घूंट खींची और अब भाई को दे दी। सुलपी पीकर बसन्ती ने अपने पिता से कहा कि अब लोहे की छड़ को तुम पकड़ लो और इसकी कुटाई मैं करती हूँ। सुलपी की घूंट खींचने से उसमें ताकत आ गई और अपने पिता से घन लेकर जब उसने जोर-जोर से लाल हुई छड़ पर चोट मारना प्रारम्भ किया तो तो छड़ वृत्ताकार रूप में फैल गई। उसके पिता ने उससे खुरपे और दाँतली बनाये तथा अपने बेटे से कहा कि अब तुम इसके धार लगा दो और बसन्ती तुम जाकर रोटी सेंक लो जोर की भूख लगी है। उसकी बेटी ने लहसुन की पोथियों को छीलकर सिल-बट्टे पर इतना जमकर पीसा कि चारों ओर लहसुन की महक फैल गई। जब उसने टोपिये में तेल डालकर उस चटनी को छोंक लगाया तो हर किसी के दाँतों में सुरसुराहट होने लगी। बसन्ती ने अपने हाथों से मोटी-मोटी रोटियाँ थापी और उसको मिट्टी के तवे पर डाल दिया तथा तवे पर से उतारकर धीरे-धीरे चूल्हे में सेंका। उसके पश्चात् उन मोटी-मोटी रोटियों में लूण्या घी डालकर अंगुलियों से खड्डे कर दिए। उसके पिता ने कहा कि बेटी सब्जी बनाने की जरूरत नहीं है बस एक प्याले में दूध और दे दो। और इस प्रकार पूरा परिवार आनन्द से भोजन करने लगा। लुहार भोजन करके और मूँछों पर ताव देकर उठ गया तथा महाराणा प्रताप की प्रतिज्ञा को याद कर मन ही मन कहने लगा कि हम कभी घर बनाकर नहीं रहेंगे और इसी प्रकार सब जगह रहते एवं फिर आगे

चलते जाएंगे। सारा संसार ही हमारा घर है। इस प्रकार यह गीत हमारी परम्परा, नैतिकता, मानवीयता एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को दर्शाता है।

23. संगीत एवं नृत्य सम्बन्धी गीत

म्हंत गणेश दास जी

स्थाई च्यारूं मेर चूंथरा कै माळै बैठ्या गाँव हाळा
सुलपी कै साफी लपेट घूंट खंचीं छीं

.....

भोळी देर व्हैगी खैतां-सुणतां बातां ज्ञान की
भजनां मैं बैठांगा बेटा एक हेलो दै
छोरो जाओ लेर आओ मांयं सूं दर्‌यां
अइयां खैर म्हंत जी धूणी सैं उतर्‌या + स्थाई

.....

सद्‌यो बाबो ढोलकी कै थाप मारी
टाबर-टोळी-भग्गत आर बरैण्डै बैठीं
सुवालाल म्हंत अर रूडजी बाबोसा
म्हंत जी कै आर सारा ढोक देर्‌या रै + स्थाई
सूरदास कीरां कै अर बोराजी बैठ्या
म्हंत गणेश दासजी मंजीरा बजार्‌या
सगर्‌यो कीर म्हादेवो अर बाळ की ढाणी का
जै हडमान बोलता भाग्या आर्‌या रै + स्थाई
भूरजी बैद्‌जी भजन गार्‌या
छींड भ्याजर पूराळा का लोग आया
सोन्यो नायक पेटी नै बजावै देखो कइयां

धम धमाधम व्हैरी देखो रूडजी नाचीं रै + स्थाई

.....

तंतर मंतर सारा बोल्या बोल्या जै हडुमान
कोई-कोई ढोक देबा लेटगो बरण्डै
मंथजी कै चरणां पटक्या टाबरां नै मांयां
म्हंत गणेशदासजी वांनै आशीर्वाद देर्‌या रै
आशीर्वाद देर्‌या रै वांनै आशीर्वाद देर्‌या

गीत की पृष्ठभूमि

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जहाँ पर हर जाति, धर्म एवं सम्प्रदायों को अपने-अपने सिद्धान्तों पर चलने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। अपने-अपने सामाजिक कार्यों में हमारे देश में सभी धर्मावलम्बी संयुक्त रूप से सम्मिलित होकर किसी कार्य को पूरा करने में अपना पूरा-पूरा सहयोग देते हैं। किसी एक धर्म के तीर्थस्थल को अन्य सम्प्रदायों या धर्म वाले व्यक्तियों द्वारा भी पूरा सम्मान एवं महत्व दिया जाता है। प्राचीन समय में गाँवों में होने वाले भजन एवं सत्संगों में यह तथ्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता था जहाँ पर स्वैच्छिक रूप से गठित भजन मण्डलियों में हर जाति के व्यक्ति अपना-अपना योगदान देते हैं। इस गीत में ग्राम मैड़ में हुए महान् संत महंत श्री गणेशदास जी महाराज के ऐसे ही स्वैच्छिक भजन मण्डली के क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

महाभारतकालीन स्थान ग्राम मैड़ में श्री सियावरजी का मन्दिर है जहाँ महंत श्री गणेशदासजी महाराज ने अपना पूरा जीवन भगवत्भक्ति एवं समाज सेवा में व्यतीत कर दिया। महंत श्री गणेशदास जी प्रत्येक शनिवार एवं मंगलवार को अपने इष्टदेव हनुमान जी महाराज के बरामदे में भजन करवाया करते थे। आज भी एक ऐसा ही अवसर है। मन्दिर के सामने संतों की धूणी है। उसके बाहर एक चौकोर चबूतरा है। समस्त गाँव वाले उस पर आकर बैठ गए और सुलपी के साफी लपेटकर घूंट खींचने लगे। वह चबूतरा मिट्टी-गोबर से लिपा हुआ है तथा उस पर बिछी हुई जाजम के बीचों-बीच महंत श्री गणेशदास जी महाराज बैठे हुए गाँव वालों को प्रवचन दे रहे हैं। सभी गाँव वाले

सुलपी पीते हुए उनकी बातें ध्यानमग्न होकर सुन रहे हैं। महंत श्री गणेशदास जी महाराज वहाँ बैठे हुए लोगों में से एक बच्चे को कह रहे हैं कि भाई बहुत देर हो गई अब जाकर भजन करने बैठेंगे। तुम एक बार जोर से आवाज लगा दो जिससे सब लोग हनुमान जी के बरामदे में एकत्र हो जाएँ और कुछ बच्चे अन्दर से बिछाने की दरियाँ और लेकर आ जाओ। चबूतरे के नीचे घास का मैदान है जिसके एक कोने में अग्नि का अलाव जलाकर बच्चे हाथ सेंक रहे हैं और उसमें सूखे पत्ते डालकर प्रसन्न हो रहे हैं। जब महंत श्री गणेशदास जी महाराज जाकर हनुमान जी के बरामदे में बैठ गए तथा सद्दीलाल धानका ने ढोलक के थाप मारी तो सभी बच्चे और लोग-बाग आकर बरामदे में बैठने लगे। सुआलाल महन्त और गाँव के ठाकुर रूड़जी बाबोसा बरामदे में प्रविष्ट होकर महंत श्री गणेशदास जी के चरण स्पर्श कर रहे हैं। एक कोने में कीरों की ढ़ाणी का महादेव व अन्य लोग हनुमान जी महाराज की जय-जयकार करते हुए भागे चले आ रहे हैं। महंत श्री गणेशदास जी महाराज बीचों-बीच बैठे हुए मंजीरे बजा रहे हैं। भूर जी वैद्य जी भजन गा रहे हैं। छींड, बिहाज्यर तथा पूराला आदि ढ़ाणियों के लोग भी आ गए हैं। सोनाराम नायक मग्न होकर हारमोनियम बजा रहा है और रूड़जी बाबोसा भाव विह्वल होकर हनुमान जी के समक्ष नृत्य कर रहे हैं। मन्दिर के भण्डारगृह में चूल्हे पर चाय बन रही है। बच्चे अदरक को बड़े पत्थर पर रखकर कूट रहे हैं। भगौनी में जायफल भी डाल दिया गया है और चाय को छानकर रामझारों में भर दिया गया है। कुछ बच्चे कपों को उंगलियों में लटकाये और अन्य बच्चे हाथों में रामझारा लिए भजन कर रहे लोगों को चाय पिलाने आ गए। महंत जी ने आदेश दिया कि पहले चाय पी लें फिर भजन करेंगे। कुछ लोग बरामदे में से उठकर घास के मैदान में आ गए और सुलपी पीने लगे क्योंकि भगवान के सामने बरामदे में सुलपी नहीं पी जा सकती थी। चाय पीकर भजन वापस प्रारम्भ हो गए। प्रात:काल होने को है। राग भैरवी गाई गई उसके पश्चात् महंत जी ने 21 फूलत्तियाँ जलाकर एक पीतल की फूलबत्तीदानी को दाहिने हाथ में लेकर भगवान की आरती उतारना शुरू किया और बांये हाथ से टनटनी बजाते जा रहे हैं। उन्होंने तन्त्र-मन्त्रों का उच्चारण किया और अन्त में हनुमान जी महाराज की जय-जयकार की। लोगों ने बरामदे में लेट-लेट कर हनुमान जी महाराज के ढ़ोक देना प्रारम्भ किया। छोटे-छोटे नवजात शिशुओं को उनकी माताओं ने महंत श्री गणेशदास जी महाराज के चरणों में डाल दिया। महंत श्री गणेशदास जी महाराज उनको आशीर्वाद दे रहे हैं और समस्त लोग हनुमान जी महाराज के ढ़ोक देकर वहाँ से

प्रस्थान कर रहे हैं। इस प्रकार यह गीत ईश्वर भक्ति, आराधना एवं आपसी सहयोग की भावना को दर्शाता है।

24. मानव हृदय की संवेदनात्मक अनुभूति को दर्शाने वाले गीत

रंग दै मेरी बाछड़ी

स्थाई **: स्त्री** म्हारी केल्डी का सींग रंगबाटै रंग दे दै

पुरुष डीबस्या पैली लगवालै थारी लूगडी कै

पुरुष लीलो रंग तेरी आँख्या निय्यां को मैं हेरूंगो
डीबस्यां मैं ऊंनै डुबोर चूंदडी रंगूंगो
च्यारूं मेर मोरपँख की आँख्यां जा व्हींगी
असी झूंपड़ी मैं सोऊं मेरो मन भरजावैगो

.....

पुरुष कम पडगो लीलो रंग तेरी आँख्यां कर ओलाडी
भर्‌यो मालसो रंग सैं छोरी रंगदी चूँदड सारी
केल्डी अर बाछडां नै भी रंग पूरो पडगो
असी तेरी आँख्यां नै मैंऽ आँख्यां मैं म्हेलूं रै

स्त्री सांच्यांई तेरी झूंपडी मैं मन मेरो रमगो
गोबर लीप्यो चूंथरा पर मांडणा मांड्या
चूला नै लीप्यो सिणगार फेर सिळगायो
रोटी सिकगी आजा साथ दोन्यूं खाल्यां रै

पुरुष रंग बिरंगी चूँदडी या सुरग मिल्यो म्हांनै
आँख्यां का उजास मैं अँधेरो भागै
कळकळ करती धार भैरी सामै नन्दी की
सुबह हुई के सोती र्‌हैगी ऊठ पटैलण रै

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

किसी आलम्बन के सहारे प्रेम की नौका को देखना कितना सुन्दर व सुखद दृश्य होता है, इसकी कल्पना आलम्बनों की प्रतिच्छाया में इस गीत में की गई है।

एक प्रेमिका अपने प्रेमी से कहती है कि मेरी बछिया के सींग रंगने के लिये थोडा सा रंग दे दो। इस पर उसका प्रेमी उससे चुहुल करते हुए कहता है कि पहले तुम अपनी चूँदड़ी (ओढ़नी) पर रंग से सने डीबस्ये (मिट्टी के दीये) लगवा लो तब मैं तुम्हें तुम्हारी बछिया के सींग रंगने के लिये रंग दूंगा। और रंग भी ऐसा वैसा नहीं बल्कि तुम्हारी आँखों जैसा नीला रंग तलाश करूंगा और फिर उसमें दीये डुबोकर उससे तुम्हारी चूँदडी रंगूंगा। चारों तरफ मोर-पँख की आँखों जैसी आँखें ही आँखें हो जायेंगी और फिर ऐसी झोंपड़ी में मैं तुम्हारे साथ विश्राम करूंगा। यहाँ पर प्रेमी यह कल्पना करता है कि उसके द्वारा अपनी प्रेमिका की रंगी गई चूँदड़ी को झोंपड़ी के अन्दर तानकर वह अपनी प्रेमिका के साथ उसमें रहेगा।

उसकी बात से प्रसन्न होकर वह लड़की उससे कहती है कि तुम्हारी पगड़ी का नीला-नीला सा यह रंग भी मुझे मोह रहा है तथा मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो कोई मोर मेरे सामने बैठा हो। अब मोर अपने चँदोवे फैलाकर नाच रहा है और उसके साथ ही मेरा मन भी झिरमिर-झिरमिर करके लहरा रहा है। उसका प्रेमी उससे कहता है कि तुम्हें नीला रंग पसन्द है इसीलिए तो मैं तुम्हें कह रहा हूं कि अपनी चूँदड़ी रंगवाने हेतु हाँ कह दो फिर मैं तुम्हारी आँखों के नीले रंग में अपने दीयों को डुबोकर उससे तुम्हारी चूँदड़ी रंगूंगा। उसके बाद एक झोंपड़ी बनाकर उसके अन्दर तुम्हारी इस चूँदड़ी को तान दूंगा और फिर दोनों उसमें शयन करेंगे। तब आँखें मग्न होकर आँखों को बस केवल देखती ही रह जायेंगी।

प्रेमिका उसे अनुमति देते हुए कहती है कि तुम्हारा यह प्रस्ताव मुझे पसन्द आया अत: अब पहले मेरी चूँदड़ी रंग दो और उसके पश्चात् मेरी बछिया के सींग भी रंग देना। तब मैं उस बछिया को झोंपड़ी के आगे बाँधूंगी जिससे वहां की सुन्दरता बढ जायेगी।

वह लड़का अपनी प्रेमिका के पास में जाकर उससे कहता है कि अब तुम मुझे अपनी आँखों में देखने दो। उसकी अनुमति से वह उसकी आँखों में खो जाता है। पास में कहीं खुडखुड़ाहट होने पर वह चैतन्य होता है और अपनी प्रेमिका से कहता है कि नीले रंग से मालसा (मिट्टी से बना कटोरेनुमा पात्र) भर गया है जिससे तुम्हारी पूरी चूँदड़ी रंगी गई और बछिया के सींग भी रंगे गये। ऐसे रंग के खजाने, तुम्हारी इन आँखों को तो मैं अपनी आँखों में सहेजकर रखूंगा।

प्रेमिका प्रसन्न होकर अपने काम में लग जाती है। थोड़ी देर बाद में वह अपने प्रेमी से कहती है कि सच में तुम्हारी इस झोंपड़ी में मेरा मन रच-बस गया। मैंने इस झोंपड़ी के आगे के चबूतरे को लीपा है और फिर उस पर मांडणे (गेरुए रंग से बनायी गई चित्रकारी) मांडे (बनाना या उकेरना) हैं। उसके बाद चूल्हे को गोबर-मिट्टी से लीपकर उसका शृंगार किया है। अब रोटियां सिक गई हैं। तुम भी आ जाओ, दोनों मिलकर साथ-साथ भोजन करेंगे।

अब दोनों सोचे हैं कि इस रंग बिरंगी चूँदड़ी में उन्हें स्वर्ग मिल गया है और इस चूँदड़ी की आँखों के उजाले में तो अँधेरा भी भाग गया है। सामने कल-कल करते हुए नदी बह रही है। अब तक सो रही प्रेमिका को झिंझोड़ते हुए उसका प्रेमी उससे कहता है कि सुबह हो गई अब तो उठ जाओ, क्या सोती ही रहोगी।

25. नारी-प्रताड़ना को दर्शाने वाले गीत

लुगायां की दुर्दशा

स्थाई धैं धैं कूट र्‌हयो लुगाई नै छाज्यो देखो
वा तो घूँघटा मैं रोती-रोती मार खावै
देश व्हियो आजाद लुगायां फडबा लागी
कइयां मरद करीं या सैन लुगायां की तरक्की
पण ज्यो दब्योडो वांको मन फडबा आटै भागै रै
घर को काम करीं छोर्‌यां अर फडाई भी करीं
छोरा फडबा सूं टाळा खावीं बदमाशी करीं
जियां खियां बी.ए. पास कर्‌यो इतरातो डोलै

.....

करवा चोथ को त्युंवार बहू बरत कर्‌यो
मेरो घरहाळो नींकां र्‌ह या पिराथना करी
सारा दिन की भूखी देखो वा अब बरत खोल्यो रै
दिनूग्यां को टेम व्हियो अर टाबर ऊठ्या

छोरा की बहू देखो रसोई मांयनै
टाबरां की रोटी सेकै फडबै जार्‌या रै
छोरो देखो तावळो रसाई मांय घुस्यो
काँईं थाक कांईं बात याद आई
दे दडादड मुक्कां सूं ऊंकी बहू नै पीटै रै
कांई व्हियो रै कोनै थाक रै
टाबर डरपीं रै बहू रोवै रै
घूँघटा मैं छानै-छानै सुबकै देखो रै
वाह इन्सान रै तेरी फडाई
कांई खैणो रै कांई खैणो रै

गीत की पृष्ठभूमि

वैदिक काल में भारतीय नारी को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था एवं उसे बड़े ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। नारी कँधे से कँधा मिलाकी हर कार्य में पुरुष का साथ दिया करती थी। यज्ञ, अनुष्ठान, धार्मिक कार्यों आदि में नारी पुरुष के समान ही सहभागिता करने की अधिकारिणी थी। सीता, सती सावित्री, अनुसूईया, रानी लक्ष्मीबाई, जीजीबाई आदि के बारे में कौन नहीं जानता। नारी के बारे में कहा भी गया है- यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमंते तत्र देवता। अर्थात् जहाँ पर नारी की पूजा की जाती है वहाँ पर देवता निवास करते हैं। यहाँ नारी की पूजा का तात्पर्य उसका सम्मान करने से है।

हमारे देश में मुगल काल में नारी पर्दे के पीछे चली गई और उसकी प्रतिभा अन्दर ही अन्दर कसमसाकर रह गई। बेटियों को पढ़ाई-लिखाई से दूर रखा गया और भारतीय समाज अपनी पुरुष प्रधानता के दम्भ में नारी के विकास एवं सम्मान दोनों को लील गया। आज़ादी के पश्चात् भारत में नारी के पुनरुत्थान के भरसक प्रयास किये गये परन्तु पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं आया और नारी को प्रताड़ित किया जाना बन्द नहीं हुआ। पढ़ी-लिखी नारी भी पुरुषों के इस रवैये का विद्रोह करने का साहस न कर पायी और सब कुछ सहने को विवश हो गई।

इस गीत में भारतीय नारी की इसी विवशता को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

ग्राम मैड़ के छाजू नामक एक लड़के ने जैसे तैसे करके बी.ए. पास कर लिया जिसका उसे अभिमान हो गया। वह मन ही मन सोचने लगा कि मैं सबसे ज़्यादा पढ़ गया हूँ। परन्तु उसकी न तो कहीं नौकरी लगी न ही किसी काम-धन्धे में लगा। फिर भी उसके पिता ने यह निश्चय किया कि मैं अपने बी.ए. पास लड़के की शादी में लड़की वालों से जमकर दहेज लूंगा। लड़के का विवाह एक कुलीन घर की लड़की से हो गया जिसने आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। वह घर का काम सँभालने के साथ ही साथ गाँव वालों के कपड़े सीने का काम भी किया करती थी। उसे एक नौकरी मिल गई परन्तु फिर भी वह अपने घरेलू दायित्वो का निर्वहन भली भाँति किया करती थी। उसका बेरोजगार पति रसोई के सारे काम निपटाया करता। बर्तन भी माँजता और सारे घर के कपड़े भी धोया करता।

आज करवा चौथ का त्यौंहार है। बहू ने अपने पति की सलामति के लिये निराहार व्रत रखा है। वह स्कूल जा रहे अच्चों के लिये नाश्ता तैयार करने लगी। उसके पति को पता नहीं क्या बात याद आयी अपने कुंठा-भाव की जागृति के वशीभूत वह सक्रोध रसोई में जा घुसा और अपनी पत्नी की लात-धूँसों से पिटाई करने लगा। क्या हुआ किसी को नहीं पता। उसने क्यों एक कर्मशील नारी को पीटा यह भी नहीं पता। शायद अकर्मण्यता के वृत्त में उसका पौरुष जागृत हो गया और उसने अपनी विफलता के दायरे में ऐसा दुष्कृत्य किया।

वाह रे पुरुषार्थ, पुरुष प्रधानता, झूठा अभिमान वाह। तेरे क्या कहने।

26. विभिन्न धर्मों एवं जातियों का मेल-मिलाप दर्शाने वाले गीत

हिन्दू-मुस्लिम

स्थाई हाथ का बणाया तेरा भीजणा भारी,
कतरी चोखी लागै नूरजहाँ तेरी चंगेड़ी।
नूरजहाँ मियां कै भारी और भीजणा
चँगेड़ी खिजूरयां का पत्तां की बणावै
भीजणा चटाई.. बणाया चोखा लागीं रै +स्थाई

.....

सामानै खुमारां कै.. परभात्यो

डीबस्या, घड़ा बणाया सुलपी–चिलम
मांड़णा माण्ड़ै.. वांकै रंग बिरंगा रै +स्थाई
नाक का मोती की चमक आँख्यां मैं पड़ी
सामानै उठार निगां वा देख्यो
नूरजहाँ की आँख्यां मिली परभात्या सूं रै +स्थाई
नूरजहाँ नै वांमैं दीख्या माण्ड़णा रंग्या
माटी का सै राछ ऊंनै चोखा लागीं
वा बोली परभात्या तू.. कलाकार रै +स्थाई
अइयां बोल्यो परभात्यो तू भी तो नूरजहाँ
कलाकारणी ऊंची मूंनै चोखी लागै
तूनै सामै देख बैठी तो ही बणीं रै +स्थाई

.....

तू हिन्दू अर मैं मुस्लिम या बात जाण लै
लोग देखींगा तो ज्यान आपणी लींगा
छोड़ मेरो साथ तू.. प.रभात्या रै +स्थाई
परभात्यो व्हियो बेमार नूरजहाँ का
हाथ कोनै चालीं कइयां चँगेड़ी बणै
पोंछगी ऊंकै घरांनै जार बोली रै +स्थाई

.....

दोन्यूं वापिस आया जिण्ड़े रोजीना बैठीं
साथ मैं चूँथरा कै एक ज..गां.
दोन्यू मिल आपसरी मैं काम करीं रै
चोखो व्हियो रै.. अब काम रै..
धर्म मिलगा रै.. हिन्दू– मुसलिम..

कला जागी रै.. कलाकार रै..
यां की जा..ति.. कोई कोनै रै..
सारा ध..रम आज एक रै..
सब इन्सान इन्सान रै..
इन्सान रै.. इन्सान रै.. इन्सान रै..

गीत की पृष्ठभूमि

मनुष्य के जीवन में प्रेम ही वह पक्ष है जो मनुष्य की क्रियाओं को गति प्रदान करने में सहायक होता है। यही वह अस्त्र है जिसके सहारे दो प्रेमी किसी भी प्रकार की कठिनाई को सहजता से सह लेते हैं। प्रेम न जाति देखता है, न धर्म और न ही किसी प्रकार का वर्गभेद। प्रेम में कोई भी पक्ष अपनी सीमाओं को लाँघते हुए एवं खतरों से खेलकर भी एक दूसरे के लिए मर मिटने को तैयार रहता है। इस गीत में हिन्दू और मुस्लिम समुदाय के दो प्रेमियों की ऐसी ही प्रेम-कहानी के बारे में बताया गया है।

गीत की विषयवस्तु

किसी गाँव के चौराहे पर बरगद का एक विशालकाय वृक्ष है जिसके चारों ओर गोलाकार चबूतरा बना हुआ है। नूरजहाँ नाम की एक मुस्लिम लड़की उस पर बैठी हुई खजूर के पत्तों से पँखे, चटाई आदि बना रही है। उसके द्वारा बनायी गई ये चीजें हर देखने वाले को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। इस समय वह खजूर के रंग बिरंगी पत्तों से चँगेड़ियां बना रही है। चँगेड़ी (पत्तों से बनी छोटी टोकरी) में गुंथे हुए खजूर के नीले पत्ते ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो किसी स्त्री ने अपने हाथों में नीली चूड़ियाँ पहन रखी हो। जब चँचला नूरजहाँ ने एक चँगेड़ी की बुनाई पूरी कर ली तो उसे उल्टी करके अपने सिर पर रख लिया और मारे खुशी के खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी यह निश्छल हँसी पास ही में मिट्टी के बर्तन बना रहे परभात कुम्हार को विचलित कर गई।

परभात कुम्हार सामने सड़क के किनारे मिट्टी के मटके, सराही, सुलपी आदि बना रहा था। उसके बनाये गये ये बर्तन भी हर किसी के मन को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। जब परभात मिट्टी के घड़ों पर गेरूए रंग से माँडणे माँड़ रहा था तो एकाएक नूरजहाँ के नाक के काँटे में लगे नगीने की चमक उसकी आँखो पर पड़ी और जब उसने आँखें उठाकर उस ओर देखा तो उसकी आँखें नूरजहाँ की आँखों से जा

टकराई। नूरजहाँ को परभात की आँखों में रंगबिरंगे माँड़णे दिखाई देने लगे और वह बुदबुदा पड़ी–

'वाह परभात वाह, तुम तो बहुत बड़े कलाकार हो।'

परभात ने नूरजहाँ को कहा कि तुम तो मुझसे भी महान् शिल्पी हो और मैं तुम्हें ये कलात्मक वस्तुएं बनाते देखकर ही तो ये अच्छे–अच्छे बर्तन बना पाने की प्रेरणा तुमसे ले पाया हूं। वह उससे यह भी कहता है कि तुम्हें देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता। जीवन में आगे भी मुझे इसी प्रकार प्रेरणा देती रहना जिससे मेरी कला में और भी निखार आ सके।

27. युग परिवर्तन एवं नैतिक पतन के गीत

बिजळी

स्थाई बिजळी आई बिजळी आई देखो–देखो रै
रूप सुहाणो चोखो लागै आँख्यां टमटम रै
दीया–बत्ती जोता गाँव और ढाण्यां का
कोई मटिया तेल घालतो कोई कडवो तेल
पण जद सैं या रूप सुहाणी आई सै नै भूल्या रै + स्थाई

.....

दीवाळी नै पैली जोता डीबस्या अर तेल
पण अब तो बिजळी ही चमकै लड्यां मैं पिर्‌योडी
टम–टम जद आँख्या झपकावै मन छै खाय हिलोर रै + स्थाई **5**
लाव–चिडस सैं पाणी देता देखो बारा बोलता
चरखी माळै ढोल खींचता पैली पाणी भरबाळा
पण अब बिजळी का खटका सूं खेत–क्यार सब पीवीं रै + स्थाई
जळवा मैं पैली बाजै छो एच.एम.वी. को रिकाड
अइयां लागै कूकरो ऊंकै माळै बैठ्यो गावै रै
पण बिजळी का आदेशां सूं टेप सुणां अर रेड्यो रै + स्थाई
पैली व्है छा नाटक भाया कैडे छो सनीमो
नौटंकी जद आती गाँव मैं हल्लो मच जातो

पण अब बिजळी का खटका सूं ख्याल दिखावै डब्बो रै + स्थाई

आँख्यां तेरी झील जिसी गैरी म्हांनै लागी

दाँतां की चमक रै तेरी मन नै डगमग कर री

छान छप्पर टींटकां मैं भी तू आज पोंछी रै + स्थाई

.....

महमा अपरम्पार भाई बिजळी की सुणो

लाड-प्यार सैं काम थे ऊंनै सब ही ल्यो

ज्यो छेडोगा बदनीयत सूं उँनै कोनै बख्शै रै

उँनै कोनै बख्शै रै उँनै कोनै बख्शै रै

गीत की पृष्ठभूमि

मानव अपने अतीत को धरोहर मानकर सहेजता आया है। एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् जब वह अतीत से वर्तमान की ओर प्रस्थान करता है तो उसमें निश्चय ही उसका विकास होता है। इस विकास की दौड़ में कभी-कभी वह अपने अतीत को भूलता भी है। जब एकाग्र होकर वह उसे याद करता है तो उससे विछोह की पीड़ा कमोबेश रूप में उसे पीड़ित करती ही है। यह अतीत चाहे मनुष्य के जीवन की क्रियाओं का हो, चाहे अपने स्वजनों को याद करने का या उसके द्वारा जीवन के विभिन्न पक्षों में काम में लिये जा रहे उपादानों के विलुप्त होने का, परन्तु इनसे विछोह की स्थिति में वह अपने आपको पीड़ित महसूस करता ही है।

बिजली का आगमन मनुष्य के जीवन में उसकी दिनचर्या एवं क्रियाकलापों को गति प्रदान करता है और इस प्रकार यह सामाजिक विकास का कारण रहा है परन्तु इस बिजली के विकल्प को अपनाये जाने से मनुष्य को अपने द्वारा परम्परागत रूप में काम में लिए जा रहे विभिन्न उपादानों से दूर भी होना पड़ा है। इन स्मृति बन गये उपादानों को जब कभी वह याद करता है तो उसका मन पीड़ित हो उठता है। आज बिजली ने दीया-बाती का स्थान ले लिया है। इसी प्रकार आज सजावट के क्षेत्र में परम्परागत उपादान बिजली से किसी प्रकार का मुकाबला नहीं किया जा सकता। पहले दीपावली के दिनों में परम्परागत रूप से दीये जलाकर ही पूरे घर को सजाया जाता था परन्तु आज बिजली के आगमन से इस प्रकार की सजावट में चार चाँद लग गये हैं। पहले सिंचाई के साधनों के रूप में जहाँ परम्परागत साधनों

का ही प्रयोग होता था वहाँ अब बिजली ने आश्चर्यजनक क्रान्ति ला दी है। पहले सामाजिक उत्सवों के अवसर पर एच.एम.व्ही. के रिकॉर्ड बजाये जाने का रिवाज़ था परन्तु आज बिजली ने कैसेट और सी.डी. को गति प्रदान कर एक क्रान्ति सी ला दी है। सिनेमा हो या तमाशा, बिजली के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। परन्तु जहाँ पर इस बिजली का प्रयोग सावधानी से नहीं किया गया वहाँ यह आत्मघातक भी सिद्ध हो सकती है।

इस गीत में बिजली के इसी स्वरूप को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

बिजली के आगमन से मनुष्य के द्वारा की जाने वाली क्रियाओं तथा उसके अन्य सामाजिक कार्यों में आश्चर्यजनक क्रान्ति आ गई है। आज इसका स्वरूप आँखों को लुभाता है जिसमें आँखों गड़ाये हर व्यक्ति अपने आपको भुला बैठा है। पहले के समय में ढ़ाणी और गाँवों में मिट्टी के तेल से लालटेन या सरसों का तेल डालकर मिट्टी के दीये जलाये जाते थे। परन्तु जब से बिजली आई है लोगबाग इन चीजों को भूल से गये हैं। आज बिजली के विविध रूप मनुष्य को लुभाने लगे हैं जिन्हें देखकर हर किसी का मन प्रसन्न हो जाता है।

जब कभी बिजली गुल हो जाती है तो हर किसी का मन उदास भी हो जाता है। परन्तु बिजली के वापस आते ही बच्चे, बड़े, बूढे, जवान हर किसी का मन प्रसन्न हो जाता है। कहीं-कहीं किसी दुकान में सजा हुआ कोई खिलौना या शो केश में रखी हुई कोई गुड़िया, जिसमें बिजली के करेन्ट के तार पिरोये हुए हों बटन दबाते ही चहक उठता है। गुड़िया के घाघरे और चोली में जडे हुए चाँद-सितारे उसमें इन्द्रसभा की अप्सरा की सी छवि परिलक्षित करते हैं। आज बिजली की सहायता से कितने ही बड़े-बड़े कल-कारखाने, अस्पतालों की जीवन-दाता मशीनें, कम्प्यूटर, नेट आदि चल रहे हैं जिन्होंने मनुष्य के जीवन की तस्वीर ही बदल दी है। पहले के समय में तमाशे ही मनोरंजन का साधन हुआ करते थे परन्तु आज बिजली के आगमन से सिनेमा देखा जा सकता है और छोटे-छोटे डिब्बों से भी टेलिविजन और सिनेमा का आनन्द लिया जा सकता है। परन्तु बिजली मनुष्य के लिये जितनी उपयोगी है, असावधानी रखने पर यह उसके लिये उतनी ही घातक भी हो सकती है। बिजली का क्षणिक करेंट भी किसी भी जीव को पल भर में मौत के आगोश में पहुँचा सकता है।

कीचक की प्रणय दृष्टि

स्थाई क्यांटै आवै रोटी लेर दासी पटराणी बणजा
तूंनै मेहर करै अरदास कतरी बार मान जा
कीचक आयो महलाँ मांय ऊंकी भैण कै विराट
राणी राजी व्हैगी भाई नै आयो देख्यां
बोली ल्या ए तू सैरन्दी पाणी भाई नै पादै

कोरस हां रै मेहर छै तिसायो ऊंकी प्यास बुझा दै + स्थाई
लेर पाणी आई सैरन्दी होळ्यां होळ्यां
ऊंकी निजर्यां नीची आई ले गिलास पाणी को
अतरो तेज व्हैर्यो चमकै ऊंको गोरो मूंडो

कोरस देखो कीचक ऊंका मूंडा काणी एकटक देखै + स्थाई

.....

मेहर पकड्यो ऐसो हठ वा सुदेसणा झुकी
बोली आज सैं तू सैरन्दी ईंका म्हैलां जाजे
लेर अण्ड्या सैं रोटी तू ईंनै देर आ जे

कोरस सोचै सैरन्दी आदेश न मान्यां सत जायगो + स्थाई
बाट रोजीना देखै मेहर सैरन्दी की
जद वा आवै जद ही खै तू पटराणी बण जा
कांईं करै सोचो बिच्यारी वा दिनां की मारी
दिनां की मारी रै दिनां की मारी कांईं करै .....

गीत की पृष्ठभूमि

राजस्थान के जयपुर जिले का एक ऐतिहासिक गाँव मैड़ है। यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल विराटनगर से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह माना जाता रहा है कि यह गाँव कभी कीचक का निवास स्थान था। कीचक राजा विराट का साला और प्रधान सेनापति था। कीचक–द्रौपदी की कहानी सर्वविदित है। कीचक ने द्रौपदी को बुरी नज़र से देखा था। जब पाण्डव अज्ञातवाश के एक वर्ष

के दौरान नौकर चाकरों के वेश में राजा विराट के यहाँ रहे तो कीचक ने अपनी बहिन सुदेष्णा पर दबाव डालकर द्रौपदी को (जो कि राजमहल में सैरेन्द्री के नाम से दासी के रूप में कार्यरत थी) अपने महल के समीप एक निर्दिष्ट स्थान पर बुलाया जहाँ पर जाकर भीम ने उसका वध किया। इस गीत में किवदन्तियों में उल्लखित इसी घटना के माध्यम से मनुष्य की कर्तव्यपरायणता को बताया गया है।

गीत की विषयवस्तु

एक दिन कीचक अपनी बहिन से मिलने राजा विराट के महल में उपस्थित हुआ ।उसकी बहिन सुदेष्णा अपने भाई को आया देखकर प्रसन्न हो गई और उसने अपनी दासी सैरेन्द्री से कहा कि मेरे भाई को पानी पिला दो। जब कीचक ने उस दासी की ओर देखा तो उसके रूप-सौन्दर्य को देखकर उसकी प्यास भड़क उठी। जब सैरेन्द्री उसके लिए पानी लेकर उपस्थित हुई तो उसके मुखमण्डल की आभा से भ्रमित होकर कीचक उसे एकटक निहारने लगा। तब उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि किसी भी युक्ति से मुझे इस दासी को प्राप्त करना है। उसने अपनी बहिन से उस दासी को अपने यहाँ भेजने की जिद की । बहिन अपने भाई के मन के खोट को पहचान गई परन्तु उसकी जिद के सामने परास्त हो गई और सैरेन्द्री को अपने रसोईघर में बने विशेष प्रकार के व्यंजन कीचक के यहाँ ले जाने का आदेश दिया। सैरेन्द्री ने सोचा कि अब यदि मैं अपनी स्वामिनी का आदेश नहीं मानती हूं तो मेरा सत (कर्तव्यपालन) चला जायेगा और यदि वहाँ जाती हूं तो कीचक मेरे साथ अभद्रता करेगा। अत: उसने अपनी स्वामिनी के आदेश को मानते हुए कीचक के महल की ओर प्रस्थान किया।

जब द्रौपदी खाना लेकर कीचक के यहाँ जाया करती थी तो वह उसे बार- बार यही कहता था कि हे दासी तुम यह रोटी लाने जैसा छोटा कार्य क्यों करती हो, मेरा कहना मानो और मेरी पटरानी बन जाओ जिससे तुम्हारे जीवन के सारे कष्ट दूर हो जायेंगे।

29. जातिगत आधार पर कार्य को दर्शाने वाले गीत

चोरी की तरकीब़

स्थाई धर मँजलां धर कूंचा धर मँजलां धर कूंचा
चोरी करबा तांईं देखो चोर चाल्या
साथ ले लै जेवड़ी अर लोह को काँटो भी
धोती मैं खुरपी गोलै और लै हथौड़ी
चोर ऊंका साथी नै खै चाल भाया रै

.....

छोटा छोटा भाटा लेर छत माळै फैंक्या
कोनै जाग व्हिई भाई नींद मैं सोर्‌या
काँटो बँधी जेवड़ी नै ऊपर फैंक्या वै

.....

पन्दरा सेर वजन को छोरो ऊपर छडगो
ऊंकै पाछै नीचा सूं उस्ताद चाल्यो
ऊबाणा पग होळ्यां-होळ्यां जाय घुस्या रै
ल्या दे दै कूंच्यां को गुच्छो ज्यो सरदार दियो
अस्यो नहीं कोई ताळो ज्यो ऊंसै नै खुलै
पैली बार लगातां कूंची खुलगो देखो ताळो रै
काढ़ कूढ़ नकदी-जेवर सै पोट मैं बाँध्या
नीकां चाल पैड्यां सूं अब होळ्यां होळ्यां
दोन्यूं चोर ले सामान बार आया रै
सुबै पैली हल्लो मचगो देखो गाँव मैं
रामकरण सेठ कै चोरी व्हैगी
गाँव मैं सरदार डोलै कूंची लगवाल्यो रै
ताळा ठीक कराल्यो रै

नाक–कान बिंधवाल्यो रै

सेठाणी कुळ्ळावै रै होश खोवै रै

पाणी का छांटा दे ऊंकै होश मैं ल्यावीं रै

होश मैं ल्यावीं रै ऊंनै होश मैं ल्यावीं रै

गीत की पृष्ठभूमि

प्राचीन काल में हमारे देश में जातिगत आधार पर कार्य करने का आधार प्रबल हुआ करता था। प्रत्येक जाति द्वारा प्रचलित परम्परा के अनुसार ही अपने–अपने कार्यों का निपटान किया जाता था। चोरी किये जाने को भी एक कार्य के रूप में ही माना जाता था। किसी जाति विशेष के लोग चोरी करने के कार्य में प्रवीण हुआ करते थे। ग्रामीणों द्वारा चोरी को रोकने के कितने ही प्रयास किये जाते रहे हों परन्तु ये परम्परागत चोर अपने कार्य में इतने कुशल होते थे कि हर किसी को चकमा देकर चोरी कर ही ले जाया करते थे। राजस्थान में 'ज्यानी चोर' को इस क्षेत्र में आज भी याद किया जाता है और आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व नाटक मण्डलियों द्वारा ज्यानी चोर नाटक गाँव गाँव में जाकर दिखाया जाता था।

गीत की विषयवस्तु

किसी गाँव के कुछ नामी चोर अपने सुनियोजित प्रयासों की परिणति हेतु एक गाँव की ओर चले जा रहे हैं। उन्होंने अपने साथ में एक लम्बी रस्सी और लोहे का काँटा भी ले लिया है। उनके मुखिया ने अपनी धोती में खुरपी खोंस ली और साथ में हथौड़ी भी ले ली। अँधेरा होते–होते वे रामकरण सेठ की हवेली के नजदीक जाकर खड़े हो गये। सबसे पहले उन्होंने सेठ की हवेली के नीचे खड़े होकर छत पर छोटे–छोटे पत्थर फेंके। हवेली की ओर से किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न मिलने पर वे इस बात से आश्वस्त हो गये कि संभवत: अन्दर के सभी लोग निद्रा में लीन हैं। अब दल के मुखिया ने रस्सी के छोर पर लोहे का काँटा बाँधकर छत पर फेंका। वह काँटा छत में लगी लोहे की जाली में अटक गया अब पन्द्रह सेर वजन का एक बच्चा उस रस्सी को पकड़कर जमे हुए पैरों से छत पर पहुँच गया। उसने रस्सी के छोर से काँटा खोलकर उस रस्सी को छत पर लगे एक खम्भे से बाँध दिया । उस रस्सी के सहारे एक अन्य व्यक्ति ऊपर चढ गया और उन दोनों ने मिलकर होशियारी से छत के दरवाज़े के ऊपर लगे रोशनदान के शीशे हटा दिये। वह व्यक्ति रस्सी के सहारे उतरकर नीचे खड़े अपने साथियों में आ मिला। छोटा बच्चा रोशनदान के मार्ग से हवेली के अन्दर प्रविष्ट होकर दबे पाँव मुख्य दरवाज़े पर पहुँच गया और अन्दर से

कुण्डी खोल दी। अब सभी चोर हवेली के अन्दर प्रविष्ट हो गये।

दल के मुखिया ने अपने साथी से चाबियों का वह गुच्छा मांगा जो जो टूटे ताले ठीक करने एवं चाबियाँ बनाने वाले सरदार ने उन्हें दिया था। इस दुनियाँ में ऐसा कोई ताला नहीं बना जो उस गुच्छे की चाबियों से न खुल सके। उस गुच्छे की चाबियों से उन्होंने सभी बन्द कमरों के ताले एवं तिजोरी खोलकर नकदी, जेवर आदि पोटली में बाँध लिये और बड़ी आसानी से हवेली से बाहर निकल गये।

प्रात:काल जब घर के सदस्यों ने घर के सामान को अस्त व्यस्त देखा तो चिन्तित होकर तिजोरी में रखी नकदी–जेवरात तथा बक्सों में रखे अन्य कीमती सामान जाँच की । चोरी होने की बात को जानकर पूरा परिवार शोक में डूब गया। सारे गाँव में हल्ला मच गया कि रामकरण सेठ की हवेली में चोरी हो गई है।

उसी गाँव में एक सरदार यह कहते हुए चक्कर काट रहा है कि नाक–कान बिंधवा लो, टूटे ताले ठीक करा लो, और तालों के चाबी भी लगवा लो। उसकी इस संगीतमय टेर के साथ ही सेठानी दहाडें मार–मारकर यह कहते हुए चिल्ला रही है कि मेरा सब कुछ लुट गया अब मैं क्या करूं। वह बीच–बीच में होश खो बैठती है और घर के सदस्य उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारकर उसे होश में लाने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार यह गीत परम्परागत रूप से किये जाने वाले सामाजिक कार्यो की एक सजीव झाँकी प्रस्तुत करता है।

****

चतुर्थ अध्याय

नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों में प्रयुक्त वाद्य एवं ताल का प्रयोग

(।) हारमोनियम

हारमोनियम लकड़ी का एक आयताकार बक्सा होता है जिसमें अन्दर लकड़ी से बने एक तख्ते में रीड़ लगी होती है जिसे रीड़ बोर्ड कहा जाता है। इस रीड़ बोर्ड के ऊपर सफेद और काले रंग के पर्दे लगे रहते हैं जिन्हें दबाने से उनका पिछला भाग रीड़ बोर्ड के ऊपर अधर हो जाता है। अत: रीड़ बोर्ड के भिन्न-भिन्न छेदों से हवा निकलने लगती है। चूंकि यह हवा रीड़ों में हाकर बाहर निकलती है अत: आवाज़ बन जाती है। रीड़ बोर्ड में नीचे की तरफ छोटं-छोटे पीतल के टुकड़े लगे होते हैं जिनके मध्य में पीतल का एक कटा हुआ पत्ता होता है। जब अन्दर से हवा इस पत्ते को चीरती हुई बाहर निकलती है तो आवाज़ बन जाती है। रीड़ बोर्ड के नीचे एक तख्ती होती है जिसमें होकर पेटी में नीचे या धोंकनी में से हवा आती है। इसी तख्ती में स्टॉप लगे रहते हैं जिनके खींचने से हवा आनी प्रारम्भ हो जाती है और स्टॉप बन्द कर देने से हवा आनी बन्द हो जाती है। प्राय: दो प्रकार के हारमोनियम प्रयोग में देखने को मिलते हैं- 1. सिंगल रीड़ और 2. डबल रीड़ । सिंगल रीड़ में इकहरे तथा डबल रीड़ में डबल रीड़ होते हैं।

हारमोनियम एक महत्वपूर्ण वाद्य है जिसका संगीत के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में इसका संगति करने हेतु प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की तुलना में लोक संगीत में अपेक्षाकृत हारमोनियम का विशिष्ट स्थान होता है। कुछ लोगों को तो शास्त्रीय संगीत का ज्ञान होता है परन्तु अधिकांश लोग लोकगीतों की मौखिक परम्परा के अनुयायी होते हैं जो अपने बुजुर्गों से सीखे लोकगीतों को भजन-जागरणों में सीखे अनुसार हारमोनियम पर स्वत: ही निकाल लेते हैं और उन्हीं स्वरों के अनुसार उनमें बीच में भराव कर देते हैं।

परन्तु डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों पर हर किसी के द्वारा हारमोनियम संगति करना आसान नहीं क्योंकि ये लोकगीत नहीं हैं और इनकी संगति बिना पूर्वाभ्यास के नहीं हो सकती। यही कारण है कि कैलाश जी के इन गीतों का गायन रूप में जब-जब प्रस्तुतीकरण किया गया तब-तब इनके हारमोनियम संगतिकार की उपलब्धि में कठिनाई आई। हर बार जयपुर के परम्परागत हारमोनियम वादक श्री नसीर खाँ ने ही इन गीतों पर हारमोनियम संगति की। परन्तु भरतपुर जिले के बड़ा नगला (भुसावर) में

त्रिवेणी कला संगम, जयपुर द्वारा आयोजित संगीत, नृत्य एवं नाट्य प्रशिक्षण शिविर के दौरान इन गीतों पर की गई सभी प्रस्तुतियों पर कैलाश जी की शिष्या अलका, माधुरी, कल्पना एवं बड़ा नगला निवासी श्रीमती कमला धाकड़ ने स्वतंत्र रूप से हारमोनियम संगति की। जयपुर दूरदर्शन द्वारा 5 फरवरी 2011 को प्रसारित कैलाश जी के नाटक 'मेरी लाड़ो पढ़ेगी' में कैलाश जी ने अपने कुछ गीतों का प्रयोग किया था जिसमें नट की भूमिका में हारमोनियम संगति स्वयं कैलाश जी द्वारा ही की गई परन्तु उन्होंने श्री नसीर खाँ से इन गीतों पर हारमोनियम वादन करना सीखा था।

(।।) ढ़ोलक

राजस्थान के तत् वाद्यों में ढ़ोलक एक प्रमुख लोक वाद्य है। इसे लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है जिसकी दोनों पुड़िया लगभग समान व्यास की होती हैं। ढ़ोल की भाँति ही मढ़े हुए ढ़ोलक में भी रस्सी में कड़ियां लगी होती हैं तथा बीय का भाग कुछ चौड़ा होता है। यह लोकसंगीत का एक प्रमुख वाद्य है जिसमें समस्त प्रकार की तालें बजायी जाती हैं। मैड़-विराट अँचल में आयोजित भजन-संत्संग एवं जागरणों में प्रयोग में ली जाने वाली ढ़ोलक कुछ बड़ी होती है परन्तु ब्याह-शादी एवं अन्य पारिवारिक इअवसरों पर महिलाओं द्वारा बजायी जाने वाली ढ़ोलक आकार में कुछ छोटी होती है।

(।।।) झांझ

झांझ मंजीरे का ही बड़ा रूप है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई का व्यास लगभग एक फुट होता है। चक्राकार दो बड़े टुकड़ों के मध्य में एक छोटा सा गड्ढा बना रहता है जिन्हें आपस में टकराकर बजाया जाता है। इनमें झनझनाहट भरी ध्वनि उत्पन्न होती है। झांझ को ताशे व ढ़ोल के साथ भी बजाया जाता है। इस यंत्र के मध्य में डोरी से बनी मूंठ होती है जिसे बजाते समय मुट्ठी से पकड़ा जाता था। श्री सियावरजी का मन्दिर ग्राम मैड़ में हनुमान जी महाराज के समक्ष आयोजित सत्संग एवं भजनों के कार्यक्रमों में वहां के तत्कालीन महन्त स्व. श्री गणेश दास महाराज द्वारा झांझ वादन से संगति की जाती थी जिसका वर्णन डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी ने अपने गीत 'च्यारूं मेर चूंथरा कै माळै बैठ्या गाँव हाळा ' में बड़े ही सजीव रूप में किया है।

(iv) तबला

तबला दाहिने और बायें का संयुक्त सम्बोधन है। इन दाहिने एवं बायें को एक साथ बजाया जाता

है। दाहिना तबला लकड़ी का बना होता है और बायां मिट्टी या किसी धातु का। अन दोनों ही के मुँह पर चमड़ा मढा रहता है जिसे पुड़ी कहते हैं। पुड़ी के किनारे के चारों ओर चमड़े की गोट लगी रहती है। दाहिने तबले की पुड़ी के मध्य में और बायें (डग्गे) की पुड़ी के बीच से कुछ हटकर स्याही लगी रहती है। दायें और बायें की पुड़ियां चमड़े की डोरी से कसी रहती हैं। पुड़ी के चारों ओर गोट के किनारे पर चमड़े के फीते का बना हुआ गजरा लगा रहता है। बद्धी में लकड़ी के गट्टे लगे रहते हैं जिन्हें नीचे खिसकाने पर तबले का स्वर ऊंचा होता है और गट्टे ऊंचे करने पर स्वर नीचा होता है।

तबला ढूँढाड़ के लोकगीतों का प्रमुख वाद्य है जिसे गाँव और नगरों में खूब बजाया जाता है परन्तु मैड़-विराट अँचल के लोक संगीत के कार्यक्रमों में तबले का प्रयोग बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलता है, यहां पर ढ़ोलक का ही अधिक प्रयोग होता है। परन्तु डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के प्राम्भिक प्रयोगों में सर्वप्रथम तबले का ही प्रयोग किया गया जिसमें जयपुर के तबला वादक उ. निसार हुसैन, गुलाम गौस और शफात खान ने कैलाश जी के गायन के साथ अनेक बार संगति की और इन गीतों की तालबन्दी के परिमार्जन में उनका बहुत सहयोग रहा। इन गीतों में ढ़ोलक का प्रयोग या तो बड़ा नगला में प्रस्तुत उनके गीतों की प्रस्तुति के समय आर्य महिला विद्यापीठ भुसावर की संगीत शिक्षिका श्रीमती संतोष शर्मा की संगति के रूप में या फिर 'त्रिवेण कैसेट-सीडी. ' की जयपुर के स्टूडियो में हुई रिकॉर्डिंग में स्व. अतीक भाई की ढ़ोलक संगति से हुई। परन्तु उस समय भी गुलाम गौस ने तबला संगति की थी।

(v) ढप

ढूँढाड़ में ढप को चंग के नाम से भी जाना जाता है जिसका लकड़ी से बना गोल घेरा लगभग तीन बिलांद चौड़ा होता है और एक ओर से बकरे या भेड़ की खाल से मढ़ा जाता है। घेरे के ऊपर जौ के आटे की लई से खाल चिपका दी जाती है और छाया में सुखाकर बजाने के काम में ली जाती है। ढप को बायें हाथ की हथेली पर टिकाया जाता है उसी में लकड़ी की एक चीप भी रहती है। दाहिने हाथ से इस पर बोल बजाये जाते हैं। प्रमुख रूप से इस पर कहरवा ताल का ठेका बजाया जाता है। ग्राम मैड़ के संगीत उन्नायक महन्त स्व. श्री गणेश दास महाराज द्वारा होली के अवसरों पर अपने स्वयं के धमार गायन में ढप बजाया जाता था जिसका वर्णन डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों देखने को मिलता है।

पंचम अध्याय

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

बैसाखी

पु.	मैं कांई करूं भगवान कैंयां चालूं मैं ऽऽ (2)
	चालूं मैं रै चालू मैं , मेरी बैसाखी गी टूट कैंया चालूं मैं
स्थाई	चालूं मैं रै चालूं मैं मेरी ऊबड़-खाबड़ राह,
	कैंया चालूं मैं
कोरस	या कांईं करै भगवान कैंया चालै रै....
	मैं कैंयां आऊं तेरै पास खाती कोनै छोड़ै (2)
	कोनै छोडै रै कोनै छोड़ै
	ज्यों मूं नै बणायो देख अब वा कोनै छोड़ै
स्थाई स्त्री	को नै छोडै रै कोनै छोडै,
	मैं कांई करूं इन्सान कैंयां आऊं मैं
कोरस	या कांई करै इन्सान कैंया आवै रै....
	आवे रै तेरै पास कैयां आवै रै,
	या कांई करै इन्सान कैंया आवै रै
पु.	मेरी हिम्मत टूटी आज सुण मेरी बैसाखी (2)
	बैसाखी रै बैसाखी मेरी हिम्मत ...
	मेरो कर्म पड्यो मंझधार कैंया चालूं मैं - स्थाई 1
स्त्री	मेरा मन मैं कोई बात कैंयां खूं तू नै (2)

113

खूं तू नै रै खूं तूनै, मेरा मन मैं....
तेरा मन नै गाढो राख, करम तू करतो रह
करतो रह रै करतो रह मेरो मन छै तेंरै साथ
करम तू करतो रह – स्थाई (2)

गीत की पृष्ठभूमि – इस संसार में अवश्य ही ऐसी कोई अदृश्य शक्ति है जो जीव मात्र के जीवन को गति प्रदान करते हुए उसकी समस्त क्रियाओं को नियंत्रित करती है। मनुष्य चाहे अपने मन में कुछ भी रूचिकर कार्य करना चाहे परन्तु उसका होना या न होना विधि के विधान पर निर्भर करता है। और शायद यही एक ऐसा मूलमंत्र है जिससे नियंत्रित हो मनुष्य सत्कर्म करने को प्रेरित होता है। इस गीत में लकड़ी की बैसाखी एवं मनुष्य के मध्य संवाद स्थापित कर गीतकार ने उपरोक्त मूलमंत्र को जन–जन तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया है।

गीत का भावार्थ – किसी व्यक्ति की बैसाखी टूट जाने के कारण उसका चलना फिरना कठिन हो गया है अत: वह किसी अन्य बैसाखी को सहारा देने हेतु आमंत्रित करता है। वह उसे सहारा देना भी चाहती है परन्तु सामाजिक दायित्वों से प्रतिबद्ध हो ऐसा न कर पाने को विवश है। वह व्यक्ति उसे बताता है कि तुम्हारे बिना मैं अपने कर्मपथ पर निष्क्रीय पड़ा हुआ हूं अत: मुझे आकर सहारा दो जिससे मैं अपनी मंज़िल की ओर बढ़ सकूं। बैसाखी भगवान से पूछती है कि हे भगवान मेरी जाति तो लकड़ी है और मैं स्वयं तो निर्जीव हूं और जब तक मेरा बनाने वाला मुझे इस व्यक्ति को सुपुर्द न कर दे तब तक मैं उसके पास कैसे जा सकती हूँ। अन्त में वह उस व्यक्ति को कहती है कि हे मानस, मैं मन से तुम्हारे साथ हूँ और तुम भी मन में दृढ़ निश्चय धार अपना कर्म करते रहो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

इस प्रकार गीतकार ने बैसाखी को नारी का प्रतिरूप दर्शाते हुए मनुष्य को कर्म के करते रहने का संदेश दिया है।

स्वरलिपि

ताल – कहरवा

०				×				०				×			
–	–	सा	सा	सा	रे	–	सा	रे	म	म	म	रे	–	–	–
–	–	मैं	ऽ	कां	ईं	ऽ	क	रूं	ऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न
रे	म	म	–	रे	सा	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	रे	–	सा
कै	इ	यां	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ	मैं	ऽ	मैं	ऽ	का	ई	ऽ	क
रे	म	म	म	रे	–	–	रे	रे	म	म	–	रे	सा	सा	–
रूं	ऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न	कैं	इ	यां	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ
सा	–	–	–	–	प	–	प	प	–	प	–	प	–	प	–
मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	लूं	मैं	ऽ	रै	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	सा	रे	म	म	म	रे	–	–	रे
मैं	ऽ	मे	री	बै	ऽ	सा	ऽ	खी	ऽ	गी	ऽ	टू	ऽ	ऽ	ट
रे	म	म	म	रे	सा	सा	–	सा	–	–	–	–	प	–	प
क	इ	यां	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

प	प	–	प	–	प	प	प	–	सा	–	सा	सा	सा	रे	रे
चा	लूं	मैं	ऽ	रै	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ	मैं	ऽ	मे	री	ऊ	बड़
रे	म	म	म	रे	–	–	रे	रे	म	म	–	रे	–	सा	सा
खा	ऽ	ब	ड़	रा	ऽ	ऽ	ह	क	इ	यां	ऽ	चा	ऽ	लूं	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे	–	सा	रे	म	म	म	रे	–	–	रे
मैं	ऽ	या	ऽ	कां	ईं	ऽ	क	रै	ऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न

रे	ग	म	ऽ	रे	सा	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	सा
क	इ	यां	ऽ	चा	ऽ	लै	ऽ	रै	ऽ	मैं	ऽ	कै	यां	आ	ऊं
रे	म	म	म	रे	–	–	रे	रे	म	म	–	रे	सा	सा	–
ते	ऽ	रै	ऽ	पा	ऽ	ऽ	स	खा	ऽ	ती	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	सा	रे	म	म	म	रे	–	–	रे
डै	ऽ	मैं	ऽ	कैं	यां	आ	ऊं	ते	ऽ	रै	ऽ	पा	ऽ	ऽ	स
रे	म	म	–	रे	सा	सा	–	सा	–	–	–	प	प	प	–
खा	ऽ	ती	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ	डै	–	–	–	कौ	नै	छो	ऽ
प	–	प	–	प	प	प	–	सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	सा
डै	ऽ	रै	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ	डै	–	ज्ञ	यों	मूं	ऽ	नै	ब
रे	म	म	म	रे	–	–	रे	रे	म	म	–	रे	सा	सा	–
णा	ऽ	यो	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ख	अ	ब	वा	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ
सा	–	–	–	प	प	प	–	प	–	प	–	प	प	प	–
डै	ऽ	ऽ	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ	डै	ऽ	रै	ऽ	कौ	नै	छो	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	सा	रे	म	म	म	रे	–	–	रे
डै	ऽ	मैं	ऽ	कां	ऽ	ईं	क	रूं	ऽ	इ	न	सा	ऽ	ऽ	न
रे	म	म	म	रे	सा	सा	सा	सा	–	–	–				
क	इ	यां	ऽ	आ	ऽ	ऊं	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ				

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

यह गीत राग सारंग पर आधारित है। लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत की तरह रागों के नियमों का पूर्ण ध्यान नहीं रखा जाता, केवल आधार होता है। यह गीत कहरवा ताल पर निबद्ध है। स्वर लिपि में कहरवा ताल को दो आवर्तन में दिखाया गया है। इसमें अन्योक्ति अंलकार का प्रयोग करते हुए मनुष्य को जीवन का संदेश दिया गया है। इस गीत में करूण रस है।

पाळत्यां की दिनचर्या

स्थाई चूला माळै बाँट छड रह्यो भैंस कै आगै
छोरी काढ़ र्‌ह्ई भारा सूं भारी चौक मांयनै
तडकाऊ व्हैतां ही बोल्यो मुरगो कुकडू कू
माई छोरां की तू ऊठ जा अर दूध काढ लै
बोल्यो पांच्यो माळी मैं जाऊं कूवा कै माळै + स्थाई
खोल बळदां नै चाल्यो वा सुलपी पीतां-पीतां
छोरा पाछै-पाछै जार्‌या लाव-चिडस नै लियां
चालो जल्दी-जल्दी चालो कूवा नै जगांवां बारा 1

.....

गीत की पृष्ठभूमि

आज के इस वैज्ञानिक युग में जीवन के हर क्षेत्र में विकास हुआ है। परन्तु यदि गहराई से देखा जाय तो इस विकास का प्रमुख आधार मनुष्य द्वारा परम्परागत रूप से किया गया कार्य-व्यापार ही रहा है। इसी क्रम में हमारे देश के ग्राम्य जीवन के हर कार्य की व्यवस्था एवं प्रक्रिया आज भी प्रासंगिक है। ग्रामवासियों का हर कार्य संयत, नियंत्रित एवं व्यावहारिक होता है। प्रात:काल भोर ही में ग्रामवासियों की दिनचर्या प्रारम्भ हो जाती है और निर्धारित रीति से पूरे दिन चली गतिविधियों से उनका जीवन गत्यमान रहता है।

इस गीत में कृषकों की दिनचर्या का वर्णन किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

सवेरा हो गया है और मुर्गा बाँग देने लगा है। ग्रामवासियों की की दिनचर्या प्रारम्भ हो गई है। नन्हीं-नन्हीं बालिकाएं आँगन में झाड़ू लगा रही हैं। आँगन के एक कोने में चूल्हे पर भैंस का बाँट (बिनौले,

दलिया आदि) पक रहा है। सास अपनी बहू को भैंस का दूध निकालने को कह रही है। गृह प्रमुख पाँचू माली खेतों की सिंचाई करने के लिये खेत की ओर जा रहा है। वह सुलपी पीता हुआ अपने बैलों को हाँके चला जा रहा है। उसके पीछे-पीछे लाव-चड़स सिर पर धरे उसका बेटा चला जा रहा है। लाव-चड़स जोड़कर पाँचू माली ढ़ाणे में खड़ा हो गया। उसके बेटे ने पूंद्या (लाव पर बैठने से पहले अपने नीचे रखे जाने वाला चमड़े का एक चौकोर टुकड़ा) लाव पर रखा और उस पर बैठा बैलों को गूण में हाँकता चला।

उसने गूण के अन्तिम सिरे पर पहुँचकर लाव के झोला दिया (लाव पर बैठे-बैठे ही परों को झटके से ज़मीन पर मारना जिससे उस पर बैठा व्यक्ति ऊपर की ओर उछाल खाता है) और उच्चस्वर में गाया- 'भाई रै'। उसके इस ध्वन्यात्मक संकेत से गूण में खड़े उसके पिता ने कुएँ के मुहाने तक आ पहुँचे पानी से भरे चड़स को ऊपर की ओर झटका देकर ढ़ाणे में पटक दिया। चड़स का पानी ढ़ाणे में भर गया और वहाँ से फर फर करता हुआ धोरे (नाले) में बहने लगा। इसी क्रम में पूरे खेत की सिंचाई हो गई और पशुओं को पानी पिलाने वाली खेळी भी भर गई। अब बाप-बेटों ने कुआँ बन्द किया और खुशी-खुशी अपने घर की ओर रवाना हुए।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–
चू	ऽ	ला	ऽ	मा	ऽ	ळै	ऽ	बाँ	ऽ	ट	छ	उ	र	ह्यो	ऽ
ग	–	–	प	प	–	ग	–	प	–	–	–	प	–	प	–
भैं	ऽ	ऽ	स	कै	ऽ	आ	ऽ	गै	ऽ	ऽ	ऽ	छो	ऽ	री	ऽ
ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	प	–	प	–	प	–

का	ऽ	ढ़	रह्	ई	ऽ	भा	ऽ	रा	ऽ	सूं	ऽ	भा	ऽ	री	ऽ
ग	–	–	प	प	–	–	ग	प	–	–	–	–	–	–	–
चौ	ऽ	ऽ	क	मां	ऽ	ऽ	य	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	प	–	प	–	प	–
त	ड़	का	ऽ	ऊ	०ं	है	ऽ	तां	ऽ	ही	ऽ	बो	ऽ	ल्यो	ऽ
ग	–	ग	प	प	–	ग	–	प	–	–	–	प	–	प	–
मु	र	गो	ऽ	कु	क	डू	ऽ	कूं	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ
ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	–	प	प	–	प	–
छो	ऽ	रां	ऽ	की	ऽ	तू	ऽ	ऊ	ऽ	ऽ	ठ	जा	ऽ	अ	र
ग	–	–	प	प	–	ग	–	प	–	–	–	प	–	प	–
दू	ऽ	ऽ	ध	का	ऽ	ढ	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ल	यो
ग	–	गप	–	प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–
पां	ऽ	च्यो	ऽ	मा	ऽ	ळी	ऽ	मैं	ऽ	जा	ऽ	ऊं	ऽ	कू	ऽ
ग	–	ग	प	प	–	–	म	प	–	–	–	–	–	–	–
वा	ऽ	कै	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ळै	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	–	–
								अन्तरा							
ग	–	ग	प	प	प	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	प
खो	ऽ	ल	ब	ल	दा	नै	ऽ	चा	ऽ	ल्यो	ऽ	वा	ऽ	सु	ल
ग	–	ग	प	ग	–	रे	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–

पी	ऽ	पी	ऽ	ता	ऽ	पी	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	–	ग	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–
छो	ऽ	रा	ऽ	पा	ऽ	छे	–	जा	ऽ	रया	ऽ	ला	ऽ	व	ऽ
ग	–	ग	प	ग	–	रे	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
चि	ऽ	ड़	स	ने	ऽ	लि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में ग्रामवासियों के प्रात:कालीन क्रिया कलापों का वर्णन किया गया है। यह गीत राग भोपाली पर आधारित है। प्रात:कालीन राग पर इसकी धुन होती तो ज्यादा अच्छा होता।

डा ऽ ळी

स्थाई **गूजर** – म्हारो बळद व्हियो बेमार लुहार्‌या डाळी दे जा रै 2
तीतरवाड़ा सैं तू आय ऊंको रोग मिटाजा रै

लुहार पैली पाछा को ज्यो नाज गूजर बाबा दीज्यो रै 2
तड़कै आऊंगो मैं लेबा, डाळी काडबाटै रै
मत तू मन मैं चिन्त्या राख बळद नै थ्यावस दीज्यो ओ

गूजर म्हारो बळद नयो नादान लुहार्‌या बेगो आजे रै 2
ऊंकै हुई गूमड्‌यां भोळी, कोनै चाल्यो जाय रै,
तू तो आज रात ही आजा, छोरो ल्याबै भेजूं ओ – स्थाई

लुहार म्हारै साथ लुहारी ज्यागी ऊंका कपडा दरजी कै 2
वातो गयो पासलै गाँव कपडा कैंया ल्याऊं रै
म्हारी पीर लुहारी ज्यागी कपडा कुणसैं ल्याऊं ओ– स्थाई

गूजर म्हारै घरै धर्‌या कई बेस, पटैलण देगी नेग सूं 2
आज बाटी– चूरमो खाज्यो म्हारै घर मैं प्रेम सूं
दोन्यूं ऊठ संवारै जाज्यो सासरै गाड़ी भेजूं ओ– स्थाई....

लुहार चोखो आऊं गूजर बाबा, छोरो क्यांटै भेजै रै 2
नारो भोग रह्यो जो पीड़ ऊं सै मन भर आवै रै
चोखो खरवाड्‌यो अर खुरपा–दाँतळी साथ ल्याऊं ओ

लुहार म्हे अब बेगा आर्‌या ओ

गूजर म्हे थारी बाट देखां ओ.....

गीत की पृष्ठभूमि – कहने को आज भले ही हमने तकनीकी क्षेत्र में ऊंचाइयों को छू लिया हो या सूचना प्रौद्योगिकी अथवा चिकित्सा के क्षेत्र में भी नये आयाम स्थापित किये हों परन्तु किन्हीं दृष्टियों से हम

प्राचीन काल से ग्रामीण क्षेत्रों में अपनाई जा रही सटीक एवं विश्वसनीय चिकित्सा पद्धति से विमुख भी हुए हैं। प्राचीन काल में, और आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों में तो आज भी प्राचीन चिकित्सा पद्धति कहीं–कहीं अपने मूलस्वरूप में कारगर सिद्ध होती रही है। यह चिकित्सा पद्धति पशुओं के सम्बन्ध में प्रयोग की जाती रही है जिसमें पशुओं के मोटी फुंसिया या अन्य कोई बीमारी हो जाने पर लुहार या किसी अन्य जानकार व्यक्ति द्वारा पशु के शरीर के विशिष्ट भाग पर लोहे की चिन्हनुमा छाप को तेज गर्म करके चिपकाया जाता था। उस समय तो चमड़ी पर गर्म–गर्म लोहे की छाप लगने से पशु को पीड़ा होती थी परन्तु कुछ दिनों बाद उस स्थान की चमड़ी सूख जाया करती और वहां पर एक निशान उभर आता जिससे वह बीमार पशु पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाया करता था। इस क्रिया को 'डाळी लगाना' कहा करते थे। इस गीत में इसी प्राचीन पद्धति की सार्थकता को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु व भावार्थ– एक गूजर बाबा का बैल बीमार है। वह किसी के हाथ एक लुहार को यह संदेशा भिजवाता है कि वह तुरन्त आकर उसके बैल को डाली दे जाय। इसके प्रत्युत्तर में लुहार यह संदेश भिजवाता है कि हे गूजर बाबा, तुम्हारे पशुओं को जब मैंने पिछली बार डाली दी थी उसके पारिश्रमिक के रूप में तुम्हारे द्वारा मुझे कुछ अनाज देना शेष रह गया था अत: मैं कल आकर तुम्हारे बैल को डाली भी दे दूंगा और अपना बकाया अनाज भी ले लूंगा। इस पर गूजर बाबा पुन: लुहार को यह संदेश भिजवाता है कि मेरा नादान बैल पीडा से व्यथित है इसलिए मैं तुम्हें लिवाने अपना बेटा भेज रहा हूं और तुम आज रात ही मेरे यहां पहुंच जाओ। लुहार बड़ी चतुराई से यह बहाना बनाता है कि मेरी पत्नी (लुहारी) को अपने पीहर जाना है और उसने अपनी प्रस्तावित यात्रा के क्रम में दर्जी को अपना परिधान सिलाई करने को दिया था और वह दर्जी अब पास के गांव चला गया है ऐसी दशा में बिना उसके कपड़े लिये मैं अभी कैसे आऊं।

गूजर बाबा उसकी खुशामद करते हुए पुन: यह संदेश भिजवाता है कि मेरी पत्नी (पटैलण) के पास बहुत सारे वस्त्र (बेस) रखे हैं जिन्हें वह तुम्हारी पत्नी को नेग के रूप में (उपहारस्वरूप) देगी, बस तुम तो अपनी पत्नी को लेकर आज रात ही मेरे यहां पहुंच जाओ। रात्रि को तो मैं तुम लोगों के लिये चूरमा–दाल बाटी बनवाता हूं जिसे खाकर मस्त रहना और प्रात:काल तुम लोगों को पहुंचाने के लिये

अपनी गाड़ी भेज दूंगा। परन्तु इसके साथ गूजर बाबा भी युक्तिपूर्वक उसे अपने लिये कुल्हाड़ी, खुरपे और दाँतली लाने को कह देता है।

चतुर तो दोनों ही हैं परन्तु फिर भी मन में प्रसन्न होकर लुहार गूजर बाबा को यह संदेशा भिजवाता है कि हे बाबा, तुम्हारे बैल की पीड़ा देखकर मेरा मन भी आर्द्र हो उठा है, और अब तुम मुझे लिवाने के लिये किसी को मत भेजना मैं कुल्हाड़ी और खुरपे–दांतली लेकर अपनी पत्नी के साथ तुम्हारे पास तुरन्त आ रहा हूँ।

इस प्रकार इस गीत मैं ग्रामीणों की चतुराई, परम्परा, आत्मीयता आदि को एक साथ दर्शाने का गीतकार का प्रयास अनूठा है।

स्वरलिपि

ताल – कहरवा

प	ऽ	प	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	प	–	प	–	ग	–	ग	प
म्हा	ऽ	रो	ऽ	ब	ळ	द	व्हि	यो	ऽ	बे	ऽ	मा	ऽ	र	लु
प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	ग	–	प	–	–	–
हा	ऽ	र्	या	डा	ऽ	ळी	ऽ	दे	ऽ	जा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	ऽ	प	ऽ	ग	ऽ	ऽ	प
ती	ऽ	त	र	वा	ऽ	ड़ा	ऽ	सैं	ऽ	तू	ऽ	आ	ऽ	ऽ	य
प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	ग	–	प	–	–	–
ऊं	ऽ	को	ऽ	रो	ऽ	ग	मि	टा	ऽ	जा	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	–	प
पै	ऽ	ली	ऽ	पा	ऽ	छो	ऽ	को	ऽ	ज्यो	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ज
प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	ग	–	प	–	–	–
गू	ऽ	ज	र	बा	ऽ	बा	ऽ	दी	ऽ	ज्यो	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	प	प
त	ड़	कै	ऽ	आ	ऽ	ऊं	ऽ	गो	ऽ	मैं	ऽ	ले	ऽ	बा	ऽ
प	–	प	–	ग	–	–	प	प	–	ग	–	प	–	–	–
डा	ऽ	ळी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ढ	बा	ऽ	टै	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	–	ग	–	ग	प	प	–	प	–	ग	–	ग	प
म	त	तू	ऽ	म	न	मैं	ऽ	चिं	–	त्या	ऽ	रा	ऽ	ख	ब
प	–	प	–	ग	–	प	प	प	–	ग	–	प	–	–	–
ळ	द	नै	ऽ	थ	या	व	स	दी	ऽ	ज्यो	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

ये गीत राग भोपाली पर आधारित है, सामान्यतया लोकगीतों में भोपाली व सारंग पर आधारित गीत अधिक मिलते हैं। भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी लोक गीतों में सामान्यतया भोपाली के स्वर होते हैं। इस गीत में करूण रस है और यह गीत कहरवा ताल में निबद्ध है।

छप्पन्या को काळ

स्थाई **: पुरुष** बरस्यो कोऽनै इन्दरराज, धरती देखै मूऽण्डो फाड

स्त्री झोझरू की रोऽटीऽ मूंगांऽ की दाऽळ,
खालै जँवाईं जीऽ पड गयो काऽळ

पुरुष खेतां मैं देखो धूळ उडै रै लाय बरस री सामैं
ऊभा ऊभा रूंख सूखग्या हरियाली छी ज्यांमैं
कैंयां वां पै पंछी बैठीं झुळस झुळस भागीं रै

स्त्री ढां ढां करतां अल्डार्‌या छीं ढोर और डंगर
आऽकाश मैं देखर्‌या सब चील, काँवळा, बन्दर
काँऽवळा खैर्‌या मत बरसैऽ, पेट भरैगो रै

.....

पुरुष रिस रिस थोड़ो पाणी आर्‌यो काढ़ आंदळा सूं
आओ टाबर चिरणामृत सो थोडो थोडो द्‌यूं
ज्यान बचै तो करां प्राथना इन्दरजी भगवान नै

.....

पुरुष गड गड गड गड हुई गर्जना काळो व्है आकाश
टप टप टप टप बूँदां पडरी व्हियो हर्ष उल्लास
धरती की काया हरषी सब खुशी मंनांऽवीं रै
बरसो बरसो रैऽ इन्दर बरसो बरसो रै
बरसो बरसो रै बरसो बरसो रैऽ

गीत की पृष्ठभूमि

हमारे देश में सन् 1856 में भयंकर अकाल पड़ा था जिससे जीव-जन्तु भी पानी के बिना मरने लगे थे। मनुष्य की दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई थी और लोग-बाग बूँद-बूँद पानी को तरस गए थे। इन्द्र भगवान को बुलाने के लिए स्थान-स्थान पर ग्रामवासियों द्वारा यज्ञ कराए गए तथा भगवान की आराधना की गई। अंत में भगवान ने मनुष्य की इस कठिनाई को समझा और खूब जोर की बरसात हुई। इस गीत में अकाल की इसी स्थिति को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

इस वर्ष देश में अकाल पड़ा है तथा एक किसान के घर में खाने को एक दाना भी नहीं है। सामने आग बरस रही है और बड़े-बड़े पेड़ भी सूख गए हैं तथा पक्षी भी उन पर बैठने से कतरा रहे हैं। भूख-प्यास से आहत होकर पशु भी रूदन कर रहे हैं और बन्दर, चील, कौवे, ये सभी आसमान की ओर देख रहे हैं। अन्य सभी तो यह प्रार्थना करते हैं कि बारिश आ जाय परन्तु गिद्ध भगवान से यह प्रार्थना कर रहे हैं कि पानी न बरसे ताकि जीव जन्तु मर जाएं जिससे हम अपनी उदरपूर्ति कर सकें। ग्रामवासियों ने नहाना-धोना भी छोड़ दिया है तथा पीने को भी पानी नहीं मिल रहा है। ऐसी स्थिति में एक दम्पत्ति अपने बच्चों को लेकर सूखी हुई बाणगंगा नदी पर पहुँच गया और हाथ से खड्ढे़ खोदने लगा। काफी देर बाद खड्ढ़ों में कुछ पानी की बूँदे रिस-रिसकर एकत्र हुई। बच्चों के पिता ने कुछ-कुछ बूँदे सभी को दी तथा अपनी पत्नी से कहा कि यदि जान बची तो इन्द्र भगवान से प्रार्थना करेंगे। कण्ठ गीला करने के पश्चात् बच्चों ने अपनी माँ से कहा कि कई दिनों से अन्न का एक दाना भी नहीं मिला है अत: कहीं से भी हमें खाने को दो। उनकी पीड़ा को देखकर वह स्त्री रोने लगी। उसके पति ने पास के ही टीले से झोझरू उखाड़े और उनको कूट-काटकर उसकी पत्नी ने रोटियां बनाई। इतने में ही सामने से दामाद को आता देखकर स्त्री ने कहा कि हमारे यहाँ तो अकाल पड़ा हुआ है आपके यहाँ की स्थिति बताओ। इस पर दामाद ने कहा कि इन्द्र भगवान जरूर बरसेंगे और युग-युग से उन्होंने भक्तों की परीक्षा ली है। परन्तु यदि सारा गाँव मिलकर उनको बुलाएगा तो वह अवश्य बरसेंगे। इतने में ही सारे गाँव के लोग एकत्र हो गए। ढोल-नगारे और पीपे बजाने लगे तथा सभी पशु-पक्षी, जीव-जन्तुओं ने ग्रामवासियों के साथ ही इन्द्र भगवान का आह्वान किया जिससे प्रसन्न होकर भारी गर्जना होने लगी। आकाश में बादल मण्डराने लगे और टप-टप करके

बारिश होने लगी। सभी जीव-जन्तु एवं ग्रामवासी प्रसन्नता से पूरित हो उठे।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

सा	सा	सा	सा	सा	–	रे	–	रे	–	रे	प	म	–	–	–
ब	र	स्	यो	कौ	ऽ	नै	ऽ	इं	ऽ	द	र	रा	ऽ	ऽ	ज
रे	ऽ	रे	म	रे	ऽ	सा	ऽ	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
ध	र	ती	ऽ	दे	ऽ	खै	ऽ	मू	ऽ	ण	डो	फा	ऽ	ऽ	ड
सा	सा	सा	हा	सा	–	सा	–	सा	रे	ऽ	सा	सा	ऽ	ऽ	सा
झो	झ	रू	की	रो	ऽ	टी	ऽ	मूं	गां	ऽ	की	दा	ऽ	ऽ	ळ
सा	सा	–	सा	सा	सा	सा	–	सा	–	रे	सा	सा	–	–	सा
खा	लै	ऽ	ज	वां	ईं	जी	ऽ	प	ड़	ग	यो	का	ऽ	ऽ	ळ

अन्तरा

सा	–	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	–	रे	–	सा	ऽ	सा	ऽ
रवे	ऽ	तां	ऽ	मैं	ऽ	दे	खो	धू	ऽ	ळ	ऽ	ड़ै	ऽ	रै	ऽ
सा	–	रे	रे	सा	सा	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–
ला	ऽ	य	ब	र	स	री	ऽ	सा	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	–	ग	–	ग	–	ग	–	ग	सा	–	सा	रे	–

ऊ	ऽ	भा	ऽ	ऊ	ऽ	भा	ऽ	रूं	ऽ	ख	सू	ऽ	रव	ग	या
ग	ग	ग	प	सा	–	सा	–	सा	सा	ण	–	–	–	–	–
ह	रि	या	ऽ	ली	ऽ	छी	ऽ	ज्ञ	यां	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	–	रे	–								
क	इ	यां	ऽ	वां	ऽ	पै	ऽ								
म	–	म	–	म	–	म	–	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	रे
पं	ऽ	छीं	ऽ	बै	ऽ	ठीं	ऽ	झु	ळ	स	झु	ळ	स	भा	ऽ
म	–	म	–	–	–	–	–	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	–
गीं	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ढ़ां	ऽ	ढ़ां	ऽ	क	र	ता	ऽ
रे	म	म	–	म	म	म	–	म	–	म	–	म	–	ग	–
अ	ल	डा	ऽ	र्	या	छीं	ऽ	ढो	ऽ	र	औ	ऽ	र	डं	ऽ
रे	ग	ग	–	–	–	–	–	सा	–	–	सा	–	सा	सा	–
ग	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	का	ऽ	श	मैं	ऽ
म	–	म	म	म	–	म	–	ग	–	ग	सा	–	सा	सा	–
दे	ऽ	ख	र्	या	ऽ	स	ब	ची	ऽ	ल	कां	ऽ	ग	ळा	ऽ
सा	–	सा	–	–	–	–	–	सा	–	–	सा	सा	–	रे	–
ब	न	द	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कां	ऽ	ऽ	व	ळा	ऽ	खै	ऽ

रे	म	म	–	म	म	म	–	म	–	म	म	म	–	ग	–
र्	या	म	त	ब	र	सै	ऽ	पे	ऽ	ट	भ	रै	ऽ	गो	ऽ
रे	ग	ग	–	–	–	–	–								
रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

शेष अंतरे भी इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत के प्रारम्भ के भाग स्त्री स्वर में हैं उसमें राग सारंग की झलक है। लेकिन अगले भाग में पुरुष स्वर में गंधार का प्रयोग होने से भोपाली राग की छवि है। कई लोकगीतों में एक ही गीत भिन्न–भिन्न रागों में हो सकता है।

घोड़ी

स्थाई- पु. तू तो चाल घोडी चाल ढाणी मैं देखां बेमार

स्त्री मै तो खाऊं चणां की दाळ बैद्जी ढाऽणी मैं जाऽर

पु. महादेवा की पडी लुगाई, कुल्लावै बुखार मैं
इंजेक्शन भी लेता चालां छतरी का बऽजार सैं
चाल धोडी चाल बेगि देखां रै बेमार नै + स्थाई

स्त्री पैरां मैं नेवर घडवाद्यो , पीठ नई जीऽण
माथा पै कसीदा काढी झालर जी रंगीन
ग्यारा बरस उमर छै मेरी चालूंगी बिन्नौट जी + स्थाई दोनों

पु. दो पीपा तूनै घी का द्यांगा स्याळा कै जी मांयनै
नेवर, झालर सै बणवाद्यूं , बात मेरी मान लै
जल्दी चाल बाट देखीं, ढाणी का सै लोग रै + स्थाई

.....

पु. साँस छोड़कर बैद बोल्यो मोतीजरो बिगडगो,
काळो कुडो पिलावो ईं नै बणा सुबेरे काढो
इंजेक्शन मैं द्यूंगो ईं कै, सब हटजाओ रै + स्थाई

.....

पु. बैद खयो रै सुण महादेवा बोरी तू पोंछाजे
और दवाई द्यूंगो चाल साथ घरां सूं ल्याजे
घोडी नै खूंटा सैं खोल बैद चाल्यो रै.....+ स्थाई

पु. तू तो चाल घोडी चाल रात होरी जल्दी चाल
मैं तो ल्यूंगी बैदराज नेवर झालर दोन्यू साथ

पु. जल्दी जल्दी चाल स्त्री.- ल्यूंगी दोन्यूं साथ

गीत की पृष्ठभूमि एवं भावार्थ

महाभारतकालीन स्थान ग्राम मैड़-विराटनगर के आसपास कई छोटी- छोटी ढ़ाणियां एवं बस्तियां हैं जिनमें बड़ की ढ़ाणी, झाड़ोदियों की ढ़ाणी, बाळ की ढ़ाणी, सेवरियों की ढ़ाणी, तेवड़ी, पालड़ी, पणदो, छींड़, भ्याजर, ताळवा, पूराळा, सताणा, गालास आदि प्रमुख हैं। आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व न तो इन ढ़ाणी ढ़पाणियों एवं बस्तियों में सड़कें थीं और न ही आवागमन के आज जैसे साधन। ऐसे में यदि वहां पर कोई बीमार पड़ जाता तो क्या होता ?

ग्राम मैड़ में महन्त श्री गणेश दास जी महाराज की भजन मण्ड़ली के एक गवैये थे श्री भूरजी वैद्य। सन् 1965 के आसपास ये राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय मैड़ से सेवानिवृत्त हुए जिनके पास उस समय एक घोड़ी थी। यदि इन ढ़ाणियों एवं बस्तियों में कोई बीमार हो जाया करता तो उसके परिजन इन वैद्यजी को इसकी सूचना देते और तब वैद्यजी अपनी घोड़ी पर सवार होकर तथा समुचित दवा-दारू लेकर चल पड़ते बीमार को देखने।

इस गीत में एक ऐसे ही अवसर का वर्णन किया गया है। वैद्यजी घोड़ी पर बैठकर श्री सियावरजी के मन्दिर के पास स्थित बड़ की ढ़ाणी (कीरों की ढ़ाणी) में छोटू कीर के बेटे महादेव कीर की बीमार पत्नी को देखने जाते हैं (महादेव कीर की मृत्यु सन् 2011 में हो गई एवं उसकी पत्नी अभी जीवित है)। इस यात्रा में वैद्यजी एवं घोड़ी के मन के भावों का किस सहृदयता से आदान-प्रदान होता है यह इस गीत में बताया गया है जो पशुओं के साथ मानव के हृदयग्राही सम्बन्धों को उजागर करता है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

०				×				०				×			
सा	–	रे	–	म	–	–	म	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
तू	ऽ	तो	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ल	घो	ऽ	ड़ी	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ल

सा	–	रे	–	म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
ढा	ऽ	णी	ऽ	मैं	ऽ	दे	ऽ	खां	ऽ	बे	ऽ	मा	ऽ	ऽ	र
सा	–	रे	–	म	म	–	म	रे	–	सा	–	सा	–	सा	सा
मैं	ऽ	तो	ऽ	खां	ऊं	ऽ	च	णां	ऽ	की	ऽ	दा	ऽ	ळ	बै
–	सा	रे	–	म	–	–	–	रे	–	–	सा	सा	–	–	–
ऽ	द्	जी	ऽ	ढा	ऽ	ऽ	ऽ	णी	ऽ	ऽ	मैं	जा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सा	–	–	–	म	म	म	–	प	–	म	–	प	म	–	म
र	ऽ	ऽ	ऽ	म	हा	दे	ऽ	वा	ऽ	की	ऽ	प	ड़ी	ऽ	लु
म	–	म	–	प	–	प	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा
गा	ऽ	ई	ऽ	कु	ऽ	ळ्ळा	ऽ	वै	ऽ	बु	ऽ	खा	ऽ	ऽ	र
सा	–	–	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–
मैं	ऽ	ऽ	ऽ	इं	ऽ	जे	क	श	न	भी	ऽ	ले	ऽ	तां	ऽ
म	–	म	–	प	प	प	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा
चा	ऽ	लां	ऽ	छ	त	री	ऽ	का	ऽ	ब	ऽ	ज़ा	ऽ	ऽ	र
सा	–	–	–	म	–	–	म	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा
सैं	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ल	घो	ऽ	ड़ी	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ल

सा	–	रे	–	म	–	म	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	सा
बे	ऽ	गि	ऽ	दे	ऽ	खां	ऽ	रै	ऽबे	ऽ	मा	ऽ	ऽ	र	
सा	–	–	–												
नै	ऽ	ऽ	ऽ												

शेष अंतरे इसी प्रकार गाए जायेंगे।

यह गीत राग पहाड़ी पर आधारित है। इसमें षडज, ऋषभ व मध्यम स्वरों का प्रयोग हुआ है। इस गीत की धुन सरल है। यह गीत आठ मात्रा ताल कहरवा में निबद्ध है। इसकी स्वरलिपि को दो आर्वतन में दर्शाया गया है। यह मध्य लय का गीत है।

हुयो उजाळो

स्थाई हुयो उजाळो च्यारूं मेर कोयल कूकै रै
नीमड्यां का पेडां माळै चीं–चीं व्हैरी रै
सुवां की बरात चाली देखो बणी लैण
झपझप करता पाँखडा कतरा चोख लागीं
आगै–पाछै जौ बराबर म्हाडा कोनै व्हैर्‌या रै +स्थाई

.....

सासूजी को खैबो मान बीनणी ऊठी
दही की खडावणी बिलोवणी गेरी
रई गेर छाछ बिलोवै नेतो घाल्यां रै +स्थाई
लूण्या घी नै लाडुवां नियां उछाळै
ऊंकै पाछै राबडी नै छाछ मैं मिलावै
कचोळा मैं घाल देखो सारा पीवीं रै +स्थाई
लेर बस्तो टाबर चाल्या फडबा तांईं
बळदां नै जूडा मैं देर हळ नै जोड्यां
बाबो, भायो, काको सारा खेतां चाल्या रै
कोयल कूकै रै
मोर्‌या बोलीं रै
नीमड्यां का पेडां माळै चीं–चीं व्हैरी रै
टाबर खेलीं रै
भागता बळदां का देखो घूघरा बाजीं रै
घूघरा बाजीं रै देखो घूघरा बाजीं रै

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

इस गीत में प्रकृति के सम्पूर्ण वातावरण को मानवीय दैनिक क्रियाकलापों के परिप्रेक्ष्य में इस भाँति उकेरा गया है कि सहज रूप में ही मन–मस्तिष्क पर प्रकृति आच्छादित होकर मन को आनन्द से सराबोर कर देती है।

प्रात: काल होने को है। चारों ओर उजाला फैलने लगा है। जीव–जन्तु, पशु–पक्षी एवं मानव–मन को शायद इस अवसर की बेताबी से प्रतीक्षा थी अत: सभी के सभी प्रकृति का आनन्द लेते हुए अपने–अपने ढ़ंग से अपनी–अपनी दैनिक क्रियाओं में जुट जाते हैं और वे प्रकृति की छात्रछाया में सहजता से जीवन का आनन्द भोगते हैं।

इस गीत में पक्षियों के अनुशासन को भी दर्शाया गया है। कि किस प्रकार वे आकाश में एक क्रमबद्ध कतार में उडते हैं। जौ बराबर भी आगे–पीछे नहीं होते।

प्रकृति में संगीत की लयबद्धता भी इस गीत में देखी जा सकती है।

जब मोर पीहो–पीहो करते हैं तो उनके स्वर का ऊंचा–नीचापन शास्त्रीय संगीत की तानों का आभास कराता है और उनके बोलों की लयबद्धता बरबस ही हर किसी के चित्त को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

प्रकृति के वैषम्य एवं उसमें उत्पन्न हुए अवरोध को मानव–मन स्वीकार नहीं करता। गीतकार को आस–पास बिखरी हरितावली लुभाती है, नीम के हरिताच्छादित वृक्ष एवं उन पर पक्षियों एवं जीव–जन्तुओं द्वारा की जा रही अठखेलियां और नाना प्रकार की क्रीड़ाएं मन को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। परन्तु इस हरितावली में भी टीकर (बबूल) के दो वृक्ष एवं ठूँठनुमा काँटेदार तना मन को खटकते हैं।

प्राकृतिक वातावरण में मानवीय क्रियाएं अधिक लुभावनी प्रतीत होती हैं । बच्चे कपों में चाय पी रहे हैं, लड़कियां गोबर उठाकर कण्डे थाप रही हैं और बच्चे अपने–अपने बस्ते लेकर स्कूल जा रहे हैं, कोयल कूक रही है, मोर पीहो–पीहो कर रहे हैं और नीम के पेड़ों पर चिड़ियाएं चहचहा रही हैं। इस सम्पूर्ण वातावरण की झलक इस गीत में देखने को मिलती है जो जीव मात्र को आन्दोलित कर जाती है।

स्वरलिपि

ताल – कहरवा

सा	सा	–	म	म	–	म	–	रे	ऽ	रे	म	म	ऽ	म	ऽ
हु	यो	ऽ	उ	जा	ऽ	ळो	ऽ	च	या	रूं	ऽ	मे	ऽ	र	ऽ
म	–	म	म	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
को	ऽ	य	ल	कू	ऽ	कै	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	म	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	रे	–
नी	ऽ	ऽ	म	ड्यां	ऽ	का	ऽ	पे	ऽ	डां	ऽ	मा	ऽ	ळै	ऽ
म	–	म	–	सा	–	–	सा	सा	–	–	–	–	–	–	–
चीं	ऽ	चीं	ऽ	व्है	ऽ	ऽ	री	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	रे	म	–	म	–
सु	ऽ	वां	ऽ	को	ऽ	बा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	त	चा	ऽ	ली	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	सा	–
दे	ऽ	खो	ऽ	ब	ऽ	णी	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ण	ऽ
म	–	म	–	सा	सा	सा	–	सा	–	–	सा	सा	–	–	–
झ	प	झ	प	क	र	ता	ऽ	पाँ	ऽ	ऽ	ख	ड़ा	ऽ	ऽ	ऽ

म	म	म	–	सा	–	–	सा	सा	–	सा	–	–	–	–	–
क	त	रा	ऽ	चो	ऽ	ऽ	खा	ला	ऽ	गीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा	सा	–	रे	–
आ	ऽ	गै	ऽ	पा	ऽ	छै	ऽ	जौ	ऽ	ऽ	ब	रा	ऽ	ब	र
म	ऽ	म	ऽ	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	–	सा	–	–	–
म्हा	ऽ	डा	ऽ	कौ	ऽ	नै	ऽ	व्है	र्	या	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	रे	–
को	ऽ	ई	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ	क	ऽ	बू	ऽ	त	र	भी	ऽ
म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
दे	ऽ	खो	ऽ	उ	ऽ	डै	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	–	सा	रे	–	सा	–	–	सा	सा	–	रे	–
ए	ऽ	क	छा	ऽ	न	सैं	ऽ	दू	ऽ	ऽ	स	री	ऽ	प	र
म	–	–	म	सा	–	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	र	बै	ऽ	ऽ	ऽ	ठ्यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा	सा	–	–	रे
अ	इ	यां	ऽ	ला	ऽ	गै	ऽ	आ	–	–	प	क	या	ऽ	यो

म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
सु	ऽ	वा	ऽ	सूं	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ऽ	टो	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाए जायेंगे।

इसमें अद्‌भुत रस है एवं प्रकृति का वर्णन व प्रकृति में संगीत की लयबद्धता है जैसे – आसमान में तोते पँख फडफडाते हुए इस प्रकार से उड़ रहे हैं कि जौ–बराबर भी आगे–पीछे नहीं होते, और यही उनकी लयबद्धता है। यह गीत राग सारंग पर आधारित है। हांलाकि सा से मा जाने पर राग केदार का आभास होता है लेकिन रे से मा जाने के कारण सारंग ही उचित लगता है। इसमें षडज, ऋषभ एवं मध्यम का प्रयोग हुआ है। यह गीत ताल कहरवा में निबद्ध है।

टट्टू राजा

स्थाई टट्टू की नियां अड जावै बात माळै
म्हाडो पूँछडी कानून की कोनै मानै
सारा ढाँढा रामा मैं चरीं घास जी
टट्टू म्हाडो अइयां खै चरूं कासणी
सारा ढाँढा बोल्या टट्टू मान जा चर लै
टट्टू खै मेरै आटै कासणी आवैगी रै

.....

खेत को किसान आयो हाको करै
ढाँढा बोल्या भाग चालो आगो मारै
टट्टू बोल्यो खेत ऊंका बाप को कोनै
लात साळा कै असी द्यूं पाछो भागै रै

.....

ढाँढा भाग्या जमीं पर सैं टट्टू ऊठ्यो
अइयां सोच्यो गाड़ी आगी जल्दी बैठूंगो
ढाँढा साळा देखींगा सब मूंनै जातां
जद मैं गाडी मैं बैठ्योडो घरां जाऊंगो
चोथ्यो कीर टट्टू कन्नै गाड़ी रोक्यो
पाडा को जूड़ो उतार टट्टू कै धर्‌यो
मार छोरा आज ईंकै जोर सूं सोटा
जद तक या सीधो न व्है जोत्यां जा रै
ढाँढा बोल्या खै रै टट्टू काँई हाल छीं
टट्टू बोल्यो साळो मैं गाड़ी को राजा
सारी गाड़ी मेरै पाछै चाऊं तो चालूं

सारा ढाँढा हँसी टट्टू ऐंठतो जार्‌यो रै

टट्टू ऐंठतो जार्‌यो

टट्टू ऐंठतो जार्‌यो

गीत की पृष्ठभूमि

अडियल व्यक्ति को टट्टू के रूप में माना जाना जगजाहिर है। अडियल किस्म का व्यक्ति सदा अपनी बात पर अड़ा रहता है। वह अपने समक्ष अन्य सभी लोगों को कम जानकारी रखने वाला एवं अपने से नीचा समझता है। उसे किसी विषय का ज्ञान हो या न हो परन्तु वह अपने आपको महज्ञानी समझता है। यदि ऐसे व्यक्ति को कोई सीख देने का प्रयास करता है तो वह उसकी बात को जरा भी तूल नहीं देता तथा हर समय अपनी ही टांग ऊँची रखना चाहता है। भले ही उसे कितनी ही तकलीफें झेलनी पड़ें परन्तु वह अपनी जिद पर अडा किसी की भी बात को नहीं मानता और इस प्रकार वह सदैव ही कठिनाइयों में फँसा रहता है। अन्य सभी लोग उस पर व्यंग्य कसते रहते हैं। इस गीत में एक अडियल व्यक्ति की इसी स्थिति का चित्रण किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

गाँव के पास के एक खेत में बहुत से पशु घास चर रहे हैं परन्तु एक टट्टू उनके बीच में खड़ा सबसे कह रहा है कि मैं इस घटिया किस्म की घास को नहीं चरूंगा। चरूंगा तो केवल कासणी ही चरूंगा। सभी पशुओं ने उसे खूब समझाया कि टट्टू हमारा कहना मान ले और इस घास को चर ले क्योंकि तेरे अकेले के लिए अब यहाँ कासणी लेकर कौन आयेगा। उसकी इस बात पर टट्टू अकडता हुआ कहने लगा कि तुम लोग देखते जाओ मेरे लिए कासणी ही आयेगी।

सब पशु तो कुए के पास में ही बनी खेळ में पानी पीने लगे परन्तु टट्टू कहने लगा कि यह पानी तो बहुत पुराना है मैं तुम्हारे साथ इसे नहीं पीऊंगा। उसने आकाश की ओर देखते हुए कहा कि तुम लोग देखते जाओ अभी बारिश आयेगी और मैं तो उसका ताज़ा पानी ही पीऊंगा। एकाएक वहाँ पर खेत का किसान आ गया और पशुओं को भगाने के लिए हल्ला करने लगा। सब पशु भागने को तैयार हो गये। उन्होंने टट्टू से कहा कि तुम भी हमारे साथ भाग चलो। उनकी इस बात पर टट्टू ने अकडते हुए कहा कि यह खेत उसके बाप का नहीं है। मैं साले के ऐसी लात मारूंगा कि यहाँ से भागता बनेगा। सभी पशु किसान से डरकर भाग गये परन्तु टट्टू अडकर वहीं बैठ गया। खेत का मालिक चोथू कीर टट्टू के पास

आया और उसके जोर-जोर से सोटे मारने लगा। टट्टू अड गया। सोटे खाता रहा परन्तु ज़मीन पर से नहीं उठा। हारकर चोथू कीर ने उसे मारना बन्द कर दिया और झुँझलाकर अपने घर की ओर चल दिया। अब टट्टू ने दूर खड़े अपने साथियों से ऊँची आवाज़ में कहा कि देखो साला खेत का मालिक भी मुझसे डर और गया दुम दबाकर अपने घर भाग गया। उसके साथी उसके पास आये और उसकी इस दयनीय स्थिति को देखकर कहने लगे कि देख टट्टू खेत के मालिक की मार से तेरी चमड़ी उधड गई है। हमारा कहना मान ले और घर चल। टट्टू ने कहा कि मैं पैदल घर नहीं जाऊंगा। और तुम मेरा रुतबा क्या जानो, देखना साला चोथू कीर गाड़ी लेकर आयेगा और मुझे उसमें बैठाकर घर छोड़कर आयेगा।

यह क्या। देखो सामने से चोथू कीर गाड़ी लिए हुए आ रहा है। जब टट्टू ने देखा तो ज़मीन पर से उठा और ऊंचे नीचे होकर शरीर की आकड खोलने लगा। वह मन ही मन सोचने लगा कि जब ये सारे डरपोक पशु मुझे इस गाड़ी में बैठकर घर जाता हुआ देखेंगे तो मेरा रुतबा और भी बढ़ जायेगा। चोथू कीर ने टट्टू के पास आकर गाड़ी रोकी और गाड़ी में जुते पाड़े का जूड़ा उतारकर टट्टू पर रख दिया। उसने अपने बेटे से कहा कि अब इसके सोटे मार और जब तक यह सीधा न हो जाय इसे गाड़ी में ही जोते रखना। अब पशुओं ने टट्टू से पूछा कि कहो टट्टू भाई क्या हाल हैं। उसकी इस बात पर टट्टू ने अकडते हुए कहा कि सालो तुम क्या जानो यह सारी गाड़ी मेरे पीछे है और मैं इसका राजा हूं। यह मेरी मर्जी है कि चाहूं तो चलूं और चाहूं तो न चलूं। सारे पशु उसकी इस बात पर हँसने लगे।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

नि़	–	प़	–	नि़	ऽ	नि़	ऽ	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
ट	ऽ	ट्टू	ऽ	की	ऽ	नि	ऽ	यां	ऽ	अ	ड़	जा	ऽ	वै	ऽ
नि़	–	–	प़	नि़	–	–	नि़	सा	–	–	–	रे	ऽ	रे	ऽ
बा	ऽ	ऽ	त	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ळै	ऽ	ऽ	ऽ	म	हा	डो	ऽ
नि़	ऽ	ऽ	नि़	सा	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ	सा	–	–	सा
पूं	ऽ	ऽ	छ	डी	ऽ	का	ऽ	नू	ऽ	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

नि़	–	प़	–	सा	ऽ	ऽ	र	पे	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	–	–
को	ऽ	नै	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	प़	–	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	सा	सा	–	–	–
सा	ऽ	रा	ऽ	ढाँ	ऽ	ढा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	मैं	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	प़	–	नि़	–	–	नि़	सा	–	–	–	प़	–	–	–
च	ऽ	रीं	ऽ	घा	ऽ	ऽ	स	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	नि़	–	सी	ऽ
ट	ऽ	टट्टू	ऽ	म्‌	हा	ड़ो	ऽ	अ	इ	यां	ऽ	खै	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	म	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
च	ऽ	रूं	ऽ	का	ऽ	स	ऽ	णी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	प़	–	नि़	–	नि़	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
सा	ऽ	रा	ऽ	ढाँ	ऽ	ढा	ऽ	बो	ऽ	ल्या	ऽ	ट	ट्	टू	ऽ
नि़	–	–	प़	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	–	प़	–	–	–
मा	ऽ	ऽ	न	जा	ऽ	च	र	लै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	ऽ	रे	ऽ	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	नि़	–	सा	–
ट	ट्	टू	ऽ	खै	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रै	ऽ	आ	ऽ	टै	ऽ
रे	–	–	म	रे	–	सा	–	सा	–	सा	–	प	–	–	–
का	ऽ	ऽ	सा	णी	ऽ	आ	ऽ	वै	ऽ	गी	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

नि़	–	–	प़	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	सा	सा	–	सा	–
खे	ऽ	ऽ	त	को	ऽ	कि	ऽ	सा	ऽ	ऽ	न	आ	ऽ	यो	ऽ
नि़	–	प	–	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
हां	ऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	क	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	प	–	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	रे	सा	–	सा	–
ढ़ा	ऽ	ढ़ा	ऽ	ता	ऽ	ल्या	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ग	चा	ऽ	लो	ऽ
नि़	–	–	–	प़	–	नि़	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
आं	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	मा	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे उपरोक्तानुसार गाए जायेंगे।

यह गीत राग सारंग पर आधारित है, इसमें हास्य रस का वर्णन है। गीत नीति एवं शिक्षा का संदेश देता है। यह गीत कहरवा ताल में निबद्ध है। इसमें मध्य और मन्द्र सप्तक का ही प्रयोग हुआ है।

शेर्‌यो बावर्‌यो

स्थाई चढी कडाही बास्योडा की शीतळा का थान पै
शेर्‌यो बावर्‌यो चूंट-चांटकर हाथ सूं काढै
थारी महमा अपरम्पार माता, ज्यो दीयो बरदान जी
शेर्‌यो बावर्‌यो ध्यावै थानै, छोड़- छाड़ सब काम जी
सोवै चटाई माळै माता संयम सूं वा रह छै
असी आस्था थांमै माता कोनै खैडे दीखै + स्थाई

.....

लियो भभूत हडुमान की माताजी कै पोंछगो
लग्यो बिलाळी शीतळा कै, आज लक्खी मेळोऽऽ
कोनै मान्या भक्ति ऊं की पावटा का पाळती
पूवा-पकोडी हाथ सैं वा कैंया देखो काढै रै + स्थाई
आज शेर्‌यो बावर्‌यो छै जीवै हो सौ साल को
म्हे देख्या आँख्यां सूं या सब कोनै मानै दूसरो
ऐसी तेरी भक्ति शेर्‌या याद रहै सौ साल रै
हाथां सूं ज्यो काढी कडाही कोनै भूली जाय रै
कोनै भूली जाय रै - 3

गीत की पृष्ठभूमि

हमारे देश में भक्ति, परम्परा, श्रद्धा एवं पूजा इनका अपने आप में विशिष्ट स्थान रहा है। ईश्वर की आराधना को हमारे यहाँ एक कर्म के रूप में माना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो ईश्वर के भरोसे ही मनुष्य का जीवन चलता है। यदि गाँव में कोई व्यक्ति बीमार भी हो जाता है तो वहाँ के निवासी उसे चिकित्सकों के पास ले जाने के बजाय अपने आराध्य देव की शरण में ही ले जाना हितकर मानते हैं। महाभारतकालीन स्थान विराटनगर के पास कीचक का गाँव मैड़ है। वहाँ पर स्थित श्री सियावरजी के मन्दिर के महंत श्री गणेशदास जी महाराज ने सैंकड़ों बीमार रोगियों का नि:शुल्क

इलाज़ किया और अपने आराध्य देव हनुमान जी महाराज की कीर्ति को जन-जन तक पहुँचाया। इस गीत में इन्हीं सब बातों को बताया गया है।

गीत की विषयवस्तु

श्री सियावरजी के मन्दिर ग्राम मैड़ के महंत श्री गणेशदास जी महाराज का एक प्रशंसक शेरया् बावर्या था जो पीठाठी नामक गाँव का रहने वाला था। वह शीतला माता की आराधना किया करता था तथा प्रतिवर्ष होली-दीवाली को अपने गुरू महंत श्री गणेशदास जी महाराज की हाजरी में जाया करता था। वह अपने साथ कई बीमार रोगियों को भी ले जाया करता था और जब महंत श्री गणेशदास जी महाराज के आशीर्वाद से उन रोगियों के रोग का निदान हो जाता तो वे उसे कीडी नंगरा सींचने को कहते। शेरया् बावर्या अपने गुरू महंत श्री गणेशदास जी महाराज की दी हुई भभूत को लाकर उसे कपड़े में बाँधकर अपने घर के दरवाज़े पर बाँध दिया करता था और सदैव महंत श्री गणेशदास जी महाराज को याद किया करता। शेरया् बावर्या को भगवान का ऐसा वरदान था कि वह कढ़ाई से पूए-पकौड़ी हाथ से ही निकाल लिया करता था और उसके हाथ कढ़ाई के गरम-गरम तेल से भी नहीं जलते थे। एक बार शीतलाष्टमी के दिन बिलाली का मेला लगा था जिसमें शेर्या बावर्या भी गया था। उसके हाथ से पूए-पकौड़ी निकालने की बात को पावटा के लोगों ने सत्य नहीं माना अत: लोगों के कहने पर जब शेरया् बावर्या मेले में ही कढ़ाई के गरम-गरम तेल में से हाथ से पूए-पकौड़ी निकालने लगा तो वहाँ के सभी लोग उसके इस कार्य से हतप्रभ रह गए। इस प्रकार यह गीत भक्ति एवं पूजा के महत्व को दर्शाता है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

सा	ध़	–	सा	सा	–	–	–	रे	–	म	–	म	–	म	–
च	ढ़ी	ऽ	क	ढा	ऽ	ही	ऽ	बा	ऽ	स्यो	ऽ	ड़ा	ऽ	की	ऽ
म	–	म	म	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	–	–
शी	ऽ	त	ऽ	ळा	ऽ	का	ऽ	था	ऽ	न	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ऽ
म	रे	–	म	म	–	म	–	म	रे	–	म	म	–	म	–
शे	र्‌यो	ऽ	बा	ऽ	व	र्‌यो	ऽ	चूं	ऽ	ट	चां	ऽ	ट	क	र
प	म	रे	रे	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
हा	ऽ	था	ऽ	सूं	ऽ	का	ऽ	ढै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

म	–	म	–	म	म	म	–	म	–	म	–	म	–	–	म
था	ऽ	री	ऽ	म	ह	मा	ऽ	अ	प	र	म	पा	ऽ	ऽ	र
म	–	म	–	म	–	म	म	म	–	म	–	म	–	–	म
मा	ऽ	ता	ऽ	ज्यो	ऽ	दी	ऽ	यो	ऽ	ब	र	दा	ऽ	ऽ	न
म	–	–	–	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–	रे	–
जी	ऽ	ऽ	ऽ	शेर्	यो	ऽ	बा	व	र्	यो	ऽ	ध	या	ऽ	वै

रे	–	रे	–	रे	–	म	–	रे	–	रे	–	सा	–	सा	–
थां	ऽ	नै	ऽ	छो	ऽ	ऽ	छा	ऽ	ड	स	ब	का	ऽ	ऽ	म
सा	–	–	–												
जी	ऽ	ऽ	ऽ												
सा	रे	–	म	म	–	म	–	प	–	प	–	प	–	प	–
सो	वै	ऽ	च	टा	ऽ	ई	ऽ	मा	ऽ	ळै	ऽ	मा	ऽ	ता	ऽ
प	–	प	प	प	–	प	–	म	–	–	प	प	–	–	–
सं	ऽ	य	म	सूं	ऽ	वा	ऽ	र्‌हे	ऽ	ऽ	छै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	–	रे	–	रे	रे	–	म	–	म	–	रे	–	सा	–
अ	सी	ऽ	आ	ऽ	स्‌	था	ऽ	थां	ऽ	मैं	ऽ	मा	ऽ	ता	ऽ
म	–	म	–	रे	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–
कौ	ऽ	नै	ऽ	खै	ऽ	डे	ऽ	दी	ऽ	रवै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में मनुष्य की ईशभक्ति व श्रद्धा को दर्शाया गया है। गीत पहाड़ी के स्वरों पर आधारित है। इस गीत में षडज, ऋषभ, मध्यम व धैवत का प्रयोग हुआ है। पंचम का भी प्रयोग है। यह गीत कहरवा ताल में मध्य लय में निबद्ध है।

सिरस्यूं को खेत

स्थाई : **स्त्री** – एक बेलडी ऐसी देखी सिरस्यूं का जी खेत मैं

पुरुष – कसी बेलडी ?

स्त्री – असी बेलडी देखी जी मैं सिरस्यूं का जी खेत मैं

लकडी कै लिपटी वा अइयां लागै टैंक मोरचै

.....

स्त्री सिरस्यूं हँसरी खेतां मांयां पीळा पीळा दाँत

करै चमाचम खेत सारो लागै उजळो उजळो

मन मैं आवै भरल्यां ऊंकै जार कसकर बाथ

पुरुष फर फर पँख पसार्यां माछर माळै डोलीं

हरो लहरियो मन लहरावै मुसकाती मन भावै

मेरो मन बळखातो तडपै जद जद मोर्या बोलीं

.....

स्त्री वीराना सा जंगळ मैं म्हे सौ जन्मां सैं हँसरी

कसी खुशी म्हांनै आज हुई ज्यो थांनै देख्या

रह रह मन मैं सीळ उठै जद फर फर सर सर निकळीं

पुरुष हँसती चोखी लागो सिरस्यूं म्हे अब कोनै जावां

स्त्री आता कन्नै चोखा थे भी लागो रै माछरडा

स्त्री मत जाज्यो ज्यो हँसती र्हां म्हे

पुरुष कौने जावां छोड थांनै

स्त्री मत जाज्यो ज्यो हँसती र्हां म्हे

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

प्रकृति को देखकर मन उसे आगोश में ले लेने को बेचैन हो उठता है तथा सिरस्यूं के खेत को देखकर जीव मात्र के हृदय में प्रकृति को सम्पूर्ण रूप में अँगीकार कर लेने की उत्कण्ठा जाग उठती है। मनुष्य के मन में इस वातावरण को देखकर आन्तरिक भावों का उद्‌गार होता है।

जीव मात्र प्रकृति का एक अभिन्न अंग है जिसे गीतकार ने सहज रूप से नवीन सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है और प्रकृति द्वारा जीव मात्र को एकाकार कर लेने की उत्कण्ठा इस गीत में न केवल प्रकृति के लिये ही कही गई है अपितु यह जीव मात्र की जीव मात्र के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति है।

गीत के अन्त में प्रकृति के उभय पक्षों के मिलन में शृंगार के संयोग पक्ष की कल्पना की गई है जो जीवन का यथार्थ है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

सा – सा –	सा – रे –	म – म –	म – म –
ए ऽ क बे	ऽ ल डी ऽ	ऐ ऽ सी ऽ	दे ऽ खी ऽ
म – म –	म – म –	म – – म	म – – –
सि र स्यूं ऽ	का ऽ जी ऽ	खे ऽ ऽ त	मैं ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	सा – रे –	– – – –	– – – –
क सी ऽ बे	ऽ ल डी ऽ	– – – –	– – – –
सा – सा –	सा – सा –	म – म –	म – म –
अ सी ऽ बे	ऽ ल डी ऽ	दे ऽ खी ऽ	जी ऽ मैं ऽ
म म म –	म – म –	म – – म	म – – –
सि र स्यूं ऽ	का ऽ जी ऽ	खे ऽ ऽ त	मैं ऽ ऽ ऽ
सा सा सा –	सा – रे –	म – म –	म म म –
ल क डी ऽ	कै ऽ लि प	टी ऽ वा ऽ	अ इ यां ऽ

सा	–	सा	–	सा	–	–	रे	म	–	–	म	म	–	–	–
ला	ऽ	गै	ऽ	टैं	ऽ	ऽ	क	मो	ऽ	ऽ	र	चै	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सा	सा	सा	–	सा	सा	रे	–	म	–	म	–	म	–	म	–
सि	र	स्यूं	ऽ	हं	स	री	ऽ	खे	ऽ	ता	ऽ	मा	ऽ	या	ऽ
म	–	म	–	प	–	म	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–
पी	ऽ	ला	ऽ	पी	ऽ	ला	ऽ	दो	ऽ	ऽ	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	सा	सा	–	सा	रे	म	–	–	म	म	–	म	–
क	रै	ऽ	च	मा	ऽ	च	म	खे	ऽ	ऽ	त	सा	ऽ	रो	ऽ
म	–	म	–	प	प	म	–	रे	–	–	सा	सा	–	–	–
ला	ऽ	गै	ऽ	उ	ज	लो	ऽ	उ	ऽ	ऽ	ज़	लौ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	–	रे	–	–	म	म	म	म	–	म	–	म	–
म	न	में	ऽ	आ	ऽ	ऽ	वे	स	र	ल्या	ऽ	ऊ	ऽ	के	ऽ
प	–	–	म	रे	रे	रे	रे	सी	–	–	–	सा	–	–	–
का	ऽ	ऽ	र	क	स	क	र	बा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

उपरोक्त गीत राग बिलावल व पहाड़ी पर आधारित है। लोकगीतों में कई बार एक ही गीत की स्थाई एक राग में व अन्तरा दूसरे राग में होता है। इस गीत में नारी सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का वर्णन मानव–हृदय की हलचल को शृंगार एवं अन्योक्ति अलंकार के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह गीत ताल कहरवा में निबद्ध है।

पूजा का ओसरो

स्थाई पूजा करीं पुज्यारी धरती खाबा तांईं
तू लै देख तमाशो सियावर तेरा टुकडा व्हैर्‌या छीं
छान धूणी की लूटी अर फेर बाडो लूट्यो
सामै रूंखडा लगाया लाठी कै पाण जी
ऊंको रुखाळो कैडे छै यै कोनै समचार रै +स्थाई
लोभ आयो पाछाळां का मन मैं छोड़ भक्ति नै
कोई लूटै छै खिजूर्‌यां कोई डोळा काटै
सन्त जिण्डे छा दफणाया ऊं क्यारी नै कोनै छोड्या रै +स्थाई

.....

मिन्दर झालर कोनै बाजै लडर्‌या पूजा कै तांईं
अबकै ओसरा बाँटाँगा मैं ही कइयां करूं पूजा
वै तो करबो कोनै चाँवीं पण धरती नै कइयां खांवीं रै +स्थाई

.....

माँ–बापां नै दु:ख देर्‌या अर देखो करीं पूजा
काँईं मन्तर बोलर्‌या वांको मतलब कोनै जाणीं
कर्‌या ओसरा सियावर का देख तमाशो भाई रै +स्थाई

.....

खैदै तू भगवान प्रकट व्है क्यूं करर्‌या थे पूजा
खा जाओ सारी धरती नै ढोंग करो पण बन्द
नै खो तो पाताळ समाओ ज्यो र्‌ह थांको मान रै +स्थाई
सुणो पुज्यारी ज्यो खाओगा करम कर्‌यां बिन धरती नै
अन्न–अन्न फूटैगो देह सूं कोनै जाय पचायो रै
जित्तो थाँको हक़ धरती पर उत्तो ही थे ल्यो रै
स्वर्ग नरक ईं जनम मिलैगो

क्यांटै देखो बाट रै अब भी थे चेतो रै
जित्तो थाँको हक़ बणर्‌यो बस
उत्तो ही थे ल्यो रै
साँची भक्ति करल्यो रै
करल्यो रै करल्यो रै

गीत की पृष्ठभूमि

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में विश्वविख्यात है जहाँ पर सभी धर्मों को अपने-अपने धर्म के अनुसार पूजा-पाठ, ईश-भक्ति एवं धार्मिक अनुष्ठान किये जाने की पूर्ण स्वतंत्रता है। इसी क्रम में आज़ादी से पूर्व राजे महाराजाओं ने मन्दिरों की सेवा-पूजा के कुशल संचालन हेतु माफी में ज़मीनें भेंट की थी। पुजारी इसी मन्दिर माफी ज़मीनों से प्राप्त उपज का उपयोग अपने परिवार का भरण पोषण करने एवं सेवा-पूजा के खर्चों की प्रतिपूर्ति के लिये किया करते थे। परन्तु आज़ादी के पश्चात् कहीं-कहीं पुजारियों की भक्ति भावना में परिवर्तन आ गया है। आज कृषि भूमि की क़ीमतें भी आसमान छूने लगी हैं इसलिए मन्दिरों के सेवकों का ध्यान भगवान की सेवा-पूजा में कम और मन्दिर माफी की ज़मीनों का स्वहित में उपयोग करने की ओर अधिक रह गया है।

इस गीत में इसी कटु सत्य को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

ग्राम मैड़ के पास स्थित एक मन्दिर के पुजारियों की मनोदृष्टि आज पूर्णरूप से बदल गई है और वे भगवान की सेवा-पूजा केवल इस विवशता में कर रहे हैं जिससे कि वे उस मन्दिर की ज़मीन का स्वहित में दोहन कर सकें। आज उस मन्दिर के महन्तश्री के उत्तराधिकारियों में छीना झपटी हो रही है। स्वर्गीय महन्त जी के सबसे बड़े पुत्र ने सबसे पहले तो संतों की धूणी की छान उखाड़ फेंकी और उस जगह पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् उसने सामने का बाड़ा हथियाकर उसमें पेड़ लगा दिये। परन्तु कालान्तर में वह गाँव छोड़कर कहीं बाहर चला गया जिसका आज कोई अता पता नहीं है।पहले इस मन्दिर के पुजारी सच्चे मन से भगवान की सेवा-पूजा किया करते और उन्होंने मन्दिर माफी की ज़मीनों के स्वहित में प्रयोग की बात कभी नहीं सोची थी। परन्तु आगे आने वाली

पीढ़ियों के मन में लालच आ गया। अब कोई तो खेत की सीमा पर खड़ी किसी अन्य उत्तराधिकारी की खजूर काट लेता है और कोई इतनी नीचता पर उतर आया कि जिस स्थान पर पूर्व महन्तश्री की चिता जलाई गयी थी उस स्थान की क्यारी तक को अपने खेत में मिलाकर उस पर बीज बो दिये।

कोई-कोई जानबूझकर किसी दूसरे के खेत में रेवड़ी (गोबर का ढ़ेर) डालता है और थोड़े दिनों के पश्चात् उस जगह को ही अपनी बताने लगता है। ज़मीन बोते समय कोई-कोई चालाक एवं नीच प्रवृत्ति का उत्तराधिकारी अपने उस भाई की ज़मीन में से हर वर्ष सीमा काटकर अपनी ज़मीन में एक-दो ऊमरे मिला लेता है। मन्दिर की पूजा करने के लिये भी क्रमवार दायित्व निभाये जाने का समझौता किया जाने लगा है। हर कोई यही बहाना बना रहा है कि मैं अकेला ही भगवान की पूजा कैसे करूं? उनमें से स्वेच्छा से कोई भी भगवान की पूजा नहीं करना चाहता परन्तु उनके समक्ष विवशता यह है कि वे बिना पूजा किये मन्दिर माफी की ज़मीन का उपयोग भी तो नहीं कर सकते। बाहर नौकरी कर रहे उत्तराधिकारी का क्रम आने पर उसके भाई-भतीजों ने उसके एवज की पूजा करने के नाम पर उससे ख़ूब पैसे ऐंठे और बेमन से पूजा करते रहे। वे सभी निरक्षर भट्टाचार्य हैं। पूजा करते समय वे जिन मंत्रों का उच्चारण कर रहें हैं उन्हें उनके अर्थ तक का पता नहीं है। ऐसे पाखण्डी पुजारियों को भी गाँव वाले ढ़ोक दे रहे हैं।

इस स्थिति से पीड़ित हो किसी भले मानुष की आत्मा यह कह रही है कि भले ही तुम इस सारी घरती को बेचकर खा जाओ परन्तु ये झूंठी पूजा करने का ढ़ोंग बन्द करो। यदि तुम भगवान की सच्ची भक्ति किये बिना इस ज़मीन का स्वहित में उपयोग करोगे तो तुम्हारी देह से अन्न का एक-एक दाना तक फूट-फूटकर निकलेगा। स्वर्ग नर्क सब यहीं हैं। जितना तुम्हारा हक़ है उतनी धरती का ही तुम उपयोग करो और वह भी भगवान की सच्ची भक्ति करने के उपरान्त।

स्वरलिपि

×				०				×				०			
सा	–	सा	प	प	प	–	प	म	–	म	प	प	–	प	–
पू	ऽ	जा	ऽ	क	रीं	ऽ	पु	ज्या	ऽ	री	ऽ	ध	र	ती	ऽ

म	–	म	प	सा	–	–	–	सा	–	–	–	प	–	प	–
खा	ऽ	बा	ऽ	तां	ऽ	ऽ	ऽ	ईं	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ	लै	ऽ
म	–	म	प	प	–	प	–	म	–	प	प	प	–	प	–
दे	ऽ	ख	त	मा	ऽ	शो	ऽ	सि	ऽ	या	ऽ	व	र	ते	रा
टु	क	ड़ा	ऽ	व्है	ऽ	र्या	–	छीं							

अन्तरा

सा	सा	–	–	–	प	–	–	ऽ	ऽ	ऽ	प	–	म	–	–
छा	ऽ	न	ऽ	धू	ऽ	णी	ऽ	की	ऽ	लू	ऽ	टी	अ	र	फे
–	म	प	प	–	प	–	म	–	प	प	प	–	प	–	–
ऽ	र	ऽ	बा	ऽ	डो	ऽ	लू	ऽ	ऽ	ट्	यो	ऽ	ऽ	सा	मै
म	–	–	प	प	–	प	–	म	–	प	प	प	–	प	–
रुं	ऽ	ऽ	ख	ड़ा	ऽ	ल	ऽ	गा	ऽ	या	ऽ	ला	ऽ	ठी	ऽ
म	–	म	प	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	प	–	प	–
कैं	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ण	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	को	ऽ
म	–	म	प	प	–	प	–	म	–	प	प	प	–	प	–
रु	ऽ	खा	ऽ	ळो	ऽ	कैं	ऽ	डे	ऽ	छै	ऽ	यै	कौ	–	नै
म	प	सा	–	–	सा	सा	–	–	–	सा	–	–	–	ऽ	सा
सा	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ										
म	चा	ऽ	ऽ	र	रै										

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में बदले सामाजिक परिप्रेक्ष्य की करूण रस के माध्यम से स्पष्ट अभिव्यक्ति की गई है। इसमें सारे शुद्ध स्वरों को प्रयोग हुआ है। षडज, मध्यम और पंचम स्वरों पर न्यास है। यह गीत सांरग राग पर आधारित प्रतीत होता है। इस गीत में कम स्वरों का प्रयोग किया गया है जिससे यह सरल गीत है। इसकी मध्य लय है। यह ताल कहरवा पर आधारित है।

कोनै निकळूं

भूत- कोनै निकळूं ईं सैं आज पुज्यारी, चावै ज्यो करलैऽऽ

पुजारी- तू रै काफिर भूत-चुडैऽऽलऽ, देखूं कइयां तू रह छैऽऽ

1. भूत भोळा तेरा जैस्या देख्या पिछला बीस साल सूं
स्याणा- भोपा पीर- औलिया, डरपीं मेरी भाळ सूं,
तंत्र-मंत्र सब कर्‌या पुज्यारी ऽऽऽऽ
तंत्र-मंत्र कर हार्‌या सगळा मैं रह री पण आज भी
असी भूतणी र्‌हूंगी ईं मैं, नतरै मैं ले जाऊंगी

+ स्थाई- कोनै निकळूं.....

.....

नेपथ्य लियां सैकडां लोग चल्या ऊं मटकी नै गंगाजी मैं,
कर्‌यो विसर्जित भूत बण्यो ऊं जैसा नै यूं पाणी मैं
भक्त जै जैकार करीं सब म्हंत गणेशदास की
धन-धन वांको परोपकार, धन-धन वांकी कीर्ति
बोलो म्हंत गणेश दास जी महाराज की
सब- जय हो।

गीत की पृष्ठभूमि

ईश्वर की परम सत्ता को सभी ने स्वीकार किया है । यह कोई असत्य बात नहीं है क्योंकि यह मानने योग्य है कि इस संसार को नियंत्रित करने वाली कोई दैवकि शक्ति अवश्य है जो इस जगत् की क्रियाओं को नियंत्रित करती है। तभी तो जीव मात्र जन्म-मरण एवं प्राणी मात्र का जीवन चक्र, उसकी क्रियाएं स्वत: ही गत्यमान रहती हैं । इससे यह बात स्वत: सिद्ध हो जाती है कि ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जिसके हाथ में प्राणी मात्र के क्रियाकलापों की डोर होती है और वह ही प्राणी मात्र को नियंत्रित करती है।

जब ईश्वरीय शक्ति को मान्यता मिली है तो सुर एवं असुर की मान्यता भी कपोल कल्पित नहीं है।

इसी प्रकार भूत–भूतणी की विद्यमानता को भी हमारे देश में मान्यता प्राप्त है। युग का कोई भी कालखण्ड रहा हो, देश का कोई भी भाग रहा हो तथा समाज का कोई भी वर्ग रहा हो, भूत एवं भूतनी का होना, उसका उत्पात किया जाना एवं उसके द्वारा पवित्र आत्माओं को पीड़ा पहुचाएं जाने के अनेक दृष्टान्त हमारे देश में देखने–सुनने देखने को मिलते हैं। परन्तु इन सबसे ऊपर देवताओं की सत्ता भी देखने को मिलती है जो अपने भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद एवं शक्ति प्रदान करते हैं जिससे वे परोपकार हेतु ईश्वर प्रदत्त इन शक्तियों का प्रयोग करते हुए इन आततायी भूत–प्रेतों का विनाश कर सकें एवं पीड़ित व्यक्तियों को इनसे छुटकारा दिला सकें।

किवदन्तियों के गहन विश्लेषण करने पर यह परिणाम निकलता है कि भूत–प्रेत आदि की योनी उन अतृप्त आत्माओं को मिलती है जो जीते जी किन्हीं अतृप्तताओं से पीड़ित रही तथा मरणोपरान्त उन अतृप्त आलम्बनों में उनकी प्राप्ति हेतु भटकती रही हैं। पुनर्जन्म की बात आज के वैज्ञानिक युग में भी स्वीकार्य है और भू–मण्डल में पुनर्जन्म की घटनाएं यत्र–तत्र आज भी देखने को मिलती हैं।

ऐसी अतृप्त आत्माएं उन विषयों के भोग हेतु पुनर्जन्म ले लेती हैं जो उनकी अतृप्ति का हेतु रहा है। परन्तु कुछ आत्माएं ऐसी भी रह जाती है जिनको मरणोपरानत अपने जीवन से मुक्ति नहीं मिल पाती और वे पुनर्जन्म से वंचित रहकर भूत–प्रेत की योनी में विचरण करती रहती हैं तथा अपनी अतृप्तता के विषयों से चिपके रहना चाहती हैं।

यदि किसी पुरुष या स्त्री को आपस में प्रेम हो जाता है और जीते जी वे एक दूसरे को प्राप्त नहीं कर पाते तो उनकी आत्मा को भूत–भूतनी की योनी में भी प्रवेश करना पड़ सकता है । ऐसी स्थिति में रह–रहकर पीड़ित पक्ष अपने प्रिय के शरीर में प्रवेश करने का बार–बार प्रयास करता है और यदि किसी मौलवी, पण्डित या स्याणे–भोपे आदि से उसका इलाज नहीं कराया जाता है तो यह भी संभव है कि वह अतृप्त आत्मा अपने प्रिय को अपने साथ ही ले जाय। अर्थात् ऐसी दशा में मनुष्य देह वाला पक्ष भी काल का ग्रास बन सकता है। कभी–कभी अकाल या असामयिक मृत्यु को प्राप्त मनुष्य भी भूत–प्रेत की योनी को प्राप्त होता है और ऐसी दशा में वह अपने अततायियों से बदला लेता है।

ऐसा माना जाता है कि जब तक इन भूत–प्रेतों की मुक्ति नहीं हो जाती, उनकी आत्मा पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होती। उनके परिजन ऐसी अतृप्त आत्माओं को किसी धार्मिक स्थान पर ले जाकर उनकी मुक्ति हेतु क्रियाएं व अनुष्ठान कराते हैं । पर जब पीड़ित पक्ष के परिजन उसका किसी देवता के यहां जाकर

उसका इलाज कराते हैं तो उससे पीड़ित एवं पीड़ित करने वाले दोनों को ही मुक्ति मिल जाती है। प्रस्तुत गीत में एक ऐसी ही आत्मा का वर्णन किया गया है जो अकाल मृत्यु का शिकार हो जाता है परन्तु उसकी प्रेमिका से उसका विवाह नहीं हो पाया और वह भूत की योनी को प्राप्त हुआ। ऐसी दशा में पीड़िता के परिजन उसे श्री सियावरजी के मन्दिर के महन्त श्री गणेशदास जी महाराज के पास ले जाते हैं और वे उस भूत को भगाकर पीड़िता को रोगमुक्त करते हैं।

गीत की विषयवस्तु

गाँव मैड़ अँचल में किसी स्त्री को एक भूत ने अपनी चपेट में ले लिया। उसके परिजन उसे इस पीड़ा से मुक्ति दिलाने हेतु उसे श्री सियावरजी मन्दिर के महन्त श्री गणेशदास जी महाराज के पास ले जाते हैं। जब पुजारी जी उसका जापता (इलाज़) करते हैं तो पहले तो वह भूत अपने भूतणी होने की बात करता है और पुजारी को यह कहकर डराता है कि हे पुजारी! मैं इस औरत में पिछले बीस वर्ष से रह रही हूं और इसके परिजनों ने मुझे भगाने के सारे प्रयत्न कर लिये । स्याणा, भोपा, पीर-औलिया, तांत्रिकों आदि से भी उपचार करा लिया परन्तु वे भी मुझे न निकाल सके अत: तू व्यर्थ ही मुझे भगाने के प्रयास मत कर।

पुजारी औरत की देह में प्रविष्ट उस तथाकथित भूतणी को पहले तो विनम्र शब्दों में सीख देता है कि तू इस स्त्री के शरीर में प्रवेश करके इसे कष्ट मत दे । इसके छोटे-छोटे बच्चों का भी ध्यान रख। इसके बाद पुजारी (महन्त श्री गणेश दास जी) उस ऊपरी हवा को चेतावनी देते हैं कि देख, तू झूठ बोल रहा है और मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूं कि तू भूतणी नहीं भूत है। या तो सीधी तरह से इस परायी स्त्री की देह से निकलकर चला जा नहीं तो मैं अपनी दैवीय (ईश प्रदत्त) शक्तियों के बलबूते पर तुझे मार-मारकर भगा दूंगा।

पुजारी द्वारा पीड़ित स्त्री के लिए 'पराई' शब्द का प्रयोग करने पर उसमें प्रविष्ट भूत कहता है कि हे पुजारी, यह स्त्री पराई नहीं है। पिछले जन्म में इसके साथ मेरी सगाई हुई थी परन्तु विवाह से ठीक एक दिन पूर्व मुझे काले नाग ने डस लिया और मुझे मरा हुआ समझकर इस स्त्री के घरवालों ने किसी दूसरे लड़के से इसका विवाह कर दिया। परन्तु यह आज भी मेरी पत्नी है अत: मैं इसके विवाह के दिन से ही इसकी आत्मा में प्रविष्ट हूं और मैं अपनी लक्ष्मी (पीड़ित औरत) को लेकर ही जाऊंगा, यह मेरी जिद है।

पुजारी जी ने यह बात सुनकर यह अनुमान लगा लिया कि जैसा (भूत) इस औरत से अत्यधिक प्रेम करता है अत: आसानी से इसे मुक्त नहीं करेगा। अब उन्होंने युक्ति से काम लिया और हँसते हुए जैसा

(स्त्री की देह में प्रविष्ट आत्मा) से कहा कि भाई हमें यह बात आज ही पता चली कि तुम तो हमारे दामाद हो। फिर उन्होंने ढक्कनयुक्त एक मिट्टी का घड़ा मंगवाकर उसमें चावल-बूरा रखते हुए कहा कि हमारे यहां दामाद को चावल-बूरा जिमाने की परम्परा है अत: पहले आप कँवर-कलेवा करने के लिए इस घड़े में प्रविष्ट हो जाओ, उसके बाद हम अपनी बेटी (पीड़िता) को खुशी-खुशी आपके साथ भेज देंगे।

वह भूत पुजारी जी की बातों में आ गया और कँवर-कलेवा करने मटकी (घड़ा) में घुस गया। जैसे ही वह लक्ष्मी की देह से निकला तो पीड़िता लक्ष्मी के चेहरे के भाव सामान्य हो गये। तब स्थिति को भाँपते हुए महन्त गणेशदास जी महाराज ने तुरन्त घड़े पर मालसा (मिट्टी का ढक्कन) ढँककर उसे गीली मिट्टी के लेप से बन्द कर दिया और उस घड़े को स्वयं उठाकर पास ही बह रही बाणगंगा नदी में विसर्जित करने को चल दिये। यह घटना अनोखी थी अत: पुजारी जी के पीछे-पीछे सैंकडों लोग चले जा रहे थे। जब उस मटकी को गंगा में विसर्जित कर दिया गया तो सभी उपस्थित लोग महन्त श्री गणेशदास जी महाराज की जय-जयकार करने लगे और इस प्रकार उस पीड़ित स्त्री को रोग से मुक्ति मिली।

स्वरलिपि

स्थाई

												–	–	सा
												–	–	कौनै
सासा	सा	सा	सा	सा	सासा	म	म	सा	सा	सा	सा	सा	–	– –
निक	ळूं	ईं	सैं	आ	जपु	ज्या	री	चा	वै	ज्यो	कर	लै	ऽ	तू रै
सा	सासा	सा	सासा	सा	म	म	–	सासा	सा	सा	सासा	प	–	सा सा
का	फिर	भू	तचु	डै	ल	दे	खूं	कइ	यां	तू	रह	छै	ऽ	को नै
साम	मसा	–	सासा	साम	मसा	–	–							
निक	ळूंऽ	ऽ	कौने	निक	ळूंऽ	ऽ	ऽ							

अंतरा

–प	–प	प–	प–	प	प	प	प	सासा	सा	सा	सा	सा	सा	म	म
–भो	–ळा	ते	रा	जै	स्या	दे	ख्या	पिछ	ला	बी	स	सा	ल	सूं	ऽ
सासा	सासा	सम	म–	सा	सासा	सम	म–	सासा	सा	सम	म–	सा	–	प	–
स्या	णाऽ	भोऽ	पाऽ	पी–	रऔ	लिया	–	डर	पीं–	मेऽ	रीऽ	भा	ळ	सूं	ऽ
प–	पप	–प	प–	प–	पप	–प	नि	–	–	–	–	–	–	–	–
तंऽ	त्रमं	–त्र	सब	कर्	याऽ	पुज्या	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	प	प	प	सा	सा	सा	सा	सा	–	प	–
तँ	त्रमं	त्र	कर	हा	र्‌या	सग	ळा	मैं	रह	री	पण	आ	ज	भी	ऽ
सासा	–सा	मसा	म–	सासा	–सा	म	म	मम	म	सा	सा	सा	–	सा	–
असी	–भू	–त	णीऽ	र्‌हूं	–गी	ईं	मैं	नत	रै	मैं	ले	ज	ऊं	गी	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में अद्‌भुत एवं भयानक रस के माध्यम से दैविक शक्तियों को बताया गया है। नेपथ्य में विशेष लय एवं ताल का प्रयोग किया गया है। इस गीत में केवल षडज, मध्यम एवं पंचम का प्रयोग हुआ है। जहां शास्त्रीय राग में कम से कम स्वरों का होना अनिवार्य होता है वहीं लोक गीतों में ऐसा नहीं है। लोक गीत सरल होते हैं। इसलिए इसमें कम स्वरों का ही प्रयोग होता है। यह गीत करहवा ताल में निबद्ध है। गीत में क्योंकि सारे शुद्ध स्वर है अत: बिलावल राग के नजदीक है।

159

नकटो नाराण्यो

स्थाई **: पिता** देख खैबो तू मानजाऽ नाऽराऽण्या

पुत्र मूंनै खेलबादै तेरो कांईं ल्यूं काऽका।

चरखी चालै चर्र चर्र छूंछ लगी ढेर,

बेटा तू बरणाऽ मैं वांनै झोंक दै,

क्यांटै मारै कुदकडा मेरो खैबो मान लै + स्थाई

.....

नाराण्या कै तांई ठायो साँटो जोरकोऽ

ऊंको बाप सूंड्यो वांकै काणी चाऽल्यो

दे दडादड दे दडादड नाराण्याऽ कै + स्थाई

एक बार मार्‌योऽ तो एक पेळी टूटी

सात आठ मार्‌यांऽ एक पेळी र्‌हगी

ठी ठी ठी ठी दाँत काढ्यां हँसै नाराण्यो + स्थाई

कोनै आऊं काका पैली बज्जी ल्यूंऽगोऽ

ऊंकै पाछै झोंकूंगोऽ आर बरणोऽ

पेळी लियां हाथ मैंऽ सूंड्यो चाऽल्योऽ + स्थाई

गीत की पृष्ठभूमि

हठ तीन प्रकार के माने गये हैं। राजहठ, बालहठ और त्रियाहठ। बालहठ बिना किसी बात को सोचे समझे, उसका विश्लेषण किये तथा बिना किसी दुर्भावना केयुक्त होता है। बालक वर्जनाओं को तोड़ने में आनन्द की अनुभूति करते हैं। कहे गये के विपरीत आचरण किया जाना बाल प्रवृत्ति होती है। बालक नीतियों एवं उपदेशों को तुरन्त नहीं मानते परन्तु जब उनका मन होता है तब उन सभी कार्यों को कुशलता से निपटा देते हैं जिनका कभी उन्होंने विरोध किया था।

इस गीत में बालकों की इसी प्रवृत्ति को उजागर किया गया है।

गीत की विषयवस्तु

कीरों की ढ़ाणी का नारायण नाम का एक लड़का अपने साथियों के साथ लंगड़ी टाँग का खेल खेल रहा है। उसका पिता सूण्डा राम उसे जोर–जोर से पुकारते हुए कह रहा है कि देख मेरा कहना मान जा। यहाँ पर चल रही गन्ने की चरखी के पास छूंछ के ढ़ेर को भट्टी में झोंक दे। नाराण अपने पिता से कहता है कि मैं तेरा क्या ले रहा हूं मुझे खेलने क्यों नहीं देता । फिर वह अपने साथियों से कहता है कि कि देखो तुम लोग मुझे जल्दी से बाजी दे दो क्योंकि मेरा पिता मुझ पर नाराज हो रहा है और मुझे वहाँ जाकर काम में उसका हाथ बँटाना है।

अपने बेटे को न आया देखकर सूण्डा नाराण से कहता है कि तुम लोग मेरे आये बिना कहना नहीं मानोगे। उसने नाराण को पीटने के लिये एक बहुत बड़ा गन्ना उठाया और तेजी से जाकर उसे पीटना शुरू किया। एक बार मारने पर गन्ने की एक पेळी (टुकड़ा) टूटकर दूर जा गिरा। उसने जब गन्ने से दड़ादड़ पीटना जारी रखा और सात–आठ प्रहार किये तो उसके हाथ में गन्ने की केवल एक ही पेळी बच रह गई। इस स्थिति में भी ढ़ीठ नाराण दाँत निकाले ठी ठी करके हँसता रह गया। वह अपने पिता से कहने लगा कि मैं बिना बज्जी (बाजी) लिये तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा। उसकी इस ढ़िठाई पर खीझता हुआ उसका पिता वापस चला गया। नाराण ने अपने साथियों से बज्जी ली और खेल में विजयी होते ही हुर्रे हुर्रे करके नाचने लगा। अब वह अपने साथियों को लेकर अपने पिता के पास पहुँच गया और देखते ही देखते उन्होंने सारी की सारी छूंछ बरणे (भट्टी) में झोंक दी। अब सूण्डा कीर प्रसन्न होकर बच्चों की वाही–वाही करने लगा।

स्वरलिपि

स्थाई

×				०				×				०			
सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	सा	सा	–	रे	–	सा	रे	ग	–
दे	ख	खै	बो	तू	ऽ	मा	न	जा	ऽ	ना	ऽ	रा	ऽ	ण्या	ऽ

अन्तरा

सा	सा	सा	सा	सा	–	स	सा	सा	स	स	स	सा	–	सा –
मूं	नै	खे	ल	बा	दै	ते	रो	कां	ईं	ल्ल	यूं	का	ऽ	का ऽ
प–	प	प	प	प	प	प	प	सा	सा	सा	सा	सा	–	– सा
चर	खी	चा	लै	च	र्र	च	र्र	छूं	छ	ला	गी	ढ़े	ऽ	ऽ र
प	प	प	पप	प	–	प	–	सा	सा	सा	सा	सा	–	– –
बे	टा	तू	बर	णा	ऽ	मैं	ऽ	वां	नै	झों	क	दै	ऽ	ऽ ऽ
रे–	रे	रे	रे	रे	रेरे	रे	रेरे	रे	रे	रे	रे	प	–	– –
क्यां	टै	मा	रै	कु	दक	ड़ा	मेरो	खै	बो	मा	न	लै	ऽ	ऽ ऽ
रे	–	रे	रे	रे	–	रे	रे	रे	–	रे	रे	प	–	– –
दे	ख	खै	बो	तू	ऽ	मा	न	ज	ऽ	ना	रा	ण्या	ऽ	ऽ ऽ
रे	रे	रे	रे	रे	–	रे	रे	रे	रे	रे	रे	सा	–	सा –
मूं	नै	खे	ल	बा	दै	ते	रो	कां	ईं	ऽ	ल्यूं	का	ऽ	का ऽ

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

यह गीत स्वरों की दृष्टि से राग भोपाली आधारित है। इस गीत में षडज, ऋषभ, गन्धार एवं पंचम स्वरों का प्रयोग हुआ है। गाँव के गीतों में कई बार आपस में संवाद के कारण धुन पूर्ण रूप से नहीं गाकर एक ही स्वर पर लम्बी देर तक ठहरते हैं जैसा कि इस गीत में भी हुआ है। हास्य रस के माध्यम से बाल सुलभ भावनाओं का चित्रण किया गया है। यह कहरवा ताल में निबद्ध है।

नशेडी

स्थाई दारुड्या रै दारुड्या पोस्त-डोडा पीबाळा
सुलपो-गाँजो जार्‌यो नशेडी
गण्डकडा रै गण्डकडा
श्यो श्यो श्यो
सियावर का मिन्दर कन्नै ढाणी कीरां की
मेहनत करा छा दिन-रात अर खिजूर्‌यां काटीं
चोल्या बणाता सब लोग अर सिंघाडा बावीं
कन्नै ऊंच जात र्‌हैछी ज्यो बिगडगी भाई
दारू पीबै लाग्या वांका छोरा कीर भी बिगड्या
पैली हाळा सब मरगा पण आज का छोरा
वां म्हैनत मजूरी करबाळां नै देखो बिगाडीं
अइयां खीं कीरां का छोरां नै ल्यादै तू पव्वो
ल्यार देतां वां कीरां का छोरां नै चटरस पडगो
अइयां फैलगी बीमारी ढाणी मैं पीबा की रै +स्थाई

.....

पाण्डव चोखी मान भौम नै बिताया छा भिखो
कई ऋषि और तपसी अण्डे रमाया धूणो
वां मैं भरतरी-आँगिरस-म्हंत गणेश दास जी
ई पवित्तर भौम मैं करी तपस्या भोळी
जींकी कांई छै दुरदशा भाई रोबो आवै
अब तो लुगायां भी पीबै लागी दारू तो कोई
कोनै अचम्भा की बात व्हैगी बदचलण
देश करै छै तरक्की खीं स्टेटस सिम्बल
म्हारा देश की संसकरती तेरो कांई हाल रै +स्थाई

.....

अन्त खै रै तू गण्डकडा कांईं सावित्री सती,
अनुसूइया और सीता आज असी व्हैगी
सुरग बैठ्या सब देखर्‌या तमाशो देवता
अइयां खीं यां को विनाश व्हैर ही
बचै देश की संसकरती सुण गण्डकडा रै
पूँछ तू हलावै तू सै जाणै
तू जाणै छै संसकरती भाई गण्डकडा रै
बची छै रै संसकरती संसकरती
बची छै रै बची छै रै बची छै रै

गीत की पृष्ठभूमि

नशा किसी भी व्यक्ति की छवि को धूमिल कर देता है। नशा करने वाले व्यक्ति को हमेशा ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। कितना ही अच्छा व्यक्ति क्यों न हो परन्तु नशे की लत उसे बर्बाद कर देती है। इस सत्य को जानने के पश्चात् भी कई लोग नशा करते हैं। इसका प्रमुख कारण संभवत: उनका गलत संगत में पड़ जाना होता है जिसके कारण उनके सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है। आज विकास की चकाचौंध में तो कई-कई सभ्य घरों की स्त्रियां तक शराब का नशा करने लगी हैं। इस प्रकार भारतीय नारी की छवि भी धूमिल हुई है।

इस गीत में इसी नशे की लत के कारण हो रही मनुष्य की अधोगति को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

ग्राम मैड़ के पश्चिम की ओर श्री सियावरजी का मन्दिर स्थित है और उसके पास ही में है कीरों की ढ़ाणी। कीर एक मेहनती जाति होती है जहाँ के लोगों का प्रमुख कार्य खजूरों के पत्तों से टोकरी बनाना एवं बाणगँगा नदी के पानी में सिंघाडे बोना होता था। इस ढ़ाणी के पास में ही उच्च कुल के कुछ लोग रहते थे और विकास की इस अँधी दौड़ में वे लोग शराब का नशा करने लगे। उनके पूर्वजों की समाज में प्रतिष्ठा एवं काफी मान-सम्मान था परन्तु आज की पीढ़ी के लोग कीरों की ढ़ाणी के बच्चों को लालच देकर कहते

हैं कि तुम हमें ढाणी में कच्ची शराब निकालने वाले रोत्या से शराब लाकर दे दो। इस प्रकार उन्हें शराब लाकर देने से कीर जाति के लोगों को भी शराब की लत लग गई।

आज मैड़ गाँव में सब्जी की बहुत बड़ी मण्ड़ी लगने लगी है। कीर जाति के साथ ही साथ अन्य जातियों के किसान भी अपने-अपने खेतों में सब्जी ही बोने लगे हैं। मण्ड़ी में सब्जी बेचने से उन्हें नकद रूपये मिलते हैं जिससे ऐसे नशेड़ी लोग प्रतिदिन शराब, पोस्त-डोड़े एवं गाँजा खरीदकर उनका सेवन करने लगे हैं। जब कोई उन्हें नशा न करने की सीख देता है तो वे उसे यह तर्क देते हैं कि भगवान शंकर भी तो भांग-धतूरे का नशा किया करते थे। वे नशेड़ी किसी का भी कहना नहीं मानते और अपने पुरखों का नाम डुबो रहे हैं। किसी-किसी को तो नशा करने की इतनी बुरी लत पड़ गई है कि यदि उन्हें एक भी दिन नशा करने को न मिले तो उनके बांयटे (शरीर का ऐंठ जाना, अकड जाना) पड़ने लगते हैं।

बाणगँगा के आस-पास की धरती पवित्र है जिस पर राजा भर्तृहरी, आँगीरस ऋषि तथा कौरव-पाण्ड़वों के पग पड़े हैं। इस धरती ने अज्ञातवाश की समयावधि में पाण्ड़वों को आश्रय प्रदान किया है। महन्त श्री गणेश दास जी महाराज जैसे महान् संत की कार्यस्थली में आज ऐसे-ऐसे अनैतिक कार्य हो रहे हैं जिसे देखकर रोना आता है। उनसे कुछ सीख लेकर यहां के निवासियों को नशा करना छोड़ देना चाहिए तभी उनका उद्धार होगा ।

स्वरलिपि

×				०			
सा	सा	सा	सा	सा	सा	म	–
दा	रू	ड्या	रै	दा	रू	ड्या	ऽ
सा	सा	सा	सा	सा	सा	म	–
पो	स्त	डो	डा	पी	बा	ळा	ऽ
म	सा	सा	–	सा	–	सा	–
सु	ल	पो	ऽ	गां	ऽ	जो	ऽ

सा	सा	–	सा	सा	–	प	–
जा	र्‌यो	ऽ	न	शै	ऽ	डी	ऽ
प	सा	सा	सा	सा	सा	सा	–
गं	ण्ड़क	डा	रै	ग	ण्डक	डा	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	–	–
श्यो	ऽ	श्यो	ऽ	श्यो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सा	–	सा	–	सा	सा	रे	–
सि	ऽ	या	ऽ	व	र	का	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	रे	–
मि	न्द	र	ऽ	क	ऽ	न्नै	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	रे	–
ढ़ा	ऽ	णी	ऽ	की	ऽ	रां	ऽ
सा	–	–	–	सा	सा	सा	सा
की	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ह	न	त
सा	–	सा	–	सा	म	म	म
क	ऽ	रा	ऽ	छा	दि	न	ऽ

सा	–	सा	–	सा	–	म	–								
रा	ऽ	त	ऽ	अ	ऽ	र	ऽ								
सा	सा	सा	सा	सा	–	म	–	सा	–	–	–				
खि	ऽ	जू	ऽ	र्यां	ऽ	का	ऽ	टीं	ऽ	ऽ	ऽ				
प	पं	प	प	प	प	प	–	सा	सा	सा	सा	सा	रे	सा	–
चो	ऽ	ल्या	ऽ	ब	ऽ	णा	ऽ	ता	ऽ	स	ब	लो	ऽ	ग	ऽ
प	–	प	–	सा	–	सा	–	सा	–	रे	–	सा	–	–	–
अ	ऽ	ङ	ऽ	सिं	ऽ	घा	ऽ	ड़ा	ऽ	बा	ऽ	वीं	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	प	–	–	प	प	–	प	–	प	–	–	प
क	ऽ	न्नै	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	च	जा	ऽ	त	ऽ	र	है	ऽ	छी
प	–	प	–	सा	–	सा	–	प	–	–	–	सा	–	–	–
ज्यो	ऽ	बि	ऽ	ग	ऽ	ड़	गी	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	प	–	प	–	सा	–	सा	–
दा	ऽ	रू	ऽ	पी	ऽ	बै	ऽ	ला	ऽ	ग्या	ऽ	वां	ऽ	का	ऽ
प	–	प	–	सा	–	–	सा	प	–	प	–	सा	–	–	–
छो	ऽ	रा	ऽ	कर	ऽ	ऽ	र	भी	ऽ	बिग	–	ड्या	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा	–	प	–	प	–	सा	सा	सा	सा	प	–	प	प
पै	ऽ	ली	ऽ	हा	ऽ	ळा	ऽ	स	ब	म	र	गा	ऽ	प	ण

सा	–	–	सा	प	–	प	–	सा	–	–	–				
आ	ऽ	ऽ	ज	का	ऽ	छो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ				
म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–
वां	ऽ	मे	ह	न	त	म	ज	दू	ऽ	री	ऽ	क	र	बा	ऽ
प	–	प	–	सा	–	सा	–	प	–	प	–	सा	–	–	–
ळां	ऽ	नै	ऽ	दे	ऽ	खो	ऽ	बि	ऽ	गा	ऽ	डीं	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–	म	–
अ	इ	यां	ऽ	खीं	ऽ	की	ऽ	रां	ऽ	का	ऽ	छो	ऽ	रा	ऽ
म	–	म	–	सा	–	सा	–	म	–	म	–				
नै	ऽ	ल्या	ऽ	दै	ऽ	तू	ऽ	प	ऽ	व्वो	ऽ				
सा	–	–	सा	म	–	म	–	सा	–	सा	–	म	–	म	–
ल्या	ऽ	ऽ	र	दे	ऽ	तां	ऽ	वां	ऽ	की	ऽ	रां	ऽ	का	ऽ
सा	–	सा	–	म	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
छो	ऽ	रां	ऽ	नै	ऽ	च	ट	र	स	प	ड़	गो	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	म	–	–	म	म	–	म	–	म	–	म	–
अ	इ	यां	ऽ	फै	ऽ	ऽ	ल	गी	ऽ	बि	ऽ	मा	ऽ	री	ऽ

म	–	म	–	सा	–	सा	–	म	–	म	–	सा	– – –
ढ़ा	ऽ	णी	ऽ	मैं	ऽ	पी	ऽ	बा	ऽ	की	ऽ	रै	ऽ ऽ ऽ

शेष अंतरे भी इसी तरह गाए जायेंगे।

यह गीत राग लूम बिलावत पर आधारित है। गीत की धुन सरल है एवं इस गीत में शुद्ध स्वरों का प्रयोग हुआ हे। इस गीत में षडज, मध्यम व ऋषभ का मुख्यत: प्रयोग हुआ है। इसमें अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है। प्रारम्भ में द्रुत लय है और आगे जाकर विलम्बित लय हो जाती है। यह गीत ताल कहरवा में निबद्ध है।

भैल

स्थाई **: स्त्री** म्हारी छमछम, म्हारी छमछम,
म्हारी छमछम चाऽलैऽ भैऽलऽ जी कोई गैऽलाऽ
मैंऽ मिल जाय तोऽऊंनै बैठाल्यूं
पुरूष थारी छमछम, थारी छमछम,
थारी छमछम चाऽलैऽ भैऽलऽ जी मेरो मन भी ऊंमैं
उळझ्यो आर बैठ जाऊं

पुरुष टीऽबा कै नीचै वा कुण की छमछम आऽरीऽ भैऽल
बेगो बेगो उतर पौंछ अर व्हैल्यूं ऊंकी गैऽल
कुणकै घरां जा रही चाऽल ऊंनै देखूं बेगो रै 2

स्त्री रूक रै हाळी पाछै कोई आबा को खुडको व्है
टीबा माळै धोळी छांयां कुण छै कोनै दीऽखै
बळदां की तू रास हाथ मैं थोडी खींच रै 2

.....

पुरुष कैंयां बैठूं थारै कन्नै छोरी की थे जाऽत
गाँऽव मैं बाऽतां बणज्या ज्यो बैठूं थारै साऽथ
भैल की मैं हाल माळै बैठ्यो चाऽलूं जी 2

स्त्री कुणसो थांको गाँव छै जी कुणका छो थे बेटा
कैड्या सैं टीबा माळै व्है भाग्या भाग्या आर्‌या
सरमार्‌या क्यूं परदेशण नै देख बताओ जी 2

.....

स्त्री राम राम जी ब्याइजीऽ मैं ही छूं वा पावणीऽ
हाल माऽळा सूं उतरो अर आओ मेंरै कांऽणी
साथ साथ अब हँसी ठिठोली करता चाऽलां रै

पुरुष चालो चालो रै

स्त्री चालो चालो रै

.....

गीत की पृष्ठभूमि–भारत को गाँवों का देश कहा जाता है जो सत्य भी है। भारतीय गाँवों में देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग निवास करता है। आज भले ही भारतीय गाँव विकास की चरपेट में आकर अपनी मूल पहचान को खोते जा रहे हैं परन्तु यदि आज से पचास–साठ वर्ष पीछे दृष्टि फेरकर देखा जाय तो हमें भारतीय गाँवों की वास्तविक तस्वीर देखने को मिलती है।

आवागमन के साधनों के रूप में बैलगाड़ी की परम्परागत सवारी का अपना विशेष महत्व होता था। यही एकमात्र ऐसा साधन था जो गाँवों के रेतीले मार्गों के लिए सुगम था। चाहे किसान खेत से समान लाने के साधन के रूप में इसका उपयोग करें या आने–जाने की सवारी के रूप में, परन्तु यह साधन प्राय: हर सामान्य घर में उपलब्ध रहता था। इस बैलगाड़ी का एक रूप जो छोटी बैलगाड़ी होती थी और जो सामान्यत: किसी नवविवाहिता या विशिष्ट महिला की सवारी हेतु–प्रयुक्त होती थी, भैल (Mini Cart) कहलाती थी, भी देखने को मिलता था। इस प्रकार इस ढूंढाड़ी गीत में इस सवारी की रूपरेखा खींची गई है।

प्राचीन समय में ग्राम्य जीवन विभिन्न प्रकार के सामाजिक रिश्तों, सीमाओं और मर्यादाओं में बँधा हुआ रहता था। इन सीमाओं में परिबद्ध स्त्री–पुरुष अपने आचार–विचार, वार्तालाप एवं व्यवहार में किस प्रकार आचरण करते थे यह भी भारतीय गाँवों की बहुरंगी छटा को दर्शाता है। इन मर्यादाओं में रहते हुए अजनबी स्त्री–पुरुष, जिनका एक दूसरे से भले ही प्रथम बार साक्षात्कार हुआ हो जिस प्रकार हँसी–मजाक करते थे उसकी झलक भी इस ढूंढाड़ी गीत में देखने को मिलती है।

गीत का भावार्थ–किसी गाँव के रेतीले टीले की तलहटी में कोई नवयौवना भैल (छोटी बैलगाड़ी) में बैठी हुई तेजी से चली जा रही है। भैल को हाली (गाडीवान) चला रहा है। बैलों के गले एवं भैल के बँधे घुंघरू ऊबड़–खाबड राह पर हिचकोलों के साथ में छम–छम करते बज रहे हैं। उसमें बैठी लड़की भैल के पीछे लगे हुए पर्दे को हटा–हटाकर पीछे देखती जा रही है, उसका गाडीवान (भैल हाँकने वाला) और वह स्त्री स्वयं इस राह से पहली बार जा रहे हैं अत: यह लड़की इस प्रयास में है कि यदि इस क्षेत्र का कोई राहगीर मिल जाय तो वह उसे अपनी गाडी में बैठा ले जिससे वह उन्हें रास्ता बता दे और वह अँधेरा होने से पूर्व अपनी बहन के ससुराल पहुंच जाय।

इस लड़की की बहिन ने अपने देवर को इस काम के लिए भेजा था कि वह गाँव के बाहर जाकर उसकी बहिन को लिवा लाये। उसका यह देवर गाँव के बाहर टीले पर काफी देर से खड़ा-खड़ा अपनी भाभी की बहिन की प्रतीक्षा में रत था। सहसा उसने देखा कि टीले (मिट्टी के विशाल ढ़ेर) की तलहटी में कोई स्त्री पीछे मुड़-मुडकर देखती हुई भैल में बैठी जा रही है। वह टीले से उतरकर उसके पीछे तेज-तेज कदमों से जाता है। स्त्री ने गाड़ीवान को गाड़ी रोकने का संकेत किया। गाड़ी धीमी होने पर स्त्री-पुरुष दोनों की वार्ता होती है जिसमें वह युवती उस युवक से आग्रह करती है कि हम अन्जान हैं अत: मेरे पास भैल में आकर बैठो और रास्ता बताओ। युवक उससे कहता है कि आप लड़की हो अत: यदि मैं आपके साथ बैठता हूं तो गाँव वाले ऐतराज करेंगे और तरह-तरह की बातें बनायेंगे। अपनी विवशता बताकर वह भैल की हाल (लकड़ी का वह मोटा-लम्बा डंडा जो मुख्य गाडी एवं बैलों के जूड़े को जोड़ता है) पर बैठ जाता है और गाडीवान को रास्ता बताता है। ऐसी दशा में वह युवती उस युवक से उसका परिचय पूछती है। यह जानकर कि वह युवक मेरी बहन का देवर है वह उससे कहती है कि आप तो हमारी ब्याईजी (युवती का युवक से रिश्ता) हो और हमारा सम्बन्ध तो बडा संवेदनशील है अत: आप अब मेरे साथ आकर भैल के अंदर बैठो। अब हम हंसी-ठिठोली करते हुए चलेंगे।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
सा	सा	सा	प	प	सा	–	–	सा	सा	सा	प	प	सा	–	–
म्हा	री	छ	म	छ	म	ऽ	ऽ	म्हा	री	छ	म	छ	म	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	सा	सा	ध	धग़	रेग़	सा	–	–	ध	ध	ग़	रे	ग़
म्हा	री	छ	म	छ	म	चाऽ	लैऽ	भै	ऽ	ऽ	ल	जी	ऽ	को	ई
सा	–	सा	ध़	ध	ग़	रे	ग़	सा	सा	सा	ध़	ध	ग़	रे	ग
गै	ऽ	ला	ऽ	मैं	ऽ	मि	ल	जा	ऽ	ऽ	य	तो	ऽ	ऊं	नै

सा	–	सा	–	सा	–	–	–								
बै	ऽ	ठा	ऽ	ल्यूं	ऽ	ऽ	ऽ								

अन्तरा

सा	–	सा	–	सा	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	म	–
टी	ऽ	बा	ऽ	कै	ऽ	नी	ऽ	चै	ऽ	वा	ऽ	कु	ण	की	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	म	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
छ	म	छ	म	आ	ऽ	री	ऽ	भै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	म	–
बे	ऽ	गो	ऽ	बे	ऽ	गो	ऽ	उ	त	र	पों	ऽ	छ	अ	र
सा	–	सा	–	सा	–	म	–	सा	–	–	–	सा	–	ध	–
व्है	ऽ	ल्यूं	ऽ	ऊं	ऽ	की	ऽ	गै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ
ध	–	ध	–	ध	–	ध	–	ध	–	नि	–	ध	–	<u>नि</u>	–
कुण	ऽ	कै	ऽ	घ	रां	ऽ	जा	ऽ	र	ही	ऽ	चा	ऽ	ल	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	प	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
ऊं	ऽ	नै	ऽ	दे	ऽ	खूं	ऽ	बे	ऽ	गो	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा	ध	ध	<u>ग</u>	रे	<u>ग</u>	सा	–	सा	ध	ध	<u>ग</u>	रे	<u>ग</u>
रु	क	रै	ऽ	हा	ऽ	ळी	ऽ	पा	–	छै	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ

सा	–	सा	ध	ध	ग़	रे	ग़	सा	–	–	–	सा	–	सा	–
आ	ऽ	बा	ऽ	को	ऽ	खु	ड	को	ऽ	०ं	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
–	सा	–	ध़	ध	ग़	रे	ग़	सा	–	सा	ध़	ध़	ग़	रे	ग़
ऽ	टी	ऽ	बा	मा	ऽ	ळै	ऽ	धो	ऽ	ळी	ऽ	छां	ऽ	यां	ऽ
सा	–	सा	ध़	ध	ग़	रे	ग़	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
कु	ण	छै	ऽ	कौ	ऽ	नै	ऽ	दी	ऽ	खै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	प	प	–	प	प	प	–	प	–	प	–	–	–
ब	ळ	दां	की	ऽ	तू	ऽ	रा	ऽ	स	हा	ऽ	थ	मैं	ऽ	ऽ
सा	–	सा	ध़	ध़	ग़	रे	ग	सा	–	–	–	सा	–	–	–
थो	ऽ	डी	ऽ	ऽ	ऽ	खीं	च	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

स्त्री – म्हारी छम – 2

पुरुष – म्हारी छम

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाए जाएंगे।

इस गीत में शृंगार रस है एवं कर्णप्रिय स्वर लगे हैं। यह काफी लम्बा गीत है और इसमें कोरस का प्रयोग भी किया गया है। अनुप्रास अलंकार का प्रयोग भी दिखता है। यह गीत पुरुष व स्त्री के स्वरों में गाया जाने वाला है। इस गीत में शुद्ध स्वरों के अतिरिक्त कोमल गंधार का प्रयोग भी हुआ है। यह गीत राग पीलू पर आधारित है तथा कहरवा ताल में निबद्ध है।

गैला शुरू

पु. बन मैं नार बघेरा डोलीं राम तू कैडे जाइ छै ए 2
कुणसा गाँव की तू बेटी, अंड़े कंईयां आई एऽऽऽ
सियावर भगवान ईं नै लेल्यो शरण मैं जी,
लेल्यो शरण मैं जी थे ईं नै लेल्यो शरण मैं जी
थाऽरी भगत करै मनवार ईं नै लेल्यो शरण मैं जी

स्त्री मैं छूं ताल बिरछ की बेटी, भैण मेरी छींड़ ब्याही जी2
ऊं सैं मिलबाटै मैं चाली, या धरती पांचूं पाण्डां कीऽऽ
मैड़ , बळैसर तेवडी को नांव चोखो जी,
नांव चोखो जी उण्ड्या का लोग चोखा जी,
मैड़ मैं शेखातां को राज, राम डर कइयां लागै जी

.....

पु. सांझ ढळी सूरज छिप्यो, सुण बाई तू बात
कीड़ो कांटो राह मैं आबाळी बरसात
ठैर तू सियावर स्थान भैण तेरी लेबा आज्या ए + स्थाई पु.

स्त्री खूब खई रै अजनबी, मेरा मन की बात
सियावर स्थान पर, रहीं गणेशई दासऽऽ
वांको ल्यूंगी आशीर्वाद , भैण मेरी खैती र्‌है छै जी,
खैती र्‌है छै जी, भैण मेरी खैती र्‌है छै जी,
वां को ल्यूंगी आशीर्वाद भैण मेरी खैती र्‌है छै जी,

पु. झालर बाज रही मिन्दर मैं जार्‌या घणा जात्री ए
थारी पोटळी ल्या दे दै, करलै हाथ उ ल्ला ए

स्त्री जै हो सियावर भगवान भैण मेरी देखो आरी जी,

पु. जै हो सियावर भगवान, डोऽर खींच लीऽजी,

दोनों – जै हो सियावर भगवान, डोऽर खींच लीऽजी,

दोनों - डोरी खींच लीजी - (4बार)

कोरस- बोलो सियावर जी महाराज की ..... जै हो

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु - इस गीत में जयपुर जिले के ग्राम मैड़ में स्थित श्री सियावरजी के महन्त श्री गणेशदास महाराज जी की महिमा का बखान किया गया है। अलवर जिले के तालवृक्ष नामक स्थान की कोई बेटी अपनी बहन के ससुराल 'छींड' (एक ढ़ाणी का नाम) को जाने वाले रास्ते पर जा रही है। 'छींड' का रास्ता ग्राम मैड़ होकर गुजरता है। यह रास्ता काफी दुर्गम है जिस पर कभी-कभी शेर व बघेरे भी मिल जाया करते थे। अंधेरा होते-होते वह लड़की श्री सियावरजी के मंदिर के नजदीक पहुंच जाती है। राह में उसे एक आदमी मिलता है जो उससे पूछताछ करता है कि वह कहां जा रही है और अब तो अंधेरा हो चला है अत: आगे जाने में डर है। लड़की उसे कहती है कि यहां पर डर कैसा ? क्योंकि पहली बात तो यह कि यहां की धरती पर पाण्डवों के पैर पड़े है अत: यह इलाका पवित्र है, और दूसरी बात यह कि यहां पर श्री सियावर जी का पवित्र स्थान है जहां पर महन्त श्री गणेश दास जी महाराज निवास करते हैं जो मेरी बहन के गुरू हैं।

वह व्यक्ति उस लड़की को सलाह देता है कि आज रात्रि को तुम महन्त श्री गणेश दास जी महाराज के संरक्षण में मंदिर में ही रह जाओ और प्रात:काल उठकर अपनी बहन के पास चले जाना। उसे उस व्यक्ति की बात जंच गई और उसने सहर्ष अपनी गठरी उस व्यक्ति को देकर उसके साथ श्री सियावर जी नामक स्थान की ओर चल दी। सहसा मंदिर की ओर जाने वाले भक्तों में उसे अपनी बहिन दिखाई दे गई जो अपने गुरू की सेवा में जा रही थी। लड़की अपनी बहन से मिलकर सियावरजी भगवान का शुक्रिया अदा करती है कि उन्होंने उसे स्वत: ही उसकी बहिन से मिला दिया।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
-	-	प	प	म	प	-	म	सा	-	सा	-	सा	-	सा	-
ऽ	ऽ	बन	मैं	ना	ऽ	र	ब	घे	ऽ	रा	ऽ	डो	ऽ	लीं	रा

प	–	प	प	म	प	–	म	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
ऽ	म	तू	ऽ	कै	ऽ	डे	ऽ	जा	ऽ	ई	छै	ए	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	प	–	प	प	–	म	प	म	–	सा	–	सा	–
कु	ण	सा	गाँ	ऽ	व	की	तू	बे	ऽ	टी	ऽ	अं	ऽ	ड़े	ऽ
म	म	म	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
कं	ई	यां	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	–	प	प	प	प	–	प	–	प	–	प	–	प	–
सि	ऽ	या	ऽ	व	र	भ	ग	वा	ऽ	न	ऽ	ईं	ऽ	नै	ऽ
प	ध	–	प	रे	सा	सा	–	प	–	–	–	प	–	–	–
ले	ल्यो	ऽ	श	र	ण	मैं	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	–	प	प	प	प	–	प	–	प	–	प	–	प	–
ले	ल्यो	ऽ	श	र	ण	मैं	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	प	प	प	प	प	–	प	प	प	–	–	प
था	ऽ	री	ऽ	भ	ग	त	क	रै	ऽ	म	न	वा	ऽ	ऽ	र
सा	–	सा	–	रे	प	–	प	रे	सा	सा	–	सा	–	–	–
ईं	ऽ	नै	ऽ	ले	ल्यो	ऽ	श	र	ण	मैं	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सा	–	सा	–	रे	प	–	प	रे	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
मैं	ऽ	छूं	ऽ	ता	ऽ	ल	बि	र	छ	की	ऽ	बे	ऽ	टी	भै
–	सा	सा	सा	प	–	प	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	–
ऽ	ण	मे	री	छीं	ऽ	ड़	ऽ	ब्या	ऽ	ही	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	ध	–	प	रे	रे	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	सा
ऊं	ऽ	सैं	ऽ	मि	ल	बा	ऽ	टै	ऽ	मैं	ऽ	चा	ऽ	ली	या
सा	सा	सा	–	प	–	प	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	–
ध	र	ती	ऽ	पां	ऽ	चूं	ऽ	पा	ऽ	ण्डां	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

ध	–	ध	ध	ध	–	ध	ध	ध	–	–	ध	ध	–	ध	–
मैं	ऽ	ड़	ब	ळे	ऽ	स	र	ते	ऽ	ऽ	व	डी	ऽ	को	ऽ
ध	–	–	ध	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नां	ऽ	ऽ	व	चो	ऽ	खो	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	–	ध	ध	–	ध	–	ध	–	–	ध	ध	–	ध	–
नां	ऽ	ऽ	व	चो	ऽ	खो	ऽ	जी	ऽ	ऽ	उण	ड्या	ऽ	का	ऽ
ध	–	–	ध	रे	–	सा	–	सा	–	–	सा	–	सा	सा	–
लो	ऽ	ऽ	ग	चो	ऽ	खा	ऽ	जी	ऽ	ऽ	मै	ऽ	ड़	मैं	ऽ
प	–	प	–	रे	–	सा	–	सा	–	सा	सा	–	सा	सा	सा
शे	ऽ	खा	ऽ	तां	ऽ	को	ऽ	रा	ऽ	ज	रा	ऽ	म	ड	र
प	–	प	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
क	इ	यां	ऽ	ला	ऽ	गै	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में भक्तिरस के माध्यम से भारतीय परम्परा को दर्शाया गया है। इस गीत में षडज, मध्यम एवं पंचम स्वरों का विशेष प्रयोग हुआ है। षजड से मध्यम एवं पंचम स्वर पर गीत में लिये जा रहे हैं। स्वरों के आधार पर यह गीत पहाड़ी राग पर आधारित है। गीत कहरवा ताल में निबद्ध है।

टीटोड़ी

नायिका थारी चर्र च्यूं चर्र च्यूं चोखी लागै टीटोडी

नायक म्हारी चरच्यूं चरच्यूं बोलै रै या टी..टोडी
कैड्या सूं ईंनै ल्यायो मूंनै देख बता या बात
या तो मूंनै जगां बता या चाल तू म्हारी साथ
लियां बिना मैं घरां नै जाऊं ल्यूंगी रै टीटोडी + स्थाई

.....

छोरो बोल्यो क्यूं नै मानै मेरी ले लै टीटोडी
वा खैरी मूंनै तू सिखलादै कोनै ल्यूं या तेरी
असी हठीली कोनै देखी ऊठ सिखाद्यूं रै + स्थाई
छोरी गूंथ र्‌हई फल्डां नै छोरो जिय्यां खैर्‌यो
ऊंचा–नीचा फल्डां निय्यां उडर्‌यो ऊंको लहर्‌यो
छोरा को मन फल्डां निय्यां उडतो लहरै रै + स्थाई

.....

चूं–चूं करतां ही उछळी वा बोली रै टीटोडी
अइयां लागै कोयल बोली ज्यो मारी किलकारी
मोर्‌या पीहो–पीहो कर्‌या पंछी बोलीं रै + स्थाई
दोन्यूं बजाता साथ जा र्‌हिया टीटोडी नै च्यूं–च्यूं
छोरी सोचै साथ सहेल्यां सब नै मैं बतलाद्यूं
मूंनै भी आगो आज बणाबो टीटोडी देखो रै
स्त्री – मेरी टीटोडी देखो रै
पुरूष– ईंकी टीटोडी देखो रै
स्त्री – टीटोडी

पुरुष- टीटोडी

दोन्यूं - हाँ रै टीटोडी

गीत की पृष्ठभूमि एवं विषयवस्तु

एक किशोरवय प्रेमी युगल खेत के किनारे-किनारे जा रहा है। लड़का एक खिलौने को बजाता हुआ जा रहा है और अपनी प्रेमिका को बजा-बजाकर दिखाता हुआ कहता है कि देख, मेरी यह टीटोडी चर्रच्यूं-चर्रच्यूं करके बज रही है। उससे प्रभावित होकर प्रेमिका उससे पूछती है कि तुम यह खिलौना कहाँ से लेकर आये हो मुझे भी बताओ। या तो वह जगह बताओ या फिर उस स्थान पर मेरे साथ चलो। परन्तु आज मैं टीटोडी लिए बिना अपने घर नहीं जाऊंगी।

प्रेमी उसे बताता है कि सामने वाले खेत की डोली (मेड) पर पूळे (सरकण्डे) खडे हैं जिनमें से कच्चे-कच्चे और मुलायम-मुलायम फल्ड़े (लम्बे-लम्बे टहनियोंनुमा मोटे तिनके) तोड़कर उन्हें गूंथ-गांथकर और उनमें चरखी (चलाने हेतु डण्डी) पिरोकर यह टीटोड़ी मैंने बनायी है।

उसकी प्रेमिका जिद करके अपने प्रेमी को उस स्थान पर ले गयी और कहने लगी कि मेरे से इतनी ऊंची डोळी पर चढ़ा नहीं जा रहा परन्तु फल्ड़े तो मैं ही तोड़कर लाऊंगी इसलिए तुम मेरी कमर पकड़कर ऊपर की ओर धक्का मारो जिससे मैं सरकण्डे के फल्ड़ों को पकड़कर तोड लाऊं। उसके प्रेमी ने वैसा ही किया। परन्तु ज्योंहीं लडकी ने फल्ड़े पकड़े तो वे मिट्टी की उस डोळी से उखड़ गये और वे प्रेमी-प्रेमिका बाथ भरे (एक दूसरे को बाहों में कसकर पकडे हुए) नीचे आ गिरे।

तब प्रेमी ने प्रेमिका से कहा कि तुम मानती क्यों नहीं। मेरी टीटोड़ी ले लो। इस पर प्रेमिका उससे कहती है कि मैं तुम्हारी नहीं लूंगी । तुम मुझे ही टीटोड़ी बनाना सिखा दो। प्रेमी उसकी इस जिद से खीजते हुए कहता है कि तुम्हारी जैसी हठीली मैंने आज तक नहीं देखी, चलो उठो अब मैं तुम्हें टीटोड़ी बनाना सिखा ही देती हूं। वह जैसे-जैसे कहता है उसकी प्रेमिका उन फल्ड़ों को वैसे-वैसे ही गूंथ रही है और जैसे-जैसे फल्ड़े ऊंचे-नीचे होते हैं वैसे-वैसे उसका लहरिया (ओढ़नी) भी ऊंचा-नीचा होकर उड़ सा रहा है।

टीटोड़ी बन गई परन्तु प्रेमिका उसे ठीक से चला नहीं पा रही। तब वह अपने प्रेमी से कहती है कि इसे चलाना भी तो बता। तब प्रेमी उसके पीछे खड़ा होकर उसके अगल-बगल से अपनी बाहों को सामने

आगे की ओर निकालकर उसके दोनों हाथों को पकड़े उसे टीटोड़ी चलाना सिखा रहा है। टीटोड़ी बज उठी और लडकी मारे खुशी के उछल पड़ी। उसके मुँह से निकली किलकारी से ऐसा लगा मानो कोयल कूक उठी हो। मोर पीहो–पीहो करने लगे और पँछी भी चहक उठे हैं।

अब वे दोनों अपनी–अपनी टीटोड़ी को बजाते हुए चले जा रहे हैं। लडकी इस सफलता की खुशी को अपने अन्तर में समा नहीं पा रही और सोचती जा रही है कि आज मैं अपनी सभी सहेलियों को बताऊंगी कि मुझे भी टीटोड़ी बनाना आ गया है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
											–	–	सा	सा	
											ऽ	ऽ	था	री	
रे–	–म	सा	–	रे–	–म	सा	–	सा	सा	रे	सासा	सा	सा	सासा	
चऽ	ऽर्र	च्यूं	ऽ	चऽ	ऽर्र	च्यूं	ऽ	बो	लै	रै	याटी	टो	डी	म्हारी	
सा–	सा–	रे–	सा–	सा	सा	रे	सा	सा	–	सा	–	सा	–	–	–
चर	च्यूं	चर	च्यूं	बो	लै	रै	या	टी	ऽ	टो	ऽ	डी	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सा	सा	रे	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	रे	सा	सा	–	–	सा
कैऽ	ड्यां	सूं	ईंनै	ल्या	यो	मूं	नै	दे	खब	ता	या	बा	ऽ	ऽ	त
प	प	प	प	प	प	प	प	प–	–प	प	प	सा	सा	–	–
या	तो	मूं	नै	जगां	ऽब	ता	या	चा	लतू	म्हा	री	सा	थ	ऽ	ऽ
सासा	–सा	रे	सा	सा	ऽसा	रे	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा
लियां	ऽबि	ना	मैं	घरां	ऽन	जा	ऊं	ल्यूं	गी	रै	टी	टो	डी	था	री

रे–	–म	सा	–	रे–	–म	सा	–	सा	सा	रे	सा	सा	सासा	सासा
चऽ	ऽर	च्यूं	ऽ	चऽ	ऽर	च्यूं	ऽ	बो	लै	रै	या	टी	टो	डी	म्हारी
सा–	सा–	रे	सा	सा	सा	रे	सा	सा	–	सा	–	सा	–	– –
चर	च्यूं	चर	च्यूं	बो	लै	रै	या	टी	ऽ	टो	ऽ	डी	ऽ	ऽ ऽ

शेष अन्तरे भी उपरोक्तानुसार गाए जायेंगे।

इस गीत में श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है एवं अनुप्रास अलंकार है। इसकी विशेष लय है। इस गीत में भी सभी शुद्ध स्वरों का प्रयोग हुआ है। षडज, मध्यम एवं ऋषभ स्वरों का विशेष प्रयोग हुआ है। यह गीत द्रुत लय में गाया जाता है तथा कहरवा ताल में निबद्ध है।

साधू स्थाई मूंनै दे दै गूजरी भिक्षा, साधू द्वार खड़ो तेंरै,
साधू द्वार खड़ो तेंरै रै साधू द्वार खड़ो तेंरै
बं बं भोळे, बं बं भोळे , बं बं भोळे.....
भोळी देर सैं अलख जगार्‌यो कांईं व्हैगो तेंरै 2
धर्म परायण नार नवेली तेंरै दरवाजै साधू टेंरै,
दरवाजै साधू टेरे...रै ऽऽऽऽऽ दरवाजै साधू टेंरै

स्थाई-बं बं भोळे 3

गूजरी ठैर बाबल्या ठैर बाबल्या, मैं न्हारी छूं ओ
रुक ज्यो बाबा रुक ज्यो बाबा रुक ज्यो बाबा ओ
आधा कपडा पैर लिई मैं आधा पाछै पैरूं
भिक्षा द्‌यूं साधू नै पैलीऽऽऽऽ.....
भिक्षा द्‌यूं साधू नै पैली, आशीर्वाद ऊं को ल्यूं, आशीर्वाद
ऊं को ल्यूं रै मैं आशीर्वाद ऊं को ल्यूं

स्थाई- बं बं भोले.....

नेपथ्य- पु. आधा कपड़ा पैर्‌यां गूजरी, निकळी लीयां भिक्षा
झीणी चूंदड कांधै गेरी, अंग-अंग सब दिखर्‌या
अंग अंग सब दिखर्‌या हां रै अंग अंग सब दिखर्‌या

स्थाई- बं बं भोळे .....

पु. साधू देख रह्यो एकटक सूंऽऽऽ.....
साधू देख रह्यो एकटक सूं, पूछ्‌यो या कांईं तेंरै
कैंयां गूमडा व्हिया बता कांईं, रोग व्हियो रै तेंरै
तूंबा सूं चरणामत छिड़कऽऽऽऽ.....
तूंबा सूं चरणामत छिड़कूं, रोग मिटै तेंरै, रोग मिटै तेंरै
रै सारा रोग मिटै तेंरै **स्थाई- बं बं भोळे.....**

स्त्री रोग नहीं या सुण सन्यासीऽऽऽऽ.....
रोग नहीं या सुण सन्यासी, दोजीवां मैं व्हैरी
नहीं गूमडा, यै बच्या की, दूध भरी कऽटोरी
दूध भरी कऽटोरी हां रै दूध भरी कऽटोरी
स्थाई-बं बं भोळे....

.....

स्थाई - बं बं भोळे

पु. जींनै भी तू जन्म दियो ऊंकी करी व्यवस्था सागै
फिर भी क्यूँ इन्सान नै समझै ऽऽऽऽ—
फिर भी क्यूँ इन्सान ने समझै, छीन झपट मैं लागै
साधू चल्यो लियां भिक्षा बिन, रही गूजरी ऊभी
रह रहकर पछताव करै कांई, ग़लत बात मैं खैदी
ग़लत बात मैं खैदी, हां रै ग़लत बात मैं खैदी

.....

साधू तू छै मेरी गुरु गूजरी माता बण शिक्षा दी
मैं अज्ञानी मूर्ख गुराणी, तूनै आँख्यां खोली
अब खाबा की चिन्ता कोनै, भजन करूं भगवान को,
जनम दियो जींनै देख विधाता ऽऽऽऽ—
जनम दियो जींने देख विधाता पेट भरै ऊं जीव को ,
पेट भरै ऊं जीव को हां रै पेट भरै ऊं जीव को

साधू कीड़ीनंगरो सींच मत ए ऽऽऽऽ—
कीड़ीनंगरो सींच मात ए भिक्षा तेरी सुफळ हुवै
टाबर तेरो जिवै सैंकड़ा साल बण्यो इन्सान रै

साधू म्हंत गणेशदासजी या बात खई चौपाल मैं
म्हे लिखदी कागद माळै वांकी, करल्यो जय जयकार रै

करल्यो जयजयकार रै करल्यो जय जयकार रै।

गीत की पृष्ठभूमि

नैतिकता, शिक्षा, संस्कृति, मानवीय मूल्य एवं जीवन के आदर्शों को संरक्षित-सुरक्षित रखते हुए उन्हें जन-जन तक पहुँचाने में हमारे देश के ऋषि-तपस्वियों, साधू-सन्तों एवं गुरुजनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीनकाल में हमारे देश में शिक्षा की गुरूकुल पद्धति को विश्वभर में सम्मान की दृष्टि से देखा जाना इसका जीता-जागता उदाहरण है।

यदि आज भी तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो गुरूकुल पद्धति की श्रेष्ठता को नकारा नहीं जा सकता और कम्प्यूटरीकरण के इस शीघ्रगामी युग में भी साधू-सन्तों द्वारा प्रवाहित ज्ञान-धारा के महत्व को कौन नहीं जानता। महाराजा भर्तृहरी, गोपीचन्द आदि संन्यासियों के आचरण से जनमानस के कार्यों का रुख ही बदल गया और उन्होंने जो जनचेतना की वह अपने आप में अद्वितीय है। यदि तनिक मन को एकाग्र कर मनन करें तो हम पायेंगे कि व्यक्ति येन-केन प्रकारेण छल, झूठ, कपट आदि के माध्यम से अधिक से अधिक धनोपार्जन करने की लालसा में पागल सा हुआ रहता है और दूसरी ओर एक नवजात शिशु अपने भरण पोषण की चिन्ता से निष्फिक्र हो आनन्द से किलकारियाँ मारते हुए सच्चा जीवन जीता है। उसके भोजन की व्यवस्था भगवान स्वत: ही किये देते हैं। इस गीत में एक भिक्षुक साधू को एक अनपढ़ गूजरी बातों ही बातों में अप्रत्यक्ष में ऐसी शिक्षा दे देती है जिससे उस साधू की जीवनधारा ही नया मोड़ ले लेती है और वह उससे भिक्षा लिए बिना ही वह वापस लौट जाता है।

गीत की विषयवस्तु व भावार्थ

एक साधू भिक्षा चाहने हेतु एक गूजरी के दरवाज़े पर बड़ी देर से अलख जगा रहा है और गूजरी की पुत्रवधू जिसके लगभग सात-आठ माह का गर्भ है, स्नान कर रही है। उसके अतिरिक्त घर में साधू की अलख सुनने वाला अन्य कोई प्राणी नहीं है। हमारे देश में साधुओं का आदर किया

जाना एक परम्परा रही है और किसी भिक्षुक को भिक्षा देना एक पवित्र कर्त्तव्य।

जब गूजरी की पुत्रवधू ने साधू की टेर सुनी तो जल्दी से स्नान किया और केवल अधोवस्त्र पहने कांधे पर बारीक झीनी चुनरी डाले हाथ में भिक्षा लेकर उसे साधू को देने दरवाज़े पर पहुँच गई। साधू ने अपने जीवन में अब से पूर्व नारी को इस रूप में न देखा था। वह उसके बिखरे केशों के मध्य चन्द्रमाँ के समान दमकते उस रूपसी के मुखमण्डल को निहारने लगा और जब नज़रें नीचे की ओर फिसली तो उसके कसे हुए नुकीले गोल-गोल वक्षों को देखकर चिन्तातुर हो उससे पूछ बैठा कि हे भद्रे, तुम इतनी सुन्दर हो परन्तु तुम्हारे वक्षःस्थल पर किसी बीमारी की वजह से दो मोटी-मोटी गूमड़ियां (फुन्सियाँ) हो गई हैं। साधू की सजहता से अभिभूत हो उसने उसे बताया कि हे महाराज ये गूमड़ियाँ नहीं बल्कि दूध की कटोरियाँ है जो भगवान ने मेरे पेट में पल रहे शिशु के लिए पहले से ही निर्मित कर दी हैं। उसकी इस बात पर साधु को आश्चर्य हुआ और वह चिन्तन करने लगा कि जिस प्राणी ने जन्म ही नहीं लिया उसके खान-पान की भगवान ने पहले से ही व्यवस्था कर दी । फिर मेरा दर-दर जाकर भीख माँगना व्यर्थ है। अतः वह अब से भीख न माँगने का निश्चय कर जब वापस चलने लगा तो गूजरी की पुत्रवधू ने चिन्तित होकर उससे अनुरोध किया कि हे बाबा आप भिक्षा तो लेते जाओ। मैं अपने कहे पर पश्चाताप कर रही हूँ जिससे नाराज होकर आप बिना भिक्षा लिए ही वापस जा रहे हैं।

उसकी बात सुनकर साधू कहता है कि हे भद्रे, तुम तो मेरी गुरू हो जिसने मुझे जीवन का उद्देश्य बता दिया और मेरी भिक्षा का यह आटा तो तुम चींटियों को खिला देना। (कीडी नंगरा सींचना)

और वह साधू उस स्त्री व उसके बच्चे को सौ वर्षों तक जीने की दुआएँ देता हुआ अपनी राह पर चल पड़ा। यह किस्सा महाभारतकालीन ग्राम मैड़ स्थित श्री सियावरजी मन्दिर के महन्त श्री गणेशदास जी महाराज से गीतकार ने अपनी बाल्यावस्था में सुना था जिसे आज वे क़ागज पर लिखकर अपना जीवन धन्य मानते हैं।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×					०				×				०			
–	–	–	सासा	सारे	–रे	पप	म–	रे–	–रे	रेप	म	रेसा	–सा	सासा	सासा	
ऽ	ऽ	ऽ	मूंनै	देदै	ऽगू	ऽज	रीऽ	भिऽ	ऽक्षा	साऽ	धू	द्वाऽ	रख	ड़ोऽ	तेऽ	
प		–	प प	–प	–प	प	प	प–	–प	पध	ध	रेसा	सासा	सा	सा	
रै		ऽ	सा	धू	ऽद्वा	रख	ड़ो	ते	रैऽ	ऽरै	साऽ	धू	द्वाऽ	रख	ड़ो	ते
सा		–	–	–												
रै		ऽ	ऽ	ऽ	बं बं भोळे, बं बं भोळे, बं बं भोळे, सा प के स्वरों में आवाज लगाते हैं											
पप		–प	–प	प–	प	प	प	प	सा	सा	प	म	रे	सा	–	–
भोळी		ऽदे	ऽर	सैंऽ	अल	खज	गा	र्‌यो	कां	ईं	व्है	गो	ते	रै	ऽ	ऽ
पप		–प	–प	प–	प	प	प	प	सा	सा	सा	रे	सा	सा	–	–
भोळी		ऽदे	ऽर	सैंऽ	अल	खज	गा	र्‌यो	कां	ईं	व्है	गो	ते	रै	ऽ	ऽ
पप	–	प	पपप	पप	पप	पप	पप	सा	सा	सा	रे	सा	सा	–	–	
ध	र्मप	रा	यण	नाऽ	रन	वेली	तैंरै	दर	वा	जै	सा	धू	टे	रैऽ	×3	

बं बं भोले × 3

अन्तरा

प	पप	–प	प–	पप	पप	–प	पप	सा	सा	सा	रे	सा	–	–	–
ठै	रबा	ऽब	ल्या	ठैर	रबा	ऽब	ल्या	मैं	न्	हारी	छूं	ओ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	रै	सा	सा	सा	रे	सा	सा	सा	रे	सा	–	–	–
रुक	ज्यो	बा	बा	रुक	ज्यो	बा	बा	रुक	ज्यो	बा	बा	ओ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	रे	सा–	सासा	–सा	रे–	सा	सा	सा	रे	सा	सा	–	–
आ	धा	कप	ड़ा	पैऽ	रलि	ऽई	मैंऽ	आ	धा	पा	छै	पै	रूं	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	प	प	नि	–	–	–	–	–	–	–	–

भि	क्षा	द्यूं	सा	धू	नै	पै	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	प	प	प	सा	सा	रे	सा	सा	सा	–	–
भि	क्षा	द्यूं	सा	धू	नै	पै	ली	आ	शी	र्वाद	ऊं	को	ल्यूं	ऽ	ऽ

स्थायी बं बं भोळे।

शेष अन्तरे उपरोक्तानुसार गाए जायेंगे।

इस गीत में भक्तिरस का प्रयोग है। मनुष्य को जीवन का संदेश दिया गया है। अन्योक्ति अलंकार भी है। इसमें स्त्री, पुरुष एवं साधू के संवाद है जिन्हें स्वरों में निबद्ध किया गया है। राजस्थान के अन्य जिलों के लोकगीतों से मैड़ अंचल के ये गीत भिन्न हैं। यह गीत राग पहाड़ी पर आधारित है एवं कहरवा ताल में निबद्ध है।

मिनखडा

स्थाई- मूंनै दे द्यो कोई टूक रोटी, भूख लागै रै
मैं छूं पड्यो एकलो आज जिंन्दगी भार लागै रै

तूनै याद कर्यां मैं रोऊं सौ-सौ आँसूं छीं बहर्या
तेरा कपड़ा देख बिलंगणी, आँसूं रोकूं मैं कइयां
जगां बतादै बोल कैड़े मैं आ जाऊं रै + स्थाई

.....

होणहार मेरा बेटा नै यमराज बुला लीन्यो
राखै छो वा चिन्त्या मेरी भोळो-भाळो छो,
गश आ जावै याद करूं जद खा खा टक्कर रै + स्थाई

.....

स्त्री मूनै मर्योडी जाण मिनखड़ा क्यूं कुळ्ळावै रै
या तो माटी की छै देह ऊंनै क्यूं लिपटावै छै
तेरा पौरूष नै तू जाण, भीख क्यांटै मांगैरै
तेरा दोन्यूं साबत हाथ वांकी लाज बचालै रै
लाज बचा लै रै दारू मत ना पीवै रै
तू तो मन मैं धीरज धार मिनखडा साख बचा लै रै
साख बचा लै रै तेरा हाथ उठा लै रै
तू लै जाण वां की महमा तेरा हाथ उठा लै रै
हाथ उठा लै रै करम तू करतो र्हीजो रै
मैं छूं मान तेंरै साथ मिनखड़ा हँसतो र्हीजे रै
हँसतो र्हीजे रै मैं भी हँसती र्हूंगी रै
या छै जिंदगाणी अनमोल मिनखडा हँसतो र्हीजे रै
हँसतो र्हीजे रै करम तू करतो र्हीजे रै

मिनखडा हँसतो र्‌हीजे रै

हँसतो र्‌हीजे रै.....

गीत की पृष्ठभूमि

मनुष्य के जीवन में उसकी पत्नी का सहयोग अपने आप में अद्वितीय होता है। भारतीय नारी अपने समर्पण भाव के कारण विश्व भर में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखती है। यही कारण है कि एक गृहणी अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए समस्त परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखती है और वह परिवार स्वर्ग के समान बना रहता है। यदि किसी कारणवश गृहणी घर से दूर हो जाती है तो उस घर की कार्य-व्यवस्था डगमगा जाती है तथा घर का हर प्राणी अपने आपको असहज महसूस करने लगता है। इस गीत में एक गृहणी के महत्त्व को दर्शाया गया है।

गीत की विषयवस्तु

एक व्यक्ति अपनी मृत पत्नी को याद कर-करके आहत होता है। वह अपने मन में उठे संचारी भावों के कारण बिलख-बिलख कर अपनी पत्नी को याद करते हुए कहता है कि मैं ज़िन्दगी में अकेला पड़ गया हूँ, माँग-माँग कर रोटी खाता हूँ और तुम्हारे रस्सी पर टंगे हुए कपड़ों को देख-देखकर मुझे रोना आता है। तुम मुझे वह जगह बतला दो जहाँ पर तुम इस वक्त हो, मैं तुमसे मिलने वहीं आ जाता हूँ। जब तुम मेरे साथ थी तो ये पत्थर की दीवारें भी हलचल करती-सी महसूस होती थी और जब मैं इन सब बातों को याद करता हूँ तो स्वत: ही आँखों से आँसू छलक पड़ते हैं। तुमने अपने जीवनकाल में अपने बेटियों को पराई कर दिया और हमारे दोनों बेटे अपने विवाह के पश्चात् मुझे अकेला छोड़कर अपने बच्चों को साथ लेकर चले गए। जब मैं अकेला होता हूँ तो दु:ख के मारे मेरा मन भर आता है। हमारा एक बेटा जो होनहार था उसे यमराज ने अपने पास बुला लिया। वह तुम्हारे बाद में मेरी चिन्ता रखता था अत: जब मैं उसको याद करता हूँ तो बेहोश सा हो जाता हूँ। अपनी इस पीड़ा को मिटाने के लिए और तुम्हारी याद से उबरने के लिए मैंने शराब पीना भी शुरू कर दिया है । मेरे हाड़-हाड़ ढीले पड़ गए तथा चला-फिरा भी नहीं जा रहा। इस प्रकार हमारा सारा घर बर्बाद हो गया है परन्तु इस बर्बादी को रोकने वाला कोई नहीं है।

उसकी इस बात पर स्वर्ग से उसकी पत्नी उससे कहती है कि हे मनुष्य, मेरी देह तो मिट्टी से बनी हुई थी तू उससे लिपटकर क्यों चीत्कार कर रहा है। तू अपने पौरुष को पहचान और भीख माँगना छोड़ दे। तेरे दोनों हाथ सही-सलामत हैं अत: तू कर्म करने में लग जा और शराब का सेवन करना बंद कर दे तथा अपने मन में धैर्य धारकर कार्य करने में लग जा, जिससे तेरा यह दु:खी जीवन हँसी-खुशी में बदल जायेगा । तब मैं भी अपने आप को सुखी महसूस करूँगी। यह ज़िन्दगी अनमोल है न कि रोने के लिए अत: हमें कर्म करते हुए जीवन में हमेशा हँसते रहना चाहिए।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
–	–	सा	सा	सारे	–रे	म	म	रे–	–रे	रेम	म	सा–	–सा	सा	सा
–	–	मूं	नै	देद्यो	ऽको	ऽ	ई	टूऽ	ऽक	रोऽ	टी	भूऽ	ऽख	ला	गै
सा	–	सा	सा	सारे	–रे	मम	म	रे–	–म	रेम	म	सा–	–सा	सा	सा
रै	ऽ	मै	छूं	पड्	ऽयो	एक	लो	आऽ	ऽज	ज़िंद	गी	भाऽ	ऽर	ला	गै
सा	–	–													
रै	ऽ	ऽ													

अन्तरा

–	–	–	पप	प	पप	प	प	प	प	प	प	–प	–प	रेसा	सारे
ऽ	ऽ	ऽ	तूनै	या	दक	र्यां	मैं	रों	ऊं	सौ	सौ	ऽआं	ऽसू	छी	वह
रेप	–	प	प	–प	–प	प	पप	प	पप	प	प	प	प	रे	रे
र्या	ऽ	ते	रा	ऽक	पड़ा	दे	खबि	लं	गणी	आं	सू	रो	कू	मैं	कैं

सा	–	–	–	–प	पप	प	प	प–	–प	प	प	सा	सा	सा–	–		
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽज	गांब	ता	दै	बोऽ	ऽल	कै	ड़े	मैं	आ	जाऊं	ऽ		
रे	–																
रै	ऽ			स्थाई													

शेष अन्तरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में करुण व वीर रस के अनूठे मिश्रण के माध्यम से नीति व शिक्षा को दर्शाया गया है। गीत शुद्ध स्वरों पर आधारित है। इसमें षडज, ऋषभ व पंचम स्वरों का प्रयोग किया गया है जिससे यह गीत पहाड़ी राग का बनता है। यह गीत कहरवा ताल में निबद्ध है।

संदेशो

स्थाई **पु.** चिट्ठी ले जा रै कबूतर देर बेगो आ जे

स्त्री ऊंकी आँख्यां मैं लिख्यो संदेशो आर सुणाजे।

पु. काळजा की कोर तेरी याद आवै
अइयां लागै सैंकड़ां बरस व्हैगा
तेरी बोली सुण्यां बिन पीड़ ऊठै रै।

स्त्री काल ही तो ना.ज पिसाबै गया जद
तूनै देख मेरी आँख्यां ठैरगी.. छी
आज तक तेरी आँख्यां मैं ही डूबी रै।

.....

स्त्री कइयां ऊठूं रात मैं च्यारूं मेरां
भाभी, माई और ताई सो. री छीं
खाट नीचै पग धर्‌यां पायल बाजीं रै।

पु. त.डकै तीजां को मेळो देखबाटै
आपां आवां घरां सूं कर तरकीब
टीबड़ा का बड़ नीचै पोंछ मिलां रै।

.....

पु. मेळो भरै जोर को मच्यो हुडदंग
लुगाई मोट्यार टाबर टोळी भागीं
दोन्यूं का दोन्यू ही कोनै पोंछ सक्या रै।

कोरस चिट्ठी लेर पोंछगो देखो कबूतर
देख ऊंनै चाल पड़ी तिबारा कांणी
पोंछ उण्ड़े देख ऊंनै राजी व्हैगी रै।

कोरस भगदड़ रुकगी मेळो लाग्यो
दोन्यूं ऊभा ऊभा देखीं आपसरी मैं

मन को तूफान मिट्यो एक व्हियां रै
शाम ढ़ळी रै रात व्हिई रै
चाल अब घरां चालां फेर मिलां रै
चाल चाल रै
चाल चाल रै
चाल चाल रै

गीत की पृष्ठभूमि

संदेशवाहक के रूप में प्राचीन काल से ही कबूतर का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उस समय गुप्त संदेश और चिट्ठियां भेजने का कार्य कबूतरों से ही कराया जाता था और ये कबूतर सन्देशवाहक के रूप में बहुभाँति प्रशिक्षित होते थे। आज के युग में भी इस गीत के माध्यम से एक ऐसी ही परिकल्पना की गई है जिसमें एक कबूतर किसी प्रेमी की चिट्ठी को उसकी प्रेमिका के लिए भेजकर एक अद्भुत कार्य करता है।

गीत की विषयवस्तु

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को कोई सन्देश देना चाहता है जिसके लिए वह कबूतर को ही उपयुक्त माध्यम पाता है। वह कबूतर से कहता है कि हे कबूतर, यह चिट्ठी ले जाकर मेरी प्रेमिका को देना और तुम उसकी आँखों में गहराई से झाँककर मुझे आकर बताना कि उसने मेरे लिए क्या सन्देशा दिया है। वह अपनी प्रेमिका को याद करते हुए कहता है कि मुझे तुमसे मिले हुए सैंकड़ों बरस हो गये और इस वक्त मुझे तुम्हारी याद सता रही है। उसकी प्रेमिका उससे कहती है कि हम कल ही तो चक्की पर अनाज पिसाते हुए मिले थे और तुम्हें देखकर तो मेरी आँखें स्थिर हो गई थी। मैं तो अब तक भी तुम्हारी उन आँखों में ही डूबी हुई हूं। उसका प्रेमी उससे कहता है कि मुझे रात भर नींद नहीं आई और मैं सारी रात तुम्हारे घर के ही चक्कर काटता रहा। तुम कम से कम एक बार तो मुझे देखने के लिए बाहर आ जाती। प्रेमिका उससे कहती है कि मैं कैसे आती मेरे चारों ओर माई, काकी, भाभी आदि सो रही थी और खाट के नीचे पैर रखते ही ये निगोड़ी पायल भी बज जो उठती थी। अब प्रेमी उससे कहता है कि कल तीजों का मेला है और मैं वहाँ पर ऊँचे टीबड़े पर पहुँचकर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। तुम कोई भी बहाना बनाकर वहाँ पर पहुँच जाना। उसकी प्रेमिका कहती है कि मेरे साथ मेरी एक सहेली भी अपने प्रेमी से मिलने के लिए मेले में आयेगी। वह उससे सर्कस में मिलेगी। वह अपने प्रेमी को आवश्वस्त करती है कि तुम निश्चिन्त रहो मैं जैसे-तैसे वहाँ

पर पहुँच जाऊंगी ।

मेले में बहुत भीड़-भाड़ है जिसमें बूढ़े, बच्चे, नौजवान सभी के सभी आ-जा रहे हैं। भीड़ अधिक होने के कारण प्रेमिका निश्चित समय पर निर्धारित स्थान पर पहुँच नहीं पाये। परन्तु कबूतर चिट्ठी लेकर निर्धारित स्थान पर पहुँच गया जिसे देखकर प्रेमिका टीबड़े के पास बने तिबारे की ओर चल दी। वहाँ पहुँचकर जब उसने अपने प्रेमी को पहले से ही उपस्थित पाया तो प्रसन्नता से पूरित हो उठी। अब मेले में भीड़भाड़ कम हो गई। वे दोनों एक दूसरे में खो गये। प्रेमिका ने प्रेमी से कहा कि साँझ ढ़ल रही है अत: अब हमें घर चलना चाहिए। दुबारा फिर कभी इसी स्थान पर मिलेंगे।

इस प्रकार इस गीत में प्रेम के संयोग पक्ष का सजीव चित्रण किया गया है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
–	–	सा	सा	सा	रे	रे	ग	ग	ग	सा–	–सा	सा	सा	सा	–
ऽ	ऽ	चि	ट्ठी	ले	जा	रै	क	बू	तर	जाऽ	ऽर	बे	गो	आ	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे–	रे	ग	ग–	ग	सा	सा	सा–	–सा	सा	सा
जे	ऽ	ऊं	की	आं	ख्यां	मैं	लि	ख्यो	सं	दे	शो	आऽ	ऽर	सु	णा
सा	–	–	–												
जे	ऽ	ऽ	ऽ												

अन्तरा

–	–	–	–	प–	–प	प	प	प	प	प	प	प–	–प	ग	म
				काऽ	ऽळ	जा	की	को	र	ते	री	याऽ	ऽद	आ	ऽ

प	–	–	–	प–	प	प	प	प	प	प	प	प	प	–म म
वै	ऽ	ऽ	ऽ	अइ	यां	ला	गै	सैं	क	डां	ब	र	स	व्है ऽ
ग	–	–	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	प–	–प	रे सा
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ते	री	बो	ली	सु	ण्यां	बि	न	पीऽ	ऽड	ऊ ठै
सा	–	–	–	प–	–प	प	प	प	–	प	प	प	प	म म
रै	ऽ	ऽ	ऽ	काऽ	ऽल	ही	तो	ना	ऽ	ज	पि	सा	बै	ग या
प–	–प	–	–	प	प	प	प	प	प	प	पप	प–	–प	म म
जऽ	ऽद	ऽ	ऽ	तू	नै	दे	ख	मे	री	आं	ख्या	ठैऽ	ऽर	गी ऽ
ग	–	–	–	ग–	–ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	प	–	रे सा
छी	ऽ	ऽ	ऽ	आऽ	ऽज	तक	ते	री	आं	ख्यां	मैं	ही	ऽ	डू बी
सा	–													
रै	ऽ	स्थाई												

शेष अन्तरे इसी तरह गाए जायेंगे।

यह गीत राग भोपाली पर आधारित है। इस राग में षडज, ऋषभ, गांधार एवं पंचम स्वरों का उपयोग हुआ है। लेकिन एक अन्तरे में एक जगह मध्यम का भी प्रयोग किया गया है, जो कि भोपाली स्वर में प्रयोग नहीं होता लेकिन लोकगीतों में इस तरह का प्रयोग हो सकता है। यह गीत ताल कहरवा पर आधारित है। श्रृंगार रस के माध्यम से स्त्री–पुरूष की आंतरिक भावनाओं को दर्शाया गया है।

टांट फोड़ांगा

स्थाई कोनै चालबाद्यां हळां नै फत्या सुण लै
तेरा खेत का मालिक नै खीजे टांट फोड़ांगा
टांट फोड़ांगा रै टांट फोड़ांगा
तेरा खेत का मालिक नै खीजे टांट फोड़ांगा
हीरां कै फत्यो छै भाई सीधो सादो
वा तो बायो छै ज़मीन एक सीधा जणा की
अइयां सोचै ईंसै टाबरां को पेट भरूंगो + स्थाई
ऊंका खेत का मालिक का भाई और भतीजा
म्हाडा अइयां खीं तूनै खेत कोनै बाबाद्यां
भोळा बरसां का चटरस नै फत्यो खोस लियो रै + स्थाई

.....

एक बोल्यो कोनै बाबाद्यां रै फत्या खेत
कुचद्दर खड़ो व्हैज्यागो मान जा तू देख
तेरा मालिक सैं हिसाब म्हांनै ब्होत लेणो रै + स्थाई

.....

एक की लुगाई बोली हाथ पकड्यो मेरो
अइयां बोली चाल पैली एकोड़ी नै
तेरा कब्जा मैं हाथां सूं घालूं नोटां की गड्डी रै + स्थाई

.....

पेड़ां माळै ज्यानबर बैठ्या-बैठ्या
बात अइयां करीं देखो झूंठ बोलर्‌या
सारा का सारा कुआ मैं भाँग घुळी रै + स्थाई
कागलो खैर्‌यो रै आपां साथ द्यांगा
दोन्यूं का दोन्यूं सीधां नै तंग करर्‌या

आँख मैं मारूंगो चूँच काणा व्है जावीं रै + स्थाई
अइयां बोल्यो गधैडो मैं लात मारूं
टट्टूपणो साळा को आज निकाळूं
स्यांप बोल्यो साळा कै गळा मैं पूँछ घालूं रै + स्थाई
गाय बोली लुगाई क्यूं झूँठ बोलै
कांईं तूनै खैयो कोनै मैं छी चर री
ऊदळबाळी राण्ड बळींडै साँप बतावै रै
झूँठ बोलै रै तू बदमाश रै
ईंमैं बदनामी तेरी हुई रै
खूब रही रै खूब रही रै

कोरस : भाई खूब रही रै

गीत की पृष्ठभूमि एवं भावार्थ

र्वमान बदलते हुए युग में कहीं-कहीं इन्सान अपने धर्म, नैतिकता एवं कर्तव्य से गिर गया है। मनुष्य मनुष्य का आहारी हो गया है और अधिकांश प्राणी छीना-झपटी एवं आपाधापी में निर्लिप्त हो गये हैं।

शर्मा जी ने इस गीत में इस परिवर्तन को इस प्रकार उजागर किया है कि मानो इस प्रकार के वातावरण में घटित किसी घटना के वे चश्मदीद गवाह हों।

गाँव के किसान परिवार का एक किशोर-युवक अपनी पढ़ाई-लिखाई एवं नौकरी के सिलसिले में लगभग तीस वर्ष तक अपने गाँव से बाहर रहा और वर्ष में एकाध दिन के लिये अपने गाँव आया करता था। इस दौरान उसके हिस्से की ज़मीन का उपयोग उसके भाई-भतीजे ही किया करते थे। तीस वर्ष पश्चात् जब वह अपने गाँव आकर किसानों को अपने हिस्से की ज़मीन बँटाई पर देना चाहता है तो उसके भाई-भतीजे उसे उसके हिस्से से बेदखल करने का हर संभव प्रयास करते हैं। कभी तो वे उसके किसानों के साथ मारपीट करके उन्हें भगा देते हैं, कभी उसके खेत में काम कर रहे मजदूरों को काम करने से रोक देते हैं। कोई-कोई उसके खेत में चल रहं इंजन को जाकर बलात् बन्द कर देता है। और एक दिन तो वे इतनी नीचता पर उतर आये कि जब खेत का वह मालिक युवक अपने किसान को साथ लेकर शहर के लिये

रवाना हुआ तो उसके भाई-भतीजों ने अपने घर की औरतों को साथ लेकर राह में ही लाठियों से उस पर हमला कर दिया। किसी ने उसकी गर्दन पकड़ी, किसी ने हाथ और किसी ने अपने पैरों से जूती निकालकर उसकी पिटाई कर दी। उसके एक भतीजे ने अपनी पत्नी के साथ उसके हाथ पकड़े और अपने पिता को उस युवक की पिटाई करने हेतु उकसाया । उस सीधे-सादे इन्सान पर उसकी बहू ने झूंठा आरोप लगाया कि खेत के मालिक उस युवक ने मेरा हाथ पकड़कर कहा कि पहले एकान्त में चल फिर मैं तेरे कब्जे (ब्लाउज) में नोटों की गड्डी डालूंगा।

ऐसे में आस-पास के सभी लोग मूक दर्शक बने तमाशा देखते रहे और कुछ कमजोर वर्ग के लोग उन दुष्टों के डर के मारे केवल चुप रहने को विवश थे। परन्तु उस जंगल के पशु-पक्षी अपने धर्म, ईमान और नैतिकता पर कायम हैं और वे सभी इस दृश्य से आहत होकर यह निर्णय लेते हैं कि इन सीधे-सच्चे व्यक्तियों को इनके दुष्ट परिजन अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर तंग कर रहे हैं अत: हम इनका साथ देंगे। वे किस प्रकार उनका साथ देने की योजना बनाते हैं वह शर्मा जी ने अपने इस गीत में बताया है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
–	–	सा	सा	सा–	–रे	रे	ग	ग	ग	रे	सा	सा	सा	सा	सा
ऽ	ऽ	कौ	नै	चाऽ	ऽल	बा	द्या	ह	ळां	नै	ऽ	फ	त्या	सु	ण
स	–	सा	सा	सा	रे	रे	ग	गग	ग	रे	सा	सा	–	सा	सा
लै	ऽ	ते	रा	खे	त	का	मा	लिक	नै	खी	जे	टां	ट	फो	ड़ां
सा	–	–	–	म	–	म	म	म	–	–	म	म	म	म	म
गा	ऽ	ऽ	ऽ	टां	ट	फो	डां	गा	ऽ	ऽ	रै	टां	ट	फो	ड़ां
सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	ग	ग–	ग	सा	सा	सा	–	सा	सा
गा	ऽ	ते	रा	खे	त	का	मा	लिक	नै	खी	जे	टां	ट	फो	ड़ां

अंतरा

सा	–	–	–	सा	रे	रे	ग	ग	ग	सा	सा	सा	सा	सा	सा
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ही	रां	कै	फ	त्यो	छै	भा	ई	सी	धो	सा	ऽ
सा	–	सा	सा	सा	रे	रे	ग	ग	ग	सा	सा	सा	–	सा	सा
दो	ऽ	वा	तो	बा	यो	छै	ज	मी	न	ए	क	सी	धा	ज	णा
सा	–	सा	सा	सा	प	म	म	ग	–	–	ग	सा	सा	सा	–
की	ऽ	अइ	यां	सो	चै	ईं	सैं	टा	बरां	को	पे	ट	भ	रूं	गो

अंतरा - द्वितीय

–	–	सा	सा	सा	रे	रे	ग	ग	ग	सा	सा	सा–	–सा	सा	सा
ऽ	ऽ	ऊं	का	खे	त	का	मा	लिक	का	भा	ई	औऽ	ऽर	भ	ती
सा	–	–सा	सा	सा–	रे	रे	ग	ग	–	सा	सा	सा	सा	सा	सा
जा	ऽ	म्हा	डा	अई	यां	खीं	तू	नै	ऽ	खे	त	कौ	नै	बा	बा
सा	–	म	म	म–	म	म	म–	म–	म	म	ध	सा–	–सा	सा	सा
द्यां	ऽ	भो	ळा	बर	सां	का	चर	रस	नै	फ	त्यो	खोऽ	सऽ	लियो	रै

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाए जायेंगे।

बदलते सामाजिक परिवेश की अभिव्यक्ति इस गीत के माध्यम से की गई है। इस गीत में करुण एवं भयानक रस का संगम है। इस गीत के प्रारम्भ में राग भोपाली के स्वर हैं। बाद में थोडा बिलावल पर आधारित है। अंतरे की धुन एक ही है इसलिये शेष अंतरों में भी ये ही स्वरलिपि आती है। लोकगीत प्राय: कहरवबा, दादरा, दीपचन्दीआदि तालों में निबद्ध होते हैं। यह गीत कहरवा में निबद्ध है।

200

भाई का जन्म

पाँच भैणां कै बीच भाई आयो ए सहेलियाँ
गांवां बधावा गीत आओ मिल आज
स्थाई म्हारी सुणली अरज हडमानजी महाराज 4

म्हारी माय सह्या कत्ता दुख ईं कै तांयं 2
सारा घरका सह्या म्हे तीखा बाणां की बौछाड़
म्हारा अपणा ही, खंजर म्हांकै घुप्या बारम्बार
सैंका घाव भर्‌या ज्यो भाई जनम्यो म्हारै आज + स्थाई
मैड़ गाँव कै पच्छिम मैं छै सियावर स्थान 2
जीं मैं पदरायो हडमान ल्यार म्हंत गणेशदास
वांका जापता सूं जनम्यो देखो म्हारै भाई आज
थांनै कइयां म्हे भूलां जी खुशियां का ऽऽ दातार+ स्थाई

.....

क्यूंऽ तू घबरावै दुख का जंजाळ सूं 2
चक्कर मैं क्यूं आवै अपणां का जाळ सूं
पऽऽडजा जाय शरण मैं सियावर स्थान रै
पऽगल्या पीजा धोर बाबा गणेशदास कै
भऽक्तां की क्यूं नै मानै, वांको हडमान रै 3 + स्थाई

गीत की पृष्ठभूमि

भारत देश में पुरुष प्रधान समाज का होना सर्वविदित है। वैदिक एवं पौराणिक काल से ही पुत्ररत्न की प्राप्ति को माता-पिता के लिए शुभ माना जाता रहा है। हमारे विभिन्न धार्मिक मतों के अनुसार किसी भी दम्पत्ति की मोक्ष-प्राप्ति हेतु पुत्र-जन्म को एक अनिवार्य आधार माना गया है। अन्तिम संस्कार के समय भी माता-पिता को पुत्र द्वारा मुखाग्नि दिये जाने की भारतीय धारणा प्रबल है । पुत्रियों को इस कार्य-व्यापार

में प्रवेश की सामाजिक अनुमति नहीं है। भले ही आज समाज में शिक्षा का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार हो गया हो एवं हम नारी-शिक्षा तथा महिला-उत्थान की कितनी ही बड़ी-बड़ी बातें कर लें, परन्तु भारतीय समाज में पुरुष-प्रधानता आज भी सर्वव्याप्त है।

प्रस्तुत गीत न केवल भारतीय समाज की पुरुष-प्रधानता को ही दर्शाता है, अपितु हमारी सामाजिक मान्यताओं, संस्कारों एवं विभिन्न उत्सवों की भी एक झाँकी प्रस्तुत करता है। धार्मिक आस्था भी हमारे देश की अपनी एक विशिष्ट पहचान है जो मानव की इच्छा शक्ति के प्रबल होने का एक आधार है।

इस गीत की पृष्ठभूमि में महाभारतकालीन स्थान विराटनगर के समीप स्थित मैड़ ग्राम के श्री सियावरजी के मन्दिर के महन्त श्री गणेशदास जी महाराज की धार्मिक आस्था, उनके द्वारा हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना, उनकी सेवा-पूजा तथा ऊपरी (दैविक) बीमारियों से पीड़ित रोगियों के रोग के निदान आदि का वर्णन किया गया है।

गीत का भावार्थ

इस गीत में एक ऐसे परिवार की व्यथा-कथा का वर्णन किया गया है जहां पर किसी दम्पत्ति के केवल पाँच लडकियां है, परन्तु पुत्र नहीं है। इन पाँचों बहनों को भाई न होने की पीड़ा है तथा परिवार में पुत्र के बिना इसके सदस्यों को सामाजिक उपहास तथा तथाकथित स्वजनों की व्यंग्य-बौछारों का जो सामना करना पड़ता है उससे जनित पीड़ा का भी इस गीत में वर्णन किया गया है। ऐसी दशा में इस परिवार द्वारा ग्राम मैड़ के हनुमान-भक्त श्री गणेशदास जी महाराज से पुत्र-प्राप्ति के लिए जापता (हनुमानजी की पूजा-अर्चना के साथ पुत्र-प्राप्ति हेतु अनुष्ठान) कराया जाता है। महन्त श्री की पूजा एवं हनुमानजी महाराज के आशीर्वाद से इन बहनों को भाई देखने का सौभाग्य मिलता है।

प्रसन्नता से पूरित होकर इस नवजात शिशु की बहनें इस अवसर पर खुशी मनाने एवं बधावे के गीत गाने हेतु अपनी-अपनी सहेलियों को आमंत्रित करती हैं, तथा अपने भाई के जन्म से पूर्व घर-परिवार एवं समाज के कई व्यक्तियों द्वारा दिये गये तानों, व्यंग्य एवं उपहास भरे शब्दों को रह-रहकर याद करती हैं। इससे जनित पीड़ा का स्मरण कर पुन: भाई के जन्म पर प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। इसका श्रेय वे महन्त श्री गणेशदास जी महाराज की पूजा अर्चना एवं उनके आराध्य लोक देवता हनुमानजी को देती हैं। उन्होंने उनकी (बहनों की) पीड़ा से द्रवित होकर उनकी माँ को पुत्र-जन्म का आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सभी बहनें बधावे के गीत गाने तथा कुँवारी कन्याओं को जिमाने (भोजन कराने) का आयोजन

करती हैं जो खुशी के अवसरों पर भारतीय समाज में प्रचलित परम्पराओं से हमारा साक्षात् कराता है।

हनुमान जी महाराज का स्मरण करती हुई सामान्यजन को हनुमान जी महाराज में आस्था रखने की सलाह देती हुई वे उनसे (सामान्यजन से) कहती हैं कि हे इन्सान! तू जीवन में आये कष्टों से भयभीत मत हो। ये (कष्ट) तो भारतीय समाज के वातावरण का एक पक्ष हैं जिसमें तथाकथित स्वजन भी यदा-कदा पीड़ा पहुंचाने के हेतु रहे हैं। परन्तु तू भगवान में आस्था रख, उनकी पूजा-अर्चना कर और अपने कर्म-पथ पर चलता रह, तुझे जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी।

इस प्रकार यह गीत कर्म, आस्था, जीवन एवं दर्शन को सामाजिक व्यवस्थाओं में प्रचलित ढाँचे के माध्यम से प्रस्तुत करने की अपूर्व क्षमता रखता है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०		
–	–	सा	सा	सा	रे	–	सा	रे	प	म	म	रे	म	रे सा
ऽ	ऽ	पां	च	भै	णां	ऽ	कै	बी	च	भा	ई	आ	यो	ए स
सा	–	सा	–	सा	रे	–	सा	सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे सा
हे	ऽ	लियां	ऽ	गां	वां	ऽ	ब	धा	वा	गी	त	आ	ओ	मि ल
सा	–	प	प	–	पध	–प	म	रे	रे	सा	सा	सा–	–रे	रे सा
आ	ज	म्हा	री	ऽ	सुण	–ली	अ	र ज	ह	ड	माऽ	ऽन	जी	महा
सा	सा	सा	सा	सा–	–रे	रे	सा–	सा	–	सा	सा	सा–	–रे	रे सा
रा	ज	ह	ड	माऽ	ऽन	जी	महा	रा	ज	ह ड	माऽ	ऽन	जी	म्हा
सा	–	सा	सा	सा–	–रे	रे	सा	सा–,						
रा	ज	ह	ड	माऽ	ऽन	जी	म्हा	राज,						

अंतरा

सा	–	–प	प	–	पध	–प	ग	ग	रे	सा	सा	रे	म	रे सा
रा	ज	म्हा	री	ऽ	माऽ	ऽय	स	ह	या	क	त्ता	दु	ख	ईं कै
सा	–	प	प	–	पध	–प	म	ग	रे	सा	सा	रे	म	रे सा
तां	यं	म्हा	री	ऽ	माऽ	ऽय	स	ह्या	ऽ	क	त्ता	दु	ख	ईं कै
सा	–	प	प	–	पध	–प	म	ग	रे	सा	सा	रे	ग	रे सा
तां	य	सा	रा	ऽ	घर	ऽका	सह्	याऽ	म्हे	ती	खा	बा	णां की	बौ
सा	–	प	प	–	पध	–प	म	ग	रे–	सा	सा	रे	ग	रे सा
छा	ड	म्हा	रा	ऽ	अप	ऽणा	ही	खं	जर	म्हा	कै	घु	प्या	बा रं
सा	–	प	प	–	पध	–प	प	ग	रे–	सा	सा	रे	ग	रे सा
बा	र	सैं	का	ऽ	घाऽ	ऽव	भ	र्‌या	ज्यो	भा	ई	जऽ	न्म्यो	म्हा रै
सा	–,													
आ	ज,		स्थाई											

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाए जायेंगे।

इस गीत में भक्ति रस, नीति, शिक्षा का वर्णन का प्रयोग किया गया है। साथ ही नारी शक्ति का सम्मान भी दर्शाया है। यह गीत सारंग राग पर आधारित है। इस गीत में षडज, ऋषभ, मध्यम एवं पंचम का प्रयोग ही किया गया है लेकिन अंतरे में गंधार स्वर का प्रयोग किया गया है। इसी कारण यहाँ सारंग से अलग हो जाता है। यह गीत आठ मात्रा में कहरवा ताल में निबद्ध है।

अरठ

स्थाई चर्रच्यूं चर्रच्यूं करतो चालै अरठ कलेवो लेजा छोरी ए
सर्रस्यूं सर्रस्यूं दही बिलोरी माई पाछै जाऊं बेगि ए
तडकाऊ को टेम व्हियो पण सूंसाटो छार्‌यो
चिडी चुणगला चीं-चीं बोलीं टाबर सोर्‌या
माई ऊठ चूलो बाळ्‌यो छोरी दही बिलोवै रै

.....

राबड़ी की माथा माळै कूलडी धर्‌यां
दँताळी काँधा माळै लियां चाली
रोटी खा लै भाया अब मैं अरठ हाँकूं रै

.....

कलेवो कर भायो ऊठ्यो ल्या दै दँताळी
क्यारी डाँड खींचूं मैं तू अरठ नै चला
दोन्यूं भाण-भाई देखो काम करीं रै
अरठ चालै रै चरच्यूं बोलै रै
पाणी का ब्हता धोरा मैं चिड्यां न्हावीं रै
मोर्‌या बोलीं रै तोता उडीं रै

आकाशां मैं देखो वांकी लैण जारी रै लैण जारी रै लैण जारी रै

गीत की पृष्ठभूमि

अरठ को हिन्दी में रहट कहा जाता है। यह किसानों द्वारा अपने खेतों में पानी देने हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला बहुप्रचलित एक ऐसा यंत्र है जिसमें कुए से पानी निकालने हेतु एक डिब्बेनुमा शृंखला (लडी) को कुए के पानी में आठ-दस फीट नीचे तक लटकाया जाता है और कुए के मुहाने पर लोहे की लम्बी दो-तीन इंच मोटी मजबूत एवं गोलाकार साफ्ट (मोटी राड) से एक छह-सात फीट वृत्त के लोहे की पत्तियों से बने आधार में पिरोकर कुए में इस प्रकार से लटकाया जाता है कि तीन चार लीटर पानी की क्षमता वाले उस लडी के चौकोर एवं खुले मुँह वाले डिब्बों का मुँह कुए के अन्दर झाँकता हुआ होता है।

कुए के मुहाने पर इन डिब्बों की लडी के गोल आधार से सम्बद्ध एक दस-बारह फीट लम्बी लोहे की साफ्ट का दूसरा मुँह कुए के पास ही बनी पन्द्रह-बीस फीट वृत्त के एक गोलाकार टीबडे (कुए के मुहाने के स्तर की उंचाई जितने) तक ज़मीन पर पडा रहता था तथा उस मुँह से लोहे की गिरारियों (लोहे से बनी लगभग दो फीट ऊंची गिरारियां) के मुँह आपस में इस प्रकार फँसे रहते थे कि उन्हें तीन-चार फीट लम्बी एवं खडी स्थिति की राड को घुमाने से लम्बी साफ्ट घूमती थी एवं उसके माध्यम से कुए के मुहाने पर स्थित गोल आधार के द्वारा कुए में लटकी डिब्बों की लडी इस प्रकार घूमती थी कि जब डिब्बे कुए के पानी में डुबकी लगाते तो उनमें पानी भर जाता । परन्तु आज विकास की दौड में यह कलात्मक एवं जादुई करिश्मा आँखों से ओझल हो गया।

गीत की विषयवस्तु

एक कृषक युवक रहट चला रहा है। प्राय: किसान प्रात:काल जल्दी उठकर भोर में ही खेतों में काम करने लग जाते हैं। दिन निकलने के पश्चात् घर का काम निपटाकर उस युवक की बहिन अपने भाई के लिए कलेवा लेकर खेत की ओर चल दी। कलेवे हेतु उसने अपने सिर पर राबडी की कूलडी (मटकीनुमा मिट्टी का छोटा पात्र) रख लिया जिसके ऊपर रात की ठण्डी रोटियों का कटोरदान रखा है। अपने कँधे पर उसने दँताळी (खेत में क्यारियां बनाने हेतु कँघीनुमा एक लकडी से बना औजार जिसके बीचों बीच एक तीन-चार फीट लम्बी लकडी फँसी रहती है, जिसे पकडकर दँताली में ली गई मिट्टी को खींच खींचकर क्यारी-धोरे बनाये जाते हैं) रख रखी है। भाई खेत में रहट चला रहा है। लकड़ी की पाळ के ऊपर शैतान कौव्वे उछल कूद करते हुए काँव-काँव कर रहे हैं। चर्रच्यूं-चर्रच्यूं करता हुआ रहट चल रहा है। डिब्बों का पानी लगातार ढाणे में गिर रहा है जिसकी सफेद धार की चकाचौंध आँखों को जादुई लोक का आभास करा रही है। धोरे में बहते पानी में पक्षीगण किल्लोल कर रहे हैं।

बहिन कुए तक पहुँच गई। उसने राबडी की कूलडी, दँताली आदि ज़मीन पर यथास्थान रख दी और अपने भाई से कहा कि अब तुम कलेवा कर लो। तब तक मैं रहट हाँकती हूं। भाई ने कलेवा कर लिया। वह अपनी बहिन से कहता है कि अब तुम रहट हाँको और मैं दँताली से खेत में क्यारी-धोरे करता हूँ। बहिन-भाई दोनों मिलकर खेती का काम कर रहे हैं। रहट चर्रच्यूं-चर्रच्यूं करता हुआ चल रहा है। मोर पीहो-पीहो कर रहे हैं, तोते उड रहे हैं और आकाश में जाती हुई उनकी शृंखला बडी मनमोहक लग रही है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
रे	–	–	ग	सा	–	–	–	रे	–	–	म	सा	–	–	–
च	ऽ	ऽ	र्रं	च्यूं	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽ	ऽ	र्रं	च्यूं	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	रे	सा	सा–	सा–	रे–	सा–	सा	सा	रे	सा	सा	–	–	–
ऽ कर	तो	चा	लै	अर	ठक	लेऽ	वोऽ	ले	जा	छो	री	ए	ऽ	ऽ	ऽ
रे–	–म	सा	–	रे–	–म	सा	–	सा–	–रे	रे	सा	सा–	–रे	रे	सा
सर्रं	ऽऽ	स्यूं	ऽ	सऽ	ऽर्रं	स्यूं	ऽ	दही	बि	लो	री	माऽ	ऽई	पा	छै
सा	सा	रे	सा	सा	–	–	–	सा	सा	रे	सा	सा	सा	रे	सा
जा	ऊं	बे	गि	ऐ	ऽ	ऽ	ऽ	तड़	का	ऊ	को	टेम	व्हियो	पण	
सा	सा	रे	सा	सा	–	–	–	पप	–प	–प	प–	प	प	प	प
सूं	सा	टो	छा	र्‌यो	ऽ	ऽ	ऽ	चिड़ी	ऽचु	–ण	गला	चीं	चीं	बो	लीं
सा	सा	रे	सा	सा	–	–	–	सा	सा	रे	–सा	सा	सा	प़	प़
टा	बर	सो	ऽ	र्‌या	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ई	ऊ	–ठ	चू	लो	बाळ्	यो
सा	सा	सा–	सा	सा	सा	प	–								
छो	री	दही	–बि	लो	वै	रै	ऽ		चर्रंच्यूं × 2						

अंतरा

सा	–	–	सा	रे	–	सा	–	सा	–	सा	–	रे	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	ब	ड़ी	ऽ	की	ऽ	मा	ऽ	था	ऽ	मा	ऽ	लै	ऽ
सा	–	–	सा	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
कू	ऽ	ऽ	ल	ड़ी	ऽ	ध	र	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	–	सा	–	सा	5	ग	–	म	–	ग	–	सा	–
दँ	ऽ	ता	ऽ	ली	ऽ	काँ	ऽ	धा	ऽ	का	ऽ	लै	ऽ	लि	ऽ

सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	ग	–	सा	–	रे	–	ग	–	सा	–	सा	सा	रे	–
रो	ऽ	टी	ऽ	खा	ऽ	ले	ऽ	भा	ऽ	या	ऽ	अ	ऽ	ब	में
ग	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
अ	ऽ	र	ठ	हाँ	ऽ	कू	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

इसमें अद्‌भुत रस है एवं प्रकृति का वर्णन किया गया है। यह गीत राग लोम बिलावल पर आधारित है। इस गीत में षडज, ऋषभ एवं पंचम का प्रयोग हुआ है। गंधार का अल्प प्रयोग भी है। गीत में चर्र च्यूं चर्र च्यूं को भी स्वरों में बातचीत के लहजे में गाया गया है। गीत द्रुत लय में कहरवा ताल में निबद्ध है।

टर्रै

पु. अर र र र र र र....

होळ्यां होळ्यां चाल भायली, तावळ कइयां कररी,

छेळ्यां थारी धीरै.. चालै ट.र्रै...

अरै छेळ्यां थारी धीरै.. चालै ट.र्रै...

अरै छेळ्यां थारी धीरै.. चालै..,तू क्यूं जाय फुदकती

मूंनै.. बता तो दै.. तू कांईं बात उछळती कइयां जा..री.. ।

स्त्री टोकै.. क्यूं डाकीड़ा मूंनै.., तेरो कांईं ले..री 2

मेरो मन खैइयां भी उछळै ट.र्रै...

मेरो मन खैइयां भी उछळै ट.र्र...

अरै मेरो मन खैइयां भी उछळै, तू क्यूं मेरो बैरी ?

तू.नै.. कांईं मैं.. बताऊं मन की बा..त

भरतरी कै मे.ळै.. जा..री

.....

पु. अरै. साथ-साथ डोलर हींदा मैं .बैठांगा आपां दोनी 2

अरै ऊपर सैं नीचै.. आतां डर ट.र्रै...

अरै ऊपर सूं नीचै.. आतां डर ट.र्रै...

अरै ऊपर सैं नीचै.. आतां डर लागै..गो तू..नै कोनी

तू..नै दिलाऊं चुटीलो, बिंदी, टीक चा..लबा..दै.. मे..ळा.. मैं

स्त्री सरकस भी देखूंगी मैं तो, सरबत भी पीऊंगी 2

अरै पोड़र, काजळ, टीकी, बिंदी ट.र्रै... अरै पोड़र, काजळ, टीकी, बिंदी ट.र्रै...

अरै पोड़र, काजळ, टीकी बिन्दी सारी चीजां ल्यूंगी

अब तो चालूंगी थांवळी.. सा..थ भरतरी का मे..ळा.. मैं..

पु.-स्त्री म्हे तो जा..र्या छां दोन्यूं का दोन्यूं सा..थ

रेवड तू ले आ..जे.

सहेली थे तो उदळो अब दोन्यूं का दोन्यूं सा..थ ,

मैं भी जा सब खै द्यूंगी,

अरै ट.रैं... अरै ट.रैं... अरै टर र र र र र र ट.रैं...

गीत की पृष्ठभूमि

व्यक्ति विशेष के जीवन में उसका अतीत उसके जीवन की एक ऐसी निधि है जिसका अन्य कोई विकल्प नहीं हो सकता। अक्सर यह देखने में आया है कि जो व्यक्ति अपने अतीत और विगत की स्मृतियों को अपने अन्तर में संजोये हुए अपने कर्मपथ पर अग्रसर रहता है वह जीवन में शीर्ष स्थान पर पहुंचता है क्योंकि उसका विगत उसकी प्रेरणा बनकर उसके साथ रहता है।

व्यक्ति की किशोरावस्था उसके जीवन का एक ऐसा पडाव है जहां पर वह अपने मित्रों से निश्छल भाव से सम्पर्क में रहता है और इस काल के ये सम्पर्क सूत्र उसे आजन्म विगत की स्मृतियों से बाँधे रखते हैं। व्यक्ति भले ही कालचक्र के पथ पर प्रकट में अपने आपको विगत से कितना ही दूर पाये परन्तु सही मायने में तो वह अपनी किशोरावस्था, उसमें अपने साथियों के साथ किये गये क्रियाकलाप, इन सबको तनिक भी नहीं भूल पाता और गाहे बगाहे ये स्मृतियां ही उसे संजीवनी प्रदान कर जीवन में सच्चा सुख प्रदान करती हैं।

गीत का भावार्थ -

किशोरवय का एक युगल जंगल में भेड-बकरियां चरा रहा है। लड़की के पास बकरियों का एवं लड़के के पास भेड़ों का रेवड (समूह) है। दोपहर ढ़लने का समय है। लड़की अपने रेवड को चरता हुआ छोड़कर उछलती-कूदती कहीं जा रही है। लड़का उस लड़की से वह प्रेम करता है और उसकी हर गतिविधि में संलग्न रहना चाहता है। वह उस लड़की से पूछता है कि तुम्हारे मन की बात तो बता दो कि तुम अपने इस रेवड़ को यों ही चरता हुआ छोड़कर समय से पूर्व ही कहां जा रही हो।

लड़की भी लड़के से प्रेम करती है। वह अपने मन की हर बात उसे बतलाना भी चाहती है। वह प्रकट में एक बार तो उसे कहती है कि मैं कहां जा रही हूँ तुम्हें क्यों बताऊं, परन्तु दूसरे ही क्षण उसे बता देती है कि मैं तो भरतरी का मेला देखने जा रही हूँ। लड़का उसके साथ मेले में जाने का लोभ संवरण

न कर पाया अत: उसे कहता है कि अभी तो मेले में भीड़-भाड़ अधिक है इसलिये अकेली जाओगी तो बदमाश लड़के तुम्हारे साथ छेड़ छाड करेंगे। भीड़ कम हो जाने दो और तब मैं तुम्हारे साथ चलकर तुम्हें ठीक से मेला दिखा दूंगा।

उसके मन की थाह पाने के उद्देश्य से लड़की अपने मित्र से कहती है कि मैं तो अपनी बकरियों का रेवड ही तुम्हारे भरोसे छोड़कर जा रही हूँ, फिर तुम्हारी भेड़ और मेरी बकरियों को घर कौन लायेगा? और वैसे भी मैं तो अपनी सहेलियों के साथ जाऊंगी, तुम औरतों में वहां मेरे साथ जाते हुए अच्छे थोड़े ही लगोगे ।

अब कोई अन्य रास्ता न पाकर उसका मित्र उसे प्रलोभन देता कि देखो यदि मेरे साथ मेला देखने चलोगी तो मैं तुम्हें पाउडर, काजल, टीकी-बिन्दी आदि सभी चीजें दिलवाऊंगा और डोलर हींदे (आसमानी झूले) में बैठाकर मौजी भी खिलाऊंगा। उसकी इस बात पर वह लड़की उससे कहती है कि ठीक है मैं तुम्हारे साथ चली तो चलूंगी परन्तु इन सबके अलावा मुझे सरकस भी दिखाना पड़ेगा और शरबत भी पिलाना पड़ेगा।

और तब अपनी भेड़ बकरियों को एक अन्य लड़की के भरोसे छोड़कर वे दोनों प्रेमी टर्रै-टर्रैकरते हुए मेला देखने चल पड़ते हैं।

इस प्रकार यह गीत स्त्री-पुरुष के प्रेम को गहराई से अभिव्यक्त करता है।

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

×				०				×				०			
सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	नि़	प़	नि़	नि़	सा	सा-	सा-	सा
अ		र	र	र	र	र	र	र	हो	ळ्यां	हो	ळ्यां	चा	लभा	ऽय	ली
नि़		प़-	नि़	नि़	प़	प़	-	-	सा	सा	प़		प़	सा	- प़	प़
ता		वळ	क	इयां	क	र	री	ऽ	छे	ळ्यां	था		री	धी	रै चा	लै
प़		-	-	-	रे	-	-	सासा								
ट		ऽ	ऽ	ऽ	रैं	ऽ	ऽ	अरै		× 2						

सा	सा	प़	प़	सा–	–सा	प़	प़	प़	–	–	–	रे	–	– मग
छे	ळ्यां	था	री	धीऽ	ऽरै	चा	लै	ट	ऽ	ऽ	ऽ	रैं	ऽ	ऽ अरै
ग	ग	ग	ग	ग	–	सा	रे	ग	ग	सा	सा	सा	सा	सा रे
छे	ळ्यां	था	री	धी	रै	चा	लै	तू	क्यूं	जा	यफु	द	कती	मूंनै
ग	ग	रे	सा	सा	–	सा	रे	ग	–	रे	सा	सा	सा	सा –
ब	ता	तो	दै	तू	ऽ	कां	ईं	बा	ऽ	त	ऽ	छ	ळ	ती ऽ
सा	सा	सा	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	प	–	– –
क	इयां	जा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ ऽ

अंतरा

सा	ध़	ध़	सा	सा	सा	सा	सा	सा	ध़	ध़	सा	प़	प़	– –
टो	कै	क्यूं	डा	की	ड़ा	मूं	नै	ते	रो	कां	ई	ले	री	ऽ ऽ
ग	ग	ग	ग	ग	ग	सा–	रे	ग	ग	रे	सा	सा	सा	सा रे
मे	रो	मन	खै	इयां	भी	उछ	ळै	तू	क्यूं	मे	रो	बै	री	तू नै
सा	रे	ग	ग	रे	सा	सा	–	ग	–	सा	सा	सा	सा	सा सा
कां	ईं	मैं	ब	ता	ऊं	मन	की	बा	ऽ	त	भ	र	त	री कै
सा	–	सा	सा	सा	–	–	–							
मे	ऽ	ळै	जा	री	ऽ	ऽ	ऽ							

शेष अंतरे इसी तरह गाए जायेंगे।

यह शृंगार रस पर आधारित है। स्थाई में विशेष शब्द **टरैं** का प्रयोग हुआ है। यह गीत शुद्ध स्वरों पर आधारित है, कहीं कहीं भोपाली राग का आभास लगाता है। पश्चिमी राजस्थान की प्रचलित लोक धुनों की तरह इसकी धुन है। गीत मन्द्र एवं मध्य सप्तक में गाया गया है। इसमें कहीं कहीं राग तिलक कामोद की छाया भी है। गीत कहरवा ताल में निबद्ध है।

षष्ठ अध्याय

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का प्रयोग : विभिन्न आयाम

(।) वैयक्तिक प्रयोग

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सर्वाधिक प्रयोग कैलाश जी ने स्वयं किया है।

'.....डॉ. शर्मा ने अपना पहला ढूंढाड़ी गीत 'टरैं' भरतपुर में सन् 2003 में उस समय लिखा तब वे अपनी कत्थक नृत्य की शिष्या रीना शर्मा के घर पर बैठे हुए थे। रीना उन दिनों शर्मा जी से कत्थक नृत्य सीख रही थी।

उनका यह प्रथम गीत बाद में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनके स्वयं के द्वारा रवीन्द्र मंच जयपुर के मुख्य सभागृह में प्रस्तुत किया गया। इसमें संगीत निर्देशन आप स्वयं का था। तबला संगत श्री गुलाम गौस खां एवं हारमोनियम पर श्री गुलजार हुसैन ने संगत की थी। इस प्रभावशाली एवं मधुर गीत की कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध दर्शकों, कलाकारों एवं संगीतज्ञों ने ख़ूब प्रशंसा की।

इससे उत्साहित होकर डॉ. शर्मा अन्तर की गहराई एवं मनोयोग से कुछ नये गीतों की रचना करने लगे और कैसेट की रिकॉर्डिंग से पूर्व इन गीतों की संरचना के सांगीतिक पक्षों में सुदृढ़ता लाने हेतु समय-समय पर इनका मंचीय प्रस्तुतीकरण भी करते रहे। इस उद्देश्य हेतु उन्होंने अपने नाटकों के संवादों में संशोधन-परिवर्धन करते हुए इन गीतों को नृत्य के माध्यम से समाविष्ट किया जिनका सर्वप्रथम प्रस्तुतीकरण उन्होंने अपने नाटक, तुक्के का बादशाह एवं आधुनिक यमलोक में किया। उन्होंने अपनी शिष्या रीना शर्मा की बी.डांस की प्रायोगिक परीक्षा हेतु अपने गीतों पर आधारित नृत्यों को कत्थक नृत्य में मिश्रित कर नई बन्दिशों के साथ उसको नृत्य तैयार कराये जिसके परिणामस्वरूप रीना ने इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की बी.डांस परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शर्मा जी के प्रथम गीत 'टरैं' ने सुरसंगम, जयपुर संस्था द्वारा आयोजित 19वीं अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में भरतपुर इकाई में प्रथम स्थान प्राप्त किया और प्रतिभागियों को इस गीत को जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में प्रस्तुत करने एवं जयपुर दूरदर्शन में रिकॉर्डिंग कराने का

भी अवसर मिला।.....

..... 'त्रिवेणी कैसेट' का ताना-बाना भरतपुर शहर में ही बुना गया क्योंकि उन दिनों गीतकार अपनी बैंक-सेवा में वहां कार्यरत थे। वर्ष 2003 से 2006 की समयावधि में डॉ. कैलाश जी ने भरतपुर की कई छात्राओं एवं महिलाओं को इन नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों को गाने हेतु प्रेरित किया। परन्तु ब्रजभाषी क्षेत्र के उन पर प्रभाव के कारण कई ढूँढाड़ी गीतों का तो उनमें से कोई भी शुद्ध उच्चारण तक न कर सकी। अत: गीतकार वहां की ऐसी प्रतिभाओं को खोजने में लगे रहे जो उनके गीतों को शुद्ध ढूँढाड़ी लहजे में गा सके।' [1]

इसी क्रम में कैलाश जी ने अपनी कइ शिष्याओं को अपने इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। भरतपुर की डॉ. सुधा तिवारी, अपनी कत्थक नृत्य की शिष्या रीना शर्मा, सुनीता कुमारी, बड़ा नगला इटामड़ा की अलका, माधुरी, पद्मिनी, कल्पना धाकड, ग्राम मैड़ के बाबू लाल शर्मा, भादवा जिला जयपुर की माधुरी गुप्ता, जयपुर की ऋचा पन्त, लक्ष्मी शर्मा, सूफिया इरम एवं सहीफा इरम सिद्दीकी, शिल्पा दिनोदिया, लक्ष्मी खण्डेलवाल, सिरोही की गंगा कलावंत आदि को आपने अपने इन गीतों को मनोयोग से सिखाया।

'....इस सम्बन्ध में उनकी शिष्या ज्योति कटारा का सन्दर्भ देना इस समीक्षा को गुणवत्ता प्रदान करना होगा जिसका वर्णन शर्मा जी के संस्मरण 'नाट्य निर्देशन का एक अविस्मरणीय संस्मरण' में किया गया है। ज्योति कटारा ने कवि के भरतपुर प्रवास काल में उनसे संगीत, नाटक एवं नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया और रवीन्द्र मंच, जयपुर पर उनके साथ प्रस्तुतीकरण भी दिया। परन्तु शर्माजी द्वारा लिखित ढूँढाड़ी गीतों के लेखन, स्वर संयोजन एवं प्रस्तुतीकरण में ज्योति ने उनका जो साथ दिया और जो प्रेरणा दी वह उनके लिए आज भी अविस्मणीय है। उन्हीं के शब्दों में—

'ज्योति ने मेरे द्वारा लिखे ढूँढाड़ी गीतों पर अपना स्वर देकर एवं उन्हें मेरे साथ नृत्य रूप में प्रस्तुत करके मुझे और गीत लिखने हेतु प्रेरित किया। वह प्रतिदिन मेरे पास आकर गीतों की पृष्ठभूमि एवं भावार्थ पर मनोयोग से ध्यान देती और चर्चा करती। मैं उसे उच्चारण, सुर, ताल एवं लय की जानकारी देता। जब कभी-कभी डाँट भी देता तो उसकी आँखों में आँसू छलक आते परन्तु वह दृढ़तापूर्वक यही कहती कि मैं इस कमी को पूरा करूंगी और उसने अधिकांश गीत सही उच्चारण के साथ गाये। बस अन्त तक भी 'लल्डी' शब्द को शुद्ध रूप में न बोल सकी। 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.'

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 63-64

के अधिकांश गीत मैंने ज्योति के साथ ही तैयार किये। उसमें सीखने की अपूर्व क्षमता थी । वह प्रतिदिन मेरा लिखा हुआ एक गीत तैयार करती और मुझे हर अगले दिन के लिये एक नया गीत लिखने की आवश्यकता महसूस होती। जब उसने मुझसे सीखना प्रारम्भ किया तब तक मैंने केवल पाँच गीत लिखे थे और उसने मुझसे लगभग बारह और गीत लिखवाये तथा मेरे निर्देशन में गाया भी परन्तु मुझे अफ़सोस है कि वह मेरे साथ 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.' में न गा सकी। [1]

इसके बाद कैलाश जी ने मूल रूप से उत्तरांचल निवासी एवं उस समय जयपुर में रह रही अपनी शास्त्रीय गायन की शिष्या कु. ऋचा पन्त को अपने इन नवसृजित गीतों को सिखाना प्रारम्भ किया। वह ढूँढाड़ी बोली न तो समझ सकती थी और न ही बोल सकती थी। ऋचा ने कैलाश जी के निर्देशन में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर केन्द्र से अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई की संगीत विशारद परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की थी तथा अपनी माताजी के साथ कैलाश जी से सीखने आया करती थी। कैलाश जी ने ऋचा को सिखाये जा रहे अपने इन नवीन गीतों की पृष्ठभूमि, रस, भाव आदि की उसे गहन जानकारी देने के साथ ही साथ अपने तरीके से लल्डी, छेळी जैसे शब्दों का उच्चारण सिखाया और अन्ततः ऋचा ने 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.' हेतु कैलाश जी के साथ सफलतापूर्वक गाया जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2007 में जयपुर के वरिष्ठ तमाशा कलाकार स्व. श्री गोपी जी भट्ट के करकमलों से रवीन्द्र मंच, जयपुर के मुख्य सभागृह में 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.' का लोकार्पण हुआ।

डॉ. शर्मा जी ने अपने नाटक 'लड़ी मैड़ की' के 26 दिसम्बर 2006 को रवीन्द्र मंच जयपुर पर किये गये प्रस्तुतीकरण में 11 ढूंढाड़ी गीतों को समाविष्ट किया था जिनमें ग्राम मैड़ अंचल के विभिन्न देवी-देवताओं की महिमा का बखान किया गया था। इन देवताओं में श्री सियावरजी (राम, लक्ष्मण, सीता) हनुमानजी, भैरुंजी भोम्याजी, शिवजी आदि प्रमुख हैं। असल में 'लड़ी मैड़ की' नाटक संगीत एवं काव्य से भरपूर एक ऐसा सशक्त कथानक है जिसमें शर्मा जी ने अपनी जन्मभूमि ग्राम मैड़ के आसपास स्थित विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों, व्यक्तियों, खान-पान, रीति-रिवाज, बोली-भाषा

1 **डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा : कुछ कुछ यादें (प्रकाशनाधीन)**

,वार-त्यौंहार, देवी-देवताओं आदि का सजीव चित्रण किया है जिसे स्पष्ट करने हेतु बैकग्राउण्ड में गीतों की कैसेट चलाई गई और उस गीत विशेष की थीम को स्पष्ट करने हेतु अभिनेताओं द्वारा जीवन्त अभिनय किया गया।

'.....28 दिसम्बर 2008 की रात्रि। सात बजे से नौ बजे तक का दृश्य। स्थान रामनिवास बाग, जयपुर के भव्य और विशाल रवीन्द्र मंच के मुख्य सभागृह का स्टेज। ..... जिस नाटक का मंचन चल रहा था वह था 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। तीन कलाकार उसमें अभिनय कर रहे थे, एक युवती और दो पुरुष। नाटक मैड़-विराटनगर अँचल की संस्कृति एवं लोक जीवन पर आधारित था। महाभारतकालीन विराटनगर का भू-भाग ही मैड़ है। पार्श्व संगीत (प्लेबैक संगीत) की व्यवस्था थी। 6-7 गीतों का परिस्थितिजन्य समावेश। सभी ढूँढाड़ी में। जीवन्त अभिनय के साथ नाटक बहुत प्रभावशाली और रोचक था। कलाकार दर्शकों की संख्या से निराश न थे। वे इस प्रकार अभिनय कर रहे थे मानो पूरा हॉल दर्शकों से खचाखच भरा हो। ..... डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा ही वह व्यक्ति थे जो इस नाटक का मंचन कर रहे थे। उन्होंने त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की स्थापना की है। यह संस्था संगीत, नृत्य नाटक और लोक कलाओं के प्रचार-प्रसार, शिक्षा-दीक्षा आदि के लिये कार्यरत है। कोई सरकारी या गैर सरकारी सहायता लिये बिना डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा इसका संचालन कर रहे हैं। संस्था का मुख्य उद्येश्य भारतीय संस्कृति, कला, संगीत आदि के मौलिक रूप को बनाये रखते हुए इनका प्रचार-प्रसार करना तथा पुरातन मूल्यों का प्रसार व संरक्षण करना है। उनकी पुस्तकें भी इसी दृष्टिकोण से लिखी हुई हैं। डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा का यह पुनीत प्रयास स्तुत्य है।'[1]

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा पंजाब नैशनल बैंक में कार्यरत हैं और वे अपनी बैंक सेवा में जहाँ-जहाँ भी कार्यरत रहे वहाँ-वहाँ उन्होंने बिना किसी प्रकार का पारिश्रमिक, शुल्क या मानदेय लिए अपने सैंकड़ों शिष्य-शिष्याओं को संगीत, नृत्य एवं नाटक का प्रशिक्षण प्रदान किया और अपने इन नवसृजित गीतों पर आधारित कत्थक नृत्य मे तोड़े, टुकड़े, तिहाई आदि का सम्मिश्रण कर इस क्षेत्र में अभिनव योगदान दिया। ऐसी ही कत्थक नृत्य की एकल प्रस्तुति उनके स्वयं के द्वारा वरिष्ठ कत्थक नृत्य गुरु श्री मुन्ना शुक्ला के समक्ष वी.एन.भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, गाजियाबाद, तथा संगीत नृत्य के गुरुओं की उपस्थिति में कला भारती अलवर आदि स्थानों परी दी जा चुकी हैं। कैलाश जी

1 सम्पादिका- रेणुका इसरानी : कर्मपथ, (2011), पृ. 27-28

ने पंजाब नैशनल बैंक द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कतिक कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं में अपने इन नवसृजित गीतों की एकल प्रस्तुतियां भी दी हैं। इसके अतिरिक्त कैलाश जी ने वरिष्ठ कत्थक नृत्य गुरु आशा जोगलेकर, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुम्बई के उपाध्यक्ष श्री रघुनाथ केसकर आदि के समक्ष मुम्बई, अहमद नगर आदि स्थानों पर भी अपने इन नवसृजित गीतों की प्रस्तुतियां दी हैं।

2 से 6 दिसम्बर 2011 की समयावधि में डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल मुम्बई की कत्थक नृत्य की अलंकार परीक्षाओं के मुख्य परीक्षक के रूप में मण्डल के वाशी, मुम्बई केन्द्र पर जब प्रायोगिक परीक्षांएं ले रहे थे तो उनके द्वारा अपने ही नवसृजित इन ढूँढाड़ी गीतों पर भाव पक्ष, रस, नायक-नायिका प्रसंग, नवसृजन आदि पर जो कुछ पूछा जा रहा था तथा जिस प्रकार से परीक्षार्थियों की दबी प्रतिभा को उभारने का प्रयास किया जा रहा था उससे परीक्षा केन्द्र पर उपस्थित देश के विभिन्न भागों से आये अन्य परीक्षकों में कौतूहल मिश्रित हलचल सी होने लगी। इस दौरान कैलाश जी ने उन सभी की उपस्थिति में अपने गीतों पर आधारित नृत्य प्रस्तुत करके इन गीतों की प्रभावशीलता को सिद्ध किया। कैलाश जी के इस प्रस्तुतीकरण से प्रभावित होकर वहां पर उपस्थित नृत्य गुरु डॉ. मंजिरी देव, मुक्ता जोशी, लता बकालकर, मेघा दिवेकर, जाम नगर से आई कैलाश जी की सह परीक्षक स्वाति मेहता आदि ने मुक्त कण्ठ से उनके गीतों की प्रशंसा करते हुए यह अनुरोध किया कि यदि वे अपने इन गीतों पर आधारित कत्थक नृत्य संरचना की अलग से एक पुस्तक प्रकाशित करा सकें तो नृत्य के विद्यार्थियों को बहुत सहायता मिलेगी, क्योंकि कत्थक नृत्य में उपलब्ध ठुमरी, गीत, भजन आदि की संख्या सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। यह सब डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों की प्रभावशीलता को सिद्ध करता है।

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी द्वारा अपने पुत्र अभिषेक के विवाह अवसर पर 9 व 10 मार्च 2011 को ब्याण-ब्याई की गालियों के रूप में अपने गीत टर्रै, पचन, चिरमी आदि पर प्रथम बार प्रस्तुति देकर हमारी इस संवेदनात्मक परम्परा की निधि में अक्षय योगदान दिया है। इस हेतु उन्होंने अपने इन गीतों के मूल शब्दों में जो परिवर्तन किया वह उनकी रचनाधर्मिता को सिद्ध करता है-[1]

टर्र

पु. अरररररर....

होळ्यां होळ्यां चाल **ब्याण जी** [1], तावळ कइयां कररी, क

छेळ्यां थारी धीरै.. चालै ट.र्र...

अरै छेळ्यां थारी धीरै.. चालै ट.र्र...

अरै छेळ्यां थारी धीरै.. चालै..,तू क्यूं जाय फुदकती

मूंनै.. बता तो दै.. तू कांईं बात उछळती कइयां जा..री.. ।

स्त्री टोकै.. क्यूं **ब्याई जी** [2] मूंनै.., तेरो कांईं ले..री 2

मेरो मन खैइयां भी उछळै ट.र्र...

मेरो मन खैइयां भी उछळै ट.र्र...

अरै मेरो मन खैइयां भी उछळै, तू क्यूं मेरो बैरी ?

तू.नै.. कांईं मैं.. बताऊं मन की बा..त

भरतरी कै मे.ळै.. जा..री

.....

..

पु.-स्त्री म्हे तो जा..र्या छां दोन्यूं का दोन्यूं सा..थ

रेवड तू ले आ..जे.

सहेली थे तो उदळो अब दोन्यूं का दोन्यूं सा..थ ,

ब्याई जी नै म्हे खै द्यांगा [3]

अरै टर्र अरै टर्र अरै टररररररर ट.र्र..

1 . मूल शब्द 'भायली' 2 . मूल शब्द 'डाकीडा'

3 . मूल शब्द 'मैं भी जा सब खै द्यूंगी'

पचन

स्थाई पुरुष पचन उठै छै रै पचन उठै छै

थानै [1] देखतां ही **ब्याणयाओं** [2] पचन उठै छै

स्थाई स्त्री पचन उठै छै रै पचन उठै छै

थानै देखूं जद ब्यायाओं [3] पचन उठै छै

1 स्त्री भाळ चालै सीळी सीळी पेड़ करीं फर्र फर्र

पीहो पीहो मोर्‌या बोलीं कोयल की कूक सूं

म्हारा [4] तन मन मैं पचन उठै छै + स्थाई पु.

2 पुरुष डूंगर मैं फोड भाटा नीचै जद उतर्‌यो

लहरातो देख्यो **ब्याणां थांको जी**[5] लहरियो

म्हांका [6] तन मन मैं पचन उठै छै + स्थाई स्त्री

3 पेड़ का गट्‌टा कै माळै **ब्याण-ब्याई** [7] बैठ्‌या

नजर्‌यां उठी-मिली बैठ्‌या जद देखीं

सारां ही का [8] मन मैं पचन उठै छै + स्थाई को.

4 गट्‌टा कै नीचा सैं ब्हैवै धार पाणी की

ब्याणां म्हांकी[9] पगां नै जद पाणी मैं गेर्‌या

सर सर व्हैबा सूं पचन उठै छै + स्थाई को.

(।) संस्थागत प्रयोग

1. त्रिवेणी कला संगम, जयपुर और डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल नवसृजित ढूँढाड़ी गीत

भारतीय संगीत, नाटक, लोक कलाओं आदि की मौलिकता को बनाये रखते हुए इनकी चहुँमुखी प्रगति के उद्येश्य से वर्ष 1995 की गणेश चतुर्थी के दिन डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा श्रीमती रेनू रानी शर्मा के सहयोग से इस संस्था की स्थापना की गई जिसमें संगीत एवं नृत्य की कक्षाओं का आयोजन किया गया। संस्था को आगे चलकर अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुम्बई की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं का केन्द्र मिलने के साथ ही साथ आगे चलकर राजस्थान

1. मूल शब्द 'जाबाळी' 2. मूल शब्द 'जाबाळा' 3. मूल शब्द 'जद'

4. मूल शब्द 'दोन्यूं जणां' 5. मूल शब्द 'गोरडी'

संगीत नाटक अकादमी, रवीन्द्र मंच समिति जयपुर आदि से भी सम्बद्धता मिली। इस संस्था में जयपुर के तमाशा कलाकार स्व. श्री गोपीकृष्ण भट्ट, वरिष्ठ कथक नृत्य गुरु स्व. श्री माँगी लाल पँवार, श्री गिरधारी महाराज, उ. निसार हुसैन, डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, स्व. डॉ. योजना शर्मा आदि के द्वारा गायन, वादन, नृत्य एवं नाट्य का शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आगे चलकर वर्ष 2001 में संस्था द्वारा अलग से त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय, जयपुर की स्थापना की गई जिसे इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से मान्यता दिलवाकर बी.डान्स डिग्री एवं विद डिप्लोमा तक की कक्षाओं का संचालन कर परीक्षाओं का आयोजन किया गया।

मानसेवी प्राचार्य एवं नृत्य-नाट्य गुरु के रूप में डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा अपने मैड़ विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के विभिन्न मायनों में प्रयोग किये हैं। उनके प्रथम गीत 'टर्रै' की प्रथम प्रस्तुति उनके द्वारा त्रिवेणी कला संगम, जयपुर के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में रवीन्द्र मंच जयपुर के मुख्य सभागृह में दी गई थी। इसमें संगीत निर्देशन आप स्वयं का था। तबला संगत श्री गुलाम गौस खां ने एवं हारमोनियम पर श्री गुलजार हुसैन ने संगत की थी। इस प्रभावशाली एवं मधुर प्रस्तुति की कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध दर्शकों, कलाकारों एवं संगीतज्ञों ने ख़ूब प्रशंसा की।

वर्ष 2004 से 2011 की समयावधि में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की ओर से आयोजित देश के विभिन्न स्थानों पर संस्था द्वारा, नाटक, लड़ी मैड़ की , कार्यवाहक हलवाई , मन चंगा तो कठौती में गंगा , आधुनिक यमलोक, मेरी लाडो पढ़ेगी आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया जिसमें कैलाश जी के कई ढूँढाड़ी गीतों पर आधारित नृत्यों का समावेश किया और इन अभिनव प्रयोगों को नाट्य जगत् में पर्याप्त मान्यता मिली। आगे चलकर भरतपुर में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की ओर से आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में कैलाश जी के साथ ज्योति कटारा ने कुछ गीतों पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुति दी थी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महारानी श्री जया महाविद्यालय भरतपुर के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध चित्रकार डॉ. रमेश चन्द्र वर्मा भी उपस्थित थे। वर्ष 2005 में ऐसी ही एक प्रस्तुति राजस्थान कला केन्द्र भरतपुर तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के आयोजित एक सम्मान समारोह में भी दी गई। सिटी चैलन भरतपुर द्वारा टाउन हॉल भरतपुर से किये गये एक सीधे प्रसारण में भी कैलाश जी द्वारा अपने गीतों की प्रस्तुति दी गई जिसे भरतपुर शहर में कैलाश जी के इन नवसृजित

ढूँढाड़ी गीतों ने धूम मचा दी। वर्ष 2002 से 2006 की समयावधि के बीच त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की ओर से भरतपुर जिले के बड़ा नगला में संगीत, नृत्य एवं नाट्य के शिविरों के आयोजन किये गये जिनमें आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं समापन समारोहों में कैलाश जी के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों पर आधारित प्रस्तुतियों ने ग्रामवासियों का मन मोह लिया जिससे प्रेरित होकर गाँव की लड़कियों के समूह कैलाश जी से इन गीतों पर आधारित नृत्य सीखने हेतु भरतपुर जाने लगे और कैलाश जी का वहां का आवास एक गुरुकुल के रूप में प्रसिद्ध हो गया। विद्यार्थी दिन रात वहीं रहते, वहीं खाना बनाते-खाते और कैलाश जी से संगीत एवं नृत्य सीखते। आगे चलकर यहां के प्रशिक्षणार्थियों ने त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की ओर से आयोजित रवीन्द्र मंच, जयपुर के विभिन्न कार्यक्रमों भी अनेक बार प्रस्तुतीकरण दिया और सुर संगम जयपुर की ओर से आयोजित एक प्रतियोगिता में भी कैलाश जी के इन नवसृजित गीतों को प्रस्तुत कर यहां की लडकियों ने न केवल भरतपुर संभाग पर प्रथम स्थान प्राप्त किया अपितु जयपुर दूरदर्शन एवं जवाहर कला केन्द, जयपुर जैसे स्थानों पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कैलाश जी के इन गीतों की समृद्धता को पुष्ट किया।

वर्ष 2005 में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की गतिविधियों का अवलोकन करने हेतु इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय का एक दल जयपुर आया था जिसके समक्ष कैलाश जी के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों पर आधारित प्रस्तुतियों से इस दल के सदस्य डॉ. टी. उन्नीकृष्णन, डॉ. माण्डवी सिंह, एवं कुलसचिव पं. सरदार सिंह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इन गीतों को विश्वविद्यालय के लोकसंगीत के पाठ्यक्रम में शामिल कराने की मंशा भी जतायी। आगे चलकर वर्ष 2007 में जयपुर के वरिष्ठ तमाशा कलाकार स्व. श्री गोपी जी भट्ट के करकमलों से रवीन्द्र मंच, जयपुर के मुख्य सभागृह में 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.' का लोकार्पण हुआ जिसमें कैलाश जी के कुल ग्यारह नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों को समाहित किया गया था।

2. दूरदर्शन-टी.वी. चैनल एवं डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा ने वैयक्तिक तौर पर अपने नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का विभिन्न नवीन सन्दर्भों में प्रयोग किया है जिससे प्रभावित होकर वर्ष 2005 में सिटी चैलन भरतपुर द्वारा टाउन हॉल भरतपुर से कैलाश जी के कुछ नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सीधा प्रसारण किया गया।

वर्ष 2004 में रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय, भरतपुर की छात्राओं द्वारा कैलाश जी के नाटक 'तुक्के का बादशाह' का उनके ही निर्देशन में ब्रजभाषा में प्रस्तुतीकरण किया गया जिसमें भी उनके इन गीतों का प्रयोग किया गया था। आगे चलकर इस प्रस्तुति को भरतपुर के सिटी चैनल द्वारा कई बार प्रसारित किया गया।

श्री संजय दत्त माथुर के निर्देशन में 27 जुलाई 2008 को जयपुर दूरदर्शन के 'कल्याणी' धारावाहिक की गाँव मैड़ में की गयी रिकॉर्डिंग में कैलाश जी ने मैड़ गाँव का इतिहास बताते हुए अपने कुछ नवसृजित गीतों की सराहनीय प्रस्तुति की। जयपुर दूरदर्शन के इस कार्यक्रम के अनेक बार किये गये प्रसारण को काफी सराहना मिली।

18 नवम्बर 2009 को श्री शैलेन्द्र उपाध्याय के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'मरूधरा' कार्यक्रम में डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों में ग्राम्य जीवन एवं दर्शन सम्बन्धी उनके साथ हुई प्रभावशाली वार्ता के 16 दिसम्बर 2009 को हुए प्रसारण को काफी सराहना मिली।

डॉ. वासुदेव शर्मा के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में 'नाट्यकला का व्यक्तित्व निर्माण में योगदान' विषय प्रसारित किये गये डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के साक्षात्कार के 20 फरवरी 2010 को हुए प्रसारण को भी दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया। इस कार्यक्रम में डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा नन्हीं दुनिया कार्यक्रम के सहभागियों को अपने नाटकों में किये गये उनके इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के विभिन्न प्रयोगों की जानकारी दी गई जिससे वर्तमान पीढ़ी को इन गीतों की उपादेयता के बारे में पता चला।

5 फरवरी 2011 को डॉ. वासुदेव शर्मा एवं श्री राजकिशोर के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के 'मेरी लाड़ो पढ़ेगी' नाटक का प्रसारण हुआ जिसमें कैलाश जी के त्रिवेणी कैसेट-सी.डी. के गीत- 'जडूला' का पार्श्व गीत के रूप में विभिन्न दृश्यों में उपयोग किया गया तथा नट की भूमिका में कैलाश जी ने श्री सियावर जी का मन्दिर में हो रहे भजनों के दृश्य में स्वयं ही हारमानियम बजाकर अपने नवसृजित गीत 'भाई का जन्म' को प्रस्तुत किया। यह नाटक कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित था तथा इसमें डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के कई नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों की प्रतिच्छाया एक साथ दिखलायी देती है।

3. शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रयोग

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का विभिन्न शिक्षण संस्थाओं द्वारा अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगीत एवं नाटक के पाठ्यक्रम, परीक्षाओं आदि में समय-समय पर प्रयोग किया जाता रहा है। ऐसे कार्यक्रमों के प्रयोग चाहे वे उनकी त्रिवेणी कैसेट-सी.डी. के गीतों के प्रयोग के रूप में हों या अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ आदि की संगीत एवं नृत्य की परीक्षाओं में प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा हों, या फिर उनके गीतों पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियों में हों, दर्शकों एवं श्रोताओं द्वारा सराहे गये हैं।

कैलाश जी रंगमंच के एक कुशल कलाकार भी हैं और इस नाते उन्होंने कई वर्ष तक राजस्थान विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग में एम.ए. के विद्यार्थियों को अतिथि संकाय के रूप में 'आधुनिक रंगमंचं' विषय पढ़या है। अपने इस शिक्षण-प्रशिक्षण काल में उन्होंने सदैव ही अपने इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का प्रयोग किया है। विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग में अपने इस शिक्षण कार्य के दौरान ही कैलाश जी ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के नाटक विषय के पाठ्यक्रमानुसार 'भारतीय रंगमंच शास्त्र एवं आधुनिक रंगमंचं' नामक पुस्तक का लेखन किया जिसे आगे चलकर जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में भी कैलाश जी के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के नृत्य एवं नाट्य में किये गये नव प्रयोगों को समाहित किया गया है।

1. साहित्य में प्रयोग

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी एक कवि, नाटककार, कहानीकार एवं उपन्यासकार भी हैं और साहित्य की अधिकांश विधाओं पर उनकी लेखनी ने कमाल दिखाया है । उनकी दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हैं परन्तु उन्होंने गीत लिखना वर्ष 2003 में ही प्रारम्भ किया अत: इससे पूर्व उनके साहित्य में गीत परिलक्षित नहीं होते परन्तु उनके काव्य संग्रह 'तरुणाई' में जो कविताएं हैं उनमें गीतों की प्रतिच्छाया परिलक्षित होती है। परन्तु उन्होंने अपना प्रथम गीत अपनी कविता 'कूवा को मींडको' के वर्ष 2002 में भरतपुर के पत्र 'नवयुग सन्देश' में प्रकाशन से प्रोत्साहित होकर ही लिखा और फिर तो उन्होंने पीछे मुडकर ही न देखा। उन्होंने अपनी गीतों की पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' का अन्तिम गीत 'मींडकड़ो' 13 सितम्बर 2011 को महाराष्ट्र के जलगाँव शहर में लिखा और संयोग यह कि इस

कविता और इस गीत की मूल कथावस्तु एक समान है।

कैलाश जी ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक परिदृश्य में मानव संसाधन विकास एवं प्रबन्धन' में अपने प्रथम गीत 'टर्रै' को बडा नगला इटामडा में की गई नाट्य प्रस्तति के छाया चित्र सहित स्थान दिया है। यह पुस्तक पंजाब नैशनल बैंक की मौलिक पुस्तक लेखन योजनान्तर्गत पुरस्कृत है तथा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के एम.काम., एम.ए.-मनोविज्ञान, एलएल.बी., एम.बी.ए. आदि पाठ्यक्रमों में संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोग में लायी जा रही है। कैलाश जी की पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' इनके सम्पूर्ण गीतों का दर्पण है और राजस्थान के मैड़-विराट अँचल की हर साँस, हर गति, काल, परिस्थिति, इतिहास, जाति, धर्म आदि को अपने अंतर में संजाये जाने के स्वरूप इस अँचल की भागवत जी के समान है। डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी के नाटक 'लड़ी मैड़ की', 'मोती मैड़ के', 'देख जात के ठाठ', 'मेरी लाड़ो पढ़ेगी', 'कार्यवाहक हलवाई', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', 'मानवता की पुकार' आदि में तो उनके इन नवसृजित गीतों को भरपूर मात्रा में देखा जा सकता है।

****

उपसंहार

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में वर्तमान मैड़-विराटनगर अँचल, अर्थात् मत्स्य देश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मत्स्यजनों का प्राचीनतम उल्लेख ऋगवेद, शतपथ ब्राह्मण तथा मनु स्मृति में मिलता है। महाभारत में तो मत्स्य देश का विस्तृत उल्लेख मिलता है। महाभारत के विराट पर्व में इस क्षेत्र बारे में पूरी जानकारी मिलती है। इसी युग में वर्तमान जयपुर, दौसा, भरतपुर तथा अलवर जिलों के आस-पास का भू-भाग मत्स्य देश और विराट नगर इसकी राजधानी के रूप में पहचाना जाने लगा। महाभारत के विराट पर्व के अनुसार इस स्थान पर पाण्डवों ने अज्ञातवाश किया था। संस्कृत तथा पाली के प्रमुख प्राचीन ग्रंथों में मत्स्य देश का उल्लेख मिलता है। चीन का प्रसिद्ध धर्म यात्री ह्वेनसांग 7 वीं शताब्दी में विराट नगर आया था तथा अलवर जिले के नारायणपुर, जोधपुरा आदि गाँवों का भ्रमण किया। इस क्षेत्र का विस्तृत विवरण उन्होंने अपने लेख में दिया है। मत्स्य देश की संस्कृति की जानकारी, खोज तथा उत्खनन कार्य बीजक की पहाड़ी अशोक कालीन बौद्ध विहारों के माध्यम से देखा जा सकता है।

वैदिक व पौराणिक उल्लेखों से स्पष्ट है कि आर्यों की मूल बस्तियां हसद्वती व सरस्वती नदियों के मध्य में थी, जो आर्यावर्त का पर्याय था। इसी सरस्वती के किनारे न केवल आश्रमों में आरंभिक वैदिक ऋचाओं की रचना की गई बल्कि प्रारम्भिक आर्य नरेशों द्वारा अनेक वैदिक यज्ञ भी किये गये थे। इनमें मत्स्य नरेश ध्वसन द्वैतवन द्वारा इस सरोवर के किनारे किया गया यज्ञ भी प्रमुख था। ऐल (चन्द्रवंशी) तुर्वसु द्वारा यज्ञ करने के लिये आवश्यक धनोपार्जन हेतु मत्स्यों पर आक्रमण करने का उल्लेख भी मिलता है। वाल्मिकी रामायण में जहां भारत के कैकेय देश से अयोध्या आने के प्रसंग में सरस्वती के दक्षिणी किनारे पर मत्स्य की अवस्थिति का वर्णन है, वहीं मत्स्य नरेश विराट की राजधानी विराट नगर में पाण्डवों द्वारा एक वर्ष अज्ञातवाश का भी उल्लेख मिलता है। उस समय में उत्तरी भारत अनेक राज्यों में बँटा हुआ था। बौद्ध साहित्य में उस युग के 16 महाजनपदों के नाम मिलते हैं, जिनमें काशी, कौशल, मगध, चेदी, कुरू, पांचाल, अवंति, गंधार आदि के साथ मत्स्य और शूरसेन के नाम भी हैं। मत्स्य महाजनपद की राजधानी विराटनगरी अर्थात् बैराठ थी और शूरसेन की मथुरा। पुराणों के अनुसार प्राचीन काल में इस देश पर महर्षि कश्यप की स्त्री दिति से उत्पन्न हुए वीर पराक्रमी हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु के राज्य का पता चलता है।

महाभारत को विद्वानों ने पाँचवां वेद माना है। भारत के विषय में स्वयं वेदव्यास का कथन है, 'यन्नेहास्ति न तत्क्वचित' इसी महाभारत के चौथे और पाँचवें- विराट और उद्योग- पर्वों की लीला-स्थली यही है। द्रौपदी पर आसक्त होने वाले विराट नरेश के साले तथा सेनापति वीरवर कीचक का वध भीमसेन के हाथों वर्तमान ग्राम मैड़ के समीप ही हुआथा। विराट साम्राज्ञी सुदेष्णा के भाई कीचक का गुप्त रूप से वध किये जाने से पूरे देश में आतंक फैल गया था। कीचक के सम्बन्धी उसकी अन्त्येष्टी करने के लिए कीचक के निवास ग्राम मैड़ के समीप स्थित वर्तमान श्री सियावरजी एवं राधाकान्जी के मन्दिर के मध्य के विशाल श्मशान की ओर जा रहे थे। उन्होंने कीचक के शव के साथ ही द्रौपदी को भी सैरन्ध्री के रूप में जलाने के लिये बाँध दिया था। सैरन्ध्री करुण क्रन्दन कर रही थी। भीमसेन उसे बचाने के लिये इस स्थान पर आाये। शरीर पर कीचड़ आदि मलने के लिए जल का अभाव था । उन्होंने निकट की गुफा में अपने वस्त्रों को रखकर तथा शरीर पर कीचड़, मिट्टी मलकर हुंकार भरी और सिंह गर्जना करते हुए श्मशान भूमि में कूद पड़े। कीचक के सैंकड़ों परिजनों का वध करके जिस चमत्कारिक रूप से उन्होंने द्रौपदी की रक्षा की वह कहानी भी मैड़-विराट अँचल की एक सम्पदा है। पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास के एक वर्ष का समय राजा विराट के यहां नौकर-चाकर बनकर व्यतीत किया था। उस दौरान महान् धनुर्धारी अर्जुन ने वृहन्नला के वेश में राजा विराट की पुत्री उत्तरा को संगीत एवं नृत्य की शिक्षा प्रदान की एवं महाबली भीम पखावज बजाते थे। संभवत: यही कारण है कि वर्तमान मैड़-विराटनगर अँचल में आज भी संगीत यत्र तत्र सुनने-देखने को मिलता है।

पाण्डवों का रहस्य खुलने पर राजा विराट की पुत्री उत्तरा ने अर्जुन के व्यक्तित्व एवं उसकी कला से प्रभावित होकर जब उसके समक्ष विवाह-प्रस्ताव रखा तो अर्जुन ने यह कहकर उसे अपनी पुत्रवधू बनाना स्वीकार किया कि उसने उसे संगीत एवं नृत्य की शिक्षा दी है अत: गुरु होने के नाते वह उसके पिता के समान है। अर्जुन द्वारा उत्तरा को दिया गया यह नीतिगत उपदेश आज भी मैड़-विराट अँचल की धरोहर है।

'अज्ञातवास में जाने से पूर्व पाण्डवों ने अपने धनुष-बाणादि वर्तमान ग्राम मैड़ और विराटनगर के मध्य में स्थित श्री सियावरजी के मन्दिर से कोई दो फर्लांग की दूरी पर बाणगंगा नदी के किनारे स्थित एक शमी नामक वृक्ष पर टांगे थे। यों तो मैड़-विराटनगर अँचल के लगभग हर गाँव में ही देवी-देवताओं के

समक्ष भजन-कीर्तन होते रहे हैं तथा मेलों एवं पर्वों एवं वार-त्यौंहारों पर भी संगीत, नृत्य एवं लोकनाट्यों के आयोजन होते थे परन्तु श्री सियावरजी का मन्दिर ऐसे आयोजनों का प्रमुख केन्द्र रहा है जहाँ पर वहां के महन्त श्री गणेश दास महाराज द्वारा हर शनिवार एवं मंगलवार को हनुमान जी के मन्दिर में भजन-कीर्तन के आयोजन किये जाते थे तथा रामनवमी को आयोजित मेले में संगीत, नृत्य , नाट्य, ख्याल एवं कुश्ती की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी कराया जाता था।' [1]

मैड़ गाँव के निवासी राजस्थान के साहित्यकार एवं रंगकर्मी डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने इस अँचल की इसी विरासत को उभारकर जन-जन तक पहुंचाने के उद्येश्य से न केवल शताधिक ढूंढाड़ी गीतों का सृजन किया, अपितु अपने इन गीतों का नृत्य, नाटक आदि में प्रयोग करके एक अभिनव कार्य किया है। परन्तु कैलाश जी के इन नवसृजित गीतों पर अभी तक किसी भी प्रकार का शोधकार्य नहीं हुआ है अत: मैंने इस विषय को अपने शोधकार्य हेतु चुना।

यह शोध कार्य कुल सात अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में राजस्थान के मैड़-विराट अँचल का पचियात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए वहां की भौगोलिक , ऐतिहासिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि को दर्शाया गया है। द्वितीय अध्याय में मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूंढाड़ी लोकगीतों के बारे में बताते हुए वहां के सन्तों एवं जोगियों द्वारा गाये जाने वाले गीतों को प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में नवसृजन की विस्तृत व्याख्या की गई है। चतुर्थ अध्याय में मैड़-विराट अँचल के नवसृजनकर्ता डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी के व्यक्तित्व-कृतित्व के परिप्रेक्ष्य में उनके नवसृजित गीतों को समग्र रूप में विषय वस्तु के आधार पर संक्षेप में दर्शाया गया है। पंचम अध्याय में इन नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों के प्रयोग को बताया गया है। षष्ठ अध्याय में इन नवसृजित कुछ ढूंढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण करते हुए उनकी स्वरलिपि एवं विषय वस्तु को प्रस्तुत किया गया है। सप्तम अध्याय में विभिन्न व्यक्ति एवं संस्थाओं द्वारा किये गये इन नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों के प्रयोग के बारे में बताया गया है। अंत में उपसंहार के अन्तर्गत समस्त अध्यायों का सार प्रस्तुत किया गया है।

मैड़- विराट नगर अँचल के पारम्परिक लोकगीतों की परम्परागत पीयूषधारा तो आज उसी प्रकार विलुप्त सी हो गयी है जिस प्रकार कि महान् धनुर्धारी अर्जन के बाण से उद्गमित बाणगंगा नदी का अमृत जल। यह चिंता का विषय है कि इस अँचल के लोक संगीत की यह पीयूषमयी पावन धारा निरंतर संकुचित होती हुई सूखती जा रही है, क्योंकि ग्रामीण कृषक परिवारों में भी लोकगीत-गायन में सक्षम

वृद्धा महिलाएं अब नाम मात्र के लिए और न्यून संख्या में रह गई हैं तथा नई पीढ़ी की महिलाएं बाह्य फ़िल्मी संगीत के प्रभाव से आधुनिकता के दबाव में इस परम्परागत ज्ञान और विधा को ग्रहण करने में सर्वथा अक्षम होती जा रही हैं। आज इस अँचल में लगने वाले मेले या तो बन्द हो गये हैं या फिर उनमें आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या उत्तरोत्तर गति से कम होती जा रही है। आज मन्दिरों में बजने वाले पारम्परिक संगीत वाद्यों का स्थान स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों ने ले लिया है तथा मन्दिरों में ऊंची आवाज़ में फ़िल्मी भजनों आदि की बजने वाली कैसिटें और सी.डी. मन की शान्ति को छीनकर इस क्षेत्र की अस्मिता को ललकारती सी प्रतीत होती हैं।

परन्तु डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने इस अँचल की मौलिकता, भैगोलिकता एवं ऐतिहासिकता तथा ग्रामीण दिनचर्या का अपने गीतों में जो सजीव चित्रण किया है वह निश्चय ही हमें अपनी विरासत के दर्शन कराकर सम्पूर्ण रूप से हमारी कायापलट करने में सक्षम होगा। यदि मेरे इस शोधकार्य से गीतकार की इन भावनाओं को थोड़ा भी सम्बल मिला तो मैं अपने इस कार्य को सार्थक समझूंगा।

परिशिष्ट

(क) सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र.सं.	लेखक/ सम्पादक	ग्रंथ का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1	डॉ. मनोरमा शर्मा साईं	लोक मानस के सुरीले स्वर	साईं बुक हाउस, शिमला	1991
2	श्री रामनारायण अग्रवाल	संगीत एक लोकनाट्य परम्परा	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली	1976
3	श्री देवी लाल सामर	लोक कला निबन्धावली	भारतीयलोक कला मंडल उदयपुर	1956
4	श्री कोमल कोठारी	संगीत शिक्षा सेमिनार राज.	संगीत नाटकअकादमी	1968
5	श्री राम लाल माथुर	भारतीय संगीत और संगीतज्ञ	बोहरा प्रकाशन, जयपुर	1997
6	डॉ. मुरारी शर्मा	कलानुसंधान	संगीत भारती, बीकानेर	1972
7	श्री देवी लाल सामर	राजस्थानी लोकनाट्य	भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर	1957
8	डॉ. मनोहर शर्मा	लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा	रोशन लाल एण्ड संस, जयपुर	1971
9	डॉ. शच्चन्द्र परांजपे	संगीत बोध	म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी	1972
10	डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा	मेरे गीत दिखयें गाँव	त्रिवेणी कला संगम, जयपुर	2011
11	श्री राम लाल माथुर	लोक स्वर	जवाहर कला केन्द, जयपुर	1995

12	डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा	कर्मयोगी	भारती पुस्तक मंदिर,भरतपुर	1999
13	श्री रमेश बोराणा	राजस्थान के लोक वाद्य	राज. संगीत नाटकअकादमी	2004
14	बसन्त	संगीत विशारद	संगीत कार्यालय, हाथरस	2007
15	डॉ. योजना शर्मा	राजस्थानी लोक गीतों की संरचना	विवेक पब्लिशिंग हा., जयपुर	2000
16	डॉ. कालू राम शर्मा	राजस्थान का इतिहास	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2000
17	डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा	हिन्दी-मराठी नाटकों का रंग वैशिष्ट्य: समकालीन भारतीय संदर्भ	डी.लिट्. शोध प्रबन्ध, राँची विश्वविद्यालय	2006
18	डॉ.जितन्द्र सिंह खन्ना	संगीत की परिभाषिक शब्दावली	अभिषेक पब्लिकेशन, हाथरस	1982
20	डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा	विरह का इन्द्रधनुष	देवनागर प्रकाशन, जयपुर	2008
21	डॉ. अनसूया पाठक	ढूँढाड़ी लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन	पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर	2005
22	जोगेश	नाटककार कैलाशचन्द्र शर्मा	एम.फिल शोध प्रबन्ध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	2007
23	सुश्री सुखविन्द्र कौर	कहानीकार कैलाशचन्द्र शर्मा	एम.फिल शोध प्रबन्ध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	2008
24	सुश्री कविता	अभिव्यक्ति उपन्यास में स्त्री मनोविज्ञान	एम.फिल शोध प्रबन्ध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	2008

पत्र- पत्रिकाएं

1	राजस्थान का लोक संगीत	: भारतीय लोक कला मंडल, उपयपुर
2	संगीत मासिक	: संगीत कार्यालय, हाथरस
3	संगीत कला विहार	: अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल
4	छायानट	: उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ
5	कला प्रयोजन त्रिमासिक	: पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर
6	संगीत नाटक प्रशिक्षण शिविर स्मारिका, दिस. 1995, मई 1996	: त्रिवेणी कला संगम, जयपुर
7	दीक्षान्त समारोह स्मारिका, नव. 98	: त्रिवेणी कला संगम, जयपुर
8	राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रदूत, दैनिक नवज्योति, अमर उजाला, दैनिक भास्कर आदि समाचार पत्रों के विभिन्न अंकों की प्रतियां	

****